N. A.
Mahabharat : Aadiparva
महाभारत : आदिपर्व
Marathi
Paper - Handwritten
N. A. (very old)
233 Folio
11.4" X 9.4"
Complete

आ॥१

॥श्रीमन्माहागणाधिपतये नमः श्रीसरस्वत्यै नमः॥ श्रीसद्गुरु
भ्यो नमः॥ श्रीकृष्णपरमात्मने नमः॥ नावि[illegible]॥ वसुदेवसुतं
देवं कंसचाणूरमर्दनं देवकीपरमानंदं कृष्णं वंदे जगद्गुरुं॥१॥ आदिस
वैष्णवे देवगुरोतेः सर्व [illegible]॥ तरणं सर्वपापानां तस्मात् रक्षतु च्युतो ॥२॥
भारतस्य समुद्रस्य मेरो नारायणस्य च॥ अप्रमेयानि चत्वारि पुण्
तोयरत्नगुणा॥३॥ श्रीरामप्रसंन्न॥ श्रीलक्ष्मीव्यंकटाय नमः॥ ॐ
नमो वैश्वानरस्वामि॥ तुलसीये स्वरूप परब्रह्मि॥ पंचायतन पंचत्नामि
कल्पी जे जे वर्जव॥१॥ तेथ श्रावते निजमस्तकः॥ विष्णुसुपदद्वय र
त्नाव॥ सव्य चरणि विनायकु वामसि शक्ति साजिरि॥२॥ याचा होचि
अभिप्राव॥ वस्तु विणदुसरें वाव॥ जथे नव्हे विषय कास माव॥ जा
णे जेते निज बीज॥३॥ ऐसिया झाडवला चिगाठि॥ गुरु संकेत म
न्त्र पुष्टि॥ बाधो निमर्ग विचित्र श्री [illegible]॥ लाभावरि धेतसे॥४॥
कोनाभि पादांतिक मूळास न॥ मध्य कंठ तोर मार मण॥ स्कंदावर
तो अर्पण यत॥ अंगन्ने तो येक॥ पात यापर मपुरुषा लागि॥ आरो
भावाचा आरंगि॥ नमस्कार निमग यांगि॥ सेवा संतोष निवेदि॥५॥

माथा सुनिश्चेहामृतं ॥ अंगप्रसंगि मर्दिनाकरितं ॥ त्यासाद्वारासु
खभोगितं ॥ हृदयस्थ आत्माराम ॥ ७ ॥ अक्षयुयुक्षर साचबाधे ॥
आकिले हरिहर नामभेदो ॥ हेजाणसी अभेदबोधे ॥ आवडिउपजे
द्वंदावया ॥ ८ ॥ अतिकैलास केटिरव ॥ काळकुंजर भंजनदेव ॥ ब्रह्मे
द्रादि विबुध सर्व ॥ पादलिंगि पुजारे ॥ ९ ॥ केवल्य कनकसभापति ॥
तांडव शंकर सुदारकीर्ति ॥ चिदांबरेश्वर चिन्मुर्ति ॥ कामदहन विदाहन ॥ १० ॥
जो दशभुज पंचाननं ॥ व्याघ्रचर्मांबरपरिधान ॥ कर्पुरगौर वर्ण
जगजिवन ॥ शोभे घनचांदणे ॥ ११ ॥ प्रभा सहस्रचंद्र कोटि ॥ हळाहळ
नीळ ताकंठि ॥ कुरंग मिरवे करसंपुटि ॥ विशाळ भाळि कुटिळेंदु
॥ १२ ॥ नयन हं पिविरुपाक्षा ॥ गौरिवल्लभ रिकल्पवृक्षा ॥ ज्ञानदिक्षा
गुरु जो दिक्षा ॥ सिक्षा कर्यादंडवत ॥ १३ ॥ जयाचाध्यानोदय व
रा ॥ प्रगटे मनोरूप तरुवरा ॥ अविद्याकुसंगि जिवभ्रमरा ॥ निह्
मुक्ततां स्वभावे ॥ १४ ॥ ज्याचा नामाचा दिव्यरस ॥ जिव्हे लागे
निमिष लेश ॥ तेणे संसाररोगनाश ॥ अनायासे भाविका ॥ १५ ॥
ते सियासायोज्य सुखवर्धन ॥ प्रणम्य श्री शैल्य मल्लिकार्जुन ॥

असत्य कर्म बीज भंजना ॥ आला गिरारण नि घाले ॥१६॥ अता
अंतरद्वारकाधामि ॥ जो अवासस कळकामि ॥ विमळ वैरा
ग्यवद्रिकाश्रमि ॥ नारायणनररूपा ॥१७॥ तो चि कं चिव
रदराज ॥ शामसुंदर चतुर्भुज ॥ शंखचक्रगदांबुज ॥ अभय
पाणि नेटका ॥१८॥ इंदिराहृदंदिर निवासि ॥ ध्यानंदे वृंदा
वन विलासि ॥ कोटिकंदर्पलावण्यरासि ॥ विरक्त वेधवे
धले ॥१९॥ मार्तंडकोटि कोटिकिरणी ॥ तेसि मकराकृति कुं
डले श्रवणि ॥ मुक्तमाळा तारकावर्णी ॥ चंद्र जैसा कौस्तुभा ॥२०॥
सौदामिनि पटकुळवेरो ॥ लागलि चिद्गगना चिये कासे ॥ बिं
बाधरा माजि सुवासे ॥ दशन रत्न सकळ कांति ॥२१॥ आकर्ण नयन न
वीक किरा ॥ भाळि टिळक केर खिळा सुंदर ॥ मृगनाभि चा मनोहर
तनु चंदन चर्चिली ॥२२॥ आवलोकिता चरणप्रयाग ॥ होय सकळ
दुरित दोषभंग ॥ आवलोकिता मानस भृंग ॥ दिपहोये पतंग ॥२३॥
चे सियाश्यामि सारंगधामा ॥ कावेरि तटविहंगमा ॥ चंद्राबढि तुझा प्रेमा ॥
हृदयि वसो माझिया ॥२४॥ आता बाकांकि बीजे केदि ॥ केदे विरटल्ला हरता प
दि ॥ सगुणासुरंगा चा उदधि ॥ मजानुन भियला ॥२५॥ दिसे सजीव क
नेकाचळ ॥ ध्यरूप धरिले सहज लिळा ॥ शिष्यासि शिष्यगी फळ ॥ भोगा भरि

आदिपर्वे

भारथ

तज्यापासि॥२६॥ देव ऋषिगणाचे पाळे॥ मोगिलि स्वर्गापवर्गफळे॥ म
साद तोपियाचे गळे॥ चिदानंद मोदका॥२७॥ कृपा मंदाकिनीचा जिवनें॥
चतुर्दश विद्या नंदनवनें॥ पाल्हेजति तेथ सुमनें॥ साधकजाल सदैवा
॥२८॥ हस्तदिनकराविदिप्ति॥ पळे विभ्रांधकाररातिं॥ नाना दर्शन दिपावळि॥
जो मध्य स्वगुरु॥२९॥ निर्जरामय जर्जरहारि॥ तेज्याचे निअश्रय जिति
लो माझीये दुर्बळमति॥ तोउन्मेष घनदाता॥३०॥ आतां सरस्वति फळसंभा
२
रि॥ कल्पलतिका अतिसाजिरि॥ ज्ञानगंगा जे ब्रह्मगिरि॥ वेदब्रह्मकुमारि
चा॥३१॥ त्रैलोक्य लावण्य नागरि॥ शृंगार श्रीपर्वतिभ्रमरि॥ साहित्य बाण
२
लिंगाचि खरि॥ विश्वाकनदि नर्मदा॥३२॥ प्रमय पोतसाचि रंभा॥ विद्यामुकु
पि रजगंदबा॥ चातुर्य सौभाग्याची शोभा॥ कुबेरश्यामिणिकविचि॥३३॥ न
त
वरसाचि मंदाकिनि॥ महिमे वाहतिहि भुवनि॥ त्रैलोक्यपद दायिनि॥ देव
त्रय पर्यंति॥३४॥ निगम काम धेनुचा उदरि॥ सार नवनित दुरिचा दुरि॥
लो भार नकाढुनि सवरि॥ दे अज्ञान बाळका॥३५॥ तु सुवाणि सुचि सि
नीर्वाणि॥ सौभाग्यदायनि शुभकारिणि॥ आर्थ खाणि सकळसुज
नि॥ वर सुपाणि या रिजो॥३६॥ विपा पुस्तक सुकधारिणि॥ दुःखदारि
द्र परिहारिणि॥ जे पंडिते दान सुखकारिणि॥ ते वंदिलि शारदा॥३७॥ ति
ने अनुग्रहाचा हरिला॥ सिरि ठेविला वरदहस्त॥ म्हणे रे तु सामनोरथ
सर्वदा सुफळमासे नि॥३८॥ आला कथा आनंस ग्र॥ घालि विश्वामाजि

पवित्र॥ तेथ अभिमानि श्वनत्र॥ पाइ किमात्र तुवाकीजे॥ ३॥ अहो काडोके सपा
याळ निका॥ परि गुरुचे आज्ञे आंजन देखा॥ प्रसन्नते चि भाग्ये रेखा॥ नसं
लानिधान के जोडा॥ ४०॥ म्हणौनि देवता रूप वहिला॥ यक गुरु चि म्या स्तवि
ला॥ असे ह भक्तिचे निश्चुलला॥ आज्ञा पिता निज मुखें॥ ४१॥ म्हणौनि दे
तारूप वहिला॥ यक गुरु चि म्यां स्तविला॥ असे भक्तिचे निश्चुलला॥ आज्ञा
पिता निज मुखें॥ ४१॥ या कारुण्य वसंताते॥ मुद मानस निळे लते॥ स्फु
र्ति चे पालव पातलें तेथ॥ कवित्व फळे फळभार॥ ४२॥ म्हणौनि बाळके धेतला
थाया॥ तैसाच करुनि दावि माया॥ ते वितां आदरिले वाचा॥ कैसि आ
धाडणा॥ ४३॥ मुकेश्वर जो अवधुत॥ मासनि नामे सुमुद्रांकित॥ कथा विस्तारि
भारत॥ माहाराष्ट्र प्रबंधि॥ ४४॥ मुख्य भारतिं व्यास सांगे॥ गणेश लिहिता
आपण वेगें॥ यथा कलमीन न्हेआंगे॥ म्हणौनि संत प्रार्थना ते किजे॥ ४५॥ जो मी
परब्रह्म नातळे व्यक्ति॥ ते संत माझा उत्साव मुर्ति॥ परि यासि जे आनन्य शरण हो
ति॥ सा कैवल्य रवे जण॥ ४६॥ जे पृथ्वीं थें न चढे मद॥ दरिद्र दिनत्व न सिवे
कदा॥ निंदिल्या चि न करी निंदा॥ तो नारायण नररूप॥ ४७॥ परोपकारी निर्वैर
मनि॥ समान बुधि मानाप मानि॥ दंभाचार सांडिला जनी॥ तो नारायण
नररूप॥ ४८॥ काम क्रोध भ्यां भुतसंचारि॥ न चळे सुविचार पंचाक्षरी
परधन परस्त्रिपासु निदरि॥ तो नारायण नररूप॥ ४९॥ श्वधर्मी कपुरि
रहा आलो ति॥ जिव्हा लिंग प्रदिस वाति॥ लक्ष्मि राहटे सावध मति॥ तो ना
रायेण नररूप॥ ५०॥ सज्जन श्रोतियां देखौनि नेत्रि॥ जो गर्वस्व पचद

वदिदुरि ॥ स्थिसंवाद आडिपुढारि ॥ तो नारायण नररूप ॥ ५१ ॥ हरिहर नामाचि
यजीवनि ॥ जिह्वो तकपेहोउनि मीनी ॥ कुतर्क सिम म्यासमान मानि ॥ तो ना
रायण नररूप ॥ ५२ ॥ सुंदर आनामिकाचि नारि ॥ ध्यान मांस धरिले करि
देखोनि ब्राह्मण सदाचारि ॥ इछा न धरि देहि ह्वि ॥ ५३ ॥ तैसे देह बुधि
चा होति ॥ अमंगळ संसार संपति ॥ मने चिते साधुसंति ॥ कदाक
त्यांति नातळिजे ॥ ५४ ॥ मिउत्तमपेल हिन ॥ हा छुट देहि देहाभिमान ॥
२ तो गळिया मग श्रूकर श्वान ॥ सर्व भास गुरुचि ॥ ५५ ॥ ऐसिया सिधाचे पायवणि ॥ २
जव वरि न घेइजे वदनि ॥ तव वरि बहुसुसाचि काहणि ॥ केचि लाभ नव्हते ॥ ५६ ॥
ऐसे संताचे जे दास ॥ ते इंद्रचंद्रादिकाचे इश ॥ त्याच अकारा साचकारा ॥ रिधि
सिधि वळगति ॥ ५७ ॥ ऐसे गुरुवाक्य होता क्षणि ॥ आसनियाते लोटांगणी ॥
दंडवत माझे पावो ॥ ५८ ॥ आला प्रसंगा सारिखे काहि ॥ असंताचि लक्षणे पाहि
आवगुण सांडावया देहि ॥ साधकजन निजपावे ॥ ५९ ॥ भेदाभेदची क्रोध काम
ज्या भुतद्रोह नियाधर्म ॥ श्याथी लागि हि आधर्मी ॥ सदाचार जयाचा ॥ ६० ॥
जापि वचे मदिरापान ॥ करि राहटित याच वदन ॥ हे कवाछ कणाचपश्याप ॥
साधु कडे झुंगारि ॥ ६१ ॥ तपो श्रेष्ठा चिया चि थिया ॥ गुंडुनि देह नामबालु किया
वाचे चा चौबारिया ॥ ज्ञान देति पोसणे ॥ ६२ ॥ वेदत्रयाचे सदन ॥ फळत संतु
निर्नदन वन ॥ पाखांडाचि बरडजाण ॥ अनिश्वर वादे सोकारि ॥ ६३ ॥ अगम
अभिचारिकपंथि ॥ दियाक्षित जालि राति ॥ राहटोन यतेरि लि ॥ विहिताचार जया
चा ॥ ६४ ॥ लोभ मंछारिचा चोहटा ॥ दांभिक बाह्य हळदि कुटा ॥ मिथ्याचार स्फाउ

निपोटा।। सादीस्वानजाहलेजे।।६५।। अक्षिपरनिंदेचिविष्टा।। पापदेहपोस
तिमोटा।। शुकरकुकर्मीचवोटा।। कुसंगसंगिचाल्लोला।।६६।। वाचेसरसेचाविं
टाळा।। इद्रियनियमाचाइसाळ।। कामनाकामाक्षीगोंदळ।। आरवंडघालिमा
नसि।।६७।। येकाअवगुणाचिमासि।। दाउनिसकथाकविरासि।। आनंदगुणा
चेगोडग्रासि।। अरुचिअपीभोजना।।६८।। अपुल्याकविताचाकवडा।। मिर
विसाधनसंपुटा।। सारिकरिह्मणेहोंडा।। महंतकविरतासि।।६९।। यवंअसत्य
ह्मणीजेज्याते।। त्यासहिप्रार्थिआदरेबहुते।। आमंत्रणायइजेयेथे।। कथापि
युषभोजना।।७०।। श्रीगुरुआज्ञेचेआदरे।। पवित्रकथेचाबडिवारे।। दुःखगु
णाचेवारे।। दुःखदारिद्रहरेल।।७१।। ऐसेआज्ञापितावहिला।। अविवेकाचा
विटाळफिटला।। मगोमिआचार्यपादुकाजाहला।। स्पर्शावियाअधिकार।।७२।।
आता।। व्यासवेदांतिनेटका।। जेमिनिवसिष्टमिमांसका।। आणिगोतमन्याय
कादंडप्रणम्यसद्भावे।।७३।। सांख्याचार्यकपिलमुनि।। भटाचार्यपरमज्ञानि
पातांजळसहस्रफणि।। भाष्यविशेषवदविले।।७४।। गौडपादश्रीशंकर।। वि
वर्णाचार्यश्रीधर।। टिकाकारामाजिचतुर।। नमस्कारिलेगुरुरुप।।७५।। श्रो
रुतकवेश्वराचार्य।। ज्ञानदेवज्ञानैकवर्य।। ज्याचेबुधिचेगांभीर्य।। आगाध
सिंधुसारिखे।।७६।। त्याचचरणचिंतिलमनि।। तेणेपावनजाहलेजनि।। माझे
जनकजनार्दनि।। एकनाथनमीयला।।७७।। आलावंदसभासमुद्रा।। जेथुज
मलाचार्यचंद्र।। बोधसुधेचासुधेंद्र।। जिवनजिज्ञासेचेकोरा।।७८।। आरिष
ळनिगमाचियजीवनि।। शास्त्रकल्लोळाचियवेणि।। पुराणगाथित्रित

रंगा पियुत्कवतउ वंबयति ॥७७॥ बिबुधजनरत्नाचे पुंजे ॥ ज्ञान विज्ञाने अति
सुनैजेप विचित्र पणतिर्थराजे ॥ भागिरथि अगाध ॥७८॥ न्याये गुरु मर्यादावल ॥ जेथ
नुलंघे करा काव ॥ तया परमपुरुषाचे मे ळ ॥ सिंधुरुपन मियत ॥ ॥७९॥ तेथिल श्री
तेहो परिस पणे ॥ तुमचे आवधान लेणे ॥ माझे वंमंत्रु लेहलेह उपा ॥ आमोल्ह होयि
ल काचन ॥ ॥८०॥ म भजयाचा कर्णभुषणा ॥ या म्ये होइल निश्चये जाणा ॥ याल
गि तुम्हा तेपुनःपुना ॥ प्रणीपातु साष्टांग ॥ ॥८१॥ धरवे नाले धरिले मुखि तें सर्व
पावर्व मोपाकरुनि ॥ जेवि वानरासेतु बंधनि ॥ सामर्थ्य देवा रघुनाथु ॥८२॥ अंजुलि
चेट विसिंघोटका ॥ ब्रंभांड उचलु अपणा आकिका ॥ तुम्हि रापहोउनि देखा ॥ साधिक
रणे मज लागि ॥८३॥ वेद शास्त्र स्मृति पुराणे ॥ नाना इतिहास व्याकरणे
गावुनि विचार रसायने ॥ व्यास पायनकुशले ते ॥८४॥ सुरस सुंदर पवित्र श्रोत्रि
पक्वान्न निपजउनि पाटि ॥ संस्कृत शब्द सुवर्ण ताटि ॥ श्रेष्ठ श्रेष्ठ वोगरिले
॥८५॥ ते चिरसायन दुर्लभ पणि ॥ माहाराष्ट्र रंभापणि ॥ ॥८६॥ वाढिलि ते प
शिशु काळ जनि ॥ नसे विजे किमर्थ ॥ ॥८७॥ समर्थ पण कविपंडिति ॥ सवज्ञ ते
चा लहदिति ॥ निर्विकार पशुपति ॥ कनक कमळि अर्चिजे ॥ ॥८८॥ यथेष्ट
वाथि मिंदु वेळ ॥ धत्तुर पुष्प माझे बोल ॥ अल्पमतिचे निमोल ॥ काव्य
लिले केवि ॥८९॥ तथापि दोहि टाइ सरिसा ॥ माहाकराल हे भरवसा ॥ का सा
न थोर महेशा ॥ भजन असकडसणि ॥९०॥ अपि इश्वर स्वरुपिजे वेसा ॥ या
सिवपर्ण वर्णद्विशा ॥ नुपजे जैसा सुर्यप्रकाश ॥ तेथे कदांत माते ॥९१॥ तेवि
आर्थि घालिता द्रिष्टि ॥ म्हणसं स्कृत माहाराष्ट्री ॥ रत्न कुंभिका अमृत व

५

५

ष्टि॥ गंगोदका सारिखे॥ ९३॥ श्रोते म्हणती न वल झालि॥ आमंत्र
णि चेजाहलि नृप्ति॥ पुढिल भोजनाचिये अंति॥ गोडिअ निर्वीच्य
सर्वथा॥ ९४॥ आता वकया पात्र सर्व॥ कथा आरंभीअति अपुर्व॥
समंथला दिपर्व पर्व॥ अनुसंधान लागले॥ ९५॥ जिजि प्रसाद म्हणो
नि वक्ता॥ नमस्कारो नि हाय बोलता॥ तेचि सादर परिसा आता॥
कथा कल्मिलनाशनि॥ ९६॥ आदि च भारत महा समुद्र॥ वरि विस्तारि
कवेश्वर॥ लरि श्रोतीयाश्वासे भयं करु॥ विवर्ति पडिल्या सारिखे॥ ९७॥
सिंहावलोकन पडताळिता ग्रंथ॥ अविवेकि तथे वहलागत॥ चतुर श्र
णांचा तकागमत॥ अमृताचीवाकडि॥ ९८॥ म्हणोनि कथानये गाळिता॥
सविस्तार न करुं प्रल्हादा॥ जैसे विहिन कर्म कर्ता॥ थोडे न सांग संपादि
॥ ९९॥ उग्रश्रवा लोमहर्षणि॥ तेसर पुराणिक सुजाणि॥ अति वंत ऋषि
चे पणि॥ नैमिषारण्य पातला॥ १००॥ तिथे द्वादश वर्षिक सत्र॥ शौनक अ
रंभिले विचित्र॥ मीनले ब्रह्म ऋषि पवित्र॥ सुसिळ वृति आपार॥ १॥
तो मुनिवर्य देखोनि दृष्टि॥ भावजोडला कर संपुटि॥ नमस्कार धरणी
तटि॥ सकळिका सिघालता॥ त्यासन्मानो नियापरम पुरुषि॥ दिध
ले आसन आदरे तयासि॥ गौरउ निम्हणालिके सि॥ लाभवळ आमु
चि॥ ३॥ सकथेचा आवर्षणि॥ अमृत सिंधु चपाणि॥ मेघधा

डिले कृपेकरूनि ॥ जगदेश्वर याटाया ॥ ४ ॥ तुझिया व गत्रुहत्लक्षणा पिथुरवा

सकळि सादरे तेने देखा ॥ वोटविल्या कर्णकुपिका ॥ परमेर सन्मणोनि ॥

॥ ५ ॥ सौति तेणे स्वामि वहिला ॥ जन्मसगर्ह सार्थ कथिला ॥ ६ ॥ रिद्धि याचि

कन्येने वरिला ॥ सभाग्यश्रेष्ठ भुपति ॥ ६ ॥ जन्मेजयाचि सर्पसत्रि ॥

वैशंपायन पवित्रगात्रि ॥ वंदिला तियाधरिला श्रोत्रि ॥ विचित्रक

थाकौतुके ॥ ७ ॥ व्यासशंकरापासि गंगा ॥ भारतकथा लक्षण

सुभगा ॥ तिसभगिरथ जाहला जगा ॥ वैशंपायन विवेकि ॥ जातेक

पद्मपराहृदयेकमळेसि ॥ धरिले स्मरणाचे आवकासि ॥ ते मिनी वदिन नि

सि ॥ तिर्थप्रसाद बिंदु हा ॥ ९ ॥ क्षिराब्धि शायि नारायण ॥ ते चि कृष्णद्वै

यपायन ॥ हात्तु निभारत मिसजाण ॥ पंचमवेद प्रगटिला ॥ १० ॥ ह्मणो

नि भारति नसे काहि ॥ ते ब्रह्म श्रृष्टित जन्मते नाहि ॥ शब्दब्रह्मी आसे

जे पाहि ॥ तेसाठ वले भारति ॥ ११ ॥ तेसाटि लक्ष भारत संख्या ॥ अर्ध

चोदा — वोपिले देवलोका ॥ पंधरालक्ष स्तापिले देखा ॥ पितर लोकि पितरा

र्थि ॥ १२ ॥ पोर्णोलक्ष गंधर्वभुवनि ॥ ठेविता जाला श्री व्यासमुनि ॥ स

वालक्ष कृपेकरूनि ॥ मनुष्य लोका दिधले ॥ १३ ॥ व्हदंगे समस्त सुरा ॥

असित पितृलोकि पितरा ॥ यक्षराक्षस विद्याधरा ॥ शुक स्वामि च यं सांगे

॥ १४ ॥ यामनुष्य लोकालागि ॥ वैशंपायन सर्वज्ञ जगि ॥ सांगता जा

५

५

रवाने प्रसंगि ॥ जन्मे जय परिसित ॥१५॥ तेहि हरिवंशासहित ॥ सवा
लक्ष माहाभारत ॥ माजि आख्यान बहुत ॥ सनत्सुजात गितादि ॥१६॥
आठरासहस्र आठशत ॥ व्यास कि कठिण ग्रंथ ॥ व्यासका शुक जाणति
आर्थ ॥ जाणे नेणे संजय ॥१७॥ मात्र नियोग द्वैपायन ॥ विचित्रवि
र्यक्षेत्रि जाण ॥ वाढते केले संतान ॥ रतादके आपुलिया ॥१८॥ धृतराष्ट्र
कुजा पंडु न्टपति ॥ सिसरा मांडव्य शापे प्रेषपति ॥ विदुर क्षतापक्षपाति
सर्व काळ धर्माचा ॥१९॥ धृतराष्ट्र शत गांधार ॥ पांचपंडु च कुमर ॥ या
च राहटिचा विचार ॥ वृक्ष दृष्टांते परिसिजे ॥२०॥ अंहकार द्रुम दुर्योध
न शकुनि शाखा दि कर्ण ॥ पुष्पिफळ दुःशासन ॥ मुळ राज धृतराष्ट्र ॥२१॥ धर्म
लो धर्म स्वरुप द्रुम ॥ खादि या शाखा भीमार्जुन पुष्पीफळ कि अति उत्तम ॥ माद्रिपु
त्र मिरवले ॥२२॥ मुळ तो जगद्रासा श्री विष्णु ॥ जो परमात्मा जगजिष्णु ॥ म्हणो नि
ळ कि ताहि हिष्णु ॥ धर्मराज धर्मात्मा ॥२३॥ पहिले कौरव पांडव जनन ॥ या
चरित्र लाक्षा गृहदहन ॥ द्युत द्रौपदि वस्त्रहरण ॥ वनाभिगमन लवयोग
॥२४॥ मत्स्यालयि अज्ञातवास ॥ गोग्रहणि कौरव त्रास ॥ युद्ध ने मि द्वारकाधि
श ॥ मग सवियासे मासु मांडला ॥२५॥ आकरा अक्षोहिणि सेना ॥ या माजि
आमरहदो चा जाणा ॥ साह्य जाले दुर्योधना ॥ धर्माचि निइ साते ॥२६॥ सात
अक्षौणि आंत ॥ निशस्त्र कृष्ण त्रैलोक्यनाथा ॥ अरि राया वरि धूमकेत ॥

हि

पांडवापाटिरा हिला॥१७॥दाहदिवसगंगात्मज॥पाचदिवसभारद्वाज॥
दोनिदिवसकर्णसज॥सेनारक्षकसग्रामि॥१८॥अर्धरौल्यअर्धगदायुध्य
आठरादिवसासमासियुध्य॥तेचिसारोनियादर॥द्रोणपुत्रेघातले॥१९॥
धृष्टद्युम्नद्रोपदिकुमर॥वधुनिपळालाअतिसत्वरा॥देखोनिप्रळयवैश्वान
र॥भीमिभीमपराक्रमी॥२०॥पाठिलागिधाविलाकाळ॥देखोनिब्रह्मास्त्र
गुरुचाबाळ॥प्रेरुनिम्हणेहाभुगोल॥आपांडविहोयेपो॥२१॥हेमिवा
णदेखोनिपार्थ॥अस्त्रेआस्त्रकरियांत॥मणिहिरोनिजिवमुक्त॥प्राण
दानसोडिला॥२२॥यानंतरेभिमसेन॥घालिपुर्णाहुतिदुर्योधन॥इतु
केनेसंग्रामसंपुर्ण॥पांडवप्रथ्विपावले॥२३॥हेचिअनुक्रमाचियुक्ति
संजय। पश्चातापमानुनिचित्ति॥धृतराष्ट्रंप्रति॥तिसरेस्लोकबोलिला॥२४॥
म्हणेजैलक्षभेदुनिसाटोपे॥द्रौपदिजिंतिलिप्रतापे॥तेधवाचिय
शोजयसंकले॥सांडिलेम्यासंजया॥२५॥सुभद्राप्राप्तिजालिपार्था॥त्या
दवपातलेइंद्रप्रस्ता॥एकतजयाचाआस्था॥म्यासंजयासांडिलि॥२६॥
लागवाजोहरिपासुनिवाचले॥पांचाळाचेजामातजाले॥ओकतक्ष
पजिजययराबाले॥म्यासंजयासांडिली॥२७॥जरासंदवीरविक्रमे॥त्रा
स्त्रविपेमारिलाभीमेतधिचयेशाचिकामे॥म्यासंजयासांडिलि

॥ ३६ ॥ रजस्वला अनर्थि पिसि ॥ सभे अपात्तिमुक्तकेशि ॥ गांजिली जयाचा मानसि ॥ म्यासंजया सांडिलि ॥ ३७ ॥ श्रमले दुःखौनाचहाल ॥ वेसवस्त्राचपवीत ॥ कौष्णपुरविला जयस्वार्थ ॥ म्यासंजया सांडिलि ॥ ४० ॥ वनज्वाला संतसपोटि ॥ संकेतदाचित्ता जनाचे दृष्टि ॥ विदुरसांगतां जयाच गोष्टि ॥ म्यासंजसांडिली ॥ ४१ ॥ इच्छा भोजनदानेमनि ॥ युधिष्ठिर किलापिनाकपाणि ॥ ओकता विजयाशा ॥ अलःकर्णि म्यासंजयासांडिलि ॥ ४२ ॥ दर्मबुध्धिनेसरावर्तता ॥ दुर्योधन गंधर्वि बाधो निनेता पार्थे सोडविला जयाचीकथा ॥ म्यासंजया सांडिलि ॥ ४३ ॥ विराटराष्ट्रियेकेचीरथे ॥ आमुचे द्रव्यभार भंगिला पार्थे ॥ तेव्हाचि जयवासना चीते ॥ म्यासंजयासांडिलि ॥ ४४ ॥ मत्स्यराय सन्मान करी ॥ अभिमन्याते दीधलि कुमरी ॥ तेव्हाचि जयाशा अंतरि ॥ म्यासंजयासांडिली ॥ ४५ ॥ निर्जिव निर्धन द्वजिके वनि ॥ यासि सेना सातक्षोणी ॥ मिनलि तेव्हा ताजयशामनि ॥ म्यासंजयासांडिलि ॥ ४६ ॥ कर्णदुर्योधनादि शकुनि बांधुधावलिसारंगपाणि ॥ तव्हा रूपेदावितां जयाशा मनि ॥ म्यासंजयासांडिलि ॥ ॥ ४७ ॥ सामकरावया जगद्बंधु ॥ पाललानमानि अविवेक सिंधु ॥ तेव्हाचीजयाचा संबंधु ॥ म्यासंजयासांडिलि ॥ ४८ ॥ युधिष्ठिर विश्वरूप किरिटि ॥ लागिरा विश्रैलोक्य पाठि ॥ तेव्हा जयाचमोष्टि ॥ म्यासंजया सांडिलि ॥ ४९ ॥ करा निसिखंडि च हननां ॥ भीष्म अर्जुन घेलला प्राण ॥ तेच निजाशामान ॥ म्यासंजयासांडिलि ॥ ५० ॥ त्तफोनि सोभद्रि विरयकला ॥ विदुभेदोनि गेला ॥ तेथे वाधि जयाशो च्या बोला ॥ म्यासंजया सांडिलि ॥ ५१ ॥ कर्णद्रोणाशी व्यगुरुसुत ॥ देखतां मारिला जयद्रथा ॥ तेथवाची जयासेविमाल म्यासंजयासांडिलि ॥ ५२ ॥ गुरुमर्यादा सांडुनि बाण ॥ द्रोणविं

धिलाधृष्टद्युम्न ।तेव्हा चि जयाशा चिकामने ।म्यासंजयासांडिलि ।५२। दुःशास
न घेतु माजि घाकुटि ।भीमे थांघ्रे सो बोनि कंठि ।अश्रुधम्रा सिना जया चिगाठि
म्यासंजयासांडिलि ।५३। जो धनुर्धरामाजि सिरोमणी ।कवी पार्थ विंधला रणी
तेव्हा चिजयाशा चिमनि ।म्यासंजयासांडिलि ।५४। जो कीर्तिपाते नम निमाज
ला रोत्थ्य विंधि लाधर्मराजा ।तेव्हा चिजयाशे वोझे ।म्यासंजयसा डिलि ।
।५५। कल्हा मूलधुल शकुनि ।यासी सहदेव मारिले रणि ।तेव्हा चिजया
स्विदुरा वामनी ।म्यासंजयासांडिलि ।५७। आकराआक्षोहिणि चापति ।दु
र्योधन चिरथ भग्न राकि ।जकील पना जयारो चिसंपति ।म्यासंज यासाडि

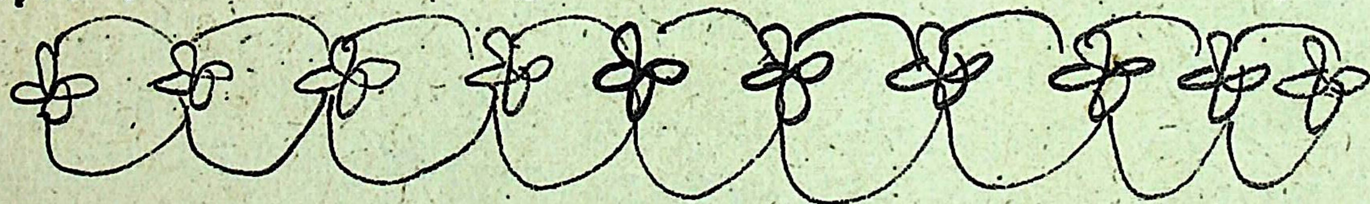
७

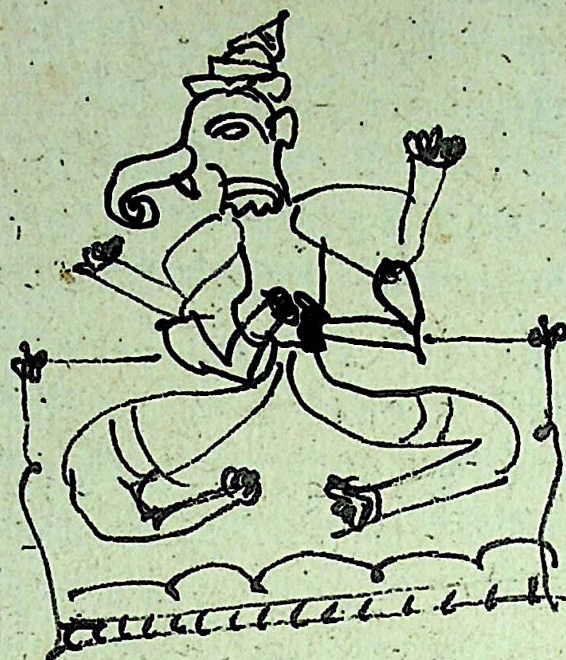
लि ।५८। विचित्रमागे वि पीधगति ।गदायुध भद्र जाति ।भीमे पाडिता जयस
पति गहर पलि मासि संजया ।५९। मिथ्या वासुदेवाची ये युक्ति ।पांडवराहठ चेरा
क्षसविधि ।राजा दुर्योधन गुणाढ्य ।कपटे कोडुनि मारिले ।६०। शल्य पु
त्र विडनिगां धारि ।वांजे दिसे यासंसारि ।आसाएहराज्य पसियापरि ।
केशी पांडव पावले ।६१। आष्टादशाक्षोहिणि आंत ।दाहाउरले जिवजि
त ।ति घे आमुच पेगासात ।पांडवाकडे एकिले ।६२। प सा बो लता चिन्हु
पति ।मुर्छा येउ निपडिला क्षिति ।शोके पोळ लाउरबुडति ।आश्रुपातिम
हितिबे ।६३। श्वासया किजे सा व्याकोहाहाकारि वे को चे ।म्हणे संज
या लाता का ।प्राणान सांडि सर्वथा ।६४। संजय म्हणे कौरव राया ।
दुःखपावि जे धरिता माया ।हे चि विवेक जाणीया ।सर्वे या गमिथ्या
चा ।६५। दिसे ति तुके पावे नास ।हाचि जाणि जे सारांश ।म्हणोनि आला

अग्नि।रा।जोडेतेचि साधावे।।६६।।ब्रह्म श्रीहरि माझि निश्चिंमि।।असंख्य
राजचक्रवर्ति।।आवृतार पुरुषाची पंग्ती।।पुढें निगेलाबहु येक।।६७।।सुर्य
सोमवंश आले।।किर्तिघोषप्रतापवंत।।चित्रगुप्ताचे हाता।।तोहि हिलाभागले।।
।।६८।।अंबऋषि मरुत इक्ष्वाकसिलि।।मनु भय राजभरत ययाति।।शशिबिंदु
भगिरथ दशरथि।।लोकत्रयि प्रसिध्य।।६९।।शैब्याश्वत जयकाक्षिवत।।सहो
त्र रतिदेव रायतिअजित।।मालिक मदयेध नृपनाथ।।विश्वामित्र नकुन।
त्र रतिदेव शायतिअजित।।कनविर्य अणि जन्मोजया।।लय नामाचा प्रतापसुर्यो।।ज्या
मा।।७०।।कनविर्य अणि जन्मोजया।।लय नामाचा प्रतापसुर्यो।।ज्या
चिकीर्ति स्वमुखनयो।।सत्यवतिचा अनुवादे।।७१।।पुत्रशोक परिहारा
र्थि।।पूर्वि नारदे शौनका प्रति।।चतुर्विंशति राजनृपति।।पुण्यश्लोकसागि
तले।।७२।।पुरुप्रविर इत्यादिका।।शतसहस्त्रीन केले खा।।साधि दिव्यकर्मे स्व।।
यागविक्रम गर्जीति।।७३।।ज्याचि वैरिनाचे ले ठि।।भुवपणे जाले जगाच श्रवणी।।
स्वर्गि स्तुति च्याताबोल करुनी।।सुखे रंगति देवांचि।।७४।।ज्याच्या सुकृत
राशि अमपा।।पुर्ण भरिता ब्रह्मांडिचिया मापा।।प्रकथि उरविना साटोपा।।ग
णपाने हे कल्पांति।।७५।।बहु यज्ञ बहु दक्षणा।।देता बहु साल ऋषि ब्राह्मणा।।
नेला उबगुनि सांडि रत्ने धना।।नाम जाले कनकाद्रि।।७६।।सत्य शौच दया आर्जव।।
स्वधर्म कर्मि ईश्वर भाव।।न्यायनितिचे गौरव।।जे हि बहु साल वाढविले।।७७।।
जे हि दानोदक प्रबळ।।जळ शोनकता ब्रह्मगोळ।।ते हि भासता पाळला काळ
व स्य जाले म्हणते।।७८।।आश्रे वितुळतिनि साकि।।जो ना बुदबुद विराले जळि
ले से अचुके का ळा नकि।।भस्म जाले असंख्ये।।८०।।तुझ पुत्र त बहु शाले।।

नाशपावलेकेलेनि कर्मे ॥ साच्या शोक मनो धर्मे ॥ करणे हाचि आ विवेक ॥ ८१ ॥
वेदांत शास्त्राचा अर्थ विचार ॥ आचार्याचे वाक्य निर्धारि ॥ प्रपंचापासुनि नि
बुद्धि विशुद्धि ॥ स्वरूप निश्चे करावि ॥ ८२ ॥ देहेसिं विश्व मिथ्या सकळ ॥ जाणोनि
ब्रह्म चिंति निर्मळ ॥ तेणे रामेल शोक जाळ ॥ आनंद सुख पावसि ॥ ८३ ॥ नाना
देहांति श्रम गर्भि ॥ उटलि चैतन्याचिये व्योमि ॥ ते जाणे या मोह विघुर्मि ॥ कल्पां
ति हि बाधिना ॥ ८४ ॥ ऐसबोलोनि मुनि संजयो ॥ स्वस्त केला अंबिकानंदनयो ॥ ह
लुके नि कथेचा अन्वयो ॥ यथसंक्षेप सांगीतला ॥ ८५ ॥ सविस्तार परिसा पुढें ॥ श्र
वणआर्तिची उघडुनि कवाडे ॥ वचन सेवा सुपक्क फळे गोडे ॥ भारतकथामृत व
ल्लिचि ॥ ८६ ॥ ऐसि सविस्तार कथा ॥ संजय सांगितलि गांधारिकांता ॥ श्रवणें अ
कलिजे या च्यवता ॥ मोक्षसुखयात्रा मे ॥ ८७ ॥ आदिपर्व कथामृत ॥ मनेकरूनिया
निश्चल ॥ जैसे चातक मेघाचे आतृप्त ॥ तैसे श्रवण करावे ॥ ८८ ॥ भारत हा पा
चवा वेद ॥ व्यासकथिले विशद ॥ निर्धारिसि पद प्रबंध ॥ श्रवण करा श्रोते हो ॥ ८९ ॥
कथामृत परम सुखद ॥ ऐकता आनंद उद्बोध ॥ पावति सज्जन स्वानंद ॥ नि
जांगी चित्ति आतिवेगे ॥ ९० ॥ इतरआदरेपे कता ॥ सकळ दोषजाति नष्टता ॥ त
या सायोज्य पदें येहाता ॥ श्रवण करिता भावार्थ ॥ ९१ ॥ आदरें जे वाचिति
प्रिति ॥ तेजे श्रवण करिति सुचिंती ॥ यासि निजपद चढे हाति ॥ पातके जाति
निशेष ॥ ९२ ॥ कुरुक्षेत्रि आणि प्रयागि ॥ सहस्र कपिला सुवर्णशृंगि ॥ गाथि
चि प्रवेद विदुषा लागी ॥ देता सुकृत जें जोडे ॥ ९३ ॥ ते भारतिचे पर्व यक ॥
श्रवण करिता पावति लोक ॥ पाप सिंधु प्रासिला देख ॥ इतिहास रूपें भाग
सि ॥ ९४ ॥ आद्य वेद विद ब्राह्मण ॥ यके त्रास पितर संपुर्ण ॥ तैसे ये

क करिता श्रवण ॥ सर्व शास्त्राचे फळ लाभे ॥ ५५ ॥ इति श्रीभारत
आदिपर्वींचा पुढे परिसावे विचक्षणि ॥ वदेल मुक्तेश्वर राघवाचि वाणि
त्रिलोकविश्वंभर प्रसादे ॥ १५६ ॥ इति श्री आदिपर्वणी श्री माहाभार
ते प्रथमोध्यायः ॥ १ ॥ संपुर्णमस्तु ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ६५० ॥०





॥श्री गणाधिपतये नमः॥ श्रीरामसमर्थ रघुवीर॥ ऐश्वर्याचे निमे दे समस्त॥
हे ब्रह्मांड करिते दिन आनाथे॥ गाजिला विघ्न पावोनि रोले॥ हा पाक रितेपक॥
॥१॥ जन्मेजय कुरुक्षेत्रि॥ परम धार्मिक दीर्घसत्रि॥ सह वर्तमान ब्रह्मसत्रि॥
बंधु त्रयेनेटके॥ श्रुतसेन उग्रसेन॥ तिसरा अनुज भीमसेन॥ पार पडलया
आधिन॥ राय केले यज्ञाचा॥२॥ तेहि देव सुनिया चातनय॥ दुरि देखोनि निसा
रमेय॥ न विचारित न्याया न्याय॥ दंड प्रहरि ताडिला॥३॥ तो रुदना करिल श्री
चि वेग॥ जाउनि रडत मातेल सांगे॥ यरि ह्मणति अन्याय आगे॥ केला आ
सेलतयाचा॥५॥ पुत्र ह्मणे जननि प्रलि॥ अन्याये आसता काय सेरवंमि॥
औ कोनि कुमर धरुनि ताडिता॥ ति सुनि सभे प्रति पालाले॥६॥ रवशुमि राज चुज
मणि॥ ह्मणे अनिल वैरयावे सनि॥ जाहाला सिह्मणोनि स्वधर्मपालि॥ कि
तिरु सुनिजातसा॥७॥ राजा विचारि बंधु वर्ग॥ लव आन्याय दिसो तो व तल
आंग॥ जायो नि व्यापार उगा॥ बांद्दे विनेपेकेला॥८॥ सुनि ह्मणे आधर्मयेण
शाप घेइ माझनि वन्चने॥ आरक मात विह्णु यरि लतेणे॥ यागन पेवे सिधि हा॥९॥
राजा उद्विग्न मानसि॥ मृगयाव्याजे निघेवृनासि॥ चिजनि दरिवला महाऋ
षि॥ श्रुतश्रवा महातपि॥१०॥ नमस्कारुनि ऋषीसंभ्रमा॥ ह्मणेजी पुरोहित
मे कथा माझा॥ जो कासि धपावविधर्मा॥ आउमोडुनि अरिष्टा॥११॥ ऋषि ह्मणे
माझा कुमरु॥ सोमश्रवा तपश्चिधोरु॥ याचे मिहा अध्वरु॥ सभासि नपाचेल
॥१२॥ माझेनि वियें वियज पुष्टि॥ परि जन्मला सर्पिणी च्यापोटि॥ विघ्ने पळति
याचियेदृष्टि॥ जे वि पाल के हरिनामे॥१३॥ हा सांगेल ते सा करणे॥ राजा गो

उनिनियमवचनें॥पुरोहितकरूनिमानें॥ब्रह्मसंगिद्धपिलो॥१४॥यावरिधौम्य
नामऋषि॥तपोवनीच्याश्रमवासि॥लिचेसिष्यपैतयासि॥अरुणिउपमन्यअ
णिवेद॥१५॥त्यातधौम्यआज्ञापिवचना॥पांच्याळासिजउनिअरुणी॥केदा
रखंडगाबांधोनि॥सिघ्रआणिंयाउत्या॥१६॥आज्ञाहोतांचिनिघेवरिन॥पा
णीपाठवाफयानेरा॥फुटलेतेथनिरोधार्थ॥शरिरआडवेसुदले॥१७॥उदको
लियाकोपेलगुरु॥म्हणोनिसांडिलादेहव्यापारु॥देहकरुनिपिंडपाथरु॥ज
ळिजळसेनजाहलातो॥१८॥ऐसेलोटलेदिवसकाहि॥सद्गुरुम्हणेअरुणिना
हि॥पाहाआलानचजळप्रवाहि॥जळचरआयेपडीलासे॥१९॥श्रीगुरुह
णयकाअरुणि॥यरुम्हणेयलफुटलपाणी॥उपाध्येकृपेकरुनि॥करिधरुनि
काढिला॥२०॥उदकरोधलेगुरुच्याकामा॥म्हणोनिउद्दालकयानामा॥ठेउनिस
पोसिष्योत्तमा॥वरप्रदानघेमाझे॥२१॥ज्ञानप्रज्ञाकुळशीळ॥तपलावृथ्यसं
ततिबळ॥अर्श्वैश्वर्यसर्वकाळ॥तुझियाठाइहोवसते॥२२॥बहुतकाळभोगि
लेश्रमा॥यावरिजोकाउपमन्यनामा॥दुसरासिष्यआज्ञापि॥२३॥तुवावहेथे
नुरक्षावि॥धमरिण्यामाजिचारावि॥कउयमानेतोपवावी॥आवस्थम्हणे
उपमन्यु॥२४॥अन्नेनरक्षीताआसताधेनु॥सिष्यदेखोनिप्रसन्नवदनु॥श्रीगुरु
म्हणेबाळकाआणु॥किमापायजीवचिसि॥२५॥म्हणेजीभीक्षान्नपाकिले॥निपि
थान्नसर्वथा॥२६॥अर्धभिक्षागुरुसिद्यावि॥शेषश्रेयस्करभक्षावि॥शिष्यम्ह
णेबहुलबरवि॥आज्ञासमर्थश्वामीचा॥२७॥याचिसांगीतिलियारिति॥मा

१

१

सक्रमितापुढती। आचरतो किला आंगकांति॥ दिसे दोदिला सा जिरा॥ १८॥ जा
णोनि ह्मणे सिष्यासुमति। आर्ध्य देणे अनुचित विहिति॥ संपुर्णभीक्षा आ वृत्त
कभक्ति॥ आजिपासुनि देआ ह्मा॥ १९॥ आज्ञसारिखा वर्ते येरु॥ सर्व भीक्षेने तो
ष विगुरु॥ दुसरे नेमाधुकेरे जठरु॥ तसकरि आपुला॥ २०॥ धृष्टपुष्ट मासागळा
देखो नि मागुति ह्मणे रे बाळा॥ कवण परिक्षुदानळा॥ शांतविसि ते सांग॥ २१॥ ये
ह्मपो दुसरे नि भिक्षाकरिं॥ श्रीगुरु ह्मण हीं साचारि॥ द्वीवार भिक्षा कुत्राकारि॥ ग्र
हस्ताते सर्वथा॥ २२॥ आजि हुनि ऐसे न किजे प्राज्ञा॥ जाणा लज्जा वि श्रीगुरु संज्ञा
माला प्रसाद ह्मपो नि आज्ञा॥ शिष्य माथा वंदिलि॥ २३॥ धेनु चारिता आसता वनि
क्षुदा भुजंगला गला नलः क्षा णि॥ द्रोषमात्र दुग्ध पानि॥ स्थल करितयाते॥ २४॥ मा
गुति मासागळा देखोनि पुसिले॥ येरे यथार्थ चि कथिले॥ श्रीगुरु ह्मणे गाउ चि पिले
हा मद्व्यये पोला॥ २५॥ करु नये ते न करि पुढति॥ वार वार सांगणे कि ति॥ क्लेश
न मुनिया चित्ति॥ क्षेमा ह्मणे उपमन्यु॥ २६॥ पयपान हि वर्जिल्यावरि॥ धेनु पाजु नि वत्सा
वारि॥ दुग्ध फेन लुब्धि करि॥ अध संधी जो निघा॥ २७॥ सेउनिया केलिवेळ॥ आने
द भरित सर्वकाळ॥ सद्गुरु ह्मणे बाळा रे लिकासेन काल्पिसि॥ २८॥ सिष्य च चि
सांगता देख॥ आचार्य ह्मणे अलिपानक॥ घसाहार आपहार का॥ याने धेनु श्रा
पति॥ २९॥ लुते हे चि आ अि मागपे॥ जे जिव मात्रा न पिउपे॥ प्राय श्रायह्मणो
नि वचने॥ शिष्यनिघे निकायि॥ ४०॥ वनि करिता गो सिस्टेष॥ पि पिल्या क्षुधे
चे सिहुलाता॥ दुधसरित्ता भाउ मिठे से॥ अर्क कुसुम भक्षिले॥ ४१॥ ते अलि

क्षारउष्ण कटुक ॥ आगिन्यापिले दाहक विख ॥ दृष्टी जाउन निःशेष ॥ अंधजाला
चांगुस ॥ ४४ ॥ सांजम्हणे आणिता धेनु ॥ कूपिं आपडिला नेदेखुनु ॥ धौम्यपे अति
सहिष्णु ॥ आजि उपमन्यु नये म्हणु ॥ उवगमें लु निती न वजाये ॥ मा गियेउ नि
साध्मीं वीं ये ॥ उपमन्युलु सि म्हणे ये ॥ केउल आससि म्हणे पया ॥ ४५ ॥ यरु म्हणे
स्वामी न य बोला ॥ दृष्टि जाउनि कुप औतौल ॥ पडलो आहे है आेकला ॥ नाभि म्ह
णे कल्लव किला ॥ ४५ ॥ ऋषी सांगे नतयाक्षिपरि ॥ अश्विनी देवाचे स्तवन करि ॥ तेदृ
ष्टि देउनि बाहेरि ॥ काढितिल तुजला गा ॥ ४६ ॥ तेणे उपदेसि लिया न वचनि ॥ अश्वि
नी देव स्तविता क्षणि ॥ देव धन्वंतरि दोन्ही ॥ कृपेने आला साटाय ॥ ४७ ॥ तेहि
म्हस्त किये उनि हात ॥ अपुपादि घला ध्वल पाचित ॥ म्हणे बाळे का क्षुधापिडित
भक्षण करि तु याचे ॥ ४८ ॥ यरु म्हणे गुरुसि नेदिला सहसा ॥ भक्षण न करि हा भ
रवसा ॥ अनन्यां विश्वास देखो निहर्षी ॥ अश्विनौ देव पावले ॥ ४९ ॥ कृपेने स्प
र्श करिता करनदि ॥ प्रगट दृष्टि ॥ धरुनि मनुष्य त्या बाहु ठि ॥ अंध कूपी निका
ढिला ॥ ५० ॥ गुरु दास्य विसरु निज निर्धारि ॥ देखो निदे ते जा सेव रु ॥ म्हणा तिध
न्य धन्य ईश्वरु ॥ तु वगुरु कृपेसे विला ॥ ५१ ॥ वेद शास्त्र अनुभव ज्ञान ॥ रिद्धि
सिद्धि अष्ट छंद मरणो ॥ सर्वे पावसि पद निर्वाण ॥ आशीरवाद आमुचा ॥ ५२ ॥
वरदवदो निगेले दोन्ही ॥ यरु निरागला श्री गुरु चरणि ॥ तेणेहि ता विवरे
उनि ॥ म्हणा श्रम पाट विला ॥ ५३ ॥ याव रि त्रिनिय सिष्य वेदु ॥ बुधि निपुण म्हातु
र्य सिंधु ॥ गुरु सिस प्रा करिता वेधु ॥ गुरु सि तयो लावि ली ॥ ५४ ॥ नसा गल जाणे

२

मनोगत ॥ नमागतपुरविसमसाः चित ॥ अप्रियराहटिआंत ॥ आचरो निंदा विन ॥
॥ ५५ ॥ के त्रिपरारिआचरणे ॥ केलेसो कि प्रगटोनेपो ॥ मरण मांडले याहि मने ॥ मु
यदिलेतुलधी ॥ ५६ ॥ आम्हीं कुत्रियुधासंसुरस ॥ मुकायेता आगळा सुरसाले
सावाटतामनउल्हास ॥ दिवसदिवस भजे नाचा ॥ ५७ ॥ गुरुहु निश्चर आन ॥
ऐसे कल्पुनेणे चिमन ॥ सेवा सकळ अनुष्ठान ॥ वेद प्रमाण सकेवाक्य ॥ ५८ ॥
देखो नितोवाला श्रीगुरुनाथ ॥ माथा टेविल्गावरदहस्त ॥ आ ॥ अंगा मिळणे
बहुल ॥ सुखिजालो तुसेभि ॥ ५९ ॥ विवेका सारिखा जोडणे गुरु ॥ चित्त ॥ सारि
खा ॥ शिस्य चेतुरु ॥ जिवा सारिखामी मउदारु ॥ हे दुर्लभ लिहिलो कि ॥ ६० ॥ कुकि
नरुपसपलिष्ठ ॥ धनिक उदार प्रिय बोलनां ॥ सर्व सम्ने वरि आगर्वेत ॥
हे दुर्लभ लिहिलो कि ॥ ६१ ॥ पुत्र सुपय पितृभक्त ॥ शास्त्रवेद वैराग्य भरित ॥ ब्र
ह्मज्ञ ॥ निश्चुचिश्मंत ॥ हे दुर्लभ लिहिलो कि ॥ ६२ ॥ आगा परिसा विश्वेश्वर प्रतिमा ॥
देवे जोडे द्विज सत्तमा ॥ भरितअपी गुरुचे प्रेमा ॥ तेस मिथ्यतु यकु ॥ ६३ ॥ नसांग
तों जाणे तोइश्वर ॥ नमगता देतो नेरश्वर ॥ सांगीतल्या करी करणी साल ॥ लोजा
संध्यापरि पशु ॥ ६४ ॥ सांगितल्या जिवि नधरि ॥ तो पाषाण नरशरिरी ॥ म्हणोनि सकळ
फाळ्ना सिखरि ॥ कळस चातुर्य जाणिजे ॥ ६५ ॥ नलगनिकी गळका मवे ॥ मनासा
किवाराहटो जाणे ॥ सकळ चिश्च जिंतिले तेणे ॥ वसिकरणे नकरिता ॥ ६६ ॥ असो ऐ
सिचातुर्येमुर्ति ॥ आनाचेउनि वर दउचिती ॥ आश्रमा जाउनि सहज स्थिति ॥ वि
हिलपाळणकरावे ॥ ६७ ॥ संततिसपंतिउपाणि हान ॥ पाहोनि हो सि सुख संपन्न

यावरि चेर गोरखनाथ ॥ स्वामी माझा बोळविला ॥ ६९ ॥ तेयो चरछळा सिजाउनि आपा
ति घे सिष्य केले आपण ॥ याचे निसंग चथर्माचरण ॥ गुरु चित निवर्तेता ॥ ६९ ॥ गुरुग्र
हि भोगिले फेरा ॥ म्हणोनि काज सिष्या ॥ पंजरामाजि पक्षि जैसा ॥ तैसे पाकि सिष्या
से ॥ ७० ॥ तैसे लक सिष्य लुमति ॥ रहिटेउनी रक्षणा ठीर्थी ॥ जन्मो जयाच्या संत्रा
प्रसिया धिमा निश्चय गेला ॥ ७१ ॥ तत्त्वकाते पाचारुनि ॥ म्हणे गुरु लुव्य गुरु चिपत्नी
माझि आज्ञा लुजला गुन ॥ आलो ठजाणास वेथा ॥ ७३ ॥ याला भी माझे मनोरथ ॥ पूर्ण
करावे न विचारिला ॥ जैको नियरे आछादिल ॥ कर्ण द्वार हरलकि ॥ ७२ ॥ तेणे मात्रा
गमन दोषा छी ॥ ऐसे प्रगट बोलिजे वेदि ॥ जासो निज्ञा धिकोठ विविधि ॥ तेगुरु अ
ज्ञा हि आसेना ॥ ७४ ॥ म्हणोनि भुंजगा न घालि हात रुदो निगेला व रित ॥ यावरि
श्च रूप काळ्यां चिलये ॥ वेद हि म्हपालला ॥ ७५ ॥ यावरि सर्वज्ञ जाणोनि सकळ ॥
म्हणे ईश्वरांसि केवळ ॥ ऐसा निर्वीकार निर्मळ ॥ बिरुळा आसेल यरवदा ॥ ७६ ॥ व
निता मनोरमे यकांति ॥ आपण होउनि पुत्र मागाथि ॥ तेथे जो निर्वीकार चिंति ॥ तो धं
र म्हणोये ॥ ७७ ॥ विजनि भरलि कनकलोळा देखिल्यावर कोटीपाया ॥ ऐसि निलोभि
ता नाहि ॥ तो चित्रांकर म्हणोये ॥ ७८ ॥ जय आधिन मन इंद्रिय ॥ न माउ निस्तरदुः
खाचया ये ॥ कळि नाहि परि क्रोधानय ॥ तो चित्रांकर म्हणोये ॥ ७९ ॥ सकळज्ञा
नियमाचाराचे ॥ जितेंद्रिय देवाधिदेवो ॥ ऐसा मासा निश्चय भावो ॥ सत्यसत्य त्रिवाचे
॥ ८० ॥ जया इंद्रिये नेम नाहि ॥ तो श्वान कुकरा समान पाहि ॥ आपपरावे हे का
हि ॥ न विचारित धीकारि ॥ ८१ ॥ ऐसे मानवो निमनि ॥ सिष्य बोलविला आसणोनि ॥
यरु म्हणे काहि वचनि ॥ गुरुदक्षणा म्या देणे ॥ ८२ ॥ गुरु म्हणे गा सर्वपावले ॥ सि

ब्यह्मणें मज न घटे भले । यावरि ऋषियेनें विचारिलें । इच्छित काह्रियासी ॥ ७८ ॥
तसेष पुष्पभुपाळपति । दिव्यकुंडले इंद्रलिकाणि । ते मज दिधालिया आणुनि गुरु
दक्षणा पावलि ॥ ७७ ॥ आजि पासुनि चौथे दिनी । मागत्यकडे समर्थ परछानि लेउनि ॥
बैसे पुण्याहवचनी । पसेके तेपाहिजे ॥ ७८ ॥ अमृतश्रावि माहा मौल्य । पद्मराग
मणिकुंडले । ते मज देसि तरि पावले । दक्षणा रुपा गुरुचे ॥ ७९ ॥ आता हे घेउनि या
लिलायल । मागि दिखिला वृषभ थोरु । यावरि आरुढला नरु । तेणे गोमय वो
पिले ॥ ८७ ॥ म्हणे हे भक्षि रे बाळका । येरे आज्ञा नेसे विले देखा । हस्त पुसनिया मु
रव्या ॥ खेरे पुढाचा मके ॥ ८८ ॥ वने आट ब्यउल घुन । पावला पुष्प राजाचे भुवन ।
ग्रहा जाउनि असि वचन ॥ प्रभु त्या गिदि घले ॥ ८९ ॥ पुष्प म्हणे चो ज अद्भुत । मनु
ष्य कैसे निपातले येथे । वंताल पुसता यथार्थ । गमन हेतु सांगिल त्या ॥ ९० ॥ गुरु
चिया कार्या आलो बोलु । दुरि पातला थोरु निया धीरु ॥ ग्रह म्हणे यावे करु । आ
रुने काज सर्वथा ॥ ९१ ॥ सांग जाय ग्रहा आतोता ॥ पनि माझि पति हुता ॥ तिप
त्ति सांगोनि रंताला ॥ मागा नि घइ केडले ॥ ९२ ॥ उत्तंक प्रवेशोनि केतवि । तध
ग्रहा मा जि न देखे का पि । बाहेर पातला परतोनि । म्हणे केउति न पावे ॥ ९३ ॥ यल हे
णउ विरुआ सल मुख ॥ आचिरपदथ हस्तके ॥ आचमन करुनि साम्य का जाइ
जणे मागुता ॥ ९४ ॥ जाउनि पाहे ग्रहच्यारि । तव देखिलि जैसि गोरि । नमस्कारु निजो
उिकरि । समाचारु निवेदि ॥ ९५ ॥ तु सीयाकुंडलाचा काम । मासीयासुंदर्यांचा काम
मा झियागुरु रुपतिसि परम । वालागी पातलो दुर्गमा । महापंथ क्रमोनि ॥ ९६ ॥ ति
ने पतिचे आज्ञा करुनि ॥ ब्राह्मणा कुंडले दिधलि दान ॥ पुष्प म्हणे गुह्य सांगणे

ली

तेतुआइक ब्राह्मण ॥ ७७ ॥ तिने पतिचें अन्न केलें ॥ हे कुंडले अमोल्य तेजें ॥ सुरुचे केले लक्षक
नागराजें ॥ मागितलि परमन मासे ॥ ने द्विज मै श्रीसां उनि ॥ ७८ ॥ ते तु जसिं त र निल दु मैति
सौभाग्यु निजाइजे पधि ॥ मागु तिह्मणे आजिचे तिथि ॥ श्राध्द मासे संपादि ॥ ७९ ॥ संक
ल्प सांडु निक क्षोक मंत्रि ॥ आन्नवादी ना जाला पात्रि ॥ नि वालें देखोनि परम श्रोत्रि ॥ उ
त्तंक कोपें कोपला ॥ ह्मणे पर्युषित आन्न ॥ श्राधिं देसि मज हेळण ॥ न काढ जा ऊनि
या नयन ॥ अंधहीं इमदांधा ॥ ८१ ॥ रहस्त ह्मणे मिं भोळ पणें ॥ सहसा कापसका दिलेणे
न विचारिता ताकुं लधे ॥ अनर्थ केला मजवरि ॥ ८२ ॥ निरापराधें श्रापिले पाहि ॥ तरि अ
पसहिन होसि तुहि ॥ ब्राह्मण ह्मणे लटक नाहि ॥ पात्र दृष्टि विलोकि ॥ ८३ ॥ महस्त राध्य
नि पाहात ॥ तव अनुक्रअणिकेश युक्त ॥ हे देखो निं ... कित ॥ राध्यकाहि न बोले
॥ ८४ ॥ उत्तंक ह्मणे रहस्त ले ॥ आन्न केश सीन माने ॥ देउनि लु चि सापो त कीलें ॥ बोल
सिहा अधर्म ॥ ८५ ॥ पुष्य ह्मणे मुत्तकेशी ॥ भार्यें ने निवेदिल अन्नासि ॥ ते मीनेणे कोप
रासि ॥ क्षमा कीजे सर्वथा ॥ ८६ ॥ ब्राह्मण बोले उशाप राळ्द ॥ क्षणा यक होउनि अंध ॥
मागुति चक्षुमंत शुध्द ॥ होसि सर्वे रवणा ॥ ८७ ॥ माते शाप दिधला रोषें ॥ सापरिहारि
प्रसन्न तोषें ॥ यरु ह्मणे ॥ नव नित ऐसे ॥ ब्राह्मण हृदये बोलिजे ॥ ८८ ॥ क्षेत्रियाचें हृदय
जाण ॥ अतिकठोर करु पाहीन ॥ याच्या गिउशापाचें वचन ॥ मज परसुनि लपवनी
॥ ८९ ॥ उत्तंक ह्मणे असुधान्न ॥ अस्लनामा तेरापवचन ॥ बाधि नाहे सह्स जाण ॥ कुं
पे ब क्षेगुरुच्या ॥ ९० ॥ ऐसे परस्पर पाहि ॥ समाधान करुनि ते ठायि ॥ कुंडले घे उनि ल
व लाहि ॥ उत्तंक लेथोनि निघाला ॥ ९१ ॥ वाहेरे जात आस या न वेगे ॥ क्षणा क्षणा पाहे तस
मागे ॥ त अंतर पाठि लागे ॥ क्षपणिक ये कयतसे ॥ ९२ ॥ काहि दृष्टि पडे न पडे उत्त

४

श्री ... कीर्त

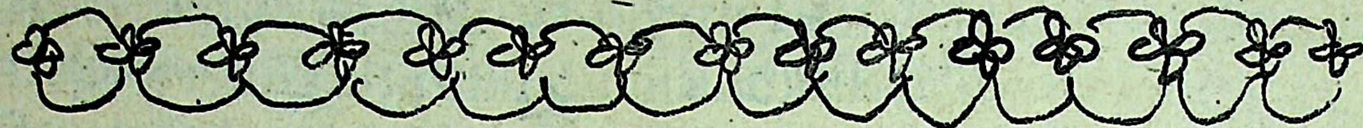
कधावघेतलिपुढे॥ कंटकोषलाउरक-चाडे॥ त्वधानजैपालला॥१४॥ तवतक्षकें वा
रा केला॥ कुंडलें घेउनि सहसा गेला॥१६॥ देखोनि उत्तंक धाविन्नला॥ पाटिला गेलच
लाहि॥१७॥ ब्राह्मणाला गळादेखोनि पाठिलाग तक्षक निघे महिच्या पोटि॥ पाताळभेदुनि
सेवटि॥ नागभुवनि प्रवेशे॥१७॥ उत्तंक हा वेभरला पाठि॥ १८॥ काष्ठधरुनिमु
ष्टि॥ खाणोनि आदरिलि पुष्टि॥ धरित्रि चिआवेशा॥१७॥ हेस्वर्गींहुनि आमरनाथे॥
दृष्टिदेखिले क्रुपाभरित॥ प्रेरिला जालाचे वज्राने॥ छेदु धरित्री पाडावया॥१७॥
आज्ञा होता वंज्र दंभोळि॥ घराभेदिलि जगलिनव्हळी॥ उत्तंक प्रवेशोनि येबिळि॥
नवपातळ पालला॥ २०॥ देखे सर्पाचि दिव्यभुवने॥ पक्षीणिचि क्रिडिनिरक्षाने॥
ब्राह्मणाची भयअंत:करणे॥ नागवर्णन करि नले॥२१॥ तव अश्चर्य देखोनि नय
नि॥ तंतुकार स्त्रिया दोन्ही॥ श्वेत कृष्ण तंतु धरुनि॥ उकलिता ति निज करे॥२२॥
चक्र येक बारा धारा॥ तया उचक्र॥ षटकुमार॥ पुरुष यक वेसलाथोर॥ प्रतिष्ठि
त असलि॥२३॥ तेपोस केतरा उनि करि॥ सुपाइ द्रा चस्तवन करि॥ तो रुप पाहुंय
अवसरि॥ इच्छा तुझि पुरवित्॥२४॥ आज्ञा वंदु निब्राह्मणकुमर॥ जोडला करितु
स्व निर्भरा पुज्ज आदरिला सुरेश्वर॥ राबद्रसु मनिष्यापुले॥२५॥ सुपोउपयजय
सहस्रनयन॥ रौष्यदळणा शो चिरमणा॥ श्रेणि क्यावरितु सीअसा॥ ध्वजाग्रा
य भिरवति॥ २६॥ मर्यादि रेख दुष्किअ रतिे॥ सिंधु सियावयाके चिम्रा ॥ प्रिउदयाचळ
गभस्ति॥ उभारा कोनिरांति॥२७॥ भुजोव्ळ कुंभधरुनि सिरि॥ रोमलिहे कळ्माल

लय वापिका दृष्टिपादृष्टि॥ कुडले ठेविलि तिच्या कंठि॥ माजिउ
तरोनि अंगुष्ठि पुष्टि॥ तोय प्राशन अवं करि॥३४॥

चरि ॥ न घेउ तरावयाति जे भरि । धैर्य पाविल्या नव्हे ॥२०॥ ग्रिष्म काळ सरता क्षणि ॥ अ
रुनिळ वर्णा छिंच पानि ॥ नयिसिंपोनि याधरणी ॥ धान्य मंडित कारवि ॥२१॥ न्यय
काळ मारक परम ॥ ते आयुष्य आसतां वाकडि होन ॥ करुनसके यथ नियम ॥ तुसे
आदेश आलोट ॥३०॥ चक्रवर्थ त्रिभुवन गोसा ॥ छत्र रामुनमुचि हंता ॥ गौर वर्णी
धरिवें दिना ॥ कृष्णाजनि साजिरि ॥ तिहि लोकि समासय ॥ प्राणि राहे अगर गुसाले
तु जाणसि यथार्थ ॥ सर्वज्ञाना ॥२४॥ तेजनपालि ॥३२॥ वसिया स्वामी सर्वज्ञ समर्थ ॥
कृपा किजे मज अनाथा ॥ सद्गुरु वरद कुसुमि माथा ॥ अरे माझा लेकरि ॥३३॥ ऐसे
स्तवन करितां गाढ ॥ श्वेत अश्व देखिले पुढे ॥ पुरुष लपोरे बाळका तोंड ॥ आपान
याचे फुंकिका ॥३४॥ वदनानि के आपण फुंकि ॥ तव कर्णी नयनि सुखिना सिकि ॥
ज्या कधड कल्या प्रलेकि ॥ धुम्रे पाला कोंदले ॥३५॥ सर्प हि लाति माडला प्र
केया ॥ मस्तक साडिति कोल्हावाये ॥ ते वक्री थाके कदे तू नयो ॥ कुंडले अ
णुन देतसे ॥३६॥ अपोम जसा पडलि कानि ॥ तुझी ऐसि नसंग कोपही ॥ आ
ना क्रोध क्षमा करुनि ॥ कुंडल घेउनि जायिजे ॥३७॥ लक्षक सांगुन भेटीयावृ
रि ॥ पुरुष आणे वाळु याविरि ॥ अरुदोमिनि विघ्न करि ॥ गमन पथ बाळका ॥३८॥
येरु वदुनी याकरावकर्ध ॥ कौतुक पात यापान लगे ॥ वेदश्रम पावला वेगें च
तुर्थ दीन सोहळिया ॥३९॥ नमस्कारुनि मठ परच्छानि ॥ कुंडलें पुजिले आ
चार्य पाहि ॥ श्री गुरु पुसे बाळका नयनि ॥ आश्चर्य कोहि दे । खिले ॥४०॥

सिष्यसमुळकथीलिकथा ॥ नंकळेमनसांगिजेताता ॥ श्रीगुरुअणेमागी
जाला ॥ पहिलेभेटला वृषभेसि ॥ ४१ ॥ तोजाण इंद्रु आमरपती ॥ जाणावृषभ
औरावतीमु सपुरिसीबोलेहाती ॥ तेपीयुषप्रासिळे ॥ ४२ ॥ तेपे विषेळ
पिबाधाभुवनि ॥ कल्याणजा तनुजऋगुनि ॥ मासापरमतमिश्रलपा नि ॥ औण
तुसनिवीपिरक्षीळे ॥ ४३ ॥ तंतुकारिणिदोधिजनवनील ॥ तेजाणधातावि
धाता ॥ दिवरात्रिगमनसता ॥ श्वेतकृष्णतंतु ते ॥ ४४ ॥ चक्रजेद्वादसाधार ॥
स
तेद्वादसमासेसिसंसार ॥ साहिऋतुतेपद्कुमर ॥ प्रसक्ष्द्रिहि दाविले ॥ ४५ ॥
पुरुषजाणपर्जन्य ॥ असेसांगुनीअक्किगंन ॥ अश्ववरुणेदुताशन ॥ अहे सिष्या
सिदिधले ॥ ४६ ॥ माधावेळनितदारकर ॥ वरदेसर्वश्रेयस्कर ॥ यापरिबोधपिला
कुमर ॥ उत्तंक तेणेस्वाश्रमा ॥ ४७ ॥ तोस्वाश्रमिविश्रामान ॥ नक्षकक्षेशस्मराणि
जाण ॥ कुरुक्षेत्रावरिजाउन ॥ जनमेजयातेभेटला ॥ ४८ ॥ तेपोरायाविवेकचे
तुरा ॥ सकारणअर्थसांजेनिपरा ॥ नीःकारणकर्माचारा ॥ करिताकोणपुल
पार्थ ॥ ४९ ॥ तुझिया पितयाचा घेतलाप्राण ॥ त्यासर्पाचकरावदहन ॥ हेनेदति
स्मरण ॥ रुवेश्वरकोणीही ॥ ५० ॥ तेसाभिनुसुणचमारंभ ॥ राजहृदयीअ
जोनीक्रोध ॥ सर्पसत्राचाआरंभ ॥ करिताजालातोअेका ॥ ५१ ॥ काथिलेपवि
त्रपुण्याख्यान ॥ ससिष्याचनिजलक्षण ॥ गुरुभजनपावि जल्याण ॥ धर्मार्थ
कामार्थमोक्षादि ॥ ५२ ॥ इतिश्रीभारतभारतेआदिपर्वणी ॥ पुटपोलोमआख्या

क ख्यानी ॥ वद्दस्त्रमु केस्वराथिवाणी ॥ तेपंडितिप रिसीजे ॥१५३॥ इति श्रीभारत
आदिपर्व पि त्रिष्याख्यानो नाम द्वितियो प्रसंगः ॥२॥ श्रीकीस्नार्पण
मस्कंग ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥ ॥०॥



॥श्री कृष्णपरमात्मनेनमः॥ श्रीवेंकटेशायनमः॥ सौति ह्मणे सावधान॥ शौनका तुझे पूर्वज कथन॥ भृगुवंशाचे महदाख्यान॥ परमपवित्र परिसता॥ ॥१॥ ब्रह्म्याचे दाहा कुमर॥ मरिचि अत्रि अंगिरा चतुर॥ पुलस्ती पुलह क्रतु हे थोर॥ अणिक्हि महामुनि॥ वसिष्ठ आणि वा दक्ष प्रसिद्ध॥ दाहावा तो देवर्षि नारद॥ ब्रह्मनिष्ठ परम वंद्य॥ जो कां अंश विष्णुचा॥ ३॥ थांतला सा वा भृगु आपण॥ तयाचा पुत्र नाम च्यवन॥ याचा प्रमिती नंदन॥ रुरु जाण तयाचा॥ ॥४॥ या रुरुचा सनकसुमति॥ याचा शौनक तूं यक्षीति॥ परम धार्मिक विवेकमुर्ति॥ ५॥ तया भृगुचि पवित्र वनिता॥ पुलोमा नावे पुण्य कसरिता॥ आश्रमि ठेउनि निघाले पिता॥ अनुष्टानालागि गेले॥ मांगा राक्षस महा क्रुर॥ आश्रमा पातला कामातुर॥ कुंडि देखोनि वैश्वानर॥ बोलता जाला तयासी॥ ॥६॥ ह्मणे इचे निज नके बोलि॥ पहिले मज लागी देउ केलि॥ या वरि भृगुने वो पिलि॥ असत्य धर्मे सर्वथा॥ ७॥ तरि तु यथार्थ बोल रा द्धु॥ होय कि होय मा से वधु॥ संकटि पडिला जातवेदु॥ उत्तर काहि स्मरे नां॥ होय ह्मणतां दुराचारि॥ हरिल नेइल बळकारि॥ नो हे ह्मणतां माझीये सिरि॥ असत्य काहि स्पर्शेल॥ ९॥ पावक ह्मणे पुलोमा तंवि॥ पहिले मातु वदला पेसी॥ घडे न रिकि यारुनि मानसि॥ ब्रह्मसुत्रप्रमाणा॥ १०॥ या वरि पाणी ग्रहणविधि॥ भृगुने वोपिलि लावण्य निधि॥ ईतुके जाणे नि त्रिशुद्धि॥ अणि काका हि नाही॥ ११॥ साक्षी चा आश्रयो तोला काहि॥ राक्षस धावि नला तव

लाहि। पुलोमा वेदुनीया बाहि॥ बळे घेउनी चालिला॥१३॥ आक्रंदुनी राक्षसेवे शी॥ वाराहरूप धरिलि कर्कशा॥ पुढिवाढुनि नेतां त्रास॥ पावोनी जे खिन्न केले॥१४॥ थाके गर्भ गळाला पाठी॥ तो पडला पृथ्विवरती॥ तेज जैसा सुर्य कोटि॥ किंवा पावक प्रज्वळ्या॥१५॥ तो हे कचहुनी गर्भी ले॥ पुलोमा करि रुदन ते॥ गगनि देखोनि ब्रह्मीयाते॥ दुःखवार्ता निवेदि॥ तम गर्भ प्रभादे खोनि नयनी॥ राक्षस भस्म जाला तत्क्षणि॥ जैसा रुद्र चक्षुचा वन्हि॥ स्पर्शिला कामदग्धला॥१७॥ लिचियान यनोदके विमळ॥ गर्भ धरि प्रिपवित्रजळ॥ नदि लाटलि असि विशाळ॥ नदि सारा जियेनावो॥१८॥ भृगु पातला आश्रमाते॥ तव देखे घरे रिक्तिप्ते अनर्थ भुता हृदयि पीटोनि हाते॥ पृथ्विवरि पडियला॥१९॥ धाउनि वन्हिला पुसलु॥ कोण केला हा अनर्थु॥ येरे सांगील स्वार्थ तानु॥ राक्षसाच्या चर्तला॥ साक्ष पुसिलि मज लागुनै॥ असत्य करु नि बोलेला वचन॥ यावरि दुराचारि जाण॥ घात करुनि पळाला॥ ऋषि बोले क्रोधायमान॥ या सत्यासि काय घेणे॥ तो न्य थरु निधे नुदावणे॥ हारिले जैसि खाटिका॥२२॥ असत्य वदुनि पुढी वाहिले॥ करिला जोड सर्व सुकृत॥ असत्य घडे पातकाचा घात॥ सांडुनि पाप आसनै॥ जे ण प्रकार परोपकारु घडला॥ चिंग पवित्राचा का पराचा पिडाकारक थोरु॥ तो धर्मेचि अधर्म॥२४॥ असत्य चुक विप्राचे मरण॥ असत्य घडवि जे आनाथला

१ १ ॥२३

ग्न॥ असह्यसंकटिं अलरक्षिपा॥ कि जेनोहाधर्म॥२५॥ म्हणोनि छलक्षा कुना
मा॥तु चिराक्षसपापकर्मी॥ अन्याशापघेडा अधर्मा॥ होयिसर्वभक्षक॥२६॥
मग प्रोक्षोनि मंत्रोदकें॥ उटविताजाला त्रिबाळक॥ चवलाम्हणोनि कवतु
कें देख॥ च्यवननामें टेविलें॥२७॥ शापापमानें कसला॥ तेयेला नदिसे त्रिभु
वनि॥ जटरिमंदला जटराग्नि॥ तेणें तळमळ समस्ता॥२८॥ व्यापार अकर्मानि
अनळ दोन्ही सुखें सांकिला प्रबळ इंद्रादिक आमरसक॥ पिडोत्ना गत्नेउ
पवासें॥२९॥ तें च किहरि हर ब्रह्मादिक देव॥ ऋषींसी प्रार्थितें जाले सर्व॥ वो
पुनिउ शाप गौरव॥ वैश्वानर सुबाविला॥३०॥ म्हणोनि हा देव वगत्र॥ सर्व
भक्षक परिपरम पवित्र॥ हव्यस्वाहा स्वधा चामीत्र॥ व्यापार अनुष्टि॥३१॥
आसो त्याच वनक्षा॥ विपाहिरपुदासु कन्याचा टाइ॥ पुत्र जन्मला पवित्र
देहि॥ प्रतिति नाम तयाचें॥३४॥ असो साचेंवें नभांगीं वपाहीं॥ याश्रतिनि
च वियदिक॥ घूलाचि पुत्राकुरीविरुढलें देखा॥
रुरु नाम तयाचा॥३३॥ रुरुसि प्रमद्वरे वटाइ॥ सन कपुत्र जन्मला पाहि॥ तिय
प्रमद्वरेच काहि॥ चरित्र ऐकारुषिहो॥३४॥ गंधर्वराज अप्सिमेनिका॥ क्रिडा
र्थ होपा निघालि देखा॥ यकालापातलिं भुलोका॥ स्थुळके शिरुषिवना॥३५॥
तेथे पानक्षा॥ रशिति क्रमें॥ क्रिडकरितां सुखसभ्रमें॥ गंधर्व रेतें कन्या जन्मे
जातिपक्षी पिदिव्यस्त्रि॥३६॥ क्रीडासंपुर्ण जाहलिया दोन्ही॥ वैसामिचालि

ळि विमानि ॥ कन्या सांडिलि सियेवनि ॥ तेरुषिने देखिलि ॥ ३७ ॥ नेउन आपे पा
ळपा करिता ॥ रुरु पावले थे अवचिता ॥ देखले स्वप्निं मथा ॥ वस्य जालि
ता काळ ॥ ३८ ॥ कामानळे संतप्त देखा ॥ म्हणे हाय जनि सांगे जनका ॥ स्थुळके
शी कुमारिका ॥ परम सुंदर नेटकि ॥ ३९ ॥ त्याते भज करीसि [illegible] अंगना ॥ तरि
चरसी नेम प्राणा ॥ नघेउ तरी हा देह जाणा ॥ सिघ्र काळे सांडिन ॥ ४० ॥ प्रमि
तियउनि त्या वनासि ॥ प्रार्थिले स्थुळके शीरुषि ॥ कन्या मागुनि कुमरासि ॥
वाग निश्चये नेमिले ॥ ४१ ॥ भगदेव नक्षत्र पाहि ॥ लग्न धरिले विलंबे का
हि ॥ सुख सप्तम अवलागहि ॥ सामुग्रि नेमांडिले ॥ ४२ ॥ कन्या असता पित्या
पासि ॥ भक्तव अकस्मात येक दिवसि ॥ काज करीता आश्रमवासी ॥ सर्पद्रिष्टिनि
य जालि ॥ ४३ ॥ त्रिय प्रेम आक्रिंगुन ॥ करुकरी रीघे रुदन ॥ [illegible] पात्रावण्य अवळ
पिटि वदन हस्तके ॥ ४४ ॥ म्हणे रुदाल रविनंदना ॥ रूपने जिव विभ्रम अंगना ॥
म्याजे उल्या सुकृत घना ॥ पालटा इच्या देतसे ॥ ४५ ॥ संत महंत साधुजन ॥ देखु
नि आदर प्रत्युथान ॥ केले असेल तरि प्राण ॥ रिघो परते निर्धारिसी ॥ ४६ ॥ क्षमा
चित्त गाढ त्यक्षिणे ॥ लो निर्मुक्त सुप्रदाने ॥ केला असेल तयापुण्ये ॥ प्राण परतो
रिरी ॥ ४७ ॥ मिथ्या भक्षिका सि विंगाहि ॥ ल्माउ निंदु र्जना करिता कंटाळे थे
पवित्र सुदत्या पाठि ॥ असतिल रीहवत्वोका ॥ ६ ॥ हिन परदेसि पिडला रोगे ॥
त्याचा साभाळ आपुल्या अंगे ॥ केला असेल तरि धावेगे ॥ प्राण परलो धारिरी
॥ ४९ ॥ आनाथ अनाचिया दहना ॥ योव निंद रिद्राचिया लग्ना ॥ सांहे असेल केले

करुणा॥तया प्राण होयपरति॥५०॥ह्यसुकृत श्रेष्ठ मुखे॥ते किल्या अयुध्यसंवर्ध
के॥जैसा प्राण गलिया पिंपुरखे॥निघ पर तो निशरिरी॥५१॥तेसिया पुण्याचा परिम
ळ॥गला गला असे लमज अकुमाळ॥तरि हे आयगिणवल्ह चि॥वाचोनि पो निबि
द्रापतु॥५२॥शोक करिता मिरजनि॥दुजवारिता नाहि कोणी॥अंतरिक्ष विमान
यानि॥देवदुत जाल होते॥५३॥तिहि खुंटुनि विमान गति॥पाहोटले तया चि रखिति॥कृ
पाराव्द अैको मिचिति॥कक्वा किल्ले रुपाकु॥५४॥अंतरे यउनी बोलते जाले॥अर्धअ
युष्ये आपुले॥इचे देह होये पहिले॥अैसा अर्थ विचारु॥५५॥यम अमुचा मीत्र जाण॥
सहसा न मोडि अमुचे वचन॥यासि प्रार्थुनि इयेचा प्राण॥मागो निर्देहि परतल॥
॥५६॥रुरु के टांगण घालि क्षिति॥चरणं गुंथ धरुनि रोति॥अर्ध आयु प्रदान हाति
उदक सत्योघातले॥५७॥तिहि जाउनि सिघ्र गति॥धर्मराज रक्षणापति॥प्रार्थु
नियापरम भक्ति॥समाचार सांगीतला॥५८॥अैकुनि आदिरा चवाळ॥दुतदउकेदी
न दयाळ॥ह्मणे तुमचा राब्द सुफळ॥केला आह्मी सर्वथा॥५९॥तुमचिया वचना
कारण जाणे॥याचे अयुष्ये पूर्ण॥भायी तेहि यासमाने॥अयुष्य वंलिहो सुखे॥६०॥
सावध जालि प्रमद्वरा॥रुरु चिया सुख सागरा॥पार नाहि सा अवश्वरा॥स्तवन करि
दुताचे॥६१॥अैसे अविस्त्रय संसारि॥धन्य धन्य परोपकारि॥सकळ किर्ती विंतासि श्री सि
रोमणि लुयकु॥६२॥जिहि आपुल्या सर्वे यत्ने॥पराच क्लेश परिहारणे॥श्रमानि पुढिल
यासुख देणे॥तो यक धन्य संसारि॥६३॥आपणा समान पुढिला पाहे॥पराचा संतोष
संतोष लाहे॥अन्य क्लेश राक्लेश तु जाये॥तो यक धन्य संसारि॥६४॥प्रेरणा करितां सं
कटि॥कृपेने आनाथ घालि पाटि॥केला उपकार न बोले वोटि॥तो यक धन्य संसारि
॥६५॥

दा

हासि

परोपकारि बरी ज्या नसता ॥ विचवा संपत्ति ना शिवंता ॥ जैसि नाके विण वनिता ॥ ज्या
थ्यता मानि सौंदर्य ॥६६॥ परोपकार विण जो जन ॥ तो जाणावा हीन पाषाण ॥ तनु त्यो
भवि शेने जाय ॥ असे मरवुनि सांडिला ॥६७॥ पर उपकारि हिन समर्थ नर ॥ तो प्रेता
चा देहि श्रृंगार ॥ माडां वाहुनि वाद्य गजर ॥ नेति सवरदलमाझीं ॥६८॥ असो पवित्र परो
पकारी गंद वहुत निजनिर्धारि ॥ त्याचिये चरण रेणुवरि ॥ हा सांडणे देह माझे ॥६९॥ ऐसि
करुनि परम स्तुति ॥ प्रिया घेउनि आश्रमाप्रति ॥ आला परि तो न विसरे चित्ति ॥ केला अप
कार सर्पाचा ॥७०॥ पिसान पाहो नित्य गरुरु सिवोपिले कन्यारत्न ॥ रुपे सर्वहि दिध
ले दान ॥ यथा शक्त्या आवडि ॥७१॥ ते होनि इक्षसा रिरवे फळ ॥ तरुपा वृक्षा सुखक
होक ॥ सर्प अपराध सर्वकाळ ॥ आठवुनि संतापे ॥७२॥ तो द्वेष धरुनि अंतरि ॥ लोह दंड
करुनि करि ॥ दृष्टि पडिल्या सर्प मारि ॥ विळ चारवळ्या हाणुनि ॥७३॥ कोण्ये येके दिवसि
२ कोडे ॥ वनें उपवनें शालिका हिंडे ॥ तव देखिला अजगर पुढे ॥ माहाविशाळ देखिला २
॥७४॥ दंड पडता कुनिकरि ॥ चाव घालुनि धावला शिरि ॥ भुजंग करुणालतरि ॥ सावधलो
इ ब्राह्मण ॥७५॥ अपराधिया ते पुण्य पुरुषा ॥ प्राण गेलिया नेदि त्रास ॥ निरापरा
ध मारिसी नारा ॥ तू कालपाहत नेसि ॥७६॥ कर्मे सुखदुःख भोग प्राप्ति ॥ तो द्वेष धरुनि म
नि ॥ जिवमात्राचिये ठवनि ॥ हींसा कर्म करितु ॥७७॥ ऐसे न करावे द्विजवर्या ॥ जीवमा
त्रि धरावि दया ॥ परम कल्याण होय तया ॥ सर्वकाळ बाढले ॥७८॥ सर्व भुति परमद
या ॥ भुतापासोनि अरिष्टे तया ॥ कल्पांति हि ना हियाथा ॥ वचन माझि यथार्थी ॥७९॥
ऐकोनि अजगराचि मातु ॥ चमत्कारला ब्राह्मिति तो सुतु ॥ उगा राहिला हातु ॥ तो

अवतिलामाधोर ॥८०॥ लेवलु कोण कवणिय ॥ विधि ॥ ययालामसदेवाचि
बंदि ॥ पडल असंसिलमज आधि ॥ सांगीतले पाहिजे ॥ ८१ ॥ उरगहणे खग
मनामा ॥ अग्नीहोत्रि ब्राह्मणोत्तम ॥ खेड सापिला ऐसा कमी ॥ आगविनतेऐ
का ॥ ८२ ॥ तपिकरित आसलाजपु ॥ करु निवस्त्रा चानिशात्सर्पु ॥ समीपटेविलामहाक
पु ॥ पावलाजाहलातपष्ठि ॥ ८३ ॥ सर्पलणोनिहाक ॥ देताधाविनले विराइलोकपु
त्रितिमजाण तासकलिक ॥ हास्यकरुलागले ॥ ८४ ॥ विषादमुनिसिचढला क्रोधुप
क्षेपाहदुर्जना अमयदि ॥ योग्यायोग्यनणोनिमंदु ॥ चेष्टाकरि ऐसासि ॥ ८५ ॥ राजा
कोपिनपस्वीसाधु ॥ बलिष्ठलिश्री नपसिधु ॥ इहिकरिलाहिविनोदु ॥ परलोनिराप
णनकरिति ॥ ८६ ॥ लेणेनिअज्ञासि विनोदकरणे ॥ हाअनर्थमोलेघेतला येणे ॥ अ
जगररारिधरलनी प्राणे ॥ दुःखभोगि चिरकाळ ॥ ८७ ॥ तपेशापभोगिलेराम ॥ असो
हेलुवासांडोनिहिंसा ॥ सकलश्रुतिमेहेसरिसा ॥ करिलासंतोषपावसि ॥ ८८ ॥ ज
न्मोजयाचिमहासत्रि ॥ सर्पजळतापावकचत्रि ॥ लेणेआस्तिकमहामंत्रि ॥ राखिला
जालाकपाळु ॥ ८९ ॥ तेसिदयाकलनिनृपा ॥ विश्वरूपावासुदेवा ॥ भजावेहेसर्वी ॥
साधनाचेनिजवके ॥ ९० ॥ लयाअस्तिकाचेचरित्र ॥ ऋषिचामुखेअतिपवित्र ॥ ऐकेसिते
व्हालुसश्रोत्र ॥ लपार्त्ते निघनिल ॥ ९१ ॥ प्रार्थिमिमागताउपाप वचन ॥ तोहणेतरुचेद
रनिह होलक्षपीलकाळजाण ॥ मनुष्यदेहनुपावसि ॥ ९२ ॥ ऐसेबोललअसलापा
पाहाहे ॥ भुजंगपावलादिव्यदेहो ॥ परस्परभाउनिश्नेहो ॥ जानजालेध्याश्रम ॥ ९३ ॥

इतिश्री महाभारतअदिपर्वणि॥नवरसरंगि वरदायिनि समुद्रेश्वराचिबोभवा
निगखंडेघानंदगांधर्व॥७॥इतिश्रीअदिपर्वणीपुलोमाख्यान तृतियप्रसंगः
॥३॥श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥०छ०॥छ०॥छ०॥छ०॥छ०॥छ



॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ शौनकादि महारुषि ॥ पवित्र नैमिषारण्यवासी ॥ श्रवणी
शपिकाकेसि ॥ अस्तीकाचि मुक्तकथा ॥ १ ॥ सौतिह्मणे प्रसंगे आले ॥ सांगेप
अधिश्यामिने पुसिले ॥ आवडिंच अवधान केले ॥ सर्वज्ञ तुही सर्वथा ॥ २ ॥
जरत्कारु ब्राह्मण ॥ करिता असता पर्यटण ॥ गर्तेमाजि अधोवदन ॥ पित्रग
ण देखिले ॥ ३ ॥ दुर्वा वल्लिने उर्ध्वचरण ॥ गोउनिलवि अधोवदन ॥ पितृगण
देखिले ॥ ३ ॥ लोंबता देखोनि आपण ॥ पुसता जाला साक्षेपे ॥ ४ ॥ तुह्मि कव
ण कवण्या अर्थी ॥ भोग भोगिता हे केशावस्था ॥ यरह्मणति व्यर्थ सांगता ॥
श्रम होइल आगळा ॥ ५ ॥ विशेष जालियासंतति हिन ॥ पितरा अधोमु
ख पतन ॥ ले आलासि त्रासव्यसन ॥ येणे काळे जाले असे ॥ ६ ॥ ह्मणे र
ज्जुचा धरला आधार ॥ चरणि दिसे क्षणभंगुर ॥ नासं तलि माझि यकन
खसप्राये उरलासे ॥ ७ ॥ तो हि ग्रहस्ताश्रम विरहित ॥ नाहि स्त्रिन पुत्र
प्रसूत ॥ तापसि होउनि तिर्थी तिर्थी ॥ अटण करि वैराग्य ॥ ८ ॥ ग्रहिअसा निश्चि
यसंगि ॥ संतति वाढविता जगि ॥ तरि वास्तव्य अमुचे स्वर्गि ॥ अक्षइ हो
तेसाचे नि ॥ थालूपात तुसि अहोराति ॥ मुशाक खंडिता दिसे दाती ॥ तो
पैकाळ सत्वर गति ॥ अयुष्य हरितयाचे ॥ १० ॥ पुससि तयाचे अभीदान ॥
तरि जरत्कारु ऐसे जाण ॥ परि सोन पुर्वजाचे वचन ॥ तव्धट तालप
स्वि ॥ ११ ॥ ह्मणे बद्धकारक मोचा ॥ मज चित्ती संबंध लागला याचा ॥ परम
केशमानुनि वाचा ॥ वदता जाला तयासि ॥ १२ ॥ ह्मणे ऐका वडील हो

तुम्ही ॥ जरत्कारु नामा तो जापमी ॥ विरक्त वासना सर्व कामी ॥ वरिहेसकंस्सा
गलसा ॥ १३ ॥ तरि मज सारिखे नामे गुणि ॥ भिक्षेसा टिपयित्रे काष्टि ॥ कन्या
चोपिलि तरि लग्न म्हणी ॥ करु निग्रहस्तम्भ ॥ होपो ॥ १४ ॥ जरे ने जालो देहव्यर्जी
र ॥ यालागि नाम जरत्कार ॥ ऐसियाले कन्यासे वर ॥ करिल कोण कव्हेन ॥
॥ १५ ॥ तेहि नामासि नामसरि ॥ म्हणा न असलिल जरत्कारि ॥ ऐसा योग घडे
तरि ॥ तुमचे वचन तेसे सुख ॥ १६ ॥ ऐसे बोलुनी जाता जाल ॥ सकळ पृथ्वी
सोधु भिवहिला ॥ नागलोका प्रति पालक ॥ तट केला मुख राजु ॥ १७ ॥ जरत्का
रि या नामाचे ॥ कन्या रत्न असेल ज्याचे ॥ ते मज भिक्षेसि घालितां सा
चे ॥ इच्छीले फळ तो पावेल ॥ १८ ॥ ऐसे वचन ऐकत क्षणी ॥ वासुगिने नापु
त्रिभगीनी ॥ जरत्कारीसी करि धरुनि ॥ जरत्कारत विसि दिधली ॥ १९ ॥ त्याने
लुजास्त्रागी बहुत काळ ॥ रक्षिलि होति सिहेवरला ॥ कित्ती अंगिकत निर्मळ ॥
ग्रहस्थाश्रम निबासपादि ॥ २० ॥ मात्र शाप परीहारार्थि ॥ उपायवदला प्र
जापति ॥ तयालागि दिधलि होति ॥ आजिन त्रीविनुजाहे ॥ २१ ॥ ऐसे
सांगानिआदरे करि ॥ विधिने चोपिलि जरत्कुमारि ॥ पुत्र जन्मला तिचा
उदरि ॥ अस्तीक नाम तपस्वि ॥ २२ ॥ जन्मजयो सर्पजा ळिता ॥ कृपेने जा
ला तो रक्षीता ॥ अणीपित्रुगण हि न समस्ता ॥ तपो बळे उध्दरिले ॥ २३ ॥ मा
तेने सर्प शापावया ॥ जन्मेजयाने जाळावया ॥ तेथ आस्तिक रक्षावया ॥

कारणकोणनिर्धारा॥२४॥ ऐसे कलुनि अंतर्यामि॥ त्र भक्त पाहत साखुली॥ लरिरूपी हो ऐकलुहि॥ संकल्पित्तसां मेन॥२५॥ दक्षप्रजापतिचियादुहिता॥ कश्यप स्त्रिया कद्रुवेनता॥ सगुणसुंदर पतिव्रता॥ परिमच्छेर दोहित्ते॥२६॥ सेवेनेतोष विलाऋषि॥ वर वोपित जाला सासि॥ सहश्र कुमर जन्मतिकुसि॥ ऐसे कद्रुतेबोलिला॥२७॥ बाळेश्र पवित्र परोपकारि॥ दोघ पुत्र जन्म ति उदरि॥ ऐसे सांगुनि वेनता करि॥ कुरवाळी शिशि तिने॥२८॥ दोघिसि वोपुनि रेत दाना॥ कश्यप गेला अनुष्ठाना॥ यथा कालि कद्रु जाणा॥ सहश्र अंडि प्रसवलि॥२९॥ तेजोमय दोनि अंडे॥ वेनता प्रसवलि प्रचंडे॥ ज्या मा जिजालयां अपीगरुड॥ देहे धरिले पवित्रे॥३०॥ वर्षश्रमल्या पाचशत॥ सहश्र अंडे उलोनि तेथो॥ सहश्र संख्या धुंधुवाले॥ माहासर्प निपजले॥३१॥ शेष वासुगि अहिलक्षक॥ ऐरायत धनजय कर्कोटक॥ कालिय मणिनाग पुंडरिक॥ ऐलापत्र इत्यादि॥३२॥ नाम सांगावि निवाडे॥ तरि ग्रसं गिग्रंथिय लिलपुट॥ असो सर्पाचि जुळ जडे॥ कद्रुव्यालि विशाळ॥३३॥ सर्पलिंथि यलिलपुट॥ असो सर्पाचि जुळजे॥ कद्रुव्यालि विशाळ॥३३॥ सपंलिथि संपुर्ण दिवस न होता हानि स्वानि पुत्र वंति॥ वेनता उतावेळ पुत्रार्थि॥ संपुर्ण दिवस नहोता हानि अंडेयेक फोडिले॥३४॥ पुत्र पाहवयाचा चाडे॥ अंड भेदुनि पाहता कोडे अर्ध शरिर चरणा कडे॥ नाहि लेपे निपजले॥३५॥ कंरापासुनिव रिळ अंग॥ आवे वि आकारिले सांग॥ मासोदके लकिल भाग॥ तव वथ

विनरा हिला ॥ ३६ ॥ तयाकोपे पुत्र अरुण ॥ माते सिवदे शापवचन ॥ अर्ध दिवस नहोता संपुर्ण ॥ अंड मोडिले पापिष्टे ॥ ३७ ॥ जिचेने द्वेषे अर्ध दिवसि ॥ अंड खंडिले निर्दयेरासि ॥ तिचाच घरि होसि दासि ॥ सहस्र अयने परीयत ॥ ३८ ॥ आता ऐक वचन ॥ दुसरे अंड करि का जतन ॥ सहस्र वर्ष होता संपुर्ण ॥ आपे आप उपजल ॥ ३९ ॥ यामाजि जन्मेल खगेश्वरु ॥ तो करिल त्रैलोक्या सि उपकारु ॥ शापदारीदुःख भारु ॥ तो फेडिल प्रतापे ॥ ४० ॥ या परि अरुण ॥ चि उत्पत्ति ॥ तो पुढे सुर्याचा सारथि ॥ जाला जयाचा अंग दिप्ति ॥ सुरंग दिसे प्रभाते ॥ ४१ ॥ दुसरे अंड निगुढ स्था निं ठेउनि कद्रुवेनता दोन्हि ॥ उच्चैश्रवा पाहावया नयनि ॥ सुर्यलोक पातल्या ॥ ४२ ॥ ज्याचा सौदर्य चिकका ॥ धवळता लोपि रजताचळा ॥ कीर्ति कमळणि चिकळा ॥ इंद्राचिये निधारे ॥ ४३ ॥ कि उदधि मथनीचा नवनित गाळु ॥ रात्रिकं सहोदर तेचाजाळु ॥ देवि पुजुनि सुपरिसळु ॥ पुष्पमाळा तेव वित्या ॥ ४४ ॥ निटने टके ठाण माण ॥ सर्व लक्षणी अतिसंपुर्ण ॥ ज्याचा चपळी मन पवन ॥ अभ्यासनिति च पकता ॥ ४५ ॥ अवलोकोनि विश्वकर्मी ॥ हृदय भुमिके अश्वोत्तम रेखो निसके तया उपमा ॥ का त्रियाचिये जाति ॥ ४६ ॥ त्यारीसह अचारि शाले ॥ त्या रियो जने अधिक तेथे ॥ निमिषामाजि दिनमणीने ॥ जो नेतसनि रात्रंदिवा ॥ ४७ ॥

शौनक म्हणे सुतनंदना॥ उच्चैश्रवा अनर्घ्यरत्ना॥ याचे समुद्रमथन निजनना॥
जाले कैसे सांगिजे॥ ४८॥ सौति म्हणे महामुनि॥ याचा उद्भव समुद्रमथनि॥ तेहि
प्रश्न सारिखे चरणि॥ निवेदिन परिसीजे॥ ४९॥ श्रीगुरु असे चा दोष॥ याचरि दुर्वा
सयाचा रोष॥ म्हणे निद्दूरा विजरा ष॥ संपत्ति पडलि सागरि॥ ५०॥ असे से त्रिदसे
दशाहिन जाले॥ तेव्हि ब्रह्मया शरण गेले॥ याते घेउनि पातले॥ मेरु शृंग समस्त
॥५१॥ तेथे असंख्य सुवर्ण शिखरे॥ रत्न मणिबद्ध सरोवरे॥ नाना महा गवि गह्वरे॥
सिद्ध साधु वसविलि॥ ५२॥ नाना वल्लि नाना द्रुम॥ श्वापद जळचर विहंगम॥ यथा
धराचे विश्राम॥ देखि आराम पाहतया॥ ५३॥ नाना सरिता शोभति जीवनी॥ अमोल
रत्नखाणी चि खाणि॥ असा कनकाचळ देखोनि॥ क्षिरावले सुरवर॥ ५४॥ जो पृथ्वीलिं
गाचि पिंडिका॥ लक्ष योजन उंचि देखा॥ रंद्ध पाणिगिळीला भुमिका॥ बत्तिस सहस्र स
योजने॥ ५५॥ तेथे वैकुंठिचा रावो॥ देखता जाला देव समुदावो॥ जेसा व्यकटाव
कि नाहो॥ लक्ष्मीचा प्रत्यक्ष॥ ५६॥ शुद्ध सुवर्ण मटप गहन॥ मणिमाणिक्य सिद्धा
सन॥ साचरि मुर्ति विराजमान॥ इंद्रनिळकीळ वर्णी॥ ५७॥ सहस्र फणि चषे छत्र॥
देखता दिपला सहस्र नेत्र॥ सहस्र कमळ सिक मळ मित्र॥ प्रभा मागो पातले॥ ५८॥
कनक चंपक गौर वर्णी मा॥ धरणी दुंदिळ श्यामा॥ उभय भागी उभय रामा॥ कनक
दंड ढाळिति॥ ५९॥ असा त्रैलोक्य कि गृहे सु॥ कळत्र द्वय अतिशो भिलु॥ मदनजन

कजगन्नाथु॥नमस्कारिला समस्त॥६०॥समुद्रमथावा परमयते॥अमृत जोडे

लअतिप्रयत्ने॥प्राप्त जालिया चोरा रले॥कैरातु मज हेरतिल॥६१॥देख सबळका

ळे येणे॥त्यासि कार्याथि साम करणे॥अभिमान सांडुनीया माने॥नयाप्रति जाइ

जे॥६२॥कार्य साधावयाचे अर्थी॥लीन होपे रवलाचिये भक्ती॥मी थोर हा सान स्थि

ति॥भलया काळी नराचे॥६३॥हीनस्वार्थाचिया सिद्धि॥अधम स्तवावे उत्तमपदि

त जैसा गुनिग्रहा अधि॥श्रेष्ठीहि परि जाइजे॥६४॥अन्योक्तिने प्रसंगी चच

तुरा॥धाकुटे काज सांगिजे असुरा॥त्याचरि अभिमानीये थोरा॥कार्य अनु

ष्ठितीते॥६५॥तेथ तुमचीपाठि रक्षित॥साह्य असे मीया कार्यार्थी॥जैसे सिक

उनि अमरनाथा॥सिंधुमथना प्रेरीले॥६६॥ते कि प्रीति आला सहस्रनेत्रु दे

सह्मपालिपुरालन राजु॥वैरोचनि स्मणे हा मित्रु॥शरण आला सण निग॥६७॥

गौरउनी असुरराणा॥म्हणे ज्याल्यागि सेविरमणा॥अलौ असाशी या कारणा

साह्ये अह्मी सर्वेश्वरा॥६८॥मथोनि सिंधुचिया पोटा॥अमृत करु निसमानेवाटा

ने मिळाने मजोन करि खोटा॥हे चिप्रमाण उभयता॥७०॥निके म्हणोनि देव

दानव॥यकत्र मिळोनि पातले सर्व॥पात्रके लानवणापीव॥गुसळ करुवया

साक्षेपे॥७१॥रवियसुद्रामद्राचळ॥विधिने योजिला अवकैसरळ॥परि

उपडुन आणावया बळा॥न चले देवदैत्याचे॥७२॥अकरा सहस्र योजने वरि

उचवीट लागगमोद्भरि॥सहस्र संख्या महिमा साजिरि॥तिलुके चिरंदि विसाळु

॥७३॥ सुरअसुरा मंदरगिरि। नुचलदे खोनि सहस्रधा धरि। सहस्र सिर्षोभि
शाकरि। अनंतातें अनंतु॥७४॥ धरणि धरु धरणीधर। देवो निआपुल्या श
रिरे। उत्सवितां मनापें धरे॥ धराविले पृथ्विपुष्टि॥७५॥ साहिनवने सिखरे
सरिता॥ संख्याकें विस्वापद जात॥ असो या परि पर्वत माथा॥ वाहुन आला
भुजंगेंद्र॥७६॥ उविला निराधीचा परि। गुडिला वासुगीच्या दोरि। देवादान
वोंहारि। धरिते जाले दोभागी॥७७॥ विस्णु संकेत सुरेश्वर ह्मणे। देयहो तुह्मी पुछे
धरणे। येरह्मण तिहि नागहिन॥ धरणे आह्मा अयोग्य॥७८॥ उत्तमे धरिजे उत्तमां
ग। अह्मा राक्षिसा मध्ये चांग। मुखाकडील आमच्या भाग। अवस्य ह्मणे देवइं॥
॥७९॥ दैस्य कोटिचिया कोटि गाढे। सो बिनले मुखाकडे। देव ह्मणति विषानंका
पुढे। वेगळे केले इश्वरे॥८०॥ यावरि अमराचिया थाटि। संख्या त्रिंशति लिनि
कोटि। पुछे दोरता करलटि। कवकिले जाले सहर॥८१॥ सागरि निक्षेपीता अव
ळ॥ भेदोनि बालिला पाताळ। लेवे विधावोनि लक्ष्मी लोळ। कमठ जाल्यात
कवठि॥८२॥ अदिकुर्म केरावें तेणे॥ वज्रपृष्टि करुनि निचणे। गीरि सडिला
संकर्षणे। वसुधा जेसि फणाग्रि॥८३॥ उध्वे डोलला मंद्रगिरि। पुटलि कंबु
चे क्रधारि। हस्ते दडनि पर्वत सिखरि। लोट अंगे अवरिला॥८४॥ विशीलअू
सला विषयव्याळ॥ चिवर्ति श्रमला जउजी व अचके॥ यांत कृपेने वेकुठपाळ
ळस्त माथाटविजे॥८५॥ तयापरि लोज मद्धे धरु॥ डोलता कवछि गिरि

चा

४

रु॥ हृदरवोनिदैसनिजैरु॥ गुसकिंतजालेआवेश॥ ८५॥ सबळ्देसाच्यावोढि॥
पडतिदेवाच्यामुरकुंडि॥ सुरानदळितिअसुरकाढि॥ मध्येलताडिभुजंगे॥ ८६॥
चित्काळहाकफोडितिमुरवे॥ पेटघालोनिमारितिझोके॥ उभयेपुरुषार्थीविवु
के॥ जविनाजवासुदल्लि॥ ८८॥ काचनवर्णिगिरिमंदरु॥ कटेमरवचधवळविं
खारु॥ गुसाकितांगमेनरकुंजरु॥ तांडवकरिसुरवरदा॥ ८९॥ चर्तुदशविद्यार
त्नदानि॥ जायानिदचंदेयश्रवणि॥ कल्पिवृक्षतापल्लवस्थानि॥ धरुनिसेवा
जाणविलि॥ ८०॥ नानाभवार्णवतारक॥ गिरीलागीरिजेचानायक॥ भांड
घीसुरात्र्असुरासकळिक॥ कासजेसत्त्लागले॥ ८१॥ भवरितांमंदराचळाभवो
रगगलाविरंचिगोळा॥ सप्तलोकसप्तपाताळा॥ तालतोडतिभूकंपा॥ ८२॥
पाटिरगडिताव्याळाननि॥ अग्निजिव्हालागल्यागगनि॥ गरळवमलासिंधु
चेपाणी॥ कटोलागलेरवळखळा॥ ८३॥ स्फुलिंगलागलाअळुमाळ॥ यत्रमु
खिपसरेज्वाळ॥ लविवोटिलासांडिव्याळ॥ विषानळभडाभडा॥ ८४॥ लसकनक
रसाचलोट॥ लविफुकारिकाळकुट॥ वर्षतादेत्याचसंघाट॥ जळोलागले
यालकि॥ ८५॥ विषमिश्रीलसिंधोदकि॥ जळचरजालिहोअनकि॥ संहार
रगलयालखि॥ माहाप्रळइकोणपा॥ ८६॥ नसंटनसागरजिवनि॥ कोळि
कुवुसकळगगनि॥ तेथेअहंचाअहंकणि॥ विश्वप्रळयोलागला॥ ८७॥
अभ्लताचिधरिताअस॥ प्रासजालेपहिलेविष॥ देविरुषिमानुनित्रास॥

४

महादेवास्तवियला॥ ९८॥ क्षोभले दिसे हळाहळ॥ क्षपो लोक जाळील सकळ॥ ऐसे जाणोनि जास्वनिळ॥ केला सिद्धु निधा विनळ॥ ९९॥ ब्रह्मपार्ण तो जगरक्षकु॥ विरुपाक्ष जाला विषभक्षकु॥ जेसा शौ ति जे साक्षीकु॥ प्रबळक्रोधु अकळि॥ १००॥ निरोपम हर विश्रामा॥ शिवे साट विगरि चि गरिमा॥ नेणे शिव पातलि निकिमा॥ निळकंठ याहेतु॥ १॥ विषबाधा शमलिया वरि॥ अवधि गर्जो निजयजयाकारि॥ वोढिते जाले मंद्र गिरि॥ परमआवेश करुनिया॥ २॥ वासुगीचा नाशिकीनयनि सुसाट धुम्र भर लागगामि॥ तो महामेघ होउनी धरणी॥ वर्षे तो गत्ना अपार॥ ३॥ धुमांवरामा त्रिमुखाग्नि॥ मेघि ज्वाळा सोदामीनि॥ तेथे कडकडाट ध्वनि॥ दिशाकुंजर बुजाले॥ ४॥ गिरि वोढिता दाटले धापे॥ धर्मसांडिति श्रमाचिया तापे॥ यांत मेघवृष्टिच्या अपे॥ सिंपुनि केले साउपि॥ ५॥ याचि प्रजन्य धारि दरवा॥ पुष्पवोसं डिजाल्लि रखा॥ सुराअसुराचि मस्तका॥ पुष्पांजुलु किवो पिजे ति॥ ६॥ भाटरा भार वनस्पति तरु॥ पर्वत डोले फळसंभारु॥ सागरि साडिति कमळधरु॥ क्षीराक्षीरा थि पुजावया॥ ७॥ स्वापदपक्षियाच पाळे॥ आश्रीत पळौते॥ पडलि तेधि ति अंतराळे॥ यहस्त गोविल्या विषम काळे॥ अश्रीत पळाले ज्यापरि॥ ८॥ मंद

५

रभरपीतल संघटे। वन्हीपटलाधउधडाठे॥ दिव्यद्रमाचिदांगे दाठे। जकोल।
गलिचौफेरि॥ ८॥ त्यावरि होमेघवर्षता॥ औषधिरसाचा विशाळ सरिता॥ सा
गरावरि संभ्रमहाता॥ कौतुक के सेवर्तले॥ ९॥ आगाध महोदधिचा जिवन
आतले धवबडु। धवपी पुढतिपटलाहुताशन॥ ज्वाळाधावति चौफेरि
॥ ११॥ सुवर्णवल्लिच साराम्रल॥ तालले येउनि मिसळता तेथे॥ भयले पु
नि अवघ घृत॥ हाले जालि तेकाळि॥ १४॥ मथिला मंदले देवदैत्य॥ सुधाप्रा
सन केले थमह आणानि कमळाकांत। देता जाला बळ शक्ति॥ १३॥ तेणेहाव
चटलि दुणि। पुढतिरवव केले सिंधुमथनि॥ बापबाप औसि यावचनि॥ घेदे
जाले ह्मपातालि॥ १४॥ तेरत्नमथिता रवळखळाटि॥ त्रयोदश रत्न अनर्घ
श्रेष्ठि॥ कौतुकयकयकापटि॥ निघति जालि एका॥ १५॥ श्रीसोम कौस्तुभ
सारंगशंख॥ अश्वगज रंभापारिजातक॥ सुरासुरभिवेद्यपियुष॥ विषमा
गिल चौदावा॥ १६॥ कुंकुमकाकौस्तुभ धेनु॥ हेउनि देविषु जिला विष्णु॥ वसि
ष्ठा वोपिलि कामधेनु॥ उच्चैश्रवा सुर्यासि॥ १७॥ सिंधुमथनापुविल्या कालि
लक्ष्मी कायनव्हति विष्णुजवळि॥ असा विकल्प विवेककल्लोळी॥ कल्पिजे
नासर्वथा॥ १८॥ अर्थवाचावाचे तेअर्थ॥ असासीवराकीसागत॥ कौतु

५

कार्थ बोले यथा। तो भावार्थ परिसीजे ॥१९॥ चंद्र उविला गगनोदरि। औ
षधियांसी निलाप निवारि। सुराश्व मेघ्म मकरि। म्हणोनि असुराने मिलि।
॥२०॥ रंभा रमणी पारिजात ॥ ऐरावत धेनु चौदंत। मा से म्हणे निर्जरनाथ
अक्षले हा लिघा लिं ॥२१॥ तव मागुलिदे दिप्यमान ॥ श्वेत कुमंडल कर धा
न ॥ परामाम्रत भरत निपुर्ण। धन्वंतरी निघाला ॥२२॥ तो सुधारस देख
ला द्रिष्टी ॥ सकलांस्वार्थसी रिवा पाटि। सुरा असुराचा थाटि। उतावेल
धाविनल्या ॥२३॥ मास मास म्हणे पात्र वरि। उडिया पडलीया यकसरि। तेथे
आंगवणा असुरी। अम्रत कुंभ हिरनिला ॥२४॥ म्हणति वर्मनकलेचि पहिले
देवि यथार्थ चिंट किले। आता राहा नयेत गेले। बळें हारील अम्रत ॥२५॥
देव उदासले सुखारि। परि अम्रत सिर कलें वैरियाकरि। इंद्र हृदयपिटिकरि।
काज नासले म्हणोनि ॥२६॥ ज्या लागि क्रुराकील्के शरावकुलां। ते वैरि हरील
अम्रत। परम रखदमानुनि तेथे। धावा करि विष्णुचा ॥२७॥ असें देखोनि सि
रिल। विबुधवरदा वैकुंठनाथा। मोहिनि आवना रधरनि तेथे। प्रगट जाला ते
कालि ॥२८॥ माया सुरूपी टनिवासिनि। अनंत शक्तिचि स्वामिणि। वेदशास्त्रा
वस्थक्षणि। मोद ळ गातिजीयेचा ॥ ब्रह्मादिके अज्ञान बालें। गर्भिं पाकि
मोहे समेळ ॥ परि नु घडि येकाचे डोळां। आपपाले देखावया ॥३०॥ जो ब्रह्म सुखा

चा अमृतोदधि ॥ माजि जिवासाउ निघाखोनंदि ॥ मृगजळप्राय विषयानंदि ॥
भ्रमे रमविजगाले ॥ ३१ ॥ असो अैसि विश्वमोहिनि ॥ मुळमाये चिकुळस्वामि
णी ॥ सुरासुर देखता नथनि ॥ पलंमप्राय दिपले ॥ ३२ ॥ अवलो किलाकदर्पको
टि ॥ सांडणे हालसचरणांगुष्टि ॥ त्रैलोक्यलावण्याचिपेटि ॥ देवदैवे उघडलि
॥ ३३ ॥ झगडलादं तदिसि चारंग ॥ पाहोपाहोलिप अराग ॥ चिस्मित बोलता
भूलढिचांग ॥ रत्नराशि विखुरलि ॥ ३४ ॥ पायेटेविता महिमंडळि ॥ सुवर्ण
कमळ केसळ्ळ्दळि ॥ उगवलि तथे परामधुळि ॥ माजिलोळेवसंतु ॥ ३५ ॥
ते चालुर्य चंपकाकळिका ॥ शृंगार सार मराळिका ॥ नानाकैवल्यकबुक
लतिका ॥ वैकुंटिहुनि उतरलि ॥ ३६ ॥ ब्रह्मांडकरंड्या बाहेरि ॥ अंगिचा परि
मळ धावणे करि ॥ वेधका चित्तभ्रमरि ॥ यात्रे आणियाराया ॥ ३७ ॥ भ्रू चापस
ज्जु नि अकर्ण ॥ सोडिता कटाक्षाचा बाण ॥ असुर मृगि सांडिति प्राण ॥ धीर्य
आणि स्मरणाचे ॥ ३८ ॥ नानाकटाक्षाच्या जाळि ॥ असुर समुहो सागरजळि ॥ म
नोमछ तत्काळि ॥ वेदोनि फासि गोविले ॥ ३९ ॥ बकि हृणाइचा मुखचंद्रांक ॥
वर्ष दशणिपियुख्य ॥ तेथे मासउभअबक ॥ चकोर हो टि लजा खे हे ॥ ४० ॥
इचे लावण्यरासि उमपे ॥ राकाशेश्वाचि नयनमापे ॥ सीगसि भरलो हिसा
क्षपे ॥ सरले नव्हे सर्वथा ॥ ४१ ॥ रूप अैश्वर्य पाहता जेव्हा ॥ दासिसमान भासे

कामकां॥अमृतेअंगिकारितरिसकळा॥वस्तुजाभापावसी॥४२॥रमाखा
डोळसाहोघि॥दिधिनेलियाआपुलेभागि॥म्हणोनिइश्वरेअह्मालागि॥
हेधाडीलिचारतस॥४३॥म्हणोनिउटलेअसादर॥अवघेआलेतिसामोर॥
वेष्टितउभेदेखोनिकरे॥यरिदाटलाविचारि॥४४॥कवणाअर्थाचेनिस्वा
र्थी॥कव्हाकरिलसानिघाले॥देयसांगतिक्रुलघ्रले॥देवाविरंचिनियेप्रति
॥४५॥टकुनिनेलियासकळवस्तु॥संपुर्णपोसिलाअपुलास्वार्थ॥पुढतिज
म्हलाचिहेतु॥पुधकरितिअसासि॥४६॥मोहिनिह्मणअकर्मदुष्ट॥मि
त्रद्रोहिकामलोभिष्ट॥तुह्मासिपावउनिकष्ट॥कोमकेलेअपुले॥४७॥
यतकरुनिदात्तणा॥सेविनकरिलासमाधान॥अपस्वार्थिंशउनीमन॥
स्वरछावस्तुहिरतिल्या॥४८॥अनुचितराहुनिमंद॥सेविपुढल्याटेवि
तिराब्द॥तेअवीविकिहप्रसिध॥कायलागसांगणे॥४९॥आतादेयहो
येकअेका॥अम्रतदुर्लभतिहिलोका॥बहुतभाग्यजोडलेदेखा॥सिंधु
मथनिअप्रयास॥५०॥श्रेष्टदुर्लभजोपदार्थ॥यावरिसकळांचेहिअर्त
तेथयेकेचिकेलियास्वार्थ॥विरोधउपजेसहजचि॥५१॥विश्वासध
रिलतुमचेचित्त॥तरिमीन्यायकरिनयेथ॥ज्यासियोग्यजोपदार्थ
तोचिवाटिनतयाते॥५२॥स्त्रियेचवचनअनर्थकारि॥असेमा
वालजरिअंतरि॥तरिजेदिसेलस्वहिताचारि॥तेचिकीजेसे

वेथा ॥५३॥ उद्योगसाम्यसमुर्खलुब्धता ॥ मायाअशौच निर्दयता ॥
ऐसियेदोषिव्यास वनिता ॥ म्हणोनि उपेक्षा न करावि ॥५४॥
६ अंगिकारिलें आपण ॥ ऐसिबोलिचि मनवासना ॥ म्हणोनि म्हणे तुझीया
वचना ॥ अधिन आह्मी सर्वथा ॥५५॥ विवेकन्यायकरि चतुरे ॥ आतुवा
पक्षी अभिमानधरि ॥ धिग्धासुनिश्चाकीयाकरि ॥ अम्रुतकुंभवोपिला ॥५६॥
योग्यअयोग्य पाहाणि जाण ॥ करविन अम्रुतरसभोजन ॥ ऐसबोलोनी
सुरासुरगण ॥ हाकारिले जवळिके ॥५७॥ स्थाळा निर्मिल्या विचित्र मंडिती
७ अनेक रविलसकळिकाहारि ॥ उंच बैसविल्या पंक्ती ॥ देत्याचिया आदरे ७
॥५८॥ अम्रुतकळस घेउनि हाति ॥ पुसे असुरापति ॥ प्रथवाढु कोणपाति
येथे निरोप पाहिजे ॥५९॥ दैत्य म्हणति विहितो नरा ॥ आदि अम्रुतद्यावा
अमरा ॥ सुरापाठिवोपिजे असुरा ॥ निके म्हणे माहासक्ति ॥६०॥ भ्रमेभुल
ले असुरजनु ॥ मोहिनि नव्हे माहाविष्णु ॥ निश्चयदैत्यांतरकुनु ॥ अम्रुतवोपि
ले देवांते ॥६१॥ असोपोटि चिपोटिमानु ॥ विबुधबेसाधरु निलरिलु ॥ पात
ला अमरपंक्तीअंतु ॥ दाबिके द्याने पावे ॥६२॥ चंद्रसुर्यामाझारि ॥ बैसला
कपटवेषधारि ॥ न विचारिला अम्रुतकारि ॥ वाढिता सुचले मोहीनीया ॥६३॥ पहि
ले नसता घेतले कोणहि ॥ ज्ञानेंदि तांब्रे छेजमि ॥ राहुनेमुखि घातिलातं

रणि ॥ आणि चंद्र हि लक्षीला ॥ ६५ ॥ दिव्य लक्षण जाउनि निरुतलि ॥ ऐसें केन दाविलीरा

त्रि ॥ वाम तांटक वाम हस्ति ॥ महा माया मोक्ष किले ॥ ६६ ॥ दिव्य तक पतीनं टक हाति अपरि

ले सुदर्शने चिमरिलि ॥ जेणे राहुचे छेदिले ॥ सीर जैसिक्षर दिंद ॥ ६७ ॥ मस्तक उ

सळला मगनाआंत ॥ निघाले मुख गर्जना करित ॥ दैसहारे किले तिसमस्त ॥

मोहिनके हा विष्णु ॥ ६८ ॥ सहसा अम्रत नेंक्षि असुरा ॥ ऐसे ऐके ना हाहाका

रा ॥ प्रचली लेला तियरा ॥ हा वसति समस्त ॥ ६९ ॥ अम्रत कलस घेउनि तेथ ॥

इंद्र पळविला हाती हात ॥ सग्राम माजला अद्भुत ॥ देवा देसा नेका ॥ ७० ॥ अस्त्र

लेना ना वहस्ति ॥ शस्त्रास्त्रे केश धरणी ॥ युध्य्य हो ताआ पा ओरवनि ॥ सु

रंग जाली श्रोणिते ॥ ७१ ॥ जया सिधि सिद्धा पेक मळ ॥ तो विश्णु साहि

अमपाळा ॥ म्हणो निज सुर तय वेळा ॥ नारापावले आपार ॥ ७२ ॥ वि

रोप त्या धले अम्रत ॥ म्हणो निम्नणोति जेथे जेथे देय ॥ भंगागेला मस्त

परि सग्राम रवंडेना ॥ ७३ ॥ लवे किनर नारायणा ॥ प्रगट जाले दोघ जण ॥

नाराहत्ति धनु ष्य बा पा ॥ चक्र धरि श्री विष्णु ॥ ७४ ॥ देयदानवाचि

याथा टि ॥ संहार त्या कोट्यान कोटि ॥ तरि युध्य्य चि हाव मोठि

अम्रत पान करावया ॥ ७५ ॥ दृष्टि देखो मिअकाळ प्रळया ॥ चतु

रानने अपलातनयो ॥ नारद पाठविला पाहावो ॥ विरोध शांति

कारणे ॥ ७६ ॥ सुरा असुरा समान मास्यु ॥ न्याय निष्ठुर सत्य

सर्व तु ॥ देवा ह्नोनी संज्ञा अभिमान्नु ॥ संग्राम चा भ्रविचार ॥ ७७ ॥ ले कुरा कविदेउनी फळ ॥ चोर चोरि भुषणे सकळ ॥ लेसा काज सारु निसकळ ॥ देव किते कु टिळ ॥ ७८ ॥ अमुणि न पावा उपरमा ॥ हा के विविवेकिवाळ तु मते ॥ शांको निदेवषी बन्धनाते ॥ माघार ले सुर सकळ ॥ ७९ ॥ सवे चि देखा नियेउन ॥ बोधित्त प्रल्हाद सुत नंदन ॥ ह्मणे का कसाह्य न कळला कोण ॥ इछिले फळ इछिले फळ पावला ॥ ८० ॥ काळ साह्य जाल अर्थी ॥ वस्तु चउल्या सुर विह ति ॥ तुह्मी वि विषाद न धरु निरि ति ॥ अवेद का हि न धरणे ॥ ८१ ॥ साह्य करु नी शुक्राचार्या ॥ विश्वजित याग करि राया ॥ ने पोसींतु नि देवाया ॥ स्वर्ग संपति लाधसि ॥ ८२ ॥ हे यथार्थ मनु निदे ति ॥ जाते जाल स्वस्थाना प्रति ॥ उच्छ्रवा चेउ सति गल्यागि पडिले सागर ॥ ८३ ॥ रुंडमुंडदाहि ॥ अम्रत लागल अलुमात्र का हि ॥ अपा निदानी अमर पाहि ॥ गगना दक्षिण तात्ति ॥ ८४ ॥ लोढ्य धरुनि अं त: करणी ॥ चंद्र सुर्यनि लागति ग्रहणी ॥ अद्यापि लोक देखति नयनि ॥ राहो तु प्रसक्ष ॥ ८५ ॥ संपले आगाध सिंधु मथन ॥ सुरा प्रतीया अम्रतपान ॥ समानजा ले विचेक्षण ॥ पुढे कौतुक परिसतु ॥ ८६ ॥ इति श्री आदिपर्वणी ॥ अविमुक्त मुनेश्वर शुक्लपाणी ॥ त्याचे निप्रसादे हवाणी ॥ सुखि करु श्रोतिया ॥ ॥ ८७ ॥ इति श्री महाभा रते आदिपर्वणी समुद्रमथन चेतुर्थो ध्याय ॥ ॥ ४ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ आदिपर्व आ० १॥

॥ श्रीरामचंद्रायनमः ॥ यापरि जन्मला समुद्रमथनि । उच्चैश्रवा हयरा जगुणी । इंद्रे देवानि दोघि जणी । दक्षदुहिता बोलति ॥ १ ॥ कद्रु ह्मणे वे नते सजणी । उच्चैश्रवाकवणे वर्णि ॥ विनताह्मणे चंद्रकिर्णि । उवरिला असे सुतेज ॥ २ ॥ कद्रु ह्मणे यथार्थ वचन । परि पुसे सिये करा मवणी ॥ वेमनताह्मणे तुझे नयन । अवलोकिला न रकले ॥ ३ ॥ पुढति कद्रु बोले वचन । सपुच्छ वारु श्वेतवर्ण । तेन्यासह अश्व वर्ण सापा । दासि होतु शि याघरि ॥ ४ ॥ वैनता ह्मणे मान्य ता । तेने मिळने म माझिये माथा । दोघि जणि गेउ निरा फलता । हापा लल्या दिवसांति ॥ ५ ॥ रात्रि पाचारुनि सर्पा । कद्रु करिसरवद्र जल्पा । हारिकर्मा चल्पा । मज वैनतेलागिला । ॥ ६ ॥ मनिचा कापथ्य का जळ । अश्वरा करिता काळ । दासि होमया च मेळ । मी मारवले चिरकाळ ॥ ७ ॥ ह्मणोनि लुम्हि सकळ्याळ । इंशोमि पुच्छ करावसुनिळ । सर्प ह्मणति रवील काळ । शापोनि भस्मकरिल्ना ॥ ८ ॥ आह्वान करवे अविचार कर्म । कद्रु क्षोभलि असे कुल । मग ह्मणे तुह्मी सम स्त । भस्म व्हावेमच्छापे ॥ ९ ॥ कथापुष्प परमारके । मात्रु अज्ञा आपा ळका । तुह्मासा पतअपी पावक । ना शा करील न विळंबे ॥ १० ॥ जन्मे

९

जया विसर्पसत्रि ॥ प्रवेशाकरील पावकवगंत्रि ॥ ऐसा शाप सुराजाचे क्रिं ॥
चतुराननें ऐ किला ॥११॥ तथे तिसथे ति वचन ॥ त्रिवार वदला कमळासन ॥
अहा लोदेअन्तःकरण ॥ वर वेजालेसपो नि ॥१२॥ हिं सकपिडक्या चिन्तिं
त ॥ बहु सालवेते माझिया चिंता ॥ इश्वर नयाचा घाला ॥ मात शापनिर्मिला
॥१३॥ ऐसवदे निजगज नक ॥ कश्यप बोलविला जव क्षिक ॥ विचार
सांगसा विवेक ॥ सायन किजे दुशाव ॥१४॥ तुमे विर्यजे हे सर्प ॥ दुष्ट दुर्जन
पापरुप ॥ याते मातेने दिधला शापें ॥ कल्याण कारिजगाने ॥१५॥ साचाप
रिहार उपाया ॥ अभिमान नधरि पवित्रराया ॥ ऐस सांगोनि दिधला तया ॥
विषहरण विद्या हे ॥१६॥ असो मातने शापिता कुमर ॥ आवघे करिति हा
हाकार ॥ धाके धावीनले सत्वर ॥ चाळसुनी करावया ॥१७॥ कश्यके
राहाउनि सकळ ॥ पुष्टि जडले संलंब व्याळ ॥ प्रभात होलउला चेळ ॥
कद्रु बोलवै नलसि ॥१८॥ चाजिवा धवळकेस ॥ तेम ज दारव विडाळ
से ॥ हालिधरुनि अतिअवेश ॥ बळका वेढिला ॥१९॥ समुद्र लंधुनि वे
गि ॥ अश्वासमिप पातल्या दोघि ॥ वेनला पाहे तव पुढां गी ॥ दिसे कृ
ति मशामला ॥२०॥ सारकुटित जाला मुखि ॥ चित्त चिंतेने केले दुखि
हारि पातलि मस्तकि ॥ सत्य सत्यव रक्षापिला ॥२१॥ कपट जीतो निवेन

१

तासति ॥ जेउनि सर्पदंसना प्रति ॥ दासि केलि जे विवीरकी ॥ विषकी
जे विषयाचा ॥ २४ ॥ दक्षायणि दासि धर्मी ॥ गुंपलि जै सि धेनु कर्दमि
याचरि वंतात चैन्नता श्रमि ॥ वतला ता परिसिजे ॥ २५ ॥ उरलि वर्षे पाच
शत ॥ क्रमिल्या अंड फेडुनि सरिल ॥ गरुड देखा ब्रह्मांड भरित ॥ देदिप्य
मान तेजस्वि ॥ २६ ॥ प्रळय वन्हि तुल्य तेजाळ ॥ किं द्वादश आदित्याचा ये
कमेळ ॥ ते सोदखोनि प्रजा सकळ ॥ भयसुटला चळकांपु ॥ २७ ॥ दडवन
घालुनि धरणी ॥ प्र वर्तले पाचकस्तवनि ॥ ह्मणति स्वामि रवडतर कीर
णी ॥ विश्वभस्मे लक्ष पार्थे ॥ २८ ॥ चत्वारिंशद्गा होत्रि चरणा ॥ ससहस्त्रा
उभये वदना ॥ स्वाहास्वधे चिरमणा ॥ तेज आपुले आच्छादि ॥ २९ ॥ ऐको
नि प्रजाचा करुण जल्प ॥ प्रत्यक्ष जाला वन्हीस रूप ॥ ह्मणे हे मासे भाऊनि
स्वरूप ॥ सर्पा पावाल भयाते ॥ ३० ॥ कश्यप विर्य वैनतातनयो ॥ गरुड पक्षि
द्र प्रताप सुर्यो ॥ जन्मला अंड्याचा उदयो ॥ दिसे अद्भुत प्रकाशा ॥ ३१ ॥
हा जगाते हित कारकु ॥ अवतरलासे नागांतकु ॥ याते प्रार्थिता प्रका
रकु ॥ दाहकता कोपिल ॥ ३२ ॥ ऐसे परिसोनि पावक वचन ॥ प्रजि मांडिले
गरुड स्तवन ॥ ह्मणति विष्णु वल्लभा नमन ॥ समुस्तां चलुज पावो ॥ ३३ ॥ तु
झे स्मरण केलिया निरवद्यु ॥ जे नरे संसार सर्प गरळे ॥ ३ तर व्याळे विष

यव्याकुळा। कन नसकेत वदासा॥ ३४॥ पक्षीस्पर्शीं नामे दिनि॥ होतिगळ्ड
पाचुच खाणि॥ चतुर विरिं तिरो न्हीं॥ विद्युप्रायसत्व कर्ति॥ ३३॥ अप
रस्तचुंबु चरण नयना किरीटकुंडलविराजमान॥ सोभितु अपवित्र ध्या
न॥ हृदय वसवो अमुच॥ ३४॥ जो चक्रवेगुरु चरखुण॥ तो सिस्य उत्तसा
रिखाजाण॥ विष्णुभक्त तो अपण॥ विष्णुसमान मानावा॥ ३५॥ क्षण
निरवदीनदयाळ॥ आवरि अपुलि प्रकाचकळा॥ ऐसस्त्वित जना
सकळा॥ कृपाबोलखगेंद्र॥ ३६॥ ना भिनाभिह्मणे प्रजात॥ ह्मणे रांक
तामदर्पातै॥ माझे अभय सदालु मते॥ मीदीनातरक्षितो॥ ३७॥ मातु
द्रोहि पितृद्रोहि साधुद्रोहि॥ विष्णुद्रोहियातेपाहि॥ मजपासाव भय
असा॥ ३८॥ उस्छदुर्जनक्षुद्र मर्गात॥ गुत्तत्मक सत्यरहित॥ दुराचा
रिलआनर्थ॥ मजपासावपावति॥ ३९॥ कितिनंद्धरीपरापिङक॥ व
दनी कठोर तेचि विख॥ ते मजसपासि रिखदेख॥ मक्षणकरिनन
याचा॥ ४०॥ वैष्णवअणिशंकरद्वेषि॥ शैव विष्णुते उपहासि॥ ततेश
तु माझु नित्रासि॥ सर्पतुल्य निर्धारि॥ ४१॥ शास्त्राभिमाने माज
लिबुद्धि॥ नामलाविति अर्थ यादि॥ तेले जाणमाझं द्वंदि॥ सर्प ऐ
से छिखंडि॥ ४२॥ कातिव स्मरण विष्णुस्मरण॥ मोक्षअैसी बिरुव

चने॥ ते जो असत्य मानि मने॥ तो मज वैरी निर्धारि॥ ४२॥ ह्मणौनि प्रजा।
होतु निसकळ॥ हरिहर भजनी सर्व काळ॥ निरंतर जालिया केवळ॥ घ
रि कारमितु मत्य॥ ४३॥ या परि अरवासु निअजाते॥ अंड दिले निज त
जात॥ मग खादि याहो निअरुणाने॥ माते जवाळे पालल॥ ४४॥ तक पुर्वे
दिशा असामाकि॥ तपो लागला द्वादश काळि॥ क्षोभे चौदा लोक होकि॥ करा
वया उदित॥ ४५॥ हे देखोनि देव समुह॥ प्रार्थिते जात्त पीनामहो॥ ब्रह्मा
ह्मणे ग्रहणी राहो॥ वैरे या सि सुर्याने॥ ४६॥ अमृत मथ रि सुर्याचा होता
सुर्ये राहु प्रगट करिला॥ तेणे सांडुनि समस्ता॥ सुर्याते चि लागला॥ ४७॥
तेणे क्षोभ सहश्र कीर्णा॥ जाळु पाहे त्रिभुवन॥ ह्मणउनि तया आड अरुण
सारथि करुनि स्थापिला॥ ४८॥ ह्म्यापहिले निसुचा निगा हि॥ अरुने
मिळा येने तपोटि॥ ऐकोनि सुरा चा कोटि॥ अरुण स मिप पाचला॥ ४९॥
गोरवेने उनि समस्ती॥ सारथि केला दिनकर रथि॥ यावरि लोपला गभस्ति
अछादिल्ते उष्णाते॥ ५१॥ असो सागर पैलपारि॥ विनता दासि कद्रु चा घरि
गरुड पुत्र श्नेहकारि॥ तयासि उा निपातला॥ ५२॥ तोहि मालचा केरा॥ कु
रा विषा गि जाला सरिसा॥ ५३॥ सुख करित बहुत दिवसा॥ कद्रु ह्मणे वैनित
ते॥ ५३॥ समुद्र कुक्षिसमिपि कवस्ती॥ नागालय अति यकांति॥ स्कंदि वाहो
नि तयाप्रति॥ सिघ्र नेइ मज लागी॥ ५४॥ मंत्रु वचने पुर्ष्ठी वरुते॥ गरुड बैसे

विलेसर्पाते ॥ मार्गक्रमिता द्विजनाथे ॥ तिव्रउष्णता विले ॥५५॥ तया भि
ष्मे वेरवडलउष्ण ॥ लागता सर्पमुर्च्छापन ॥ देखोनिकद्रु करिस्तवन ॥ देवइं
द्राचे काळि ॥५६॥ स्तवने इंद्रासि कळवळा ॥ सोडिता जाला मेघमाळा ॥ वे
गे विश्रांति जालि त्याला ॥ प्रागदेहि परतले ॥५७॥ हर्षे पावले रमणीकद्वि
प ॥ खाद्यादके बहुतपादपा ॥ खेचरभूचराचे कळप ॥ सुरवाडुनी राहिले ॥५८॥
तद्विप पाहोनि निवाडे ॥ सहिलकद्रुवेनता गरुड ॥ सर्प ह्मणति याहुनि
पुढे ॥ सुंदर द्विपपे असा ॥५९॥ तथे अमुते वाहुनी पुढि ॥ गरुडानेइं नल
गता टळि ॥ नानाद्विपलुझीयाद्रिष्टि ॥ पडतिप्रसादआमुच्या ॥६०॥ पु
३ रिसोनि सर्पाचे सत्तावचन ॥ गरुड मानसि कोपायमान ॥ माते सिपुसे ३
येथ कारण ॥ कायलेसांग मजप्रति ॥६१॥ हीनविर्ये दुरात्मखळ ॥ कुरा
वितिसराकाळ ॥ विक्रीनदासिष्टयालुब्ध ॥ सत्ताकरिति मजवरि ॥६२॥
इहिसां भीतले काज ॥ किमर्थ करणेसांडु निलाज ॥ वैनता ह्मणे कपट
पैज ॥ घालुनि माते अंकिले ॥६३॥ तपगुणे परमक्रुरी ॥ सत्यश्रेअ
यन आलेदासि ॥ ऐकुनि पुत्राचे मानसि ॥ खेदअद्भुत वाटला ॥६४॥
ह्मणे मातपरिसे मातु ॥ तुझे निपालटजेजेवस्तु ॥ मागतिले ते समर्थ
देउनी तुते सोडविन ॥६५॥ वैनता विच्यारिकद्रुते ॥ कवणा वस्तु बोपि
लिया तुते ॥ दासि कर्मापासुनि मात ॥ मुक्तकरिसि ते सांग ॥६६॥

कद्दलपोंअेकवचना॥ मजअणीमात्तियानंदना॥ अम्रतअणुनि
दिथत्यापाना॥ मुत्तकरिन्तुज लागी॥ ६७॥ मानेनेसागलागला॥ प्र
त्ति॥ बाहुपिटिभीमपुरुषार्थि॥ जोंकोनिदेवाचियापक्ती॥ अम्रतअणिन
निधारि॥ ६८॥ परिक्षुदानळेपिउलेजगरि॥ भक्षवोपिबोसडकरि॥ मा
ताह्मणसागरोदरि॥ निषादात्थविसि‍णी॥ ६९॥ समुद्रकुक्षिअतियकोन
नीषादवळरअसंख्यात॥ निषादभक्षुनिअम्रत॥ सिघ्रअणिसुपुत्रा॥ ७०॥
परंतुमेलियोंप्राण॥ नकरिब्राह्मणाचंभक्षण॥ ब्राह्मणअग्निसमान॥ सर्वश्रुति
मानिजे॥ ७१॥ सुर्यअग्निपरिसतक्षिप्र॥ शापकोपजाळिलविप्र॥ कल्पदमाहु
निउदार॥ फळेवापिप्रसादे॥ ७४॥ विप्रपरिसमारकरोरो॥ अम्रतफुनिता
रकतोरा॥ पादरेणूचनिलेरो॥ पापपर्वतविभांडि॥ ७३॥ ब्राह्मणलोचिमह
विष्णु॥ त्याचेनिपुजेतुष्टभगवानु॥ ब्राह्मणद्वषियानारायणु॥ वैरिमानिअ
पुत्त्का॥ ७४॥ ह्मणनिब्राह्मणजाणे कैसा॥ लरिमत्सिलारवदिरांगारलेसा॥
कठिलागेलतोखगेशा॥ निर्यजाणद्विजाचे॥ ७५॥ खिउदामिनाचियकंदि
त्नागलाकरिप्राणसाटि॥ लेसब्राह्मणग्रासिलाकष्टी॥ तुह्मासिलखगेंद्रा
॥ ७६॥ मात्रुअज्ञावंदोनिपरम॥ निघलाजाल्गा गरुडोत्तमा॥ निषाददिप
अतिदुर्गम॥ मनोवेगपातला॥ ७७॥ लयाद्विपाच्याफेरि॥ विशालप

वैनाचि विसवरि ॥ सकळा निर्भय कळवारि ॥ दुर्गद्वारा सारिखे ॥ ७८ ॥ नयेग
रुडलाविल वदन ॥ पक्षझडे सडाट सोडिला पवन ॥ तेथे धुळोरा दाटला स
घन ॥ माजि दिनमणी लोपला ॥ ७९ ॥ स्थान सोडिलि पर्वती ॥ गुस्कलोळ
गला आपापति ॥ धाके निशादाचिया पति ॥ गिरिद्वारे निघाल्या ॥ ८० ॥ पळ
ल निशादाच पाळे ॥ गरुड मुखि जातिस गळे ॥ कोठिचा कोरिवरिआ मळे ग
लक्षकी तिनमवति ॥ ८१ ॥ सामाजि ब्राह्मण होपतित ॥ निशादि स्त्रियेसहि
त ॥ कंठि लागला अकस्मात ॥ तसलोहासारिखा ॥ ८२ ॥ गरुडे उगिळिबो का
रि ब्राह्मण ब्राह्मणा निघ बाहेरि ॥ यरु म्हणे गा प्राणेश्वरि ॥ निशादि माजि
मज संगे ॥ [illegible] गळ सिल जरि उरणानुजा ॥ तरी निर्देह परेल मासा ॥
गरुड ब्राह्मणासहित भाजा ॥ मुखिहुनि सांडिलि ॥ ८४ ॥ अज्ञादेउ नीघाडि
ले झाले ॥ ग्रासुनि सर्व निशादाते ॥ गगनावेळ धला लक्ष अवरित ॥ क
श्यपाते देखिले ॥ ८५ ॥ नमस्कारिता तातांचे चरणा ॥ पियाने रिधेले आ कि
गण ॥ म्हणे कुमरा कुशळपूर्ण ॥ सांगतले असे कि ॥ ८६ ॥ गरुड म्हणे स्वा
मि तात ॥ सर्पिजीति लिवे मता माला ॥ लिखियादासि परिहारार्थी ॥ अ
म्हल अणुजालसा ॥ ८७ ॥ क्षुधा माजि असद्भुत ॥ निशाद भक्षणे न हेरां
ल ॥ पितामोहे श्रेहे भरित ॥ म्हणे परिस बाळका ॥ ८८ ॥ स्वबळे किस

रोवर ॥ किराळ जैसा सागर ॥ सामाजि कुर्म आणि कुंजर ॥ मुळ वैरु युध्य करि
ति ॥ ७७ ॥ या वि कथा सांगेन अेक ॥ विभावसु आणि सुप्रतिक ॥ सहोदर असति
देख ॥ अर्थ स्वार्थ विरोधि ॥ ७८ ॥ कनिष्ट ह्मणे ईं विभाग ॥ मासा मज वोपिषां
ग ॥ जेष्ट ह्मणे ॥ यकत्र योग ॥ असता लोकि प्रतिष्टा ॥ ७९ ॥ तुवा नंतु वेणुदंडु
विघा मिळविगा सुभडु ॥ मधुर श्रवणि श्रणा श्रणा गाडु ॥ नाना लोकारं
जवि ॥ ८० ॥ तिहि सांगितालि हिटाइ ॥ कोणी हानि न सिवे पाहि ॥ तैसा वे
गळा चार पाहि ॥ श्लाघ्यन के श्रेष्टांत ॥ ८१ ॥ ऐसा वडिल विचार बोधि
परि कनिष्ट नो अेके अग्रह बादि ॥ निसक केहे जाला क्रोधि ॥ शापवो
पि अनुजात ॥ ८२ ॥ अखंड मातपिडसि पाहा हो ॥ तु ह्मपाव सि कुंजर देहो
यरु ह्मणे तु जळ पडि हो ॥ कमठ हासिक पटिया ॥ ८३ ॥ परस्पर वर ला शापु ॥
कुंजर का सवा वियावपु ॥ धर निपुविल संकुलु ॥ झुंसकरि अद्यापि ॥ ८४ ॥
या गजाचे शरिर जाण ॥ उच किराळ साह योजन ॥ लैबायमान द्विगुण ॥ बा
रागावे प्रचंड ॥ ८५ ॥ दुसरे कच्छपकाळिवर ॥ तिनि योजन भयंकर ॥ दाहा
योजन रुंद विस्तार ॥ पर्वत पुढिसा रिखा ॥ ८६ ॥ याचे देह भक्षु निवगी ॥ सु
धाम त्रुमि चनाल्यागि ॥ आणिला दवजि तो निसर्गि ॥ जयपावसिनी धी

रे॥६०॥वेदमंत्रबीजरहस्य॥मंत्रदेवतासाचकारा॥प्रसन्नतेथेंनि
महाहरुप॥विजयप्रस्तुजेहासि॥१॥अणिविष्णुचध्यानस्मरण॥करि
ज्याचेंह्रदयवदन॥यातरिध्धिसिध्धिजाण॥करजोडुनिविनविती॥२॥
५ अच्युतकेशवनारायण॥कृष्णदामोदरसंकर्षण॥श्रीधरमाधव
गोपिरमण॥रघुनंदनदाशरथि॥३॥ऐसियानामाचिजपमाळ॥पुत्रा ५
जपतासर्वकाळ॥पायलाहुनिकळिकाळ॥जयपावसितिहिलोकि॥४॥
ऐसाबोळविअज्ञापुनि॥मगलाभसुचित्सासकुणि॥राकिवाढिलिसह
श्रगुणि॥बाहुस्फुरतियुध्यार्थी॥५॥सरोवरपावलात्वरलोहि॥गग
निराहोनीकौतुकपाहे॥सुप्रतिककुंजरदेहे॥तडागोदरापावला॥६॥
साच्यागर्जनेच्याघाय॥जेकुनिकुर्मचउत्साराहु॥बाहेरिधाविनलाह्द
यु॥जन्मातरिचास्मरोनि॥७॥चरणीघालुनियाअडि॥कासउगजालेपै
वाढि॥कुंजरदातांचियजोडि॥कुर्मग्रीवागोविलु॥हृदखानिविहंग
मपाळ॥बाहेरिकाढोनिनीराळे॥दोघाकवळोनिअंतराळे॥आपावला
सत्राण॥८॥वामचरणीचवडिआंत॥दोन्हिकवळिलेसोबिसहित
गगनोदरिफेरदेत॥ठावोपाहेभक्षावया॥९॥लवमहापर्वतीविसाव

रुप॥ रोहिणियवटपादप॥ खगपाक्षिणीस्वापस्कव्या॥ असंख्या
लवसिनले॥११॥ मस्तकिंदुनिपारंविया॥ पालाकपरियलभ
वलिया॥ कनकसाखिपाल्केलिया॥ रहाककिकसुरंगे॥१२॥
वृक्षम्हणेहदेवपक्षि॥ शतयोजनेशाखालक्षि॥ तिवरिवैसोनियाप
क्षि॥ कुर्मअणिकुंजर॥१३॥ औसेऔकोनिग्रघ्राव॥ अनुमाकेठ
विसव्यवा॥ तवशाखाकडकडिलि भवा॥ नानाखेचरपावल्ति॥१४॥
गरुडशाखापाहदृष्टि॥ लवपानोपानदेठादेटि॥ वालखिल्लसहश्र
साठि॥ अधोवदनेलोंबति॥१५॥ तेहिदेखानिपुरुषार्थभीम॥ गरु
उऔसेठेविलेनाम॥ असोभयविहिंगोलम॥ शाखाघेउनिउडाला॥१६॥
करिकछपअणिशाखा॥ उभयचरणीकवळुनिदेखा॥ फेरिघालीभुगो
ळका॥ परमथाकेतुविचिया॥१७॥ शाखासांडिताचिधरणी॥ सापदे
तिलमहामुनि॥ तणेभयेउद्वीग्नमनि॥ अंतरिक्षतळपतु॥१८॥ औ
साफिरलागगनपंथि॥ गदमादनमहापर्वति॥ कश्यपऋषिदेखिला
पुढति॥ तयाप्रतिपातला॥१९॥ संचितदेखानिकुमराते॥ पिताना
स्वा भिकारीतुहाते॥ वैखनसापासुनितुले॥ सापभयअसेन॥२०॥ लोक
हिलालागिजाणा॥ गरुडजातसेस्वर्गभुवना॥ तुझिजावेअणीकाच्छा
ना॥ भग्नशाखासांडोनिया॥२१॥ मगजोडोनिदोन्हीकर॥ प्रार्थितेतेब्र

त्नकुमर ॥ स्वामी तु झिद्याकर ॥ क्षमासिक्ष सर्वथा ॥ २२ ॥ ऐकोनि क
श्यपाची विनति ॥ हिमाचळापर्वताप्रति ॥ चाल्त खित्नमानसगति ॥
जाले आन्नैला काळ ॥ २३ ॥ कश्यपकुमर ॥ आज्ञा करि ॥ तुहि हिमाचला
वरिल्या सिरवरि ॥ राखवाऐउनि भक्षण करि ॥ कुंजर अणिक मेटाचे ॥ २४ ॥
गरुड गेला गिरिमस्तका ॥ तेथ ठेउनी कनकशाखा ॥ करिकच्छप दोघ
दे खा ॥ भक्षण करु लागला ॥ २५ ॥ जाला उत्सव नाउंघोन ॥ तव स्वर्गीसुर
ला महोसात ॥ २६ ॥ वज्रापासोनि उठत ॥ वन्ही ज्वाळा भडभडा ॥ २७ ॥ भिन्नस्थि
न्न सुराचि शस्त्रे ॥ जुझ करिति परस्परे ॥ रक्तोदकाच्ये नि लुसारे ॥ मेघवर्षो
लागले ॥ २८ ॥ किरिट देवाचि मोकळि ॥ तेथ बैसति असे धुळि ॥ दीवा भित
कोल्हाळि ॥ सितज्वर प्रगटला ॥ २८ ॥ देखोनि अरिष्टाचा मेळ ॥ शक्र अं
गि भयकंटाळ ॥ तेये कि पाचारि जवळ ॥ देवगुरु साक्षेपे ॥ २८ ॥ त्याप्रति
निवदी तिमातु ॥ ऐकोनि अंतरात सुतु ॥ बृहस्पति सांगे परिसतु ॥ २९ ॥
श्रोति याकथा पुढारि ॥ ३० ॥ आस्तिक सह सोपर्ण ॥ भारत अदरे ऐकोत ब्रा
ह्मण ॥ मुक्तेस्वर प्रसादे म्हणे ॥ कवि किंकर आवडि ॥ ३१ ॥ इति श्रीमहाभार
ते आदिपर्वणि गरुडोख्यानो पंचमोध्यायः ॥ ५ ॥ ६५० ॥ ६७० ॥ ६५० ॥

॥श्रीवेंकटेशाय नमः॥ सुरगुरु ह्मणे वज्रपाणि॥ तुवां निजअपराध विषा
दमनिं॥ माझा निसा ध्विस हस्त्रजणि॥ बालखिल्ही साक्षेपें॥१॥ तपें लोक्ष
उनिला द्र॥ करिल असता दुसरा इंद्र॥ कश्यप प्रार्थोनि पक्षेंद्र॥ जो करवि
ला वलिष्ट॥ त्यालोगरुड होसु स्वर्गभुवना॥ वृद्धयत्नसें अमृत नहरणा॥ मा
त्रशाप विमोचना॥ लागुनियां प्रताप॥२॥ त्यासिलुके होसंग्रामि॥ ऐसा
नाहि ब्रह्मांड ग्रामी॥ ऐकपरित्यो अजिंकस मरलासि॥ अमृत नहरिल निर्धारि
सि॥ यालगि अशुभ चिन्हें ऐसि उदेलिहे जाणिजे॥५॥ ऐको निवृहस्पति
चिया वचना॥ इंद्र हाकारि अमरगणा॥ युध्य सामोग्रि सिजाणा॥ सुधा
सरोवर रक्षावाची॥ अज्ञा होतक्षणि सुरिं॥ वसुरुद्र साध्यादि॥ मरु
द्गण हि समस्त॥ सिध्द जालेसंग्रामा॥७॥ कवचे बाणलि रत्नखचित॥ टो
पसुरत्ने वज्र मंडित॥ करि करवाळ सळकत॥ विद्युल्लभसारिखी॥ चक्र
चें परिघ शुळ शक्ति परिघ पट्टिश मुद्गर जालि॥ गदा पडताळिती हालि
ध्वा कफापति गिरिमौळ॥ आयमदछ्त्र खोवि अर्कदिशतुपिरे अवळि
पुरिशा॥ धनुष्य सज्जु नीय मुष्टि॥ समुदाय सिनि घाले॥९॥ अमृत कुंड
वेष्टील बळें॥ पडिले अमरगणाचे पाळे॥ लेथे सचारावया आनिळे॥(

रिघनोहेसर्वथा॥११॥दाहिदिशा॥लाउनिनयन॥पाहतठेले गरुडग
मन॥सूर्यचंद्र यमवरुण॥वन्हीवायोइयादि॥१२॥शौनकह्मणेभया॥
सुमति॥पौराणिकाचक्रवर्ति॥कवण अपराध सुरपति॥अचरला रु
षिचा॥१३॥जेणे वालखिल्ये कोपे॥दुसरा इंद्र साक्षेपे॥करितहोते लेह्या
रूपे॥निरोपिला पाहिजे॥१४॥सोतिह्मणे हो जिज्ञेका॥कस्यप प्रजापति
चिया जनका॥संतानिकामने स्वर्वदेखा॥यागकरिता पुढी॥१५॥रा
हल्यानसारसामोग्रि॥साह्य जालेदेव रुषि॥शक्रप वैलातुल्यरासि॥
समीधांचा आणिता॥१६॥देखोनि अगुष्टप्रायरुषि॥समीसारिसह अवे
खानासि॥चिनिमात्र येकि साया सि॥पालाशासमिधा॥नोडिलिया॥१७॥
खादिवाहोनीसभस्ति॥शनैःशनैः आणित पंथिण॥गोष्पद अपापलि॥
लैसपुढे भासला॥१८॥पायनिसरोनि अवचित॥अवघड पडीलेया अतो
ते॥चुवककिखालायेकमेकाल॥काकुलसिसोंवलि॥१९॥हदेखोनि
क्रोधा इंद्र हस्तलंघिदुनिटाकि॥पाहाहो गोष्पदजकि॥ब्राह्मणकैसे
बुडाले॥२०॥ऐसे जिवजद्रखति॥नय सिहासावयाचि अति॥ब्राह्मने
निर्मिलि निश्चिति॥विनादार्थ जगाते॥२१॥परिधावोनि अपल्याहि

श्री

१

१

ते॥ कटेन काढी चळयाते॥ २१॥ तरि संकट द्विज गदस्पते॥ संसार क्लेशाब्धिचा
तारु॥ स्वरूपाचा निकमकावरु॥ तारक जाला नयाल॥ २२॥ इंद्र हासो
नि उपहासिले॥ तेणे मान सिसंतापले॥ मग तेथेचि करीत जाले
॥ लपश्चर्या भयुग्रा॥ २३॥ रुद्रा सिहारि अपियुधी॥ बळआगळा अेध
र्यनिधि॥ असा निर्मु इंद्रपदि॥ दुसरा इंद्र अविळंबे॥ २४॥ देखो नि॥ पिंड
निर्वाण॥ इंद्र धाके कंपायमान॥ कश्यपासि जाउनि त्राण॥ रक्षि रक्षी
म्हणतसे॥ २५॥ कुमर घालु निपाटि॥ कैसे आला निकटि॥ म्हणे मज
वरि देवोनि दृष्टि॥ कोप सांडा साकिहो॥ २६॥ योग्य जाणोनि इंद्रपदि
यालस्थापुनि गेला विधि॥ तुम्ही धरुन विपरित बुधि॥ विपरित करुपा
हतसा॥ २७॥ तरि तुमचा काम पावे सिधि॥ इंद्र न चळे इंद्रपदि॥ अेसि मीसा
गेन बुधि॥ मालतुम्ही करपने अनुष्ठा॥ २८॥ त्यानकरुनि त्रिरसाचा इंद्र॥ निर्मावे
लपेपक्षेंद्र॥ विर्य शौर्य बळसमुद्र॥ इंद्राहुनि आगळा॥ ३०॥ ऐसे कश्यप भ
गवान रुषि॥ प्रार्थोनि मागो निघेला यासि॥ वालखिल्य अतिसंतोषी॥
वरवो पितेजाले॥ ३१॥ म्हणति सहजतु पुत्रकामार्थी॥ अमुचा नपाचा फळ

घेहाति ॥ जो मनोरथलुस्सियाचिती ॥ तपावासी घ्रिते ॥ ३४ ॥ तथा वर गरुडनि
धान ॥ वैनता गर्भसुकिकेरल ॥ निपजतपुढा जाल्लेकथन ॥ लेलुभिसां गप
रिसित ॥ ३२ ॥ असोतो गरुडमोहाब कि ॥ स्वर्गिप्रवेश नयेकाकि ॥ पक्षवात
चियेधुळि ॥ मंदाकि निउहुळत ॥ ३३ ॥ ते समस्त जा पावलेसुरा ॥ अलक्षुणो
निहातियेरा ॥ हातवसडनियेरयरा ॥ धीर रावेवापिति ॥ ३५ ॥ किसहस्रदि
नकराचा सळु ॥ कीउदला प्रळयानळु ॥ पक्षसोवडितश्रुगोळु ॥ चाकेपउ
गरगरा ॥ ३६ ॥ नरवेदेखा निसपाणि ॥ सुराचिरास्वपाझरपाणी ॥ यकाव
जाअपिदेन्हि ॥ तैसिचुंचुसभसमित ॥ ३७ ॥ देखो निसुराच्याथाटि ॥ क
रितजालेशस्त्रवृष्टि ॥ गर्जनेचा अतिवेभाटि ॥ गगनघुमोलागले ॥ ३८ ॥
तउकभिंडमाळासुंडे ॥ चक्रनाराचलोखंडे ॥ भाले त्रिशुळ हुडपाउ ॥ घेघेस
जोनियाकिति ॥ ३९ ॥ हेदेखोनिप्रळयरुद्र ॥ कार्यरववकला विहंगेद्र ॥ पक्षणे
देवहोलुमचाइंद्र ॥ जरीपालला विबुधेसि ॥ ४० ॥ अथवासाटिसहस्रमणी ॥
युध्याआल्या पिनाकपाणि ॥ जरिवेकुंठसांडनि ॥ मदसुदनपावला ॥ ४१ ॥
तरिकस्यपाचकुमर ॥ मामानसेरवगेश्वर ॥ ऐसा जाणा निनिर्धार ॥ हायसो

२

२

उस्युध्या चि॥४४॥ हरिहर ताप ऊ नियुद्धि॥ अपुले काज नेइ ब सिद्धि॥ गर्व चडे
ल जे दुर्बुद्धि॥ तो पावल क्रूरगतें॥४५॥ ऐसे गर्जो नियकसरि॥ क्षपा घालि मिर्जे वेभा
रि॥ जेसा युगांति त्रिपुरारि॥ क्षोभे विश्व नासावया॥४६॥ पक्षापि य नियाधरणी॥ र
त्तिका भरलि सुरलोचनि॥ रजे अछादिला तरणी॥ कोण्ही कोण्हा न देखे॥४७॥ पक्षानि
लि डावियराति॥ यर यरावरि जे दकलि॥ रास्त्रे सांडो नियाहाति॥ निमिष्यमा किवि
लोचन॥४८॥ घालि अवसरि सहश्र नयन॥ अज्ञापुनि पाट विपवन॥ मेघ पाउ निर
ज कण॥ क्षालिसि प्रकरावया॥४९॥ अज्ञे ने मुरव्के म्राये सेरा॥ मेघि मोकल्या
जकधारा॥ युयुसा ले भदरा॥ पक्षिद्रा नेदा विति॥५०॥ मेघि पसंगे लियाधु को रा॥
देखला जाल येर यरा॥ पर्जुनियहाति येरा॥ पुढलि मारा लागले॥५१॥ द्रा भि
राल भ्रीसहश्र भ्जि॥ रास्त्रा अस्त्राच प्रहरणी॥ तीक्ष्ण धारा चे रवपाणि॥ वन्ही
वर्षे लागला॥५२॥ यकज्ञपालि जित चधरा॥ यक ज्ञपाति शालर व ऊ करा॥ यकल
ण लिडाल्म पुरा॥ व ज्र घालि मिरि जैसा॥५३॥ यकरघुल्ला घवे॥ वत्पाफा सि
चरण ग्रिवे॥ गाऊनी पांजिरा रक्षावे॥ कौतुका र्थ पारिव॥५४॥ पपरिसो निरेवा
चिवल मना॥ गरुड मिस कल युध्य करना॥ पक्ष वाता वति जाण॥ असख्यात
गो विले॥५५॥ यकऊर्धे उडविलि गगनि॥ यकया किले समुद्र जिवनि॥ यकयो
मिहु निधरणी॥ पऊति ऊति पुनः पुन्हा॥५६॥ नागता न रवा॥ विचेप ठे॥ रास्त्र

अस्त्रहोतिपिव ॥ चुंचुहाणिताराणिटा ॥ चुणीहोतिमस्तके ॥ ५५ ॥ निर्जराचिंदिव्य
शरिर ॥ चंडघाइशतजर्जर ॥ प्रवळकसमिरव्यपुर ॥ देवगंगा माजलि ॥ ५६ ॥ हस्तपा
दअंगोळिका ॥ खंडितिजैस्यापादपशाखा ॥ केशसमस्तलुचुनिदेखा ॥ क्षपीक
तसेभासति ॥ ५७ ॥ गरुड माराचिया नटी ॥ कोपहाथीर नधरे पोटि ॥ अमरगणी
दडुनीपाटि ॥ पळते जाले सबरे ॥ ५८ ॥ साध्यादिकगधर्व ॥ पुर्वेउजु पळालेसर्व
थोकरुद्रउनपीवसव ॥ २ श्वपश्चिमालघेति ॥ ५९ ॥ आदित्य पळाले पश्चिमे ॥
पस्चीनोरदेवधावेसौम्ये ॥ म्हणति प्रळयविहंगमे ॥ देवक्षशिआ [illegible] लि ॥ ६० ॥
अश्विकुथन नकुथन ॥ तप पाउलु पमीपण ॥ पुरुजयारदेवगण ॥ यकयेक
पकारे ॥ ६१ ॥ ऐसे देखोनि अद्भुत ॥ कोपरववळला यम करांत ॥ दंडपडला
फुनिवरि ना ॥ गरुउडुधावेनल ॥ ६२ ॥ जेणकाळदंड भीम ॥ जगाचा
प्राणदंडियमालणे ताडिताविहंगम ॥ चोजके सबलेल ॥ ६३ ॥ दंड मलु
निजयपाणि ॥ नवनितप्राय गिळिलावर निश्चणेरे विष्णुकेकरा स्वमि
यमबाधा असेना ॥ ६४ ॥ आनपाहेजगहिंसका ॥ निर्दय निष्ठुर जीवघात
का ॥ तुझियाछेदा निमस्तक ॥ अमरी नविस्थाते ॥ ६५ ॥ म्हणे निघाविन
लाराग ॥ यमसवित आडोरिधा सुर्यसारथीयालसांगे ॥ निवपावे [illegible] साभा ॥

कि ॥ ६६ ॥ अरुण लंघे आगा ॥ अनुजा ॥ माझीया स्वामीचिया आज्ञा ॥ रूपने
रक्षि पवीत्र द्विजा ॥ रूपने गरुडासी डिरा ॥ ६७ ॥ पुढे त्रिगुण त्रिशुळे भारि ॥ हे
रत्नाउिलादेखा निदुरि ॥ विवेक साधक सुविचारि ॥ सावधान सुकविला ॥ ६८ ॥
कौतुक सुलुनी निद्रियगलि ॥ निस्तेज करुनि वोपिला हाति ॥ आश्चर्य करुनि मि
रिजापति ॥ बळ अद्भुत देखोनि ॥ ६९ ॥ हासोनि बोले खगनायक ॥ तुझेनि पाव
लो परमसुख ॥ आश्चर्य त्र्यंबक ॥ पाहो टेला निरा ॥ ७० ॥ आपावरू पासि
वरूपा ॥ दंभा चार गोविताचरण ॥ निलोभे लवेनि नरक जाण ॥ शांत खंड
केले साधके ॥ ७१ ॥ विष्णुस्मर पालया चेवदनि ॥ तयाते बाधु नसके कोण्ही ॥
ऐसे निश्चय करु निगमनि ॥ निवाल टेले समस्त ॥ ७२ ॥ विजुचमके पण पाड
ले सागरु उडपाचपुढे ॥ अम्हलवे चित कडाडे ॥ वन्ही धडके सभोवता ॥ ७३ ॥
प्रकाश पसरे रुदा तवक्र ॥ तैसप रिघे ज्वाळा चक्र ॥ गगनचुंबित अवक्र ॥
मनासि मार्ग असेना ॥ ७४ ॥ हे देखोनि गरुडा तमन बुधिया जिती मनो
धर्म ॥ सुधाचरो धिपावकशमे ॥ ऐसा करुउपाय ॥ ७५ ॥ शरीर करुनी अ
नंतवदन ॥ भरलि अनंत नदिची जीवन ॥ लणे सिंपि ता प्रळय घन ॥ शां
त जाला प्रळयाग्नि ॥ ७६ ॥ यापरि करुनि अग्नि शांत ॥ पुढा सचरे भरि
तपंथे ॥ लवदे खिले अत्यद्भुत ॥ जका असाध्य प्रयति ॥ ७७ ॥ सु

धावापिचक्र॥ तिवरिभावे कर्तरियत्रें॥ जैसे कुंभकाराचे चक्र॥ सहस्रधारासभागि॥ ७८॥ ज्याचहोतासंघटण॥ सहस्रखंडआते पावन॥ तिक्षणतेचियाभयेकरून॥ वन्हीकाशोलपाल्ग॥ ७९॥ याचिसुकउनियाभवंडि॥ चक्रधारेचियसवडि॥ मा जिसेंचवूलालान डि॥ सूक्ष्मदेहधरूनिया॥ ८०॥ चक्रभ्रमतअसतावेगि॥ पंत्रसुखपैलियापामागि॥ रिघतजालाजैसायोगि॥ ब्रह्मरंध्रिप्रवेशो॥ ८१॥ पुढेपाहेअमृता निकटि॥ वेढेघातले माहाककोटि॥ जो जिपडेलयाचियदृष्टि॥ तोभस्महोयक्षणार्धं॥ ८२॥ त्यालथेअदृश्यहोउनिअपणो॥ पक्षिमारिलेमृत्तिकाकण॥ अधळुनसर्पांचलोचन॥ अंधकेले निरोप॥ ८३॥ सुरुकिरणी नाशिकनयनी॥ व्याळनिर्बुजलेरजकणी॥ कुंडअनोलाउत्तरा॥ नि॥ अमृतमाथावंदिले॥ ८४॥ वाप्यककसिपविञसुधा॥ संपुर्णभरलिमुखमर्यादा॥ वदनिञाकिलअरविंदा॥ कनकयाचिहस्तके॥ ८५॥ यंत्रमुखिनखसुदृढे॥ चक्रउपडुनिसांडिले॥ मनोवेगाहुनिचढिले॥ अमृतघेउनिउजाला॥ ८६॥ गर्जनाकरितजयजयाकारे॥ गगनमंडळिघालिलफेरे॥ म्हणेदेवहोबळिष्ठविरे॥ सिघ्रयावेसन्मामा॥ ८७॥ अद्भुतकर्मदेखोनिनयनि॥ सन्मुखपातलासारंगपाणी॥ माद्रकक्रोधअवलबुनि॥ चक्रवेगिमाकळीले॥ ८८॥ यलयतसुदर्शनि॥ गरुडगि

चिपसत्त्वी वृक्ष न ।। हृदयास्थाचा हातिजाणा ।। भुषणार्थ वीपीले ।।८४।।
विष्णु ह्मणे भला रे भला ।। प्रसन्न जाहलो मागवहिला ।। अमृत प्राशन
विण केला ।। देहे तुसा अक्षइ ।।८५।। गरुड ह्मणे कमलापति ।। तु वर माग
मजप्रति ।। देव ह्मणे भवस्य हाति ।। भाष्य वापिउ दार ।।८६।। गरुड देता
भाष्य प्रमाण ।। हरि ह्मणे माझे होइ वाहन ।। दास्य धर्म पालु निवच
न ।। ध्वजस्तंभि राहवे ।।८७।। गरुड ह्मणे समर्थ बोले ।। हो तैसेचि
अंगीकारिले ।। भावे यउनी वांदले ।। त्रिश्रांत वइद्रा ते पावलि हा
क ।। गरुड घेउनी गेला पीयुष ।। अडधा चिनला सरोष ।। नागारुड न
गवैरी ।।८८।। वज्र सोडिले सव्य हस्ति ।। तल जैसा तिव्र गभस्ती ।।
गरुड स्खलु निया ह्मणे असी ।। भंगो नय ऋषिची ।।८९।। मग राका
ले ह्मणो वचनी ।। माझे कौतुक पाहे नयनि ।। ह्मणे पक्षापासोनि
धरणी ।। पर्णी थकसो डिले ।।९०।। ते कनकरूप चुनिबंधपत्र ।। उसे उ
मटले चित्र विचित्र ।। ले जसहस्र वक्षुचे नेत्र ।। झाकोळले सौंदर्य ।।९१।।
देखोनि हरिहर कमळासन ।। ह्मणे तियाचे नाम संपुर्ण ।। इयपर्ण धारत कि
चुर्ण ।। राते हो लिवज्राचि ।।९२।। पृथ्वी सागर सहि ।। त गिरि ।। यकाप

पक्षाचेअग्नि॥ब्रह्मायुष्यवर्षेवरि॥वाहासकेविष्णुस्मरणे॥६६॥यवढिजया
चिअंगवण॥तयामितुझानिवाचेकवण॥यालागिसख्यकरुनिजाण॥का
र्यसिध्दिसुरेशा॥६०॥नामवेदेखोनिगंधरावो॥इंद्र इछिमित्रभावो॥ह
पगरुडमजसिभलो॥वाढताकरिबंधुभ॥१॥आणिजेइछाअसेलमनि॥
तोवरमागमजलागुनि॥माझेशत्रुमित्रमानि॥शत्रुमित्रअवघेस॥२॥गरुड
ह्मणेहेसहभाक्षा॥सर्पहोतुकामाझेभक्षा॥हायकवरवोपिमुख्या॥मित्र
५ माझातुयका॥३॥किरासकश्यपाचकुमर॥हासिवडिलसहोदरु॥दोघेरवे ५
चराचेइंद्रु॥नामहियकदोघाचे॥४॥ह्मणोनितुह्माअह्मासहज॥मैत्रिया
यतासमानसाज॥अताकाजमाझेनिकाज॥अपुलेसमानितु॥५॥इं
द्रेह्मणेआगासखया॥तिसकुळसर्पयया॥यामाजितुतभक्षावया॥स
र्पविसंतिवापिल्लिंद्ध॥उरलेजनमोजयाचियझणि॥भस्महोतिलतुनाश
निगसांलकाहिअग्निकमुनि॥सुलतूरक्षील॥७॥ऐसेबोलोनिदोघिजण॥
भेटमिळालेअकिंगिपिणाइंद्रह्मणेमग॥प्राथनि॥वाक्यमाझेअवधारि॥८॥तु
जकाजनाहियाअम्हते॥ह्मणेउचितबोपिमाल॥गरुडह्मणेतदथचिंते॥चिंता
काहिनकराविगा॥९॥किंचितेकार्याचेनिडेरा॥अनाइकसुधामिनलगा॥वचन
दिलाहेविश्वास॥वचनमाझेमानितु॥१०॥हेसर्पनेदोउगिनयनि॥देवीनर्पवे

त्रकुशासनी॥तुवाहाराबनेथुनि॥अदृशागलिसमहरि॥११॥वसासंकल सांगुव
हिला॥सर्पसदनाप्रतिपालका॥अमृतकुंभदाचितजाला॥परमआल्हादसक
ळाल॥१२॥गरुडउनसुचिपण॥असलादुर्लभअमृतपान॥स्पर्शकिलियापासु
न॥अदृशाहाइल तातात॥१३॥अथोनिपवित्रगंगाजळि॥मंगळभागकलनिस
काळि॥ममबैसोनिसुहृदमळि॥पियुषपानकराव॥१४॥गंगातिरिस्थळ
निर्दोष॥कुशामंडळिअमृतकलश॥ठविताजालापतंगाधीश॥दउनिया
सर्पाते॥१५॥आजिपासुनिमाझीजननी॥मुक्तदासिवदोषपासुनि॥साक्ष
यथार्थसुर्यधरणी॥गर्जोनिऐसजापावी॥१६॥सर्पीमानुनीयावचना॥तरे
सारुनिसंध्यस्नाना॥लाउनियाउभयनयना॥मंत्रजपतिमानसि॥१७॥
लसंधित्तक्षुनिया॥नित्तति॥इंद्रयेउनीअदृशागलि॥अमृतहरिलेकवणेगति॥
प्रप्यालजैसाकुंदालु॥१८॥नियमसारुनियाव्याळि॥यउनिपाहतिकुशस्थळि॥
अमृतनदेखोनिसकळि॥हाहाकारमाजविला॥१९॥गरुडटकिलेठकीलेपा
हि॥अलाउपायनवलेकाहि॥अमृतटेविलेलेटाइ॥दर्भजिव्हाचाटीति॥२०॥
तियदर्भधारेकरुनि॥चिरोनिजिव्हजालदोनि॥तेसाक्षिअद्यापिवरिच्चो
चनि॥लोकदेखलिप्रसक्षा॥२१॥अमृतहरायेनिदुःखे॥दहिले चिलचाप
वकेवेनतापुत्रिवासुनिसुखे॥गरुडगेलास्वाश्रमा॥२२॥सत्ताविसकुं

केव्याळ॥ क्रोधेग्रासिले माहाविशाळ॥ उरले भयपाताळ॥ वीक॥ परेदुनिया

पळाले॥ २३॥ येकत्रकरु निजनकजननि॥ इलु कथा नैमिषारंण्यि॥ वर्नि

ले यथार्थवचनि॥ सौतिसांगे सौनका॥ २४॥ अख्यान हे श्रधाभक्ति॥ पढे

निपुरिलापरिसविति॥ सालपुरिवाहो निअंति॥ स्वर्गीप्रति नेगरुडु॥ २५॥

अणि सर्पापासुनि कदा॥ नाहि विषाचा बाधा॥ ऐसे व्यासाचिया शब्दा

विश्वासे सिमा निजे॥ २६॥ यथुनि संपले सौपर्ण॥ पुढे मांडेल अस्ती कायन

कथे सी निजअवधान॥ सज्जन दिधले पाहिजे॥ २७॥ इति श्री भारते अ

दिपर्वणी॥ मुक्तिरागि रातामृपर्णी॥ साहित्य मोतियाचि भरणी॥ जोडला

हिक भोलिया॥ २८॥ इति श्रीमहाभारते आदिपर्व गरुडअमृत हरणो

नाम षष्टमोध्यायः॥ श्री वक्षिप्पापर्पस्तु॥ ६ ॥ ६० ॥ ६० ॥ ६० ॥ ०

॥श्री रामसमर्थ॥ सौनक अपोलो महर्षणी॥ मागील कथा परिसिली श्रवणि॥ सर्प भिधान तुमि वाणि॥ गये दलिना हि विस्तार॥१॥ तु साभो नि पन्न ग सत्र॥ जे अद्भुत रसाचे पात्र॥ तये अमु चक्षु घित श्रोत्र॥ सद्व सक खिद्रारा॥२॥ सो तितये अहो जिग्धा मि॥ संख्यान पुरे सर्प नामि॥ तथापि श्रेष्ट श्रेष्टते मी॥ अनुवादन आवधारा॥३॥ नाखवासुगि ऐरावत लक्षक धनंजय कुरांत॥ काकिय माणि नाग कबळे स्वत॥ आपुरन आणि पुंडरिक॥ नायेक पुत्र या मन व्याळ॥ निका निकुं नशरावळ॥ अर्य कड प्रकन हुष पिंगळ॥ पोतक अषि सुदुमुख॥४॥ दधिमुख वक्ष ताविम ळपिंडक॥ आयुश्रवकोटिरक॥ वाख खिल निष्ठुरक॥ हेमगुह महानागा॥ धि वाद्य कर्ण हस्तिक मुद्गर॥ पिंडक काळिक येक वीर॥ पुष्पदंष्ट्र व्रत बिच पांडुर॥ सर्वंतकि पातपद्म॥५॥ शकुन कं वज्रकोप मन क्षमका॥ पींजर यैर क अतिभद्रक॥ मुशकर्द सास्व सिरजा तिरक॥ अपरजीत पुर्णभद्र॥६॥ श्रीबह कोरव्य धृतराष्ट्र॥ कुमोदाक्ष कुंजन कुठर॥ कुंडोदर ककरि महोदर॥ ससक विरजा सुबाहु॥७॥ पुष्कर शालि पिंड विर्यवान॥ पिवर मुरवर कोणपायन॥ कुष्मांडक तितिद केमान॥ बहुमुलके रास॥८॥ असो हे किति नामसंख्या॥ प्रकट केले मुख्य मुख्या॥ अप्रासि

धतयाचालेखा॥ विस्चकतसियजाण॥११॥पुत्रपौत्रवहुसं
तति। नागकन्यापञीणीजाति॥देवांगनातुल्यसुकृति।
भोगपावति तयाच॥१२॥सकळसर्पश्रेष्ठसुमति॥शेषफणिंद्रधर्म
मुर्ति॥धरुनिविलरागविरक्ति॥निघनाजालातपाते॥१३॥वल्कलवसनजटा
धारि॥जितेंद्रियनिराहारि॥पुण्यारण्यगिरिवरिसपुण्यकुहरवसविलु॥१४॥
हिमालयगंदमादनि॥त्रारण्यीपुष्करारण्य॥निर्मळतपेनिर्मळस्थानि॥
निर्मळमनेंअचरलु॥१५॥तपश्चर्यातिव्रदारुण॥देखोनिपातलाचतुरा
नन॥म्हणेकवणकामनामन॥वांछितेसांगअनंता॥१६॥नागेंद्रम्हणे
देवदेवा॥श्रीरंगनाभिकमळोद्भवा॥सुहृदसंगमाझियाजिवा॥वांनितें
सानावडे॥१७॥हेदुराचारिजगहिंसक॥अधर्मसिळपरनिंदक॥नित्यकल
हाचेकौतुक॥परस्परवाटचिति॥१८॥यावरिबळिष्टसापत्नबंधु॥गरुड
वाचासेवकसाधु॥यासिचाललिवैरसमंधु॥हिनशक्तिपामर॥१९॥विश
घमातेनेशापिले॥पावकिभस्महोतिलवहिले॥तयाजोहरालुनिपाहिजे
केले॥देहमाझभिनहा॥२०॥तिव्रतपाचावैश्वानरि॥शरिरजाळिननिज
निर्धारि॥ऐकोनिहालतेविलासिरि॥नाभिजम्हणेविधाता॥२१॥मात्

शापाचा अनिळ ॥ त्यामोनें दितुज अभुमाळ ॥ निश्चयेहितुनि अचळ ॥ मीसागेन
यारिति ॥ २४ ॥ माथा घेउनिया धरणी ॥ अक्षइ राहे पाताळभुवनि ॥ सर्व सोख्य तुज
त्यागोनि ॥ पाठविन याठाया ॥ २५ ॥ तुझे नित्य पेजाला तुष्ट ॥ रात्रिंदिवस अतिश
चाट ॥ पद्म पत्राहुनि हलुवट ॥ धरणी राहेल तुझीये माथा ॥ २६ ॥ अहिराज ह्मणे त्रै
लोक्यनाथा ॥ भुगोळ बैसवि माझिया माथा ॥ ब्रह्मा ह्मणे महिडळता ॥ अरोळीत
गिरिकुटे ॥ २७ ॥ तेणे श्रम यहोइल भुता ॥ रवचलित स्वर्गाचिया नळथा ॥ ह्मणोनि
त्पणा श्रम न होलता ॥ सुखापाये सांगतुसे ॥ २८ ॥ मासे अगस्तने धरा येथे ॥ विवर
पाडुनि देइल पंथ ॥ तुवा प्रवेशो निवरित ॥ स्तंभ होणे तळवरि ॥ २९ ॥ करुनी
प्रदक्षणा नमन ॥ शेष अज्ञेन करि गमन ॥ विवर पाताळ भेदुन ॥ पृथ्वी माथा
वाहिला ॥ ३० ॥ सहस्र फणि चिन्हायक मणि ॥ तयावरता स्थावरि धरणी ॥ धरिलि जेसि
मृत्तिका कणी ॥ नदिसे शृंगीमरच्या ॥ ३१ ॥ हरिहर सिधि सकळ भोग ॥ रिधि सि
धि सहित सांग ॥ निकट्य उनीउ क्षय मार्ग ॥ पाहतिशेष अज्ञेचा ॥ ३२ ॥ पुढें परम भक्त
ह्मणोन ॥ त्यावरि पहुडला नारायण ॥ यापरि शेषहो भूषण ॥ अलहिनार्थ साधिला
॥ ३३ ॥ शेषस्या गोनगली यावरि ॥ सर्पमिळोनि थोरथोरि ॥ वासुगी केला राज्या
धिकारि ॥ इंद्र जैसा सुर गणी ॥ ३४ ॥ सभा करुनि मंगसमस्ती ॥ चित्त भ्रमति चिंतावर्ती ॥

शापारिष्टपरिहारार्थी ॥ म्हणातियन विचारा ॥ ३३ ॥ यक म्हणति रुषि चियां का
या ॥ धरुनी भेटे जन्मेजया ॥ सर्पसत्र करावया उपदेश करु विवेके ॥ ३४ ॥ यक
म्हणति होउ प्रधान ॥ सर्व नेमोहुन्टपा चमन ॥ यक म्हणतिरु द्विजगण ॥ रात्रिनि
द्रिस्तडंकावे ॥ ३५ ॥ यक म्हणति हो मद्यसकळ ॥ नाशाकरु यांतु गरळ ॥ यक
म्हणतिलो भुपाळ ॥ ग्रासु पितया सारिखा ॥ ३६ ॥ यक म्हणति विषाद्धारि ॥ य
घपाउनि यथ्यावरि ॥ यक म्हणति हस्तनापुरि ॥ सर्पमये चि करावि ॥ ३७ ॥ ऐसि
सर्पमुखे चि वचने ॥ यक हि राजा न मनि मने ॥ म्हणे हे ब्रह्महत्यारे मरणे ॥ पावसि
हु लासि ॥ ३८ ॥ अधोवदन वारिमोचे ॥ हस्तक्ष्माडिवे ळोवके ॥ हे देखोनि स्य
च्यमसिखे ॥ यळापत्र अनुवादे ॥ ३९ ॥ म्हणे ग भुजंगरा ॥ अवधारि गा शाप जाल
जे अयखरि ॥ माते चिया मांडिवरि ॥ भय उपविष्टमी होतो ॥ ४० ॥ ते धाकिकानी
पडलि वचने ॥ ते तुम्ही ऐका यकाग्र मने ॥ शापपरिसे निचतुराननें ॥ तथा
स्तु म्हणे चेहु मुखि ॥ ४१ ॥ तथे अमरासहित निष्ट ॥ भावे जोडुनि कर संपुष्ट ॥ स्त
वने प्रार्थिला देवश्रेष्ट ॥ पितामहा परमेष्टि ॥ ४२ ॥ पुत्रा शापोनी करिदहन ॥ ते
लय राक्षसा समान ॥ तिचियावचना वाअपण ॥ किमर्थ दिधले स्वामी नाथा ॥ ४३ ॥
ब्रह्मा म्हणे परपिडका ॥ साचे हृदयि अत्यंत दुःख ॥ यालागी दिधले मासे मुखा हो
तैसचि म्हणो निग ॥ ४४ ॥ दुष्ट संहारा कारणा ॥ अपाय यच चावे प्रयते ॥ सहजमां

ग

उक्तादेखोनि मनें। त्यासंतोषमानिला।।४५।। शक्र म्हणे देवा तुदीनदयाळा। साक्षि
कत्तामस प्राणिसकळा। सुष्टदुष्टतुझेचिबाळ।। कृपेने देवे रक्षावे।।४६।। हासोनि
बोलसकेश्वर।। सांगणे नलगे हा विचार। पवित्ररक्षावया प्रकार।। यापुर्विचि
रचिलासे।।४७।। दुष्टपडतिलदुतात्रानि।। सुष्टरक्षीत आस्तिकमुनि।। ऐसेंबो
लोपन्नयानि। पुढतिबोले मर्मार्थ।।४८।। स्वसारोपाविधाकुणि। जरत्कारिस
गुणश्रेष्टि। जरत्कारभीक्षेसाटि। अंगिकारिल निजबधु।।४९।। तिचापोटि ज
न्मेलकुमर। आस्तिकनामे रुपेसुंदर। तपातेजे वैश्वानर। धडाडिवेशम्या।।५०।।
तोरक्षील मालुळजळता।। ऐसें वदला वेदवक्ता।। तोचि यलतु सिअला।। विचा
रावा मुख्य हा।।५१।। ऐकोनि यळापत्रवचन।। तोषलेवासुगिचेमन।। अवघेम्हण
ति धन्यधन्य।। श्रेष्टविचार हा यकु।।५२।। यावरि स्वल्पचि काळ करून। सुरासुरि
समुद्रमथन।। मांडिलें तें समई प्रार्थुन। नेत्रकला वासुगि।।५३।। कार्यसंपादला
सर्व।। वस्तुलाभते पावलेसर्व।। तेच विस्मरोनि अहोभाव। पुढतिब्रह्मा प्रार्थिला
।।५४।। स्वामि फणिंद्र वासुगिनाम।। यथेवहु सालआळाकामा।। याचे हृदयि
चे शल्य तुम्हा।। काढुनि कोपाफडावे।।५५।। याचा हृत्ताप केलिया शांत।। आलापा
वस्तेकोटिउचीत। ऐकोनि बोले त्रैलोक्यताता।। हे म्यां पुर्विचि कथिलेंसे।।५६।।
यळापत्र अपुल्या युक्ति।। जो कावद्दलासपी प्रति। तोचि अटव धरुनि चित्ति
उपावहे हि साधावा।।५७।। जरत्कारिरक्षुनि यत्ने। जरत्कारुपि भीक्षेस

दयो ॥ लेअप ल्यारे तदाने ॥ अस्तीकाचे जन्मविलं ॥ ५८ ॥ सर्पाते अवे स्थानर ॥ मनेम
नमस्कार ॥ ऐसा अस्तीक ऋषेश्वर ॥ जन्मतारक्षीत सर्पाते ॥ ५९ ॥ सा ऋषिचा आग
मनकाळ ॥ यथुन समिप जाणा ॥ सकळ ॥ ऐसे अभय औको निर्व्याळ ॥ त्यांरांग
पाघालिति ॥ ६० ॥ वासुगी बोले अज्ञा वचन ॥ सर्प होत रक्षा द्विजा मन ॥ जरत्का
रु हे भक्षीदान ॥ अरटवमानि असोया ॥ ६१ ॥ या वरि कौरव वंशा न्टपति ॥ पवित्रे
राजा परिक्षीति ॥ म्टगया व्याजे वना प्रति ॥ निघता जाला कौतुके ॥ ६२ ॥ जैसा प्रता
पि महा प्रचंडु ॥ धनुर्धारी माजि महा प्रचंडु ॥ तैसा वियश कीर्तीने रवु ॥ म्टगयाशिक
७ स्वधर्मी ॥ ६३ ॥ करि सायकत्ना रासना ॥ स्वापद लक्षि हिंडे वन ॥ तरसतरक्ष वराह
श्वान ॥ बाणाधारा निवटलु ॥ ६४ ॥ पुढा कुरंग यकनयनि ॥ दुरि देखोनि विंधि ७
लावाणि ॥ घाया ळम्टग पळता वनि ॥ पाटि धावे भुपाळ ॥ ६५ ॥ जैसा शंकर
पिनाकपाणि ॥ यज्ञ म्टगाते विंधोनि बाणी ॥ पाटि लागे धावे चरणी ॥ ६६ ॥ स्व
र्गी रंध्य रो ध्विल ॥ ६७ ॥ तैसा लागला असता बाण ॥ वन उपवन लंघि हरण ॥
राजा पाटि धावता सिण ॥ पावला जाला अपार ॥ ६८ ॥ पुढा गौरक्षका चे वृंद ॥
देखिले करित बहुत विनोद ॥ चरसमुख चिन्हे श्रव निविंद ॥ तो पय फेण प्राशि
ति ॥ ६९ ॥ या ले पुसे त्टषा ने जिवन ॥ यर हस्रपाति जि पय प्राशान ॥ किजे अणा
निक्षी रद्रोणा ॥ पुढे करि तिहस्तक ॥ ७० ॥ नेघो निम वले पाहे दृष्टि ॥ तव अंतरे
पर्णकुटि ॥ देखो नि आला तया निकटि ॥ देखे मा शा ऋषि तपस्वी ॥ ७१ ॥ देखो नियां

पद्मासनि। मन नेणउं ठेला। समाधि शयनि। म्हणोनि कपाटमुद्रा नयनि। अप्री
मुखि महामौन ॥७१॥ कोणमासुनि करितप। याला गि ग्रामी केलो फेणपारा
जा आला। यास मिप। ता पधमि श्रांतला ॥७२॥ हस्ते पिटा नियाटा कि। राजा
म्हणो ब्राह्मणा न्या हलि। अत्तिम न्य पुत्र येकालि। परिक्षीति यथे अले ॥७३॥
कृष्णा कुरंग विंधिला बाणे। पळतां देखिला। असेल नयने। तो सांगिजे म्हण
ला वचने। ऋषि मौन स्ल बोलेना ॥७४॥ जे सिदात्त प्रतिमा स्लब्ध। अळवि
लियानें दि शब्द। तैसा न बोलता विषाद। राजा मानिमा नसे ॥७५॥ विनाश
का कि भ्रंशा बुद्धि। ऐसि भ्रष्ट मयर्यादा अवधी। म्हणो निअविद्या येसं
धि उदित जाले राया तेगा ॥७६॥ न्यस सर्पाचे कलेवर पडिले। तेधनुष्य को
टिने उचलीले। कंठि ऋषि चसुदले। परि तो ध्यानस्त पणा म्हणे ॥७७॥ इश्वर
मायेचा बडिवार। कि पुर्वकर्माचा बळहार। विवेकवंत हि अविचार। राह
टे विचार असता हि ॥७८॥ मोहिनि याछ किला गि रिजावर। कि माया मृ
गे श्री रामचंद्र। कि कपट का शायुधिष्ठीरा। टाकिला जाला अदरे ॥७९॥ वि
र क संचरे विति चारा। सात्विक क्षोभला परमारा। निरपेक्ष प्रवर्ते अविचा
रा। तयाचिया प्रारब्धे ॥८०॥ पडिला राहणी यासि सितरा। नाउपावल पा
र रवि योल। कि विवेक सिंधु आपो हपा रु। कुबुद्धि कुपि बुडाला ॥८१॥

तैसा परीक्षिति सुविद्यपरमा। त्यासि हि प्राप्ति जाला त्रम। ह्मणौनि असेसअ
योग्य कर्म। करिता जाला लफा किं।।७१।। अनुचित राहटे नियाथोर। राजा
प्रवेशहस्तनापुरा लैये किरुषिचाकुमर।। श्रृंगि नव्हता आश्रमि।।७२।। तो
जमदग्निसमान कोपि। दुर्वासहि निसिद्ध सापि।। विश्वामित्रसमान त
पि। तेज जैसा हुताशा।।७३।। याब्रह्मदर्शनाचा नियमु।। तो सारुनिया त्रि
जसंन्तमु। टाकोनि यंतानी आश्रमु।। वाटे स्वाध्याइ भेटला।।७४।। त्यासि ति
नेदे उपहासिता।। तो ह्मणे गर्वें नधरि चित्ता।। श्रृंगी तु सापवित्र पिता।। कं
ठि वाहे श्रेवाते।।७५।। ऐको निक्षोभला अद्भुत। परिसा वरो निपुसे वृत्तांत।।
क्रोध ह्मणे मान्य पनाथ।। परीक्षिति आला आश्रमा।।७६।। तपो बोलताचि
वचनि। तपस्वि नवोल चिमोनि।। याचरि गेला कंठि सुनि।। मृत सर्पा
चा।।७७।। श्रृंगि ह्मणे पापावे लेके ले।। अवडि मरण घेतले मोले।। द्वादु निहावा
ह कश्रासिले। प्रविलते येरा कशिं।।७८।। ऐश्वर्य मदे चडला ब्रह्मा। नेपोस
पुरुषाचा महिमा।। आला धर्माचिया धामा।। बोले विन अविवेक।।७९।। ऐसे
बोलो निक्रोध घेतवके।। उदक घेतले निजहस्तके।। सापवदला आला मुखे।
अलिदारु पालजैका।।८०।। आजि पासुनि सातवे दिवसि। नक्षकरे रोम

रणासि॥ अन्यथा माझी वचनासि॥ करनसके हर ब्रह्मा॥ ६५॥ यापरिसाप वदा निराग॥ अश्रमपातला विहंगमयोग॥ सर्पकादानि सर्वांगे॥ शुरकहस्ती स्पर्शिले॥ ६६॥ याचरि ध्यानविसर्जुनी॥ स्तुतिपावला सामीकमुनि॥ श्रंगाने जापीतला मनि॥ नसांगता संज्ञेन॥ ६७॥ म्हणे अनुचित केले कोप॥ राजा हा सांजोउलिशाप॥ राहरिमाजिमन संकल्प॥ कायनकरि प्राणिया॥ ६८॥ निंद्य निंद्यकर्मे जिनुके॥ मनुष्याचपासुनि घडेनितुके॥ म्हणानि विचारे नरसाक्षिके॥ मूलद्रोहा नकरावा॥ ६९॥ विध्वहअवयवअरपुत्रे॥ तिहिकेल्या अपण केले॥ ऐसेसाचार जयाकच्छे॥ लाचिनिश्चय जगदात्मा॥ ७०॥ परावेअपराध करणाक्षमा॥ हेचिभांडवल तपियाअहा॥ क्रौधरिलीय क्षेमा॥ अक्षमे हानिसाधने॥ ७१॥ प्रजापालकमुर्ति॥ जैसा राजाविवेकसुमति॥ रापिलाहे पुढलपुढति॥ खेदचोटमजपुत्रा॥ ७२॥ दशश्रोत्रियासमानन्ते पलि॥ ऐसेबोलतिमन्वादिस्मृति॥ विशाषहापरिक्षिति॥ पुण्यश्लोकधर्मात्मा॥ ७३॥ राजकरिति द्विजपाळण॥ त्यास्तव निजपतिसकळयज्ञ॥ लेणदेवसंतोषान॥ पर्जन्यानेवर्षति॥ ७४॥ तेथुनि औषधिवनस्पति॥ बहुधा अन्नातेप्रसवलि॥ त्यास्तवसकळभुते जिति॥ हापैधर्मरायाचा॥ ७५॥ या आम्हा जोडलि

४

यासुरुलधना॥ राजा स्वतंत्र विभागिजाणा॥ ल्पणनिराण्दपे श्रा॥ तगपरमश्रा
धयअसुते॥३॥ श्टगिलिपाना ताखामि होणार वलियनजाणालुह्मि अरालको
धयादुनीमि॥ साब्देवा कवणाते॥४॥ सामीकविचारि अपण॥ अन्यथानल्श्ट
गिवचन॥ आतासांगो निसावधान॥ राजाकलापाहि जो॥ अ॥ असविचारुलि
चिलि॥ गोरमुखनामशिष्य सुमलि॥ हंतालसांगो नितयाप्रति॥ भुपमुवनापा
ठविला॥ घातलेगजाउनिगजसावया॥ प्रवेशानिमहेद्रालेया॥ अवलोकुनिराज
वेडुयी॥ असिबदिनमवाचि॥७॥ जनेस्वरजोउल्या हस्ति॥ भूसुरनमिला वि
नयभाति॥ रत पिटासनिउचिति॥ अत्यादरगौरविला॥ ८॥ आगिकारुनिया
बहुमाना॥ अणंचक्रवर्तिचुडारत्न॥ रामिकरुषिचियावालित्यावचना॥ सां
गातुतेपातलो॥ थाप्रारिलअसताहष्ट प्रारब्धे॥ अश्रमाआलासिम्टगयानंदे
लेथअनुचिलअप्रमादे॥ अचरलासिजकाहि॥ ७॥ तम्यासर्वहिकलेक्षमा॥ पुरि
पुत्रमाशार्श्टगिनामा॥ नपोलजेक्रोधप्रतिमा॥ नसाहोविलयाते॥ १२॥ शापक
वलिसुलजाळे॥ छेदिलिअयुष्यवल्लिचिमुळे॥ अकेतासकवसुखाचिफळे॥ र
क्षाहोतियकदा॥ १४॥ सप्तमदिवसाचियेअंति॥ तक्षकदंशनाचियनिघलिमस
पावोनिसदनाप्रति॥ वेवरचताचेजासिल॥ १३॥ अन्यथाकरायाजोथि॥ हरि
हरब्रह्मियाचिशक्ति॥ अराकाअसेमासीयमति॥ श्रेयालहिमताहा॥ १४॥

५

तथापिसावधहोइजे॥लक्षकविषयबाधापरिहारे॥तोचियखेवदप्रकारे॥
साधियेरसांडिका॥१५॥ऐसेसांगोनिनिघताजाला॥राजाचेतनविपडिला॥
लहिधैर्येगोवविला॥गोरमुखमंदवचनि॥१६॥धाराभिकचरणीमाझमोळा॥रवि
तेसांगासत्यश्रवण॥माझियाअपराधाचेफळ॥याहुनिविशेषपाहिजे॥१७॥
स्वकूलद्रोषपावलाव्यसन॥तथापिदिनावरिकरंराविकरुणा॥पडेरलोकित
द्विगहना॥कल्याणतेपावेन॥१८॥असोहबोळउनिद्विजा॥पाचारिलाप्रधान
प्रजा॥पश्चात्तापानळेराजा॥संतापलाबहुसाल॥१९॥सुपोहोणारदुष्टकर्मा॥अ
वमानिलेब्राह्मणोत्तमा॥असुउलोमरणधर्मा॥अकस्मातयेकाळि॥२०॥कन्या
कर्माचाप्रस्ताव॥ज्याचाहृदयिनुपजेपश्चात्ताप॥तोचियांडाळवियदेहो॥जन्म
लाऐसाजाणिजे॥२१॥स्वासरटाकावयापुरता॥नाहिअवकाशनहता॥कवण
साधनसाधुआला॥मोक्षपंथाजेदावि॥२२॥कवणाभेटेलमाहानुभाव॥कव
णाप्रगटहोइलदेव॥कवणातिर्थकवणाटाव॥टाकिल्याअरिष्टनाटळे॥२३॥
नाहिऐसाजोडिलागुरु॥जोमस्तकिटेविलाकरु॥करीश्वरुपसाक्षात्कारु॥देहासि
मानसांडोनि॥२४॥अर्चिलेनाहिदेवद्वेना॥जेवोदेलपावेधावाकरिल॥सर्व
श्ववेश्वरभाकाता॥ऐसामित्रअसेना॥२५॥ज्ञानेनासिमनोमळ॥ऐसेनिर्थ
कोणनिर्मळ॥अतळोनसकेमृत्युकाळ॥ऐसायोगदुर्लभा॥२६॥आलाधैर्य

त्रियकसोयरे ॥ प्रारब्धन चुके निज निर्धारिं ॥ अपुले निच विचारे खलुरे ॥ चित्त राखणास्वरूपनि ॥ २८ ॥ पाटिमोरेमनविचारा ॥ तरिकाय उपदेसिल दुसरा ॥ गुरु केला हरिशंकरा ॥ बहिर्मुखबाधेना ॥ २९ ॥ मिअभ्र अज अविनाशि ॥ देहे तरि नेश्वर्य निश्चयेसि ॥ आत्ता चिम्हुण यासुयासि ॥ कानाच ते आसे प्रालब्धे ॥ ३० ॥ माझिया अनुभवनिज निधाना ॥ सांडले शरिर सांडले जाणा ॥ जेवर पडोका मृत्यु श्वाना ॥ कासंचले असो का ॥ ३१ ॥ परियाउभयसमंधाकडे ॥ पाहता वर पडो हाड न पिंडे ॥ जनमम्हयाच साकडे ॥ जिवि जडे न सते चि ॥ ३२ ॥ हणोनि शरिरसमंधका हि ॥ मज सि सर्वथा नाहि ॥ मीआनादि मुक्त पाहि ॥ सर्वसाक्षी जगदात्मा ॥ ३३ ॥ ऐसे अपुलिया मना ॥ विवेक आणि जे समाधाना ॥ हचि ज्ञानिया विसंज्ञा ॥ वेदांत वेदे बोललि ॥ ३४ ॥ अणि श्रीशुकमुखे श्रवण केले ॥ ते आजि मना उपेग आले ॥ निजध्यासे पावते केले ॥ साक्षात्कारपर्यंत ॥ ३५ ॥ भागवत जाह्नवीयसंधि ॥ ज्ञान दिनकर करुणैक निधि ॥ शुकयोगेंद्र द्वादशस्कंदि ॥ अनुवादला परमार्थ ॥ ३६ ॥ अठरासहस्र विष्णुचरित्र ॥ परमार्थरसाचे पियुषपात्र ॥ श्रवले श्रीशुकास पवित्र वक्त्र ॥ विष्णु श्रोत्र निववावया ॥ ३७ ॥ असो तो भारतचि ऐका ॥ प्रजा प्रधान नरनायका ॥ रक्षीते जाले कौतुका ॥ आर्तिस कानि परिसावे ॥ ३८ ॥ इति श्री महाश्रीभारते आदिपर्वणी ॥ कथा स्वल्पिक कल्लोळिनि ॥ श्रवणाचे मनने मुक्ति वाणी ॥ मुक्ति फळदे श्रो

(left margin:) िध्याय ॥ ७ ॥ इति श्री महाभारते आदिपर्वणी प्रसंग ॥ ८ ॥ संपूर्णमस्तु

(right margin:) ६८

॥श्रीरामचंद्रायनमः॥ आमविषइग्रजाप्रश्नसि॥राधिब्राह्मणीलपो
धनि॥राजारक्षिताजालेयजि॥कवणेपरितेऐका॥१॥गमनचुवि
तस्तभावरते॥उपरिगृहनिर्मिलेनिरुते॥राजासंरक्षीलेतिथे॥प्राण
जैसाब्रह्मांडि॥२॥कृपणीआचवडि निजअर्थाति॥विरक्तिसदा मने
द्रियाते॥सत्य त्रिचेहृदयनेमाते॥रक्षीतितैसारक्षील॥३॥औषध
मुळिकायंत्रमंत्र॥भुर्जेसुवर्णीलाकेपत्रे॥सुत्ररक्षा॥गरुडरत्नास॥स्तं
भागारिबांधिले॥जीजपावेसलेजपिालपश्चयीमांडिलितपि॥
द्वारेंभिमनसंकल्पी॥नवसवहुतिनचसिले॥४॥अश्वत्थसेवालिं
गार्चन॥ब्राह्मणघातलाअनुष्टान॥राजारक्षावयानाना॥यत
केलेसमस्त॥५॥स्तंभवेष्टितअसरव्याल॥प्रधानरोनाजनसमस्त॥रक्षित
टेलजेथपंथ॥पिपलिकेतेसीरेना॥६॥सप्तमदिवसहोतप्राप्त॥मानकाकलि
प्रथिअंत॥देशवासिजनसमस्त॥यतेजातबहुपंथि॥८॥कश्यपनामाधन्वं
तरि॥औषधमंत्रसिद्धसामाग्री॥घेउनीचालिलाहरेकरि॥राजाप्रतापजिवाव
या॥९॥म्हणेजोजगासिपाळिता॥साचाहोइनप्राणदाता॥कितिधर्मअपिअर्था
श्रेयक्षेमहीपावेन॥१०॥पायलागनलगक्षिति॥पंथअक्रमिऐसियारिसिपु

टभेटला मुर्ति। ब्राह्मणवेषा तक्षक॥११॥ सर्व विद्यार्थि घनदाढ्यें॥ माजीआचार
हा श्रेष्ठ। वेषधारि महापापिष्ट॥ राजहींस नाचालीला॥१२॥ सवारि गमन करूप
पाच। देखोनि त्वरगि तर्कित्ले साचे। म्हणातिश्रेष्ठ हो धन्य अमुचे। अरिविचर्न
फणिंद्र पुसे ब्राह्मणा स्वामि। बहुत्वरगेभर्भजालसा तुम्हि। कवण कार्य कवण ग्रा
मि। स्वार्थ किवा परमार्थ॥१४॥ बोलाविले कि पाठविले। किवा गमन सहज चि
केले। सांगोयतरी सागीलले। पाहिजे अम्हा यथार्थ॥१५॥ वेदधन्वंतरि मुणि
या। म्हणे जाव गज साह्या। महाध्वे सन प्रासराया। त्या परिहार कारणे॥१६
तक्षक भयाचा काळ ज्वर। मंत्र औषध न तस॥१७॥ तक्षक म्हणे तक्षक किरवाउल
रावया असाध्य म्हणतिलो का। ते परिहारिसी कौतुक। केविसाचार मानावे
॥१८॥ तो म्हणे प्रचिति दाविन पिस्वा। तक्षक विरवा केलुका केधा। म्हडे प्रासी
रके हावा तेविप्रासिनविषबाधा॥१९॥ पर्वला वृक्ष उरुहुम गहन। दंशोकि धा श
पाकरा तेन। भेदिलेस विषदहन। वाचविन नृपाते॥२०॥ संकटि कार्तवि
र्य स्मरणे। दरिद्र प्राथि तल्लिगार्जने। दोष नासति हरिस्मरणे। तेविनासि
न विषबाधा॥२१॥ पडला ना हि माझी यदृष्टि। तवतक्षक विष चिगोष्टि॥
चमत्कार दाविन दृष्टि। अमोघ मंत्र विद्येचा॥२२॥ रात्रीं दुसिस कंठिपडि
ले। त्वरूपेने पाहिजे सांभाळीले। हे चि विद्येचे फळ बोलिले। पुण्य पुरु

अदरे
॥१३॥

१

१

षिरास्त्रदि ॥ २३ ॥ देखोनि बाळाचा पुरुषार्थ ॥ भोगी राचरणा केलि हाल ॥ ल
क्षक सुर्तिमंत ॥ काळ भक्षकरायाला ॥ २४ ॥ जीवविसि लजरि जन खराले ॥ हेम्न
चिनि दाखविमाते ॥ रहस्य सांगवे असे तुते ॥ मग मी पुढे अनुवादे ॥ २५ ॥ अणोनि
न्यग्रोद वनस्पति ॥ तक्षक मुक्स्पर्शता दाति ॥ प्रळय जाळा धउको निक्षिति
भस्म जाला क्षणार्धी ॥ २६ ॥ उष्णता सरलीया वरि देख ॥ वैद्य यक वटा लिरास ॥
अभिमंत्रिला ला तो कि ॥ वट दुपानि घाला ॥ २७ ॥ तव पाहला तत्क्षणि ॥ शा
खोपशाखि फळिपानि ॥ वृक्ष विस्तारला गगनि ॥ शंकुत निउा समवेत ॥ २८ ॥
चमत्कार नियाम हाया ॥ वारवार डोळे विमो ॥ हाणे धन्य तो गुरु प्रबळ ॥
ऐसि विद्या दिधलि ॥ २९ ॥ आला गुणिया सिरोमणि ॥ यथार्थ सांग मज लागो
नी ॥ सकाम किवा निष्काम मनि ॥ जीव उआसि न्हपाले ॥ ३० ॥ राजा ब्राह्मणा शा
पा भिसील ॥ क्षीणायुष्यि जाण निश्चित ॥ विद्या विर्य न करि व्यर्थ ॥ जो उलेय
रा न दवडि ॥ ३१ ॥ राया सुनि फळ सामनि ॥ लमी पुरविन अंत गुणि ॥ दुराग्र हाते
सांडुनि ॥ परत वेगे स्वजाणा ॥ ३२ ॥ ऐको निसर्प मुखिचि गोष्टी ॥ ब्राह्मण ज्ञान दिव्य
द्रिष्टि ॥ पाहत वचने यथार्थ गोष्टि ॥ जाणा वल पुरुषार्थी ॥ ३३ ॥ गतायु रावो निश्चि
त ॥ मी का विद्या करुं व्यर्थी ॥ का द्रव्य पुरउनि स्वार्थ ॥ अवस्य जावे स्वस्थाना ॥ ३४

दरिद्री जितचप्रेत जाण ॥ दरिद्र योग्यता तृणसमान ॥ दरिद्र विद्यासमुद्र द्रोण ॥
द्रुपदें छळुनि दवडिला ॥ ७५ ॥ दरिद्रि उदास पुत्र दारा ॥ दरिद्रि सुहृद पाटि मोरा ॥ द
रिद्रे नैषध युधिष्ठिरा ॥ राणो राणी भोवंडिला ॥ ७६ ॥ दरिद्रि श्रेष्ठ मर्कटवेषी
दरिद्र परमार्थ जना विदासी ॥ दरिद्र गांजिले वनतापसी ॥ धनिकद्वारा धा
वति ॥ ७७ ॥ उपकार लाउनी न्टपनाथा ॥ दरिद्र राज्यचे करणो घाता ॥ किंब
हुना अर्थ स्वार्था ॥ लागी जाला यथार्थी ॥ ७८ ॥ तक्षक ह्मणे माझिया धना ॥
मर्यादा नाहि रे ब्राह्मणा ॥ नेइ घेइ रा रिरअवगणा ॥ घेइ इछी अपुल्या ॥ ७९ ॥
ह्मणोनि निघ थिग भीं चविल ॥ उघडुनि दाविले सागर तुल्य ॥ कनक अणिम
हा मोल्य ॥ रत्ने मिसरिले अपार ॥ ८० ॥ पंन्नगरावका चिया सिरि ॥ मंडुसा रे
उनि सहस्त्र वरि ॥ ब्राह्मणापाठउनि घरि ॥ यावे पैसे आज्ञापि ॥ ८१ ॥ स्वदेशा
धाडि धन्वंतरि ॥ देउनि कनक रत्नान गिरि ॥ पुढे तक्षका सहवि रवारि ॥ हस्ति
नापुर पातला ॥ ८२ ॥ सुर्य पावता आस्ताचळा ॥ साधुनि ऐसिया सायंका
ळा ॥ सर्पासि अणि असेत जवळा ॥ म्हणुसमयो राया तेथ ॥ ८३ ॥ ब्राह्मणपाके स
तुळसी सकळि ॥ सिध्र जावे राया जवळि ॥ पक्षिपुष्पी दिव्य फळि ॥ महाप्रसा
द भेटवा ॥ ८४ ॥ आज्ञा मागोनि नरेंद्राला ॥ सहरी जावे स्वरुप जाले ॥

पुढे वर्तले वृत्तांत ते॥जाण बळ सहजाचि॥४५॥अथवा दुनि दिं पाळल नु
आपजाला कीटक अणु॥फळ गर्भि रिघाला प्राणु॥आसा वया नृपा
चा॥४६॥कित्ति मब्राह्मणाचे वेश॥धरुनि करिति वेद घोष॥तपोवनि
तापस॥रक्षा करुं पातले॥४७॥पातले स्तंभा च्या निकटि॥देखति मं
त्रविद्याचा थाटि॥गारुडि मंत्र विद्या जाणता श्रेष्टि॥रक्षा करुं पातले
॥४८॥गरुड भीषक महा तपि॥प्रतिज्ञा करुनि बैसले जापि॥म्हणत दे
खानि वेश ऋषि॥हास्य करि तिपरस्परे॥४९॥नृपा जाणविति प्रधानें
पातले असति दर्शनार्थ ऋषि॥तिस्वामीच॥५०॥राया पाचारिले ज
बकिके॥फळ दर्शनि तीर्थ दिके॥प्रसादे देता पेहलकं॥मस्तक ले वंदिला॥५१॥प्रशं
सा निअभिवंदनि॥गंधपुष्प दक्षपादनि॥ब्राह्मण गोरव नीवचनि॥बोलवि
ले स्वस्थान॥५२॥मग आम्ही या मंत्रि या च्या मेळ॥मित्रासि बोले गरुड रोंवे
तापसि य अणि फळ॥लसम स्त स्वीकारु॥५३॥पवित्र पकुं अणी सुवास
द्विजमंत्रि सुहृद विलास॥दोषदु रिते अमुचे॥५४॥सकळ विभाग वोपिला
पत्नी॥सकिय विभाग घेतले हाति॥ज्या माजि तक्षक चि वस्ती॥लफळ
तापालले॥५५॥फोडुनि अंतर जव न्याहाळी॥तव मासा रिदेखे किटक भाळी
घेउन साक्षे पकरल ळि॥दाखविलु सर्वा ते॥५६॥अंगत याचतमात्र वर्ण॥काडे

श्रीमहाभारत आदि॥७६॥

जेथे से कोर्क नयन ॥ ५६ ॥ हो निश्चयेण ऐकावचन ॥ जे या गरुड विण अनुवादे ॥ ५७ ॥ सप्त
म दिवस लव लोटला ॥ तक्षक भयाचा पिटाळ केला ॥ तक्षिने रापिल याबे ला ॥
क रु साचा थोडेनि ॥ ५८ ॥ कि टक भाउ नियालक्षक ॥ ग्रिवस्था निस्परउनि मुख
रलुके निश्शंगी चयाक्य ॥ जाय यथार्थ फळ होय ॥ ५९ ॥ लेया निकिटक ला विला
कंटि धुधुकार कारला फुफाटि ॥ काळसर्पे घातली आटि ॥ मत्कपात्रा सारखि
॥ ६० ॥ ना त्रिकी धुम्राचक कल्लोळ ॥ मुखि धावति माहाडवाळ ॥ निमिषामाडि प्रब
ळ ज्वाळ ॥ हे उनि ग्रिवा वेटि ला ॥ ६१ ॥ उडिया टाकुनि पक्षाके आप्त ॥ ये कपाहला चिजाले प्रने
येक पर्वत नाहा मुर्छितेन ॥ टाइटाइ जुल थले ॥ ६२ ॥ कंटि ज्ञा वत्ता कडकडाटि ॥ ज्वाका उ
रि ल्माधाड धडाटि ॥ नगरवासि कोट्यानकोटि ॥ भय ल घि तिदश दिशा ॥ ६३ ॥
भय पर तोनिया हता दुरि ॥ तव अर्ध शरिर गगनोदरि ॥ अर्ध पसर ले प्र
थ्वी वरि ॥ विशाळ काळ सर्पाचे ॥ ६४ ॥ इंद्र धनुष्या सारिखे गगनि जाला
लोक देखता नयनि ॥ हाहाकार सकळ सकळ जनि ॥ हृदयि पिटति हस्त
के ॥ ६५ ॥ विजपडुनि भंगल नर ॥ तैसा निमाला राजेश्वर ॥ तपिस पालि
अनर्थ थोर ॥ ऐसा नाहि वर्तला ॥ ६६ ॥ राजदेह उपरिक्षाम ॥ विषा नळे
जाले भस्म ॥ कल्पांत समयासारिखे फम ॥ प्रजा ते समर्ले तेकाळी ॥ ६७ ॥
बाम ब्रह्म शापाचे थोरि ॥ राजा भस्म जाला सहनारिरी ॥ जाणते ऐन ॥ छहो

संसारि ॥ ब्रह्मक्षोभानधरावा ॥ ६८ ॥ ब्रह्मशापे श्रीकृष्णासहित ॥ यादव
कुळासी जाला अंत । ब्रह्मशापे भस्मीभुत ॥ कालिवियविंशे ति ॥ ६९ ॥
ब्रह्मशापे रावण संपत्ति ॥ पडिलि समुद्रा जळतौ ति ॥ ब्रह्मशापे दक्षकन्या प
ति ॥ परिवारसि भस्म ला ॥ ७० ॥ भगाकित सहस्र नेत्र ॥ सलांछन रोहिणी
मित्र ॥ ब्रह्मसापे दासिपुत्र ॥ यमजाला भुलोकि ॥ ७१ ॥ ब्रह्मशापे सर्पहीन
दुष ॥ सरउ देहान्त गनरेश ॥ ब्रह्मशापे सुख्य महेश ॥ लिंग पतन निनिधरि ॥ ७२ ॥
श्रोतिया तेन मस्कार ॥ वक्ता करि वारंवार ॥ ब्राह्मण क्षोभतो प्रकारे ॥ ना चरा
वा कोपही ॥ ७३ ॥ कपिल ऋषि पयेध्याने ॥ सगर जळतावर्षे सहस्र ॥ भगीरथम
क्ति लुब्ध निहरे ॥ गंगा दानउधरिलि ॥ ७५ ॥ योग्यायोग्य ब्राह्मण जाणि ॥ घेउन
रिघ जावे यथाशक्ति ॥ नया कलरि हो निदांपत्ति ॥ जिव्हा वर्ते निष्ठा वि ॥ ७६ ॥ असो
ब्राह्मण शापे दुःख ॥ परिक्षिति गला । विष्णुलोका ॥ पात्र जाते दुःखशोक ॥ ग
जा प्रधान संमधि ॥ ७७ ॥ मित्रो निरुपि धारशोर ॥ आमात्य मंत्रि विवेक चतुर ॥ रा
ज्यपदि राजकुमर ॥ अभिषेको स्थिला लका कि ॥ ७८ ॥ जन्मेजयाराज्यासनि ॥ संस्था
पिला बाळपणि ॥ प्रभु जाला रिने दिनी ॥ चंद्र वृधी सारिखा ॥ ७९ ॥ पुर्वज पुंण्य पू
र्वपुंण्य ॥ सत्संगति सद्भावने मने ॥ स्वधर्म पंथ वर्तला जाण ॥ सिधि होति यत्न गण्य
॥ ८० ॥ सकळ विद्याकळा सहित ॥ बत्तिस लक्षणी आकळुन ॥ विवेक न्याय येथा पुत्र

पार्थ॥ वसला जातवेदसापासि॥८१॥ उलबंध जालियावरि॥ विवहा विचार परिक्षाचे
तुरि॥ सुवर्णवरण वमीन्द्रपाचि कुमरि॥ वपुष्टमायानामे॥८२॥ आनिपाणिग्रहणा
विधि॥ वरिला जाला लावण्यनिधि॥ अंदण्यावोपिल्यासमंधि॥ पैमर्यादावेगळे
॥८३॥ दासदासि वारणरथ॥ असंख्यात वाजि साहल्कत॥ शंकट वखरे ध्वजवंत॥ श्वे
त प्रयुत रत्नधाचि॥८४॥ सुवस्त्र सुदोहा॥ धेनु महिषि॥ सुवर्ण दिव्य रत्ना चियायाना
सि॥ निचदिला कुरुरायासि॥ काशेश्वरे उदारे॥८५॥ पुर्वेष्टमसिपुरवि अती॥ सिरि
पपुरी क्रिडा करित॥ पुरिखाउवी शयुक॥ लेसिया शोभा शोभतसे॥८६॥ म
तिपरूपकदर्पमुर्ति॥ कुरुप्रविर लाहोपति॥ वपुष्टमा अक्षय प्रिति॥ वल्लभेसि
रमममणी॥८७॥ पंडुरायातुल्य पुरुषार्थि॥ विस्व विस्तारिल किर्ति॥ जन्मेजयो
पवित्रमुर्ति॥ राज्य चालवि स्वधर्मी॥८८॥ पुढे केसि वर्तलि कथा॥ ते आणावि
श्रवणपंथा॥ शौनकादि ऋषिसमस्ता॥ सौतिबोले आदरे॥८९॥ इतिश्रीभा
रत आदिपर्व॥ सांडिल प्रथकथेचगर्व॥ ते हे अपुर्वाहि अपुर्व॥ दोघदहक
आवधारा॥९०॥ श्रेष्ठतां द्रिपथ भ्रमर॥ मुक्तेस्वर कविकीकर॥ सज्जनाचिया
आश्चर्यकर॥ कथाकौतुक वरावया॥९१॥ इति श्रीभारते आदिपर्वणी अष्टमो
ध्यायः श्रीकृष्णार्पणमस्तु॥९०॥ ९०॥ ९०॥ ९०॥ ९॥

॥ श्रीकृष्णाय नमः॥ शौनकारूपे ऋषेश्वर॥ निमिषारण्य वासि थोर॥
तपिस यमियोगेश्वर॥ प्रश्न करिती आदरे॥ १॥ म्हणति लिन्नो महर्षि पाक
मरा॥ चक्रिया चतुर चतुरेश्वरा॥ कथा आणुनि विस्तारा॥ निरूसी
गा आम्हाते॥ २॥ कैसे आस्तिका चजनन॥ सत्रि सर्प कुळाचे दहन॥ केवढे
समर्थ॥ जरत्कारु तया॥ गि॥ ३॥ कैसि मंत्र विज लेजा कि॥ घाल॥ कद्रू
चि सगळि॥ उसळो निसर्पाचि वेडा कि॥ कुंडि पाडिलि अपसया॥ गहि
चिसं॥ गेसा विस्तार॥ सौति करुनी नमस्कार॥ आवदान भु केले थोर॥ सांग
ला होय सन्तोष॥ ४॥ जरत्कार तपस्वी थोर॥ भ्रमता आसला रेशाल॥
गर्तेमा जि आपले पितर॥ अधोवदने देखिले॥ ५॥ तेहि आज्ञा नमिला देखे
वंश वाढवि अपत्यक॥ तपो अक्षर वृक्ष लोक॥ पासहोइल आम्हाते॥ ६॥ या
लागि दाशर्थि आपणा॥ करिता जालब्रह्मयाटण॥ गजोनि ऐसे यथार्थ व
चन॥ जाम विलजा ऐजमाल॥ ८॥ जरत्कारिनामा परिपाटि॥ कन्या असेल
जयाचि पोटि॥ ते मज द्यावि भिक्षे साटि॥ वचन का निश्चे केला॥ ७॥ मि वृद्ध
अपि द्रव्यहिन॥ देवो न सके अशन वसन॥ अज्ञाभंगि ला जारन॥ त्य लुनि
याला काळ॥ ७॥ ऐसे वचन जे कोनि कानि॥ अविचार ऐसे जाणा निमनि
उदासिन करुनि कोपही॥ प्रत्तिउत्तर हिने दनी॥ ११॥ देव लोका अणि भुवनि॥

रात्रुनिसा। धिलपालाव। लेथहिपरिसंकल्पफळ।। यला मार्ग दिसेना।।१२।।
मग उभा टाकोनि काननि।। ह्मणपिट हो अेका श्रवणी।। उनिपत्नि तुमचे रुपी
यकवाक्य करुनियां।।१३।। तुमचे गादि आसल पुण्य।। ल रिसे वटिल माझे वचन
सुफळ होउनि कन्यादान।। कराकोपहि मजलागी।।१४।। पाहिजे तितुका यत्न
केला।। आला उतिणि तुमचा बोला।। ह्मणानियकरा।। जिमेळ।। हा कम सो
निभ्रकोरा।।१५।। जर का रिनामाजिला। कन्या भगीनि असेल ज्याचे।। लग्न
जभिक्षेला गियेथ।। आणुनि देपो यकाळी।।१६।। असे ब्राह्मणामुखिचहाका।
अेकताजाले इंद्र शुक।। वासुगिते लाकाळिक।। जायाचिले तकाळी।।१७।।
श्रवणहोताचि पन्नगराजा।। श्रृंगारु निपवित्र अनुजा।। जरका रिअणुनि द्वि
जा।। निजहस्ते किवा पिलि।।१८।। ह्मणे माझी कनिष्ठ भागिनि।। लक्ष्मी समान
लावण्य गुणी।। स्वामी न करु निस्वधर्म पत्नि।। ग्रहस्तधर्म चे तीवे।।१९।। रुषि
ह्मणे समर्थ दुहिता।। तप श्चाय पश्च सुषपायुक्त।। अंगिकारामि विनयता।।
नम्र वर्तवि पाहिजे।।२०।। ह्मणीजजा निश्चिपमी थी।। परिग्रुणासंस्कार सर्प [illegible]
वादळे सदन भोजनि पानी।। वस्त्रा भरणी सुखाउ।।२१।। समर्थ माहेरी वेषक
लेहे स्त्रिय चउसक।। भ्रतार मानुनि गावा गुंळ।। अवहेरि तिसर्वथा।।२२।।
बंधुभाग्ये स गर्व मनि।। अभय दिउ इतरुपी।। जर तेला [illegible]पो निनन्त ह्मणि

भस्मकरि नयथार्थ ॥ २३ ॥ नरपापोपपउद्योग ॥ स्पर्शोनिं दिअपुलेअंग ॥
अपवृत्ताकरिलोकसिन्त्याग ॥ हानिर्धारसर्पेरा ॥ २४ ॥ वासुमिविनविप्रह
विंदा ॥ मीन्चपुरविनसर्वसंपदा ॥ सनाथकरणेभाग्य मंदा ॥ सर्पआज्ञानि
जसंग ॥ २५ ॥ आसुचिभगी निपेश्चर्य रासि ॥ परिषिक्ति नतुमचिदासि ॥
अनुमात्रचुकक्रिया पाहिजेलेसि ॥ सिक्षाकरणेस्वामिया ॥ २६ ॥ मीक
रुनिपरनेम ॥ नमस्कारोनिब्राह्मणोत्तमा ॥ सध्रमे आपिलास्वाश्रमा ॥
नागलो कि आहलादु ॥ २७ ॥ बाधोनिदिधल्हेसुवर्णसदन ॥ सर्वसंप
त्तिभरलिपुर्ण ॥ जोजोपदार्थइछिमन ॥ तोतोसमुखसर्वदा ॥ २८ ॥ र
मारमेरामानुनिराघे ॥ रोवाकरितेजालेआवघे ॥ जारकारस्वस्त्रि
संगे ॥ गृहस्तधर्मसंपादि ॥ २९ ॥ स्नान संध्या जपहवे न ॥ स्वा
ध्यायहरिहरदेवतार्चन ॥ वैश्वदेवअतिथिपुजन ॥ पित्रुतर्प
णपैनवे ॥ ३० ॥ हेनहिकर्मअवस्यके ॥ चालविनित्यनैमित्यके ॥ कामनि
षिद्धेदोषात्मके ॥ मनेतोरिरनातले ॥ ३१ ॥ कुंडत्रयवेदिकायुक्त ॥ अष्टविंश
सिपात्रेसहित ॥ अग्निहोत्रादिरष्टपुर्त ॥ पैविधियुक्तसंपादि ॥ ३२ ॥ श्रीक्रा
रुनिन्यायार्जिधन ॥ निष्टसंपुर्णलहज्ञान ॥ श्रधाअतिथीचापुजना ॥ भ

२

।ध्यावो सर्वदा ॥३३॥ न्याय श्रोभ षण्वलि श्राद्धि ॥ वाचा त्रोभे सत्यवादि ॥ औ
सामहस्त मोक्षपदि ॥ सन्या साच फळलाभे ॥ ३४ ॥ ऐसियापरि सार्थक काळु ॥
ऐसियापरि सार्थ काळु ॥ करुनि विग्रहस्त निर्मळु ॥ पविरले भावे अचंचळु ॥ सदा
यचा सर्वदा ॥ ३५ ॥ रुत श्रोलजा लिरिनि ॥ पुत्र फळार्थ याच किणि ॥ ३६ ॥ विजाणो
निरेलदा नि ॥ लोप विला स्वधर्मी ॥ ३७ ॥ शुक्ल भिस्ता गर्भपात्रि ॥ पडला संतुष्ट
पद्मने त्रि ॥ भानुले जलपवि उदरपात्रि ॥ तपोबीज विस्तारे ॥ ३८ ॥ परिते
नेपोचिल यक ॥ क्रिया बाक्कबुधि सलज्जा बाकि ॥ रुपिने जाणो निह्रस्यकमछि
के लक्ष्के नार्थ मानिले ॥ ३९ ॥ यावरि कोपाये के दिवसि ॥ भोजन सारुनि सा
वकाशि ॥ दारा अंक करुनि उसि ॥ निद्रा सुख पहुडला ॥ ४० ॥ सो पिने साक
किला प्रिया ॥ नच असमान पालला सुयी ॥ संभोग रडोल विवायो ॥ संश
याचा हस्ती ॥ ४१ ॥ जा मत केलिया चउल कोपु ॥ नकरिता मा निल स्वधर्म लोपु
अधर्ये दी मार्ग संकल्पु ॥ भय निसरे चाचरे ॥ ४२ ॥ विचारे कोण सामान्य वि
शेष ॥ सकळ मल्लोपे स्परलि कोष ॥ निश्चिसि आहे आवकाशे ॥ रात्रि सगळी
पुढारि ॥ ४३ ॥ मग चुरुनि चरपालक ॥ लयासाधि जो संध्याकाळ ॥ हो मरुणि
श्चधर्मसिळ ॥ मग संतोष पहुडपो ॥ ४४ ॥ पश्चम समुद्रि बुडला तरणी ॥ वि

२

हंगमभगेसुकृतहाणि॥व्यंगलेना विटाळसणि॥तुमचापापयानालकी॥४४॥
ऐसेसमेकेलाउत्तर॥कोपेरववकलावैश्वानर॥क्षेपमांडियेपडलाभार॥ह
णोनिनिद्रासांडिली॥४५॥स्थमीनावडेलुक्षियामना॥म्हणोनेकरिसिबहु
हेळणा॥आलाजायलुबंधुसदना॥सेउनिराहेभुजंगी॥४६॥आज्ञानघेता
मजरुषिचि॥खंडणाकरनिसकर्मीचि॥श्रापनाहिसविनाचि॥अस्तमान
जावया॥४७॥नावेकधरुनियाधीर॥पाहावाहोताचमत्कार॥असोलेआ
वघाउदूताचारु॥लुक्षियादृष्टबुधिचा॥४८॥वृक्षदरिद्रीरोगिष्ट॥विशेष
असुरण्यहिवसता॥स्वरुपतरुणीसमर्थदुहिला॥कांतारूपेहृद्रोग॥४९॥
ध्यानासारिखेहेकसिती॥मर्कटातुल्यउपहासलि॥तक्रिनिर्लज्यकामसा
क्ति॥त्रासनेघेलेविषयाचा॥५०॥वर्मीतीडिलाकटिपावचीन कुछेपात्रदेख
लानयनि॥पुरुषमाजिरमियवोअपो॥ध्यानि॥हरयिहापिलालेयाहियर
णी॥वजेसंघटेपदसंधि॥५१॥चर्मीलाडिलाकटिपावचनी॥लिंगमुखदा
टिलिभगक्षाजनि॥वोव्याठिनरोमस्थानि॥पुच्छउपसारितपुढा॥५२॥कि
विषयरक्षलागिदा किलि॥मुत्रमोरीयेनीसरमति॥नग्नस्त्रियाभोवनेभो
वति॥लेशुकरव्यलिनरहि॥५३॥किरतपलनार्थमंजुरिया॥उभयस्कदि
द्विपदादडिया॥वाळकहोउनिनर कालया॥जिवनेतिसकामा॥५४॥हस्तदं

उटेकुनि शुनि॥ श्रमल्या विसावा मानि॥ त्यचा निच ति गजल्या नि॥ लेवि
चुबंनि परि ताषु॥५५॥ यापरि आयुष्य केतुनि व्यर्थी॥ नरक यात्रे चालिले बहु
त॥ वैराग्य चिण मोक्षपंथ॥ वोसपडिला प्राणीया॥५६॥ असो हे संसार कु
छित रॉचि॥ मी तव तपिया माजि धुर्जीटि॥ यागुनि जाला सुख संतुष्टि॥ तु
राहे ईछा अपुलिया॥५७॥ पाया धरु धावे कांता॥ रुषि चरणी लोटि माथा॥
हे पोस न्मुख येता॥ भस्म करि नक्षणा घी॥५८॥ भय कप सुटला गात्रि॥ अ
श्रु धारा लोटल्या नेत्रि॥ धाके शब्द न फुटे वक्त्री॥ मुख आच्छादिले पद्लु
चा॥५९॥ भयसर्प दंशले सदनि॥ धाके सामोर न यति कोण्ही॥ कोपलि को
पिष्ट नपस्वी मुनि॥ सपी शापिल आम्हुते॥६०॥ मा त्व शाप पावलो व्यसन
दुसरा अकैया साहे कोपा॥ भगीनि वधरि रिषिचरणा॥ पति शांत विप्रापुढा
॥६१॥ दव धोत्र घेउनि हाति॥ रुषि चालिला वैराग्यपंथि॥ यरि मोवे मा
घे यति॥ शाककरि ति अक्रोशा॥६२॥ ओलरे जाउनि मागपाहे॥ लव
प्रिया पाठि सि येत आहे॥ मग उभा ठाकुनि लपोराहे॥ होजाय परतोनि॥
॥६३॥ भार्या विन विसर्वज्ञ देवा॥ विचार मुति करणा वा॥ जन्मोनि नेपेतुष्ट
भावा॥ सोके पण आरज॥६४॥ स्वामिन शब्दे विलाक्षोभ॥ हे दुष्ट प्रार
ब्ध राहिले उभे॥ आता क्रोध सांडुनिया लोभे॥ कृपा अनुग्रह करावा॥

॥६५॥ थोरदुराशा धरुनि चित्ति ॥ वडिलिचो थिलें तुमचहाति ॥ त्या मिय्या
चियमनोरथि ॥ शुन्याकार दिसताहे ॥ ६६ ॥ तुम्हापासुनि त्या घल्याफळ ॥
चा तो आस्तुइमाझकुळ ॥ यासंकल्प नव्हु विफळ ॥ ऐसकेलें पाहिजे ॥ ६७ ॥
ऐसे प्रियेन प्रार्थिता लेथ ॥ कपेनें अस्या सिउभयेहस्ते ॥ आपागर्भ सुलि
के अलोतूरन वाढे अनर्घ्य ॥ ६८ ॥ नास्तिक त्या चिना स्तीक ॥ पोटि आहे
आस्तिक ॥ रजनिजट रिहुनि तो अर्क ॥ प्रगटे जैसा प्रभाते ॥ ६९ ॥ कपिले
अथवा स्वामी कार्तिक ॥ याज्ञवल्की योगीद्र शुक ॥ या चियपंक्तीहा अ
स्तिक ॥ तुकिजेल महिमानें ॥ ७० ॥ जोहरिरक्षिला सपतिरु ॥ पित्रु पावति
ब्रह्मलोकाते ॥ ब्रह्मकिर्ति त्रै लोक्याते ॥ पावन करित्ल पवित्रा ॥ ७१ ॥ जे
सवोळे निस्वदारेसि ॥ ७२ ॥ हृदय जाला ब्रह्म ऋषि ॥ वियोग दुःखकासा
चिसि ॥ ये रिमु छित धरणिय ॥ ७३ ॥ सावध होउनि वाढवेळे ॥ जळे स्म
रि मुखकमळ ॥ ग्रहापात लिलयवेळ ॥ वियरपादखु सचित्त ॥ ७४ ॥ या
सुगिळ्लपाविन्नाळ नयनें ॥ सर्वज्ञा त्या सिविचारपुर्पी ॥ तुज वाणिल्लि
का त्याजे पागल सिधकि असिधा ॥ ७५ ॥ प्रार्थिते असलातु मचा काजा ॥
काय बोलिले लपस्वी राजा ॥ यरिसणे नुदुगी सहज ॥ उनत्र्य रकाय

हिदिसलोहा।७५॥वैश्वानरानुल्यतेजा॥तपोधनद्वोगळा॥अ
सितैकजन्मो निलुमन्वाकुळा॥कवचहोइत निर्वापि॥७६॥बै
सपरिसनाउत्तर॥हतपनाचेद्र्याधिकार॥अवचेकरितिजयजयाकार
सुखसाखवाधीलि॥७७॥मिनाक्षिगोरिचियेराचे॥लेथ विह्तियक्षपीचे
थोवे॥कीश्रीयासिद्धिचेमळावे॥ईश्वरलेवळगलि॥७८॥लेसियापर्भी
पिनागकन्या॥सर्वोपचारिगुणैकधन्या॥जरत्कारिपुजिलिमान्या॥कु
ळदैवलेसारिखे॥७९॥शुक्रीश्विसगपापाचचे॥लबतवम्रगा किंकळा
वाटे॥लेसापविनोदरिविरुद्र॥गभाकिंरळागळा॥८०॥अभ्रअछादिले
अदित्य बिंबा॥परिविश्वे प्रगटे विराजरो॥भा॥लेसिजटरातु निप्रभा॥बा
हेरिफाकलया॥८१॥स्फटिक निल निचादिपु॥कापाये अंतिल आंग
नावपु॥किबाह्यक्रिया प्रगटिरुपु॥असनीहृचलक्षण॥८२॥नवमास
लोटलिया अंति॥पावलिजालिसुख प्रसुति॥विधुमपावका चिदिप्ति
तपोतेजसुतेज॥८३॥किर्तीकाचाप्रथमचरणि॥जन्मपावलाअस्तीक
मुनि॥लवेकीवसुगीचासदनि॥मंगळेसहामांडिलि॥८४॥गुरियातोर
णघरोघरि॥मंगळवाद्यवाजतिगजरि॥८५॥अतिआल्हादधरक्षाक॥परम
निधानमासुनिदरवा॥रक्षितेजालेसाचा॥ळका॥आपानुल्यसाधेपे॥८६॥

॥ज्ञानेश्वरी अ० ४॥

चंदनकर्पुरद्रवनजैसा॥वाढताहोयपरिमळसरिसा॥बुध्दि
विवेकसंस्कारलेसा॥याग्रपछ्छस्वयबाढे॥८७॥जातकर्म
नामकर्णक्रमणअन्नप्राशन॥चौलानंतरउपनयन॥वा
सुगिसांगसंपादि॥८८॥चलबंधजालियामाग॥चवनभा
गविपासुनिसांग॥वेदपढिनला निर्व्यंग॥जोलिशालसिक्ष
दि॥८९॥विवेकबुध्दिसवसबळ॥लपश्चर्यीनेकर्मिनकाळ॥
प्रभाकरलुल्यतेजाळ॥सितळचंद्रासारिखा॥९०॥गाभियजै
सारताकरु॥औदार्येमेघकाकल्पतरु॥सामर्थ्यजैसासर्वेश्व
रु॥घडिमोडिसंकल्पे॥९१॥इंदिरेचिबाळकाचिआशा॥धरुनिइंद्रा
पिचावेशा॥अमरगपोसिसावकाशा॥सवेनेरक्षीसर्वदा॥९२॥
नानायक्षगणाचलक्ष॥घेउनिमुख्येधनाध्यक्ष॥रक्षि

ला।भगो नि विरूपाक्ष।। सेवेने रक्षी सर्वज्ञ।।७३।। तें सियाप
रिपन्नसकळा। वासुगिस हितसर्वकाळ।। रोवाभलिरावि
चाबाळ।। सेवेने रक्षिसर्वज्ञ।।७४।। सुचना कथे विपुदारि
यरिकडे हस्तनापुरि।। राजाक्षाभोनि जिकारि।। पन्नंग सत्र
अरंभ्भी।।७५।। इतिश्री भारतसमुद्र रुपि।। मद्दापि कीचुंचु
चमापि रुमाणि मनसकृपी।। अघट मान चतुराचे।।७६।।
परि विश्वाभर गुरु प्रसादे।। मुक्तेश्वर वदे आरु घराब्दे।।
परिसोनि सज्जनवृंदे।। संतोषती यथार्थ।।७७।। इतिश्री
भारत अदिपर्व नवमोध्ययः श्रीकृष्णार्पणमस्तु।।७
०।।७०।।७०।।७०।।७०।।७०।।७

॥श्रीसच्चिदानंदात्मने नमः॥ श्रीरामसमर्थ॥ आले लुपालि वकिया॥ उत्त
कऋषि जन्मोजया॥ तिरस्कारि मंगमंत्रिया॥ काय बोलने सांग॥१॥
वक्ताह्मणे सावधान॥ ब्राह्मण कथिले पितृमरण॥ संतोषनोकोभंगा
निमन॥ शोकार्णवि नृपनाथा॥२॥ आमात्य मंत्रिवडिलवृध्दा॥ पाचा
रुनिसायेसुहृद॥ तयाप्रतिसरवेद शब्द॥ ऐसाबोले नरेंद्र॥३॥ मातं
पिता परिक्षीति॥ मरणपावला कवणरिति॥ लक्षकविषयाग्नीचारि
मि॥ दहिला ऐसे ऐकिले॥ जपरिहैवार्ता नुम्हिकाणिहा॥ लाविले नाहि
माझेश्रवणी॥ बाळबुध्दि किया अगुणी॥ ह्मणानिकालउपेक्षा॥४॥ पुत्राहि
लक्षण तिगान्नृपनाथा॥ कवण संतोषाचिवार्ता॥ जसांगा निवुमच्याचि
त्ता॥ वोलिरोकाम्निक्मवणे॥५॥ विषवाढीलावंचलेपनिं॥ ह्मणोनी रसा
वे अमृतलभालि॥ श्रवणीपडलारवदचिंलि गलकायमांडीसांगणे॥६॥ आ
तासहजप्रसंग आले॥ सांक्षेपकरु निस्वामिने पुसिले॥ तरि सांगीजल श्र
वणाकेले॥ पाहिजे प्रलापसद्र॥७॥ कौरवा पांडवा वीरे वबालु॥ माजला अ
सताअसद्धुलु॥ होउनि दृष्टनि:पातु॥ लेलुऋल्लयकदा॥ ८॥ द्रोपदिचपाच
हिकुमर॥ घटोत्कच मे मिराक्षसक्रुर॥ कर्णद्रोणांचे निसंहार॥ जाला साहिज

गाचा ॥१०॥ सप्तम तो हि पावलाक्षये ॥ श्रीकृष्णभगिनि सुभद्रा तनयो ॥ अभि
मन्यु अर्पण वधनंजयो ॥ विभुक्षेत्री निर्माला ॥११॥ रुक्मणावलार संपत्न्या
अनि ॥ पांडव निधना महापंथी ॥ राजिस्थापित्लाय परिक्षिती ॥ अभिमन्यपु
त्र तपिला ॥१४॥ तेणे साठि सहस्त्रे वरि ॥ गुणपुर्वजा अनुनिहारि ॥ स्वधर्मपा
ळिलीचे रिती ॥ रामचंद्रासारिखा ॥१३॥ राक्षसत्रासुनि जग ॥ तिराळि ॥ रक्षी
जैसा श्रीकांत बळि ॥ अरिव्यापासुनि प्रजा सकळि ॥ संरक्षिला प्रतापे ॥१४॥
१ साधु संग्रह उद्धट निःसग्रह ॥ शरणा आलिया अनुग्रहा ॥ धर्मविग्रहि याचा
सग्रह ॥ केला नाहि सर्वथा ॥१५॥ दानदंडाया चेनि निघाले ॥ जगाचि दुः १
री रिद्रु निरैले ॥ दारिद्र दवडिले देशापरते ॥ स्पर्शोनेदि कालिधर्मा ॥१६॥ जि
तेंद्रिय सत्यशीळ ॥ प्रजापाळक सुलदयाळ ॥ विष्णुभजनि अतिप्रबळ ॥ सा
धु मित्र सद्भावा ॥१७॥ सारद्वत गौतम कुमर ॥ कृपाचार्या पासुनि चतुर
धनुर्विद्या पावो निगुर ॥ जाला शास्त्रास्त्र धारशचा ॥१८॥ ऐसा पवित्र
नरेंद्रोत्तमा ॥ पावला जाला निधानधर्मा ॥ तो सांगता वाढेल श्रम ॥ तथापि
धैर्य अकर्णि ॥१९॥ मृगया व्याज्य वना ॥ सिगेला ॥ शामिक ऋषिचा आश्र
म आला ॥ ध्यानस्त देखोनि कोरसुटला ॥ म्हल पंन्नग त्याच्या ॥२०॥ त

षिच्यापुत्रें तपोरोषें ॥ शापदिधला उच्चारें ॥ सप्त दिवसां तिक्षक दं
शे ॥ मृत्यु पावसि निश्चिती ॥ २१ ॥ ऋषिने सांगो धाडिलें नृपा ॥ ताको
ळ पावला पश्चातापा ॥ प्रजा प्रधान उद्वेगा कंपा ॥ विश्व प्रळय सारि
खा ॥ २२ ॥ सुहृद प्रधान ते समई ॥ राजा रक्षिला स्तंभाचे ठाई ॥ सप्तम दिव
साच अंती पाहि ॥ मार्गी येता तक्षक ॥ २३ ॥ कश्यप ब्रह्मऋषि जाय ॥ सर्प
उतरी विद्या निपुण ॥ सत्वर येता देखिला प्राण ॥ वाचवावया नृपाचा ॥
॥ २४ ॥ तक्षके कारण विचारिले ॥ ऋषिने यथार्थ कथिले ॥ प्रचीति
दावा म्हणति बोले ॥ अवश्य म्हणे कश्यपु ॥ २५ ॥ तेव्हा रक्ष दग्ध परिक्षा
दाउनि पुरविलि समक्ष ॥ म्हणे मंत्रज्ञ माजि दक्ष ॥ इच्छा ते सांग मज पासि ॥
॥ २६ ॥ हस्त धरूनि कश्यपाचा ॥ म्हणे मागसि ते देइन लाखा ॥ ब्राह्मणे बहु
धनाचा ॥ लाभ जाला त्या परतणे ॥ २७ ॥ सर्व्ये वेग घेउनि वित्त ॥ वैद्य फिर
विलायसयत ॥ पुढे तक्षक नगरात ॥ कपट वेशे पातला ॥ २८ ॥ मोहुनि सकळ
चित्त ज्ञाले ॥ राजा तक्षके घेतला प्राण ॥ ब्रह्मीस कवजा स्नेह दीने ॥ स्वामी वीणते
का किल्य ॥ विषानळे अनिस कुमार ॥ राजा भस्म जाला सहशरीरी ॥ नगरि
राष्ट्री हाहाकार ॥ थोर जाला प्रजाते ॥ ३० ॥ उमुले आनाथा केले राये ॥

मम अश्रीयले लुसेपाव ।। लुजदेव ननेच सिणळ छाय ।। हा काळ वारिनिवाळो ।। ३१ ।।
पुढे अनंत संसर ।। होइल लक्ष्मी विजयवर ।। वार्ल औ कोनिराजस्थर ।। रोककरी
जनकोरा ।। ऐथ्या सोत विचारी विशषमाल ।। वैद्य फीर विला दउनि वित्त ।। हे
नगरिका अंतरिचिमात ।। लुल्लाके निजाणावलि ।। ३३ ।। राया न्यग्रोद वृक्षाव
रिंला ।। ब्राह्मणकुमर चक घलाहोता ।। नेपोरा होनिर्चंताल ।। दोहिंवाहीरे
किल्या ।। ३४ ।। समीधा कुरा काष्टभारा ।। मस्तकी होता ब्राह्मणकुमरा ।। नो
जळो निपालला आकारा ।। पैहिला औसा ऋषिपुत्र ।। ३५ ।। ओसे थिरवे जाळी
ले जगाते ।। तस्म रानि हृदाथि पिरिहस्ते ।। अपे प्रापास जिन यथे ।। काव धि
लो सर्प ।। उधावैद्य पावतो हस्तनापुरा ।। लरिवाच विता राजेस्वरा ।। तक्षका
चावैरकारा ।। मज मर्यादा दिसेना ।। ३७ ।। आता प्रतिकार करिन तयाचा ।।
सुउच्चेइन पितयाचा ।। संतती सहित तक्षकाचा ।। देह जाळिन हुला सि
।। ३८ ।। उस्वास घालितसे वदनि ।। राम अधरचा वीरध्यानी ।। हस्तचुरित
ळ वामुधी ।। अरकन यनिसंलत ।। ४० ।। ब्राह्मणपापाचा निस्पकळ ।। साप
निबोलेउ लावळे ।। सर्प यज्ञिय कुरा ळे ।। कोपाते निवाडि निराको ।। ब
विप्र हित जन कोन मा ।। मिहिक रिन लक्ष कहोम ।। सयकोउनि

अभिमानेनेमा । सिधिन्यावासमार्त्ता ॥४४॥ अभिवपन्नंगा । स्थे विधि । कुशळ
जापालेमंत्रवाक्षि । तेहि विळंबन करिताअधि । सर्वारंभकरावा ॥४३॥ जोमंत्र
उच्चारिताहोटि । अपिनिमंत्रपाजव बोधि । लवउसळोनि सर्पाच्याकोटि ।
कुडिपडतिलआपसूया ॥४४॥ रुपि बोलतिपरमपवित्र ॥ विध्युनेअहे
पन्नसंत्र ॥ विधिलेनेमिलेसतंत्र । तुजचिनगीभुलोकि ॥४५॥ पाषाण

तारुनिसागरांतु । यकश्रीरामबाधैरातु ॥ गरुडप्रारानिसमर्थु ॥ रांक
रस्वामिलायक ॥४६॥ रावि राताजनेच्याशिकोटि । द्रोणाचळ वाहुनिपा
टि ॥ आपुनिजावयाअगजे ॥ हनुमंतयकजन्मला ॥४७॥ चिभुभेदुनिज
यध्वत । वदावयाचिप्रमाणाशफला । सिधिनेक्षालायकचपार्थ ॥ वडिलतु
शानिवडिला ॥४८॥ सिंधुप्राशनिआगस्ति ॥ तमहरणियकगभस्ती ॥ धरणी
धरिताधैर्यप्रसिद्धि । आदिकुर्मयेकचि ॥४९॥ तैसेमामेअचरेल कोपही ॥ जैसे
वोलेनसकेचाणी ॥ पुढेआचरेलकोपही ॥ भुवनचरनायको ॥५०॥ पिश्ववैर
पंन्नगहोम ॥ कलतिचिप्रतापीपरम । उपमेका क्षिष्णकापरशुराम ॥ तिस
रा दृष्टि दिसेना ॥५१॥ यकवधिलेकंसादिक ॥ यकसहआर्जुनदेखा ॥ पिन्ह

मारकपरमारक ॥ दहन करीतुं येक ॥ ५१ ॥ वेदीयकदेशी येक ॥ जगीयें कायुगी येक ॥ ब्रह्मकळिअपजे येक ॥ किर्ति घेतुजऐसा ॥ ५२ ॥ आणादेयिनरनाय क ॥ कौतुकदाउब्रह्मादिक ॥ तवकिर्तिभरे तिहिलोक ॥ अवयाकरउचतुयुगी ॥ ५३ ॥ राजासपेतु सुर स्वामि ॥ चित्तव्याकुळसतापउमी ॥ स्तुतिवाद गौरव लुहिं ॥ परिलेगोडवाटेना ॥ ५४ ॥ साब्दउसपोफडिलाबहुल ॥ विळवकाऊजाल सव्यथीआताचिवरले तिलोआर्थ ॥ यथार्थकर निशरववावा ॥ ५५ ॥ अवस्य लेपो निधिगवरि ॥ करविलेजाले सिधसामुग्रि ॥ पुढनिबोल्ले तिआवधारि ॥ राजेश्वराचतुरज्ञा ॥ ५६ ॥ अधिविसनगयज्ञा नि ॥ ते सिसामपअसावा ॥ परि क्रियाआचारअनुष्ठा नि ॥ ले निवडिलेमाहाज्ञा नि ॥ ते सिसमीपअसाव ॥ ५७ ॥ आगमिनिगमीअथर्वणि ॥ मंत्रावतार महाज्ञानि ॥ तिर्थिगिरिउद्यारंपयी वसलेयेथेआणावे ॥ ५८ ॥ कृपाआसाउरनुग्रहाप्रभे ॥ कर्मसिधिसिटाकलेउ भे ॥ साचियसन्निधिसुकल्पउभे ॥ यरिलउद्योगआमुचा ॥ ६० ॥ गौडमक्रिया ऊउनमेदेशास्त्रप्रकर्दि ॥ श्रीसोल्यबद्रिचमरल ॥ याच्यियमंत्रिमंत्रदेवत उ‍उपा जागलिफकेसि ॥ ६१ ॥ गंगा गोतमिनर्मदातिरि ॥ छायाभग वती ॥ कर्णेश्वर ॥ ताम्रपर्णिपुंथ्यकाचरि ॥ मानससरोवरि जेवसति ॥ ६२ ॥ मातृकारक्षाचे

२

थे

निजछंद॥ वाढविलें सिद्धिरूपकें॥ प्रत्यक्ष हाचि नितेजबळें॥ यज्ञकाळिं आसे
वोधें॥ ६४॥ ऐसे दिनविलापुरोहितिं॥ द्विजधातु निमाजसगति॥ अनुष्ठानें मंत्रमु
र्ति॥ सिष्यसमुदाये सिआणावे॥ ६५॥ किष्णवस्त्राचपरिधान॥ कृष्णांबरचि
प्रावरण॥ धुत्रअरक्तनयन॥ देदिप्यमानतेजस्वि॥ ६६॥ जयाचा क्रोधे हुता
शन॥ व्रह्मांडजाळिनल गताक्षण॥ प्रसादादे निद्रंद्रभुवन॥ तुळसिद्वासा
रिखे॥ ६६॥ ऋग्यजुःसामअथर्वण॥ षडंगयुक्त दक्षलक्षण॥ तर्कवेदांत
शास्त्रसांख्यस्तान॥ योगशास्त्रिं आलियोग॥ ६७॥ व्याकर्णीकारस्मृतिकार॥
साहित्यसंमित चपदूरु॥ पौराणिकरूपेश्वर॥ जितेंद्रियेपालके॥ ६८॥ रायघनधा
न्य रत्नवसनि॥ पुजुनि स्वस्तअनःकरणी॥ करुनि प्रवर्तविले यज्ञी॥ सर्पसंत्रि
पेयाग॥ ६९॥ वास्तुविद्या विशारद बहुल॥ मंडपचे हयुपाकिंल॥ खिल्येकारि
निर्मिले तेथे॥ विबुधसदना सारिखे॥ ७०॥ पताका तोरणकनकध्वज॥ शोभे
स्वर्गालिरव्य सुतेज॥ स्वस्थाने मिरवे रुत्विजे॥ कर्मकुशळ विवेकी॥ ७१॥ होता मे
त्रावरूणपोत॥ आग्नि दावाक्रमावस्तोव॥ अध्वर्युअणिप्रतिपस्थाता॥
नेष्टा नेता ब्रह्मो पा ७४॥ ब्राह्मणस्थानासिद्वाथा॥ अग्निध्वर प्रस्ता ना प्रति
हर्ता॥ सुव्रव्यासि जापाजश्रोता॥ बोध्रा ऋत्विज माहायोगी॥ ७२॥ कपिल

कश्यपतुल्य ऋषिवर्यी ॥ तपोतेजे राषि जैसे सुर्य ॥ असो हे उरमंत्रि ल्खेरर्य ॥ अ
वतार अग्रिपुराचा ॥७४॥ रवाणी निगर्त आवधि ॥ निर्मिति ग्रथोक्त प्रमाण
विधि ॥ हवनद्रव्याचा सम्रुधि ॥ पर्वत प्रायेत्नो रिल्या ॥७५॥ तो हि तक्षि सुत्रधार ॥
पौराणिक असे त चतुर ॥ त्रिकाळ ज्ञानि महाथोर ॥ भविष्यज्ञाते लेटाइ ॥७६॥
भावलोकोनि यज्ञायतन ॥ ह्मणति यद्विउ दिविघ्न पुर्णसिधि न पवे यज्ञा ॥
ऐसा चिन्ह दिसता हे ॥७७॥ निमिस ठाइल ब्राह्मणायेका ॥ तेणे मध्यचि रवंड
त्र मख ॥ हा वथर लानरनायक ॥ अग्रहे काहि लक्षिना ॥७८॥ दिक्षा ग्रहण
भार्यासि हित ॥ यजमान राजा माहाग्रतस्त ॥ सद्स्य मिळाले द्रुतअदित ॥ थ
कासनि पैजैसे ॥७९॥ कुंडि प्रति ब्रिल्वावन्हि ॥ परिक्षु निप रिसमोहनि ॥ कु
शबर्हि परिस्तरणी ॥ पात्रा साधनि विधिमंत्रे ॥८०॥ इध्मासन्मत्र विसर्जिलि ॥
संस्कार पुनि आज्यस्थाली ॥ प्रणीता पात्रि समार्जिली ॥ रत्नकर्ष बाइसुदि ॥८१॥
आव्हानीना मक्ख्यानव्हे ॥ जाम्र नहोता चिसरव्हे ॥ समाजिव्हा सप्तज्वाळ ॥ स
प्तहस्ति मंडित ॥८२॥ माहानदि जळ संघाट ॥ तैसे वसुधाराच रोट ॥ तेभयता
अव्यवाट ॥ होय गगन स्तंभ कनकाचा ॥८३॥ प्रवळ रुदान वस्त्रप्रचंड ॥ तै
से विप्राळ प्रदित कुंड ॥ कि पन्न भक्षावया तोंड ॥ धरादेविने पसरिले ॥८४॥

याजकदृष्टि अतिसावधा। अनिवार देखो निजात्मवेद। दृढपदाज्य केला प्रसिध।
क्षिरसिंधु सारिखा॥ ७४॥ समिधा चोपिला पावकु। आरिसा उठिले नागलोकि
भवंडिदाट त्या मस्तकि॥ नैश्वर्य मानिति संपत्ति॥ ७५॥ वैकल्य करम ळते त्या भरे॥
सांडुन सकंप थरकति शरिरे॥ आसने यक सरे। गगनमार्गि सकति॥ ७६॥ यक वृक्षा
सिघा लिति वेढे॥ यक वेष्टिति सिळा धोंडे। तउसको निजुंबाडे॥ व्योमपंथि धाव
लि॥ ७७॥ यकमेकाते वोसाव॥ यकमेकाते परिवेष्टिल। जेहर जुराता नुरात
यकं मथि मावि लि॥ ७८॥ ऐसिया सर्प सारखळीया॥ नभि धावति गुंफळिया॥
मेघमाळा चालिलिया। तैसे निवड आकासि॥ ७९॥ तेथुन धुम्राचे निपंथे। हव
नि पडति शतानुशत॥ विविध नारु उटिले तेथे। हाहाकार सर्पांचे॥ ८०॥ सुर
वळाकार कंकणाकार॥ शरिर गाठति परस्परे। तैसे सिउ सकोय कसरे। का
ळानळि रिचवति॥ ८१॥ यक व्याकुळते चिय नीच शित॥ यक फणा तेसा डित॥
यके चपळेल चळवळित। पुढे खवडिलि निजदंती॥ ८२॥ यके भय पसरि मुखा॥ य
क जिव्हा लळलळिति दुःखे॥ यक भो विनळासा रिखे॥ ८३॥ माल्हवाग्व जे पिटिले
ब्राह्म पाक्षो भानि उच्चारिले॥ कातगाग्नी कुंजर दाटिले। इंद्र देउ बाननि॥ ८४॥ य
क काजळा ऐसे काळे अपवादि शांगार तैसे डाळे॥ यक हाटकवर्णी पिवळे॥ यक निळे
सुरंगी॥ ८५॥ यक तत्सत्तो हर्गळ॥ रघु ळ दिर्घ अति विशाळ॥ मुखि नासिकि

माहा ज्वाळ ॥ विषाग्नि बाधकर्ती ॥ ७५ ॥ यक करां खव पांध्यळ ॥ यक काविर्णा गर्विपाळ ॥ यक मानि कपालीं निरिखळ ॥ यक विक्राळ तिकट दृष्टि ॥ ७६ ॥ यक अस्थळा कारतो माळे ॥ यक त्र्यंमुखांऽसरळ ॥ यक वक्र बहु काळ ॥ सुपरि मळमध मघिलि ॥ ७७ ॥ मुरवि मस्तकि धरिलेमणि ॥ ऊर्ध्व बोलति फणो फणि ॥ प्रवेशति पावका नति ॥ कोटि कोटि येकदा ॥ १०० ॥ ब्राह्मण मंत्राचा ओंकउ ॥ वोदिल्या मारा निअसढ अर्मीति पडोनि लडफडा ॥ भस्म होति असंख्या ॥ १ ॥ डोंबगळा ळ संखपाळ परंडे धामण कडियाळ ॥ फडफोडु समहाळ ॥ अजगर आरदु तंडो ॥ २ ॥ यक पंचमुख दशमुख ॥ यक शत मुखविशत मुख ॥ मुगुट मंडित मस्तक ॥ औसविशाळ काळ सर्प ॥ ३ ॥ गोकर्ण प्रमाण गोश्वा ब्राह्मण ॥ अस्वगज गिरि प्रमाण ॥ भयवमित विष लवण ॥ दर्शने देति मृत्युत ॥ ४ ॥ कोश द्विकोश त्रय ॥ योजनायत महाकाये ॥ औसे असंख्य कारव्यय ॥ भस्म होति हुतांसी ॥ ५ ॥ वृक मुख जंबुकमुख ॥ व्याघ्र सिंह मुखय नक्र महीष मुख ॥ स्वापद मुखे अनेक ॥ ६ ॥ औसि यासर्पाचि कोटि ॥ पावकि रिचवति पाठोपाठि ॥ नाहेउट तिकडकडाटि ॥ प्रथ्वि ज्वाळे प्रळिपलि ॥ ७ ॥ मांस मदाचा संघार ॥ कादलां वाहा लागला पाट ॥ ज्वाळासि धुम्र वाट ॥ चालु निनेत झपाध्रि ॥ ८ ॥ जळतमां साचिया पापी ॥ कुवास भरला सप्राणि ॥ चि औसिने लोडि सुथिल पापी ॥ लेअद्या पि रखुट नाहे ॥ ९ ॥ प्रमुल अयुत निर्धुरात ॥ रवर्वि

५

५

निरवधिं न कें गणित ॥ चित्त भानुचें विहाकित । तेकाळीं पैं जालें ॥ १० ॥ पद्म आणि प
द्मशंख । महाशंख ॥ निधिचे निधि नाहे लेख ॥ सहस्र मुखाचाहि मुख ॥ संख्या क
रितां उंसले ॥ ११ ॥ न कळे मां माल्त्यापाचि गरिमा ॥ किंवा ऋषि जे ऋषि चि महिमा
कि जन्मेजयाचें प्रतापसिमा ॥ यकवाचा न वदवे ॥ १२ ॥ स्तुति भस्सुनि पावका ॥ पुढति
पसरीलि शेन्ही मुखें ॥ राजा ऋषि जे म्हणे तवक ॥ तक्षक न पडे अद्यापि का ॥ १३ ॥
ऐको निजन्मेजयाचें वचन ॥ तक्षक नामें आस्तिक मुनि ॥ ब्राह्मण उचलिले आवर्द
ने ॥ हरीहर शब्द गर्जोनि ॥ १४ ॥ पुढें वर्तलें काय चरित्र ॥ ते परीसतु सभाग्य श्रोत्रें ॥
सज्ञानाचे कृपापात्रें ॥ मुक्तेश्वर कवि म्हणे ॥ १५ ॥ इति श्री आदिपर्व माहाभारत ॥ स
कळ कथेचें कुळदैवत ॥ ऐकता पुरवि अर्थ ॥ श्रवणें सुखचि श्रोतियां ॥ १६ ॥ अणि
क ऐका यक विधि ॥ हे वासनाच रानें दि ॥ देवा ब्राह्मणाचि सकळ सिद्धि ॥ येणें यक अनु
ष्ठ ॥ ११७ ॥ इति श्री आदिपर्वे सर्पदहनो नाम दशमोध्यायः ॥ १० ॥ ५९० ॥ ५९० ॥ ५९ ॥ ०

॥ श्रीकृष्णप्रसन्नः ॥ शौनक पुसे अतेकरून ॥ सर्पसत्रिं रुत्विज कोण ॥ ते आपु
ल्या मुखें वान ॥ करि आमुते सर्वज्ञ ॥ १ ॥ देवऋषि ब्रह्मऋषि ॥ सप्त सिष्य कोप
तपोरासि ॥ लेवा क्यादि पर्व प्रकासी ॥ श्रवणाने त्रिअमुनि ॥ ४ ॥ जीजी नेषा ॥ निव
काव चनी ॥ मुख्ये लेला श्रवणी ॥ रत्नरसांगला ॥ विरला ॥ नि ॥ अति प्रसंग होते
स ॥ ३ ॥ यचनरुषिचा कुळसंभवा होता प्रचंड भार्गव ॥ वेदविरा वरिष्ठ देव ॥ चतु
रानन पै जैसा ॥ ४ ॥ धर्माधर्म विचारतरणी ॥ मीमांसकार परमज्ञानि ॥ लोकहा
था तेथे जैमुनि ॥ कुछऋषि साजबळा ॥ ५ ॥ भव्य ने ऋग्वेद सातेव ॥ तो ब्रह्म
शांडिव ॥ अध्ययले या भीस्वमेघ ॥ हम पिंगळ ब्रह्मा ऋषि ॥ ६ ॥ कुडल देशधत नि
मनि ॥ तथे उन्नताम्रकमुनि ॥ सर्पजात्ले हुताशनि ॥ काछिया कोटि सारा ॥
॥ ७ ॥ व्यासपुत्र जिवन्मुक्त ॥ शुकयोगींद्र सिष्यासहित ॥ सर्वा श्रेष्ठ सभे आंत ॥
व्यंगलेसांग याचेनि ॥ उद्दालक माधरका श्वेतुकेतु सांडिल्ल देख ॥ असितदेव
ळ तपोलेजार्क ॥ पर्वत पै दोघे ॥ ८ ॥ अत्रय दु वीस ऋषि श्रेष्ठ ॥ कुजठर टर का
संघाटा ॥ बाष्कळ श्रुत श्रवावरीष्ठा ॥ कोहळ अग्निदेवशर्मा ॥ १० ॥ मौद्गल्य सौर
भ्य मुख्य करूनि ॥ सर्मसदस्य सभास्थानि ॥ पन्नगसत्रि माहायज्ञि ॥ परिशि
तीरायाचे ॥ ११ ॥ याहि वेगळे असंख्यात ॥ सद त्रिष्य ब्राह्मण बहुत ॥ मुर्तियन्ही
किअदित्य ॥ किंवा प्रतिमा रुद्राचा ॥ १२ ॥ विष्णुप्रतिबिंबदर्पण ॥ किनाट्य आन
गराचे चतुरानन ॥ ज्याचे सहज चिद्रत्न ॥ कामपुर विराजिले ॥ १३ ॥ मासा

क्षेपे अदरिले दरव ॥ कव्होनयलेकाय येक ॥ म्हणौनि भस्म केले दृस्मुके ॥ परिहि
सकिपातकि ॥ १३ ॥ असंख्यापडिल्लेकाव्हानाकि ॥ पुढ लिसपी चिवगावी ॥ पडिलि
दरवो निबंध ॥ तुकि ॥ यजमानस्तविया जका ॥ १५ ॥ राजा म्हणे ब्राम्हणोत्तमा ॥ मु
ख्यशत्रु लक्षक नामा ॥ तो पाडुनि सतांपउ आहला ॥ दिघला पाहिजे स्वामीनी ॥ १६ ॥
अवश्य म्हणोनि ऋत्विज वरि ॥ लक्षकजकर्पे पाथ मंत्री ॥ अभिमंत्रुनी भुवापात्रि
म ॥ हाआवदानज्वलिले ॥ १७ ॥ लव मरणचिन्हा चे त्रिदोष धारे ॥ लक्षक ओंगी
भरले सारे ॥ कामुकीपासु निसुटिजे शरीरातें सासलप कालि ॥ १८ ॥ सोडुनिया पाल
खभुवना ॥ शक्रलोका जाउनि जाण ॥ देवेंद्राते रिघोलि शरण ॥ प्रापाधाकेतेकालि
॥ १९ ॥ दीर्घश्वरे रुदन करिलु ॥ भयेथरथरा कापलु ॥ म्हणे स्वामी चुकविघालु ॥ प्राप
दाता मज लागि ॥ २० ॥ असर्पि जालि सर्वेश्वरि ॥ मी शरणरिघाल्ये तुसपारि ॥ मज
चाचवाचे येसकरि ॥ सिक्षिले सदेवेंद्रा ॥ २१ ॥ इंद्र म्हणे पदुर्घट प्राणी ॥ निशंकनि
र्भय पापाचरणी ॥ अनर्थ पातलिया निधानि ॥ मग दिनसभयगति ॥ २२ ॥ चं
सी आनंलवादि यकु ॥ याचेनि पुर्वजा होय नरकु ॥ तेचितवदोषपावकु ॥
पंन्नगराजालागला ॥ २३ ॥ शरिरबलेसमर्थश्रिये ॥ ऐश्वर्यबल माहाअन्या
ये ॥ राहटता लयात आपाये ॥ महाव्हसनि पाडिजे ॥ २४ ॥ जापाताजोडोनिपाप
टेवा ॥ मग म्हणे धावसोडविदेवा ॥ नरिलोहे चाचीयारेघा ॥ रक्षिला नवचे
संकटि ॥ २५ ॥ म्हणोनि पोहिले चि साभाळावे ॥ आन्याय भलके नेंदावे ॥ रो

क्षातितया स्वभावे ॥ दुःखभोग असेना ॥ २८ ॥ असो ऐस म्हणि न बोले बोल्म ॥
सदा पिरास पाहणे ॥ निज आला ॥ तो हि न वचे या गिल्ला ॥ उत्तम पुरा प सर्वथा ॥ २७ ॥
आला मरण भया चि व्यथा ॥ सांडु निश्चस्त करि चित्ता ॥ पिता महा ब्रह्म याची
आर्था ॥ त्या पुर्वीं आस प्रार्थिला ॥ २८ ॥ सर्पसंत्रापासु नि तुला ॥ भय नाहि तुस
निश्चीत ॥ तक्षक झणे माझे नि चित्त ॥ धैर्य सर्वथा न धरावे ॥ २९ ॥ उत्तरी काने
आपुला अंगी ॥ मज वाचवि जेय प्रसंगी ॥ इद्र बंधुस स्मरे निज अंगी ॥ भोगि
केला स्वकंटि ॥ ३० ॥ यरि केउ पाताळ भुवनि ॥ वासुगि संतस अलः कणी ॥ भगि
निस निप पाचारा नि ॥ तीय जवळि विकापलु ॥ ३१ ॥ भ्रम लागला माझी या शरिरी
द्रिष्टि येलसे आंधारि ॥ बोलता बोल लाचाचरि ॥ वाचा शरिर जालसे ॥ ३२ ॥ इष्ट
मैत्र बंधुस कुमार ॥ जाणास कळा च्ये संस्कार ॥ उरलति हि सि मद्धरीर ॥ पडल आला
दुला सि ॥ ३३ ॥ स्त्री म्ह आटल डाग जिवन ॥ तैसा परिचार जाला नुन्य ॥ शक्सर्प
सहित जाण ॥ पुण्य हि तु निम्या होणे ॥ ३४ ॥ जिय अरिष्ट परिहारा थि ॥ तुज वापि
त्ते राखि च हाति ॥ तिय व्यसन दुरावति ॥ आह्मी सर्व हि बुडालो ॥ ३५ ॥ प्राथुनि
या आपुला पुत्रा ॥ सिद्ध पाठविन रुद्र संत्रा ॥ बोधो नि पार्थिवे सुपवित्रा ॥ यज्ञ
समासी करवणे ॥ ३६ ॥ राजा हृदयि चा कोपा झी ॥ गांल हा रे जे जि हि वचनी ॥
ओ सिसील अनुवादो नि ॥ समाधान करावे ॥ ३७ ॥ मंत्र अथवा तपो वळे
वाचया बि मा तुळ कुळे ॥ या हि तु नि येरा भागे ॥ भुवनत्रयि न देखो ॥ ३८ ॥

ऐकोनि आस्तिकमुखिं चमत्कृत । जरत्कारिने आस्तिकसुत । अनुवादिला सिद्धनि
धारिला सावध केला लेकाकि ॥ ३४ ॥ या प्रति तिसां गेरु दिल वासिष्ठ । मज न्मा
जयाचमा हासंत्रि । तुसे मातुरु पुत्र पोत्रि । भस्म जालेअ संख्या
॥ ३५ ॥ उरले ते हि पडिले कुंडी । यालागि जाइ तुला तडि । यज्ञ समाप्ति करनि खं
डि । मुक्त पात्रो सुहृदाचा ॥ ३६ ॥ पुत्र पुसे अतिसाक्षेपे । सर्पा कि मर्थ आ । कि ते नृपा । य
रिक्षण मातु शाप । बाधोनि यच्छे हो मिले ॥ ३७ ॥ या शापासि मुळ कारण । उच्चैःश्र
वा घेतले डीण । यदार्थि सफलत्वय माणा । कद्रु वेनत सिमांडिले ॥ ३८ ॥ साचनक
र वे मासे वाक्य । मातृद्रोहि पर भक्षक । तुह्मा भक्षी सपावक । संत्रि परिक्षीतिले
॥ ३९ ॥ निष्ठुर शाप ऐकतां तेथो । शाप वासुगि सयकंपित । यत्न करिल जाला घाल
चुक वाक्यपाश कुळोले ॥ ४० ॥ अथ रूपापाचलौदहो । माथा मेरिनि या हिलिपाहो
कंदशुषणी गिरिजानाहो । तोषविलो चिरकाळ ॥ ४१ ॥ नेत्र लोटनि सिधु मथनि । सु
रासहित वज्रपाणी । आराधिला कुळरक्षणी । याचे लागि सुपुत्र ॥ ४२ ॥ लप ऐक
र्जे वज्रंग रोचा । संतोषविले ब्रह्मदेवा । ते पांउपाय कथिले बरवा । रूपे कर निते ऐ
का ॥ ४३ ॥ जरत्कार रूपि जरत्कारि । दिधलिय जन्मेल तिचा उदरि । लो असे ती कथा
क जो हरि । तुह्मार क्षिल्ल सबलि ॥ ४४ ॥ लो आजि प्राप्त जाला काळु । सदा रिउठिन अ
ताचे जु । वचन गाउनि कुरु भुपाळु । यज्ञ समाप्ति करवेचा ॥ ४५ ॥ उरलि वार

विसर्पविंदे॥भुगोळ्व चिकित्सिगंधे॥मातृमुखिचा रवेद शोवर॥आवस्थ
चालिलाआसिकु॥५१॥उटिलाजाला अनिलामवेग॥गमनहक्षीमा
नसवेगा॥लेविचि मातमातुळे सांगे॥चिलाका हीनकराचि॥५२॥वाली
नपडेमासीयाकानि॥लवप्रारब्धआरले फणि॥आलासपत्नीनसकेव
न्हि॥हिसाचार जाणीजे॥५३॥मातृमुखिचा अलोटशापु॥जन्मेजया
च्याआसाध्यकोपु॥रा द्विजाचा सिद्धसंकल्पु॥तिन्हीकरिनेनिरुलंजे॥५४॥
सवनि तापउनिन्टपवि॥प्रसन्नकरीनवरदमुर्ति॥संसा वमे यज्ञसाम
ग्रिगहविदक्षणामागेन॥५५॥जैसिकगी निजवचनाम्हते॥अमरवंद
उनिवासुगिले॥माधारुनिमनपवनाले॥सत्रसदना पातला॥५६॥
द्वारस्तआडकरिलादंड॥रखेप्रदिसदृश्य मातंडे॥माघारुनिझणेपमं
ईश्वरपुरुषदिसिलाहा॥५७॥नमस्कारुनि सिरसादंड॥ह्मणे स्वामीयाजा
इजेपुढे॥येरप्रवेशकरुनिकोडे॥यज्ञमडपापातला॥५८॥कुंडिप्रसशहु
तदान॥राजासदसिस्यरुवीजेमणा॥वाउयकुंडिमेषवाहन॥आवघी
रुपिआवगला॥५९॥कियाचंद्रसुर्यप्रतिमा॥लेसदेखिले ब्राह्मणोत्तमा
अपिब्राह्मणहि जैसिउपमा॥स्यावरद्याद्देखिले॥६०॥जेविबळिचिया

यज्ञमटपिनुपद्ध्उस्त ब्रह्मरूपि ॥ तेसा आस्तिक परमतपि ॥ ऋत्विजगणि
द रविला ॥ ६४ ॥ पसरो निपवित्रप अहस्तु ॥ त्वक्षु निस मुदाया समस्तु ॥ स्लवनि
नमनि विनयवंतु ॥ असिक्वि नीअनुवादे ॥ ६४ ॥ किवाक्य पुष्पि पुष्पवंतु ॥ सि
धगंधमघमघितु ॥ प्रसन्नलेचा पारिजातु ॥ तुष्टिक रितायाले ॥ ६५ ॥ प्रणम्य
यज्ञनारायणा ॥ नमो सदस्य ऋत्विज गणा ॥ स्वामि पांडव कुळभुषणा ॥ ६६ ॥
तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु ॥ धर्मैस्वर्यैश्वर्यरस्तु ॥ सार्थकायुषि वृद्धिरस्तु ॥ शांति
रस्तु तव प्रभो ॥ ६७ ॥ चिवेकज्ञानसमृद्धिरस्तु ॥ संततिहरिहरभरस्तु ॥ प्रताप
मज्ञाविजयोस्तु ॥ भद्रमस्तु तव प्रभो ॥ ६८ ॥ भवदुर्जयशत्रुक्षयास्तु ॥
अक्षयपद प्राप्तीरस्तु ॥ भुनदया विशेषस्तु ॥ कुशलमस्तु तव प्रभो ॥ ६७ ॥
सर्वाभिष्ट प्राप्तिरस्तु ॥ सर्वारिष्टशांतिरस्तु ॥ संततिनियानंदभोगोस्तु ॥
शिवमस्तु तव प्रभो ॥ ६८ ॥ निर्दोषकिर्ति अक्षय असो ॥ लोकापवादीस
भय ता असो ॥ याचकालि रामनी असो ॥ प्रस्फुतवु असवेदा ॥ ६७ ॥ नि
द्याचारि आवडि नसो ॥ दुराग्रहि दंडता नसो ॥ पुर्वीपुण्य कर्मी नसो ॥ असं
तोषविकळता ॥ ७० ॥ अहंममते निभाव नसो ॥ दुष्टआपराधिस्मरण न
सो ॥ संत महंतांवचनि नसो ॥ आनादर उपेक्षा ॥ ७१ ॥ श्रद्धा मेधा

३

३

प्रज्ञायश॥ विद्याबुद्धिबळ विश्राम॥ तेजारोग्य श्रीआयुष्य॥ होवाइलतु
जराया॥७४॥ मोक्षअराधअनेक॥ फळप्रदहोल का क्कि॥ मा स हिवा
छितयेक॥ होसंपुर्ण तुझेनि॥७३॥ तथास्तुऐसे त्रिवारवचनि॥ उच्च
रदिधली ऋषि ब्राह्मणी॥ पुढ तिआइको श्रयी॥ चाग्वीळ्ना सर्षिया॥
॥७४॥ सोमयज्ञवरुणयज्ञ॥ ब्रह्मयज्ञ यमधर्मयज्ञ॥ हरिमेधयातिदेखा
यज्ञ॥ तसमान तवक्रतु॥७५॥ गययज्ञदोषबिंदुयज्ञ॥ वैश्रवणयाचा
सुमेधयज्ञ॥ मृगयज्ञअजमीढ्य यज्ञ॥ तसमान तचक्रतु॥७६॥
रामदासथीच्या यज्ञां॥ युधिष्ठिराचा महायज्ञ॥ क्रिष्णजगदेश्वराचयज्ञ॥
व तसमानलैं क्रतु॥७७॥ पृथुयज्ञपुरिरवयज्ञ॥ धुंधुमारिचेत कीयज्ञ॥
हरिश्चंद्रन्रपाच्ययज्ञ॥ तसमान तवक्रतु॥७८॥ व्यासश्रीकृष्णआपु
लागि॥ उत्तर साधक पांडवयागी॥ याहुनि विश्राम तुझाजगि॥ सर्पयज्ञवार
चेया॥७७॥ राक्षिस क्षिल्या निशाचर॥ राक्षसासदहिले पारासार॥ लोहिद्रिसां
त येथनसरे॥ तुका वयालवयज्ञा॥८०॥ अग्नीसूर्याहुनि सुतज॥ यज्ञपरिच
यकिरिलद्विज॥ छत्रसदना सारिखा मज॥ तुझा योगा दिसताहे॥८१॥ ऐसे रुषि
ज अपिके मरिव॥ नाहिऐ किला तिहिला कि॥ ज्याचेरि व्यअपुलेमुखि॥ वे

दनुलूननिर्मिती॥५५॥मंत्रज्ञान वंत्री हस्तकमाथे॥नसाधवि तिआणिकाली॥अै
सेकरूनिसोडिले मोल॥नमागते करु नियां॥५३॥दानधनाचे प्रबळवृष्टि॥
याचकरेपुलोयलिस्त्रीष्टि॥परिपुर्णा पृथ्विपोटि॥हर्षांकुरमाजले॥५४॥लुझिया
ऐसाअणिकयागिगत॥तिनकेचवारिस्टंगि॥अनेकपुरूषीअनेकयुगि॥आ
हविषहोमति॥५५॥विश्वावसु चित्रभानुमहात्मा॥हिरण्यरेता कृष्णवर्मा॥कृष्ण
कहुतचन्हिनामा॥वजगदंतरनिवासि॥५६॥तोस्वाप्रभरोदलु॥हयिव्यभक्षु
निपरमतृप्तु॥जोदिसेप्रसन्नवंलु॥देदिप्यमानतेजस्वी॥५७॥आनलयुगि
आनंतपुरुषि॥होमकरिता यागिविशेषी॥यथेष्टह्वसि तुझीयाऐसि॥ना
हिउलाप्रापावला॥५८॥सोमजोतिष्टेमचैतन्य॥माहाव्रतादिस्वर्गरोहेण
वसवैष्णवमाहेश्वरयज्ञ॥बहुसुवर्णकरातकृतु॥५९॥पुंडरिकवाजपेय॥अ
श्वमेधराजसूय॥विश्वजितदिक्षाप्रमेये॥असरव्ययोजिलेयाजकि॥६०॥
या यज्ञकर्थमि जिसहस्रा॥गर्व्हवपरनाहितुझिया ऐसा॥च्युतशीलदेखो
निहर्षपात्रा जाला बहुसाल॥६१॥रवट्वांगराजादिलिपन्रपति॥यथानिमंधा
लचक्रवर्तिउमाणिला तुझिया किर्ति॥तुपावदिसे आपाउ॥६२॥प्रजापाल
कजिवलोकि॥सर्वा तुकावलुकि॥नाहिलपालकविचामुरिव॥सांकादुष

॥ असेना ॥ ७२ ॥ दंडनिति तु सरायमा ॥ सत्यसदय तु सरा धर्म ॥ शस्त्रविद्ये वि
षइ राम ॥ परशरा भ प्रतिज्ञा ॥ ७३ ॥ सुव्रति जैसा गंगातनयो ॥ प्रताप तेजे जैसा
भुलोक सूर्यो ॥ निर्मळ किर्ति रोहिणी प्रियो ॥ कत्यारक्षणि महाविष्णु ॥ ७४ ॥
वाल्मीकि तुल्य धैर्य श्रेष्ठ ॥ कोप जैसा श्रीवसिष्ठ ॥ अगाले सारिखा बळिष्ट
दधिचि जैसा औदार्य ॥ ७५ ॥ क्रिष्णा तुल्य गुणसंपन्न ॥ प्रभुत्व जैसा सहस्रन
यन ॥ प्रयत्न विषइ उपमन्य ॥ पैं तु हा सि भगीरथ ॥ ७६ ॥ भरत श्रेष्ठ परिक्षि
तिपुत्रा ॥ प्रिय हा तुज अणि तुझिया मित्रा ॥ तुमचे म्हे प्रिति मात्रा ॥ प्रेमक
रु आम्हुते ॥ ७७ ॥ घनगंभिर गीरा गजर ॥ सकळि कोकी मन मयार ॥ हर्षना
चतराजेश्वर ॥ अयादर बोलजेत ॥ ७८ ॥ वयबाळक दिसनयनी ॥ परिज्ञानवं
डिल सकळाहुनि ॥ हा श्रेष्ठ पुंज्य मज लागुनी ॥ यज्ञ मंडपि विशाळ ॥ ७९ ॥ इ
छा करुनि अंतर्यामि ॥ आलो आसळ जे कामि ॥ आ वस्य दिधले पाहीजे तुह्मी
कर्म सिद्धीर्थ येकाकि ॥ ८० ॥ ह्मणोनि कनक पिठ हाले ॥ देउ निह्मणे बैसि जे येथ
पुजा आंगिकारुनि सुचित ॥ मग इच्छा ते निरोपि ॥ ८१ ॥ आज्ञा देसी रुषि भगवंता
तेम्या आदरे वंदैन माथा ॥ तुझि तुझिया सामर्थता ॥ संकल्प पावेल सिधिते ॥ ८२ ॥
आस्तिक ह्मणे जिया काजा ॥ मि आलो आसो माहाराजा ॥ ते देयिन ऐसा शब्द तुझा ॥

नमस्तकानिश्चेकेना॥७॥तरिचस्पर्शेनिआसन॥आदरे करीनपुजा ग्रहण॥निंदी
लाजाइनपरतोन॥उभीयाउभियेकाकि॥५॥सदस्यह्मणतिराजपरेश॥ज्ञानि
प्रमाणनव्हे वयसा॥द्विजिपचाराशिधरजैसा॥वंद्यहोयेसकळांते॥६॥प्र
त्यक्षासिविश्वेश्वर॥स्वामाकृतिमान्यथोर॥विशाळतिळभांडेश्वर॥कोपाग्रथ
मवंदिजे॥७॥वडिलधारानव्हेरीप॥धाकुटेपुज्यलुळसीरोप॥तैसश्रेष्ठस्वभाव
रुप॥ज्ञानविशेषजेटाइ॥८॥याला गिउभातिष्ठतमुनि॥तोवेसवावास्वच्छानी
हातुश्च्यातलक्षपी॥लक्षेकपडेरहुतासि॥९॥अेकोनिराजा॥बोलेवचनि॥
लक्षकनपडेहुताशनि॥लचवरिमासअतःकपी॥हजरिलाहेअसेन॥१०॥
वैरिपडलाचिहोमानळि॥सहश्रभुजाकरुनिसरकि॥आस्तिकमाथापुष्पा
जुंळी॥कनकरलवोपिन॥११॥याहिवेगकिजेअज्ञा॥तुसिकरातकषिसर्व
ज्ञा॥तेविहितमानिनसंज्ञा॥आवश्यकरणेम्यायथे॥१२॥राहिजह्मपातिन
रेंद्रोत्तमा॥तुझेवाक्यअनुलंघ्यआह्मा॥सांडुनियास्वकियधामा॥पकाय
मानतयरत्नु॥१३॥प्रगटसांगिजेपावके॥आपीसर्वज्ञपौराणीके॥त्रिकाळ
ज्ञआपुल्यामुखे॥दुरिद्रिष्टिबोलिलि॥१४॥सर्पासत्रापासुनिमृत्यु॥लक्ष
भयभयक्षयपिडिलु॥इंद्रलोकाजाउनितरितु॥शरणगेला शंकाते॥१५॥

प्रार्थुनियासहसनेत्र ॥ चोरिरजालाउलरिवस्त्र ॥ ऐसेसीधिपुरूपावक्रा ॥
वृत्तांतवेदयका ॥ किं ॥१४॥ इंद्रअभयदिघलेहाले ॥ पावकस्पर्शोनिंदिलुते
ऐको निराजाक्षोभलाचित्ते ॥ निग्रह वचनअनुवादे ॥१६॥ माझापरम
वैरअरिष्टि ॥ साक्रदुघालपाठिलरिइद्रसहितहव्यवाटि ॥ लक्षकसिघ्र
पाडावा ॥१८॥ निकेललणोनिरुत्विजगणी ॥ मंत्रप्रयोगकेलावचनि ॥ तववड्र
सनउलमृत्युनि ॥ आधोपंथेउतरले ॥१९॥ मजरेसिनिर्जरनाथु ॥ अप्सारागं
विपरिवारितु ॥ विमानयानिशोभितु ॥ देदीप्यमानतेजश्री ॥२०॥ गंधर्वग
यनिरंजविल ॥ जीमुतीजवळामूर्तिमंत ॥ गगनगर्जिघंटाभरिल ॥ निनादका
निपरिसिले ॥२१॥ दिक्षितसदस्ययाजकजनि ॥ आवलोकितांउर्ध्वगगनी ॥
तक्षकमेकिवज्रपाणी ॥ अंतरिक्षरक्षीता ॥२२॥ सहइंद्रायतक्षकइतिस्था
हाशब्दसिघ्रगति ॥ दोघेहोमापुणिहुति ॥ राजाप्रेरियाजका ॥२३॥ रुत्विजलण
लीगुणेकनिधी ॥ हकामुसांगपावलेसिधि ॥ आस्तिकगोरउनिआधि ॥ पुर्णका
मकरावा ॥२४॥ हर्षबोलेराजेश्वर ॥ ब्राह्मणाश्रेष्ट मागेवरें ॥ याजकप्रतिराज्य
थोर ॥ कौतुकपुरवेलें ॥२५॥ कुंडाग्निबळदखोनिदरि ॥ इंद्रधाकघेतलापो
टि ॥ लक्षसांडुनिउठउटि ॥ उर्ध्वधाकपळाला ॥२६॥ गगनचुंबितजिव्हाळ ॥ प

सरोधावलाहोमानका ॥ नामोत्तरिचामुंडा ॥ वारदुरिकिल्पदेवेंद्र ॥ २९ ॥ वेद्ध
उकळोनिथाहाते ॥ लक्षकसुंगारिलापरूवे ॥ सुसाटकरितसेसुन्यपंथ ॥ न
क्षत्रप्रायखचलाहे ॥ ३० ॥ दक्षिणोत्तर व्यापुनिदान्ही ॥ विस्ताळपसरलादिसेग
गनि ॥ घर्घराटगर्जे तध्वनि ॥ आधोपंथयेलुस ॥ ३१ ॥ विषोदकाचामेघधारा ॥
पडतिवान्हिस्फुलिंगगारा ॥ उर्ध्वपुछे आधोसिरा ॥ करूनिपतनार्थ ॥ ३२ ॥ बै
कोनिआवाघेपिथिलिटा ॥ रावाबासडेस्वानंदजकि ॥ सोतिह्मणलेचिका
कि ॥ अणीफयकवर्तेल ॥ ३३ ॥ नदेखतकाळेकाचाले ॥ आस्तिकेपाहुनिया
वरूले ॥ तपोबळेस्वसामर्थ्ये ॥ आधापंथेरोधिला ॥ ३४ ॥ उर्ध्वउचलोनियापा
पी ॥ तिष्टलिष्टहिवचनी ॥ अटळकरूनिरखिला ॥ गगनि ॥ ओतानपादिसा
रिखा ॥ ३५ ॥ यरिकेड्याजकमंडळि ॥ जयजयाकारकेलासकळि ॥ लक्षकहोपा
वलाजवळि ॥ अपोनिहर्षेगर्जीतो ॥ ३६ ॥ लेक्विह्मणाविभुवल्लभा ॥ तपस्वीली
ष्टतेसउक्षा ॥ लोबेसुनिद्रक्षितुसभा ॥ रनाघ्रअैसेकरावे ॥ ३७ ॥ लक्षकअकर्षु
निअह्मि ॥ अहुतकरूइछे यहोमी ॥ आस्तिकवातवचनचतुर्ह्मि ॥ दुसरेअस्यसं
पारा ॥ ३८ ॥ संतोषोनिधरारमण ॥ ह्मपोन्नह्मरूपाबोलेवचन ॥ मागसिलदे
रनदान ॥ सत्यसत्यत्रिवाचे ॥ ३९ ॥ अैकोनिबोलेब्रह्मजंगिसुतु ॥ दइनह्मण

सिक ल्मितार्थु ॥ लरिपुरे करावा हा क्रतु । उरग आता न पडवे ॥ ७० ॥ तक्षक
हो अथवा अणीक ॥ हा मिन जन्मेंद्र ढुक ॥ माझे मागणे हे चियेक । कर जोडु
नि समस्ता ॥ ७१ ॥ वचन न कहे शास्त्र ॥ श्रव पारखो चला राजेश्वर ॥ क्षणे ब्राह्म
णा नमस्कार ॥ सहस्त्रवरि तव पाय ॥ ७२ ॥ सुवर्ण प्राक्षि धेनु रत्ने ॥ अपार या
चि मोकल्या मने ॥ माझा अर्धराज्य खंड जेणे ॥ ऐसिया निडान कोडि ॥ ७३ ॥ य
ज्ञस्वरूपा मछरा ॥ मध्येन लोडिकरू पाकरा ॥ अणिक येक मागवरा ॥ आसा
ध्य ते मी देइन ॥ ७४ ॥ अस्तिक ह्मणे गासपरि ळा ॥ दो निजिव्हा यक वि व्याळा
पवित्र रसना या विटाळा ॥ असंख्या चीना उ ळे ॥ ७५ ॥ मागणे येक चि साचो ॥ अ
णिक मागणे विषि चार वाचे ॥ पुर्वज पडती रौरवाचे ॥ विकळ होती वाक्येने मु
॥ ७६ ॥ कुंजर दान वाढता पुढ ॥ तन कतालाढ वि मागिलि कडे ॥ सज्जन वचन
तेचि पाउ ॥ पालटु नेणकल्पांति ॥ ७७ ॥ ससरक्षा वया पवित्र नरी ॥ शरिर विकले
जे वाघरी ॥ याचि लागि आरण्यचारि ॥ पांडव अणि रघुनाथा ॥ ७८ ॥ य किशो
जन दिधलि बाळा ॥ येकि मांस लुक विस्कलुले ॥ य किस्व चि यरवो मे काढुनि
दिधलि स्वहस्ते ॥ ७९ ॥ यकवि भाग लन कर्वे ति ॥ यके जिलब चि दिधलिया आस्ति
लुप्ति तया चियेप त्ति ॥ ससा स्विळ धर्म ला ॥ ८० ॥ स्याहु निक टि पाहे मागणे ॥

ऐसें कलीजल्लु झियामनें॥ तरि प्रशस्त उत्तें: कर्णी॥ सार्थक करिम्ह मया
त्री॥४९॥ पन्नग माझे मातुळकुळ॥ यालागिंहा यि अतिदयाळ॥ निचलु
ल्य दोषपाटिलौंका॥ प्रायश्चिताचा भागिला॥५०॥ मार्जे अनिर्वचन घेर
आपुला॥ आसिर्वाद दियि॥ शापकळेसि अक्षइ होइ॥ वासुगि लेकरु ऐसे॥५१॥
बोलिला बोल यथार्थ करी॥ याचे द्वाररा खे हरि॥ क्लिंब पुरुष वंद्यानारि॥ तो सि
इतर साधनें॥५२॥ ऐकोनि आस्तिकाचें वचनें॥ राजा आसंतुष्ट मनें॥ वा
रवार तो विनवी॥ आपी मागमज काहि॥५३॥ पूर्ण करि मासा मख॥ ह्मणोनि
सार्थ नरनायका॥ आगटह चरिला आस्तिका॥ बद्धांजुळि तिष्ठतु सा॥५४॥
मागणे यकाचि जाण॥ विरमे तुझु नवयज्ञ॥ याचेगळि इच्छा आन॥ तुज पा
सुनि आसेना॥५५॥ भुजभुल संकेत॥ प्रेरणा करिमंत्रि कोल्ल॥ तक्षा मक्षपाव
कात॥ होय तेकरा अतिसिघ्र॥५६॥ तिहिं वोदिला मंत्र शाक्ति॥ तो हकंटक करतल
भिति॥ रोविला आसे सामर्थ्य हस्ति॥ कोण्हाते हि उपडेना॥५७॥ कि विशाळ
तरुचि प्रचंड शाखा॥ फणिंद्र केला रुपि नदेखा॥ शोबोनि तोडितां याची
का॥ सोढळ जाली बळा सें॥५८॥ याजक लुकिला दोन्ही बके॥ आस्ति तेजे
दिसे आगळा॥ ब्राह्मणी जाणोनि वर्म कळा॥ मग न्हपाते बोलिले॥५९॥

ल पाविराया अम्हन किजे ॥ आस्तिकवचन मान दिजे ॥ आमचा हि

वे

प्रार्थनाभंग ॥ कुळदैवत मानुनि ॥ ६० ॥ कार्येशाचिया बांधणे मोटा

विखिजाली ख्याति प्रतिष्ठा ॥ सिक्षा कलिपरदुष्टा ॥ आसंख्यान सपति ॥ ६१ ॥

मुखिपा पांडि विवादि ॥ अहंकार अविचार क्रोधि ॥ अयेल आगट हि मोक्ष

पदि ॥ अर्के नव्हे सास्त्रार्थी ॥ ६२ ॥ प्रतापे जाकिले आपार फणी ॥ मानदि

धला आस्तिकवचनि ॥ दानिकी लिउसय कणी ॥ कुंडले होति जगाचे ॥ ६३ ॥

ल ६३

प्रसन्न करुनि हृदयार किरि ॥ येजुनि अपुर्णचि तेखदा ॥ आस्तीकैसा दव

र प्रदानये काळी ॥ ६४ ॥ ऐसे बोलता तपोधनी ॥ गुरु उपदेश मानुनी मनि ॥ रा

जा बोलीला म्हणे वरानि ॥ होत थे घप्तवदात्रा ॥ ६५ ॥ घेइ ब्राह्मणा दिधला व

र ॥ ऐसे बोलला राजेश्वर ॥ अस्तिके केला जयजयाकारु ॥ अणि समस्तय

जकि ॥ ६६ ॥ वरवा पिता राजेराम ॥ ब्राह्मण जाला पुर्णकाम ॥ रुविजि मछु

नि यज्ञ परम ॥ श्रवापत्रे टविलि ॥ ६७ ॥ इति श्री आदि पर्व भारले ॥ पुढ मोल

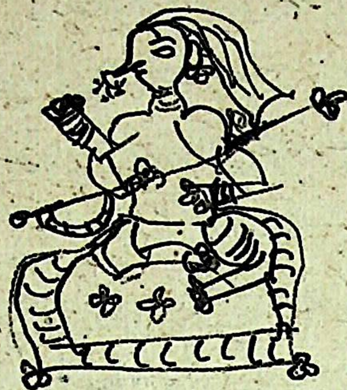
यावया कथे ॥ विस्तार चित्त देविजे यथे ॥ आलवंति निजस्वास्था ॥ ६८ ॥ श्रीइंद्ला

ग्री पद्मभ्रमरु ॥ विनविक विवर मुकेश्वरु ॥ ग्रंथ खाति लो बडिवारु ॥ संलमंह

६

तःकुपेचा॥१८॥ इतिश्रीभारतआदिपर्वणीसर्पसेत्र सपुर्णो नामयका
दशोध्याय॥११॥ छ०॥ छ०॥ छ॥० छ०॥ छ०॥ छ०॥ छ०॥ छ०॥०

६



॥ श्रीकृष्णाप्रसन्न ॥ सौनक द्विजपेश्वर श्रोति ॥ प्रसन्न करिति पवित्र वक्त्री
पन्नग भस्मले सर्पसत्री ॥ कोण किति ते सांगा ॥ १ ॥ सौति म्हणे ऐक बोले ॥ वग
सुहज रिवार केले ॥ दग्ध सर्प सांगीतले ॥ माझेनि हिन वचती ॥ २ ॥ तथापि का
हि येक हो जि ॥ सांगतले ऐका सहजी ॥ वासुगीचा कुळामाजी ॥ इतुके अहि
भस्मले ॥ ३ ॥ स्वेत पीत रक्त कृष्ण ॥ माहाकाय विषोल्बण ॥ पंचसप्त शाला
नन ॥ शैल्यातुल्य शरिरी ॥ ४ ॥ कोटिमान सुप्रपादरव ॥ मंदपाल हलिक येक ॥
कोपावेग पिछिलक ॥ कापासककच्छ विषधर ॥ ५ ॥ प्राकालण हारण्य बाहु
रापाक ॥ तक्षक फणिकाळदंडक ॥ वासुगि वीर्यज मुख्य ॥ प्रविष्ट जाले हु
ताशिग्नी ॥ याचे पुत्र पौत्र संख्या ॥ पन्नगार्बुद न कळे ख्या ॥ जे कापाय काचि
मुखा ॥ ग्रास जालेत संत्री ॥ ७ ॥ पिछलक मंडळक ॥ पिंडसेकार भारक
उत्सेष व्यंभा केक ॥ सुवर्ण वर्ण महिसर्प ॥ ८ ॥ चित्र हरि लिकशार शाल्ल कोमु
ख ॥ सकुमार प्रवेप नसुंद्र रक ॥ इशारामा पावक ॥ मुख्य समन वेग वाह
नु ॥ ९ ॥ इतुके तक्षकाचे कुमर ॥ प्रगटले थोर थोर ॥ संतति का नामावि
स्तारा ॥ भस्म जाले हुतासी ॥ १० ॥ परिकुंडल कुमारक ॥ मुंड वेणीशहुक ॥
श्रमवेण आणि कर्तक ॥ शांख चुड फणिराज ॥ ११ ॥ हे कौरव्य विर्यज फणि

प्रविष्ठजालेहव्यहवनि॥घृतराष्ट्रश्रवणि॥सांगणेतेहिऐकिजे॥१२॥
घातुवेगरा रववर्ण॥पिंगळकमेचकफुटारवदन॥पुपागिदपुर्णमुख्य
जाण॥ऊरुहाराकुंनिहरिनाम॥१३॥आगाचहपव॥कुमुद॥बळभैरव
मंडमापद॥वेदांगपिशाकमणीस्कंद॥स्वेतपारगरुप्रभादि॥१४॥
वेदगवानपिंडारंकमाहाहनु॥पद्मराक्षसवरहावरुपनु॥येरा रास्वुरुण
पाकअरुणसर्वनाशशरलांग॥१५॥अपिनामतिलेबहुत॥पुत्रपौत्रि
नामाकित॥विस्तारुनिबोलतायेथ॥अतिप्रसंगहोतसे॥१६॥अव
घीमानुनिविष्टतो॥सर्पीउबगघेरजेसंति॥ऐसेहिदमध्येजालेकि
त्ति॥कोट्यसंरव्यानबाचे॥१७॥स्तुळफणपर्वतप्राय॥विस्ती
र्णयोजनद्वय॥महाविर्यमहाकाय॥हळाहळविचलुंड॥१८॥का
मरुपिकामगमा॥ऐश्वर्यबळेशक्रासमा॥असेअसरव्यातजालेसमाप
रिक्षितिचेयज्ञि॥१९॥आस्तिकाकेपिलकर॥हर्षेनिभरिभुजंगिकुमर॥
नुन्यतेथाराजेश्वर॥रवेदसर्वविसरला॥२०॥गोविंदराद्ध गर्जोनिसकळि
हर्षेपिरिलियाकिदा॥प्रणिपात्राभुमंडळि॥ऊठनिउठिलेयाजका॥२१॥
सदस्यरुत्विजअणीमागते॥वेदज्ञजेजेआलेतेथे॥आपारदक्षपासात॥

याचकइच्छेनेवाटिली ॥२२॥ तो हि क्षत्रपति जाण ॥ जिहं यज्ञासि कथिले
कारण ॥ त्यासि दिधले बहुल सुवर्ण ॥ संतोषोनि नरेंद्र ॥२३॥ विधिमंत्र यथा
चित ॥ आवभृथस्नान भार्यासहित ॥ करुनि क्षेत्रं त्रिसार्थ ॥ बाकिप्रदा
न वोपिले ॥२४॥ आसनि बैसुनि निआलिंकु ॥ आदरे कलाकनकाभीषे
कु ॥ यरुनी रायें क्षितिनिष्कलंकु ॥ आर्थ स्वार्थ आसेना ॥२५॥ पवित्र दर्शनि
ध्यावे पुढती ॥ यरुह्मणे तथे वभवीष्यति ॥ पुढें निघाला शिष्युपति ॥ विनंति
अेक द्विजवर्यें ॥२६॥ वाजिमेध आसे करणें ॥ तवं बोले स्वामीने कृपाकरणे
आवश्यकृणा निसंतुष्टमन ॥ आज्ञा घेउनि निघाला ॥२७॥ मुळ करुनि
तक्षकनामा ॥ सहित पाललावासुगिधामा ॥ लव कि नागाच्यामा ॥ पिर
विला आपार ॥२८॥ बैसुनि सिंहासनि ॥ नामराज सहनागिणी ॥ निराजनें क
रुनि मुर्धी ॥ रत्नांजुळे वोपिल्या ॥२९॥ आमरिपु जिजेइं दिरारमणु ॥ रविपु
जिजेचे तुरानतु ॥ की सिधगणीपु जिजेप्राणु ॥ पार्वतीचा पैजेसा ॥३०॥ ते स्पु
जो निआलिकाते ॥ वासुगिविनविजो डिल्याहाते ॥ उपकारार्थ फिडावयाते
पदार्थ काहि दिसेना ॥३१॥ तुझिया अैसा पक्षपाति ॥ आतां न भुतो न भवि

२

ष्यंति॥ पुराणमुखेंराहे किति॥ ऐसें काहि मज सांग॥७१॥ आस्तीक ह्मणे आव
श्यक॥ मागेंपां आहे काहि यक॥ दंयिन ह्मणा निवका॥ कि॥ भाष्यदिघलिफणि
॥७२॥ हमाझे आस्तिक चरित्र॥ पढविल्या जयाचें वगत्र॥ श्रवण करिति ज्याचे
श्रोत्र॥ आथवा ग्रंथसंग्रहिति॥७३॥ अपदिसंपदि सहजदिनि॥ सायंप्रातर्हा माध्या
नि॥ आस्तिक नामें स्मरेल वाणी॥ सक्रुत अथवा संतत॥७४॥ सर्पपि सुनि त्रिजग
ति॥ विषभय नाहिं याकल्पांति॥ दंश जालिया रक्षगति॥ तेथ हि आज्ञा पाळणे॥
॥७५॥ विषउतरति मास नामी॥ ताकाळ निर्विष करावें तुह्मि॥ आस्तिक स्मरति
ये धामि॥ तसेंच तुह्मि सजावें॥७६॥ यकर मनुष्य वनांतरि॥ देखला जो मा
झे स्मरण करि॥ याल सोडुनिया दुरि॥ सिघ्र सर्पि पळावें॥७७॥ मैथुन करिता पाहे
द्रिष्टि॥ सर्पिन लगावल्या पाठि॥ आजगरें कोळिव हिसंकटि॥ ते स्मरण क
रिता सोडणे॥७८॥ ऐसें आस्तिक मागितलें॥ सर्पि आवश्य ह्मणोनि दिघलें
वासुकिनें प्रमाण बोलें॥ सर्पपन्नग गोविलें॥८०॥ सर्पाय सर्प भद्रं ते॥ जन्मेजा
य यस्य यज्ञांते॥ आस्तिक वचनि स्मरो निचित्ते॥ दुरि जाव दोष॥८१॥ आस्तिक
वचन स्मरो निकाळि॥ का न निवर्ते सर्प कोण्ही॥ शतधा भग्न होइ मुर्ध्नि॥ शिर
स फकेसारिखा॥८२॥ ते मर्यादा अद्यापि पाहि॥ सर्पि पाळिजे लोकि तिहि॥ ३

२

यविषइसंसायनाहि॥व्यावाक्यप्रमाण॥४३॥ लेपेआस्तिकेतपोबळेउध्द
रूनिपुर्वजकुळे॥अक्षयमोक्षसंपादिसोहळे॥भोगविलेसमस्त॥४४॥
हेआस्तिकधर्माख्यान॥श्रवणकरिपुण्यवर्धन॥सर्वपालककरिश्रि
पा॥चंद्रजेसातमाले॥४५॥संस्कृतअथवाप्राकृतगिरा॥कथान्न
वेशास्त्रबद्धारा॥लेहरोनिदोषगार॥धर्मैश्वर्यपावति॥४६॥संपल
अहुलआस्तिकायन॥पन्नगसत्रजालेसंपुर्ण॥पुढउपचरिचेआ
ख्यान॥व्यासोक्तिआवधारा॥४७॥इतिश्रीभारतकथागर॥आ
दिपर्वरससागर॥सेवाह्मपोकविकिंकर॥मुक्तेश्वरश्रोतिया॥४८॥
इतिश्रीभारतआदिपर्वद्वादशोध्यायः॥१२॥४०॥७०॥७०॥०

॥ आदिपर्वद्वादशोध्यायः ॥ ० ६५ ० ॥ ०

२

३

॥श्रीरामप्रसन्न॥ सौति म्हणे नेमिषारण्यी॥ सर्पसंत्रसंपन्ता क्षणी॥ सिष्यस
हित व्यासमुनि॥ कृपेने आला याठाया॥१॥ देखोनि साष्टांग नमस्कार॥ करि
ते जाले राजेश्वर॥ कनकासनि पुजोपचार॥ निवेदिले सद्भावे॥२॥ चरणा
बुंजि न्यस्तुनि माथा॥ म्हणे पुर्वजा श्री गुरुनाथा॥ माझीया पुर्वजांचि कथा॥
अद्यापिनाहि परिसिलि॥३॥ याचे चरित्र गुणार्णवा॥ साठिलक्ष ग्रंथ धतु
वा॥ यामाजि रचिले मानवा॥ लक्ष एक दिधला॥ जो तेमिथ्येका वयाश्रवणी
बहु काळ अतिचा अनुष्टानि॥ फळ ध्यावया कृपा करुनि॥ आजि आला सि
तु येथे॥५॥ वरि ते आपुले विमुख॥ देइ आवडिचे भातुके॥ जेसे ऐकोनि कौ
तुके॥ वेदव्यास कृपा घन॥ धासं तोषोनि परममुख॥ म्हणे वैशंपायन आइक॥ जे
सं तुवा माझेनि मुखे॥ श्रवण केले भारत॥८॥ तेसे आघात विस्तारि॥ जन्मेजया
ते श्रवण करि॥ माहाप्रसाद म्हणोनि सिरि॥ आज्ञा थोर वंदिली॥ पावोनि पु
जेचा संतोषु॥ आश्रमा गेला वेदव्यासु॥ वैशंपायन धरा धिशु॥ श्रोते बैसे
सले॥१०॥ सदस्य समर्थ रूपेश्वर ब्रह्मक्षत्रि राजकुमर॥ ऐकोटले अतिआदरे
॥१०॥ स्थिरासनि निचिंत राहिल॥ सात्विक अर्थ ज्ञ प्रेम भरित॥ कथा श्रवणि निसर
ल॥ वरि उदार सर्वश्रेष्ठ॥११॥ जितेंद्रिय सदाचारि॥ क्षमाशिळ परोपकारि॥ परगुणपरि

१

श्वक सुविचारि॥ द्यावें लसर्वदा॥ १४॥ रहे लक्षणीं जिपुरत॥ श्रोले ऐकों बोत्तलिया
ले॥ ग्रंथिचा अर्थकाइ निहाले॥ हृदयिं लेवोजाणाहि॥ १३॥ ते हिलिहिरा सनपत्र
जे विपायाणी कोरिले चित्र॥ विंधिले घटिकायंत्र॥ मीळोने पोकलमाति॥ ग॥ वा
चु नि अभिषेक पात्र पाडे॥ गळोनि हो नेणे कोरडे॥ पद्मपत्रि पडे न पडे॥ तेसा ढके
घनबिंदु॥ १५॥ रोडनि उपडिला दाभणा॥ छिद्र रे॥ धिरीं तो न दिसे जना॥ हृदय सुन्य
लैसो जाणा॥ आनाधिकार अश्रोते॥ १६॥ धातु बिफळ बुडविले जकि॥ राहे जधरि
ल करतळि॥ राधिले चित्त घेउसळि॥ कथा संपल आवलोकि॥ १७॥ स्वाति तो
बिंदु कणकि॥ सुक्तिमुक्ताफळ चिपिके॥ कि उदकि सितो उनदखो॥ तेळ जैसा
चिस्तार॥ १८॥ जातेसा श्रवणी पडता शब्द॥ अर्थ गर्भ विटे विषद॥ वांतिफ कि प्रस
वे बोधे॥ सिंधु जैसा लक्ष्मीते॥ १९॥ आसो या जे सिया श्रोतिया॥ मानकेले बै
सावया॥ आश्रोले अनाधिकारिया॥ ठाव ते थे न मिळे चि॥ २०॥ गंधपुष्पादिक
पुजा॥ आदरे कर्‍लनि समस्त द्विजा॥ प्रीतीन प्रश्न करीता राजा॥ वैशंपायन अनु
वादे॥ २१॥ गुरुविप्रा करुनि नमना॥ स्मरोनिया श्रीकृष्णचरणा॥ नृप राजयासि
वधान॥ परिस कथा वडिलांची॥ २२॥ रावपंडु नेशे विसे वन॥ ते थ जन्मे पांचही ज
ण॥ पिता नी माली दीन॥ हाउनी नगरा पातलि॥ २३॥ रूप विद्या पराक्रम गुणि॥

१

विराटहरणी नियणीता जननि ।। मछरवाहत जाला मनि । दुर्योधन दुराला ।।
।। २४ ।। विषानळ आरंण्यवासि । भोगोनि वाचले देवमानि । सैवरि जिंतिलि
महासति । यज्ञ दायनिप्रताप ।। २५ ।। हे अैकोनि कौरव राज । हृदयि मानुनि
लोक लाज । शांतउनि आर्धराज्य । खांडवप्रस्थि ठेविले ।। २६ ।। राजसुयज्ञ
संपादि ।। मयसभेचा आवमान खेद ।। देखोनि दुर्योधन विषाद । पुढे विचटला
बहुसाल ।। २७ ।। कणिक बंधु शकुनि सहित । आरंभुनि कपट द्युत । अैश्वर्य हिरो
निसमस्त ।। पांडवा वनाट विडिले ।। २८ ।। अज्ञातवाससहित तेरा । वर्षे क्रमुनि
याचे तुरा ।। राज्यभाग मागता निकुरा । कौरव आलेले कोकि ।। २९ ।। भीष्म द्रोण्या
विकर्ण विदुरा । संजय अपि याद्वेश्वर ।। याचे हृदयि तुटो नि वैर ।। बंधुभावे व
र्तिचे ।। ३० ।। कर्ण शकुनि दुशासन । द्रोणी राजा सुयोधन ।। याचे पोटि वैर लपण ।
कुळक्षयाते वाढेणा ।। ३१ ।। म्हणोनि सर्वभुलालकार । युध्य मांडिले घोरांधार
आठरा आक्षोहिणि वीर । संव्हारिले दोभागि ।। ३२ ।। बंधुसहित दुर्योधन ।। युधी
पाचला निधान ।। सार्वभौम ऐश्वर्य सघन । पांडव जाले ते काळि । ।। ३३ ।। भारत माहारा
ख्यान ।। स्वमुखे लिहिले व्यास आपण । चरलाक्षावे निश्रवणे जाण । कलि कल्मनाश
ति ।। ३४ ।। ब्रह्महत्यादि पापरासि । श्रवणे जाळती क्षणार्धेसि । अस्वमेधादि सु

कुवतयासि ॥ फळ घेउनि तिष्ठती ॥ ७५ ॥ जपतपयोगयागदान ॥ वेदशास्त्र निथटि
णा ॥ व्रतादि बहु साधने सिण ॥ न करणे साधकि ॥ ७६ ॥ ईश्वर निजजन ने स्मरणे ॥
मोक्षदे तिचेया रिस्छाने ॥ तो हि ऐके कोणकोण ॥ जे पुराणे बोलीती ॥ ७७ ॥ चिरांव
रकमलालयाकासि ॥ त्रिपा मत्त दक्षपादरी ॥ बोलिली जरि घडसि सायासी ॥ ७८ ॥
इये भारतनगरहाटि ॥ मुक्तिविकति अश्रवणासाटि ॥ ऐसि व्यासमुखीचि गोटि
२ न के अणता महादोषा ॥ ७९ ॥ जयनाम इतिहासाते ॥ ऐकता जे जे कामन ॥ ज्याते २
ते पुर्ण होये यथे ॥ असंदेहे त्रिवाचा ॥ ८० ॥ आर्थशास्त्र धर्मशास्त्र ॥ हेचि येक मोक्षश
स्त्र ॥ चहारि वेद अणि षड्शास्त्र ॥ ऐकिले हालिया श्रवणे ॥ ८१ ॥ ऐसा भारत श्रव
णमहिमा ॥ परिसता आल्हाद राजोत्तमा ॥ नमस्कारुनि चरणपद्मा ॥ वैशंपायनवि
नविता ॥ ८२ ॥ संक्षेप भारत वस्त्र घडि ॥ सांडुनि या हिकाळि दिधलि मोडि ॥ ते कळु
नि विस्तार वाढि ॥ हा ताघालिप वरी ॥ ८३ ॥ पदी संसुति आजि रिया ॥ नाना उपाख्या
ने चय कडिया ॥ नवरसरंगि ऐसा चालिया ॥ उचडि द्रिष्टि दाखवि ॥ ८४ ॥ आदिपासो
नि ध्वग शिहण ॥ आटराचे प्रमाण ॥ मोजुनि दे उघडोनि ॥ म्हणे गा आइका तान
या ॥ ८५ ॥ ऐकोनि नरेंद्राचे वचन ॥ वैशंपायन हास्यवदन ॥ म्हणे श्रोता
विचक्षण ॥ नाहि जैसा द्विरिता ॥ ८६ ॥ परिसा आला सु निश्चळ ॥ राजा प

रिचर धर्मशिळ॥ चैधिवसु नृपाळ॥ परमभिक्षुइंद्राचा॥ ७॥ तेणे यमु
नितपोवनी॥ सांगुनियां धनुष्य बाण॥ वेढुनी थाव त्क्रैवसन॥ तप
श्चर्ये बैसला॥ ८॥ फळमुळ तोय विवर्जीत॥ जितेंद्रिय निरानमस्त।
उग्र तपस्यागसुशोभित॥ चिरकिरंग विराजा॥ ४९॥ रवउतर देखा नियां तप।
भयादिरआमराधिप॥ आगयउनी त्यासमिप॥ शांत वितवसुत्ता॥ ५०॥
देंउनकोथ देहाते॥ पाहिजे ते मागमाते॥ धरा इंद्र दिधलें तुते॥ मजस
मानसुखसोगी॥ ५१॥ वेढुनि रविरस्मीपोगाळ॥ समुद्रावरुणकटिमे
खळा॥ म्हद्रु मंउळभागदीळा॥ राणवासु गिनेपुरे॥ ५२॥ ऐसी श्रेष्ठ धारुनि
धरणी॥ तुजम्याचापिलि धर्मपनि॥ पलेश्तलुशियासदनि॥ भोगप्रसाव
बहुसाल॥ ५३॥ इयस्फटिकेमय विमानि॥ आरुरोनिसहकामिनि॥ क्रिडा
विहारकरिगगनि॥ नानालोकमन इच्छा॥ ५४॥ पैराभ वितिअरिकुळे॥ ५५॥
वैजयंतिपद्ममाळी॥ सदा आलानके इंगळी॥ इंत्र आवलोकिताडोळी
धेइवेणीवयष्टिकादंड॥ इंद्रकेतु नामे रुद्ध॥ याचेदर्शनि पुंडावाड॥ ओश्व
र्याचा निचनवा॥ ५६॥ हासंसराथिया दि॥ इंद्रध्वजपुष्पगंधि॥ इंद्रप्रिसा
र्थ पुजिता सिध्धि॥ राज्ये लोक्ष क्षत्रिया॥ ५७॥ चैघदेशापवित्र भुमि॥ प

जानिरंतरसदाधर्मी ॥ येथिचे राजधानीचा धामी ॥ वास्तव्य तुवाकरावें ॥५४॥ हे दुःखदा कातिल भुवन ॥ सदा सर्व कालि वर्षघन ॥ फळधान्य रत्न

सरिता सुवर्ण ॥ समान पिके धरित्री ॥५५॥ धेनु अणीसकळ ॥ सारिख्या श्रवति क्षिरजळि ॥ रोगदरिद्राचि मुळि ॥ वालयि येथे न पिजे ॥५६॥ वृक्ष अणि रहस्त दांत ॥ कल्पदमाचि सारिखा यथा ॥ इछितिल याचे आर्ती ॥ फळि धादा बहुधान्य ॥५७॥ यथ करुनिया सुखवस्ती ॥ पावुनिया सर्व जगति ॥ याहि वेगकि इच्छाचित्ति ॥ तोमि सर्व पुरवितो ॥५८॥ असो देउनि उचित वर ॥ आमरभुवना गेला इंद्र ॥ चैद्य देशि राजेश्वर ॥ सुखा वर्तला संतोषा ॥५९॥ प्रजा पाळि पवित्र धर्म ॥ क्षमापावलि क्षेम गरिमे ॥ किर्ति

3 सुकुले भरलि धामे ॥ मानवाची देवाचि ॥६०॥ यासि जाले पांच कुमर ॥ पितया तुल्य गुणसागर ॥ साचि नामक पि गोचर ॥ करु तुझे कुरुवर्या ॥६१॥ बृहद्रथ पहिला जाण ॥ प्रत्यग्रह कुशांब सगुण ॥ चौथिया नाम मणीवान ॥ मावेल्ल तो पाचवा ॥६२॥ पाचै इंद्रा तुल्य नृपति ॥ विर्य शौर्य बळ संपत्ति ॥ वसु पुत्र वसुपति ॥ भोगिल जो लेभ ल तो ॥६३॥ कुमरि आपुले निज स्थाने ॥ नगरे

पुरे बहपाहृणे॥ अनेक देशि राज्यस्थाने॥ रचि लिवसुलिअव्याणि॥ ६८॥ पुरुष
कि बैसोनि परिच्चार॥ पाहतिलो कस्तो कोतरि॥ नावेटे बिलउपरिच्चरि॥ लो
रूपा किलयाते॥ ६९॥ आदरे प्रविसंसरि॥ इंद्रध्वजाचे पुजन करि॥ लोचिं
उकअर्जुनिवरि॥ मुडियाचे त्रिपाडवा॥ ७०॥ चसुमतिनगरापुढे पाहे॥ शक्ति
मतिनदि वाहे॥ तिसीकोंडु निद्रुराम्हे॥ कामाचारी प्रवर्ते॥ ७१॥ कोल्हाल
नामा नगरि॥ सरीलाभोगिबल्कारि॥ राव्यजाणो निपदग्रहरि पर्वतकडेका
ठिला॥ ७२॥ मुक्तजालाजळप्रवाहो॥ नदिसंलुश्मानपाहो हो॥ ग्रगर करुनि
प्रमदा देहो॥ रायासमियपातलि॥ ७३॥ स्लउ नियाराजेश्वर॥ पर्वविय अति
कन्या॥ सुंदर॥ यकैंयककुमर॥ दानि दिधलि रायाते॥ ७४॥ लक्ष्मीपरिसोनि सुमति
पुत्रकेलाशेनापति॥ पतिकरुनिटे विलिभुवनि॥ गिरिकया नामे गिरिकन्या॥
॥ ७५॥ तिसिवर्त्तताय थासुख॥ नानाउपभोगकोतुके॥ श्रृंगारवनिसदनि देखे॥
सुरतानंदक्रीडलु॥ ७६॥ रुलुस्नातजालियायुवति॥ प्रासजालेपितृनिधि॥ पु
र्वेजअंतरिक्षिगलि॥ मांसभोजनइछिले॥ ७७॥ सावागीघेवोनिधनुष्यबा॥
ण॥ वनोपवनिकरिभ्राटण॥ वृक्षछायेसि बैसता मदन॥ जर्मिनलामानासि॥ ७८॥

म्हणे हिरे तुम्हां नरामा ॥ ७८ ॥ वपय गुणी श्रीयेवि प्रतिमा ॥ तिचि स्मरोनि सुखसंभ्र
म ॥ परमविकळ काननि ॥ ७९ ॥ आरचिला संयोगसुख ॥ विर्य सुटले अधोमुख ॥
पडोनि रितला ताकाळिक ॥ वृक्षपर्णि धरियला ॥ ८० ॥ म्हणे हे माझे आमोघ रेत ॥ स
हसा करू नये व्यर्थ ॥ म्हणे दिशाय आतिभुत ॥ तिसदि घलो पाहिजे ॥ ८१ ॥ भवते अ
वलोको निरक्षि ॥ पाचारिला रानापक्षी ॥ या सिघ्र पो म्हणसा वाक्षि ॥ म्हणे हि माझि
प्रियकांता ॥ ८२ ॥ चुंचुधरोनि रेत द्रोण ॥ प्रवेशोनि राजभुवन ॥ तिचि यहस्ता कि
निवेदोन ॥ सिघ्र यई मागुला ॥ ८३ ॥ म्हणे वंदुन राजवचन ॥ चुंचुसांडसी विर्यद्रोण ॥
धरोनि आक्रमी गगन ॥ इतर पक्षी लक्षीले ॥ ८४ ॥ म्हणे तिउ मिषनलो बरवे ॥ ब
हुति बळे हिरोनि घ्यावे ॥ म्हणे निघा विन्त आघवे ॥ लुडयुध्य मांडिले ॥ ८५ ॥
परस्परे अंगकवळ ॥ होतां रेत पडिला जळि ॥ पडला यमुनामध्य जळी ॥ तेमच्छीने
ग्रासिले ॥ ८६ ॥ अद्रिका नामे आप्सरा थोरि ॥ ब्रह्मशापे यमुना तिरि ॥ मच्छरूप ब
हु काळवरि ॥ नंद्योदकि तळपत ॥ ८७ ॥ तिचा उदरि पडोनि रेत ॥ वाढो लागले उ
दरांत ॥ दसामास लोटला तेथ ॥ असंकुल वतेल ॥ ८८ ॥ मच्छजिवि पसरोनि जाळे
ले चिमच्छी गीळिबळे ॥ थोडियसां दुनिमासागळे दरवोनि कर्तिआश्चर्य ॥ ८९ ॥

तआभीक घेउनि हाति॥ दासपा तला मह द्वारांति॥ जो हा कनि स पोन्ट पति॥ मछ जा
तिआवलोकि॥ ७७॥ विदारि ता दासरू धारि॥ उदर किबाळ मछोदरि॥ यकक्कु
मर यकक्कुमरि॥ देखोनि आश्चर्य करि ता॥ ७८॥ परिन्चर वसुधा सुधा पाळ्को॥ अ
वलोकुनि दान्ही बाळ्का॥ संतोषोनि अतिश्लेहा ळो॥ बाळ्मुप पाले ववि लि॥ ७९॥
पुढ लि माहा थिले निवि लि॥ धल जाला पैपु झाले॥ कन्या परतो निदि लि साले॥
अणे हे पा ळि केवल॥ ८०॥ मछ नामे या पुत्रासि॥ ठेउनि राजा मछ देसि॥ केला पुढु
साचिया वंशि॥ मछ राज जन्मला॥ ८१॥ आद्रिका शापे मुक्त जाली॥ दिव्य देहो पावो
निव हिलि॥ सिधा चारण पंथे गेलि॥ अप्सरा लोकी टाकोनि॥ ८२॥ मछ गंधि नेऽ
विलि वपु॥ रूपा ननि घे चि परिचर न्र पु॥ दासरा उ अति सकृपु॥ तणे कन्या पाळी
लि॥ ८३॥ सस वति पावो निनाम॥ सुखे वसति पित्र धाम॥ रूप स हगुण परम॥ शुभ
लक्षणि साजिरि॥ ८४॥ पित्र आज्ञे करूनि कुमरि॥ नौका रक्षिय मुनाति रि॥ आक
स्मा तयक आवसरि॥ तिर्थ यात्रा उधे सि॥ ८५॥ पाराशर रुषि पातला तेथ॥ नेऽ
सपा ता पर पारा तें॥ नौकारूढ करूनि येयाले॥ मध्य भाग जव आपी॥ ८६॥ तोध
लाआ सन॥ अति यंकाळी॥ द दऽआ वतर लाम न्मथु॥ होउनि वासंगा सक्तु॥ केशपाश
त विलोकि॥ ८७॥ रंद्रिवरशामा मना॥ आकर्ण लविशाळ नयन॥ बिंबाधरा चंद्रव

देना ॥ कोमळांगी रंभोरू ॥ १ ॥ जाणीतलिवा सुगिकंन्या ॥ होईल सर्वलोकमान्या ॥ माझिपवित्ररतधन्य ॥ होयसुखुमिनिर्धारि ॥ २ ॥ तितआवलोकिता नयना ॥ हृदयभेदिलेपंचबाणा ॥ सणेअमुक अबळे देण ॥ भोग भिक्षायेकाकि ॥ ३ ॥ आजी चापुण्यकाळउदित ॥ याचकमहापात्र येथे ॥ यमुनासद्वीपसुक्षेत्रात ॥ देदान द्याकिजे ॥ गवन्हीनदग्धनिववावे ॥ क्षुधेनपिडिलेतोषवावे ॥ इच्छापानेभोजने ॥ ५ ॥ तयाचिऐसिहे हिजाण ॥ आत्ताद्यावेआवस्यदान ॥ येणेकारिम होयज्ञा केलेहोतिनीश्चये ॥ ६ ॥ स्मरविस्मरणाचाडोहि ॥ मातबुडविलेयसमयि ॥ रतपातालपरपारा ॥ ७ ॥ येरिविनविरुषेश्वरवर्यी ॥ कविचारिआवहिलक्रिया ॥ पुढेदुषणा विवाहाकार्यी ॥ लागेततवनकरावे ॥ न अंगनादेहविक्रीतवस्तु ॥ हा श्रेष्टाचारआना दिपंथु ॥ पुढेग्रहिकन विहातु ॥ कुमारिसंभगला ॥ ८ ॥ वरिदीवसाचप्रहर ॥ उभयतटाकिनारनर ॥ रहस्यहोता द्रिष्टीगोचर ॥ संगहा अनर्थआदळे ॥ १० ॥ मगिनियादासरायासि ॥ मातकस्पोखकीयेद्दासि ॥ यरूअपेयाविश्वासी ॥ कारणनाहिआमुते ॥ ११ ॥ ह्मणासिपाहतिनरिनर ॥ तरिहादरवचमत्कार ॥ ह्मणोनिपादिला अतिन्याहार ॥ धुमाकारतमांध ॥ १२ ॥ लोकिह्मणतिमच्छगंधा ॥ मोक्षनिवरे याजनगंधा ॥ होइल सुक्षियादेहसुगं

था ॥ विरक्त होति षट्वद ॥ १३ ॥ अंगसंग जालिया मासा ॥ कुमारिभाव नभंगे
तुसा ॥ तु तैव रिल महाराजा ॥ चक्रवर्ति निर्धारि ॥ १४ ॥ निबिड निहार लोप
ला दिवस ॥ अंगि उठेला दिव्य सुवास ॥ ह्मणे हा परमपुरुष ॥ इश्वर चिदुस
रा ॥ १५ ॥ मौन आवलंबो निवदना ॥ यागु निज्मसंध्य चिवसना ॥ अनुसराति
रुषि वचना ॥ मनो भावे लेकाळि ॥ १६ ॥ पुर्ण करो निमनोरथ ॥ निघता जाला म
क्रिसुत ॥ आ माघ विर्य बाळ दिस ॥ प्रगटे तैसा तकाळि ॥ १७ ॥ षड्गुणैश्वर्य संप
न्न ॥ जन्म पावला व्यासभगवान ॥ जो हि भुजनारायण ॥ यकानन विरंचि ॥ (१)
आभाळ लोचन महेश ॥ न रापुराणा सरिता रहसा न ॥ उपजत युवा दुतारान ॥
रा हक तपे जैसा ॥ १८ ॥ तैसा उपजता प्रौढ ज्ञानि ॥ नमस्कार निजादेरजननि
आज्ञा मागे कर जोडु नि ॥ लपश्चर्य जावया ॥ २० ॥ माता मोहे स्नेहे भरित जाणा
पुरला नाहि दर्शन ॥ पुत्र स्मरलाक्षण ॥ भेटि ताळ ह्यादेण ॥ २१ ॥ ऐसा संकेत
सांगो निचेगे ॥ व्यास गेलाया गमार्गे ॥ कुमारित्व पावो निवेगे ॥ यरिटे कि सख्या
नि ॥ २२ ॥ यमुनाद्वीपि जाले जनन ॥ सालागी नाम द्वैपायन ॥ वेदार्थ प्रकाशि
पोन ॥ वेदव्यास बोलिजे ॥ २३ ॥ भारत लक्ष पाप पंचम वेद ॥ सर्वार्थ सिकरुनि विश
द ॥ शीघ्र पुत्रासि केला बोध ॥ द्वैपायन सर्वज्ञ ॥ २४ ॥ सुमंत जैमिनि पैल सुत ना ॥

ग्रिवलें मी संजयोचतुरा ॥ पाचवियां आत्मकुमरा ॥ ज्ञान कव्हेरु कोतो ॥ ७५ ॥ कौ
रवान्वयविशाळ नदि ॥ रवंडेलि विचित्र विर्यसंधि ॥ तेणें सामर्थ्ये जळसमृधि ॥ वाह
तिके लिंप्रतापे ॥ ७६ ॥ विष्णुपर्वतापासु निगुदित ॥ गुणसमुद्रातुज परीयेल ॥ प्र
वाहापाटलो निश्चित ॥ प्रसाद व्यासचरणाचा ॥ ७७ ॥ ऐसिया परि व्यासोसंप्ति
तु जन्म्या परिसीलि निश्चिति ॥ वंशावतार जन्मले क्षिति ॥ तेहि आता आवधा
रि ॥ ७८ ॥ इत्यादिपर्वकथा भारति ॥ मुक्तेश्वर अवधुतमुति ॥ सत्येआदरे श्रो
तिया प्रति ॥ कवि किंकर अनुवादे ॥ ७९ ॥ इति श्री आदिपर्वे भारते ॥ व्यासो
त्पत्तिनाम त्रयोदशोध्यायः ॥ १३ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ० ॥ ० ॥ ०

६

॥श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीद्वैपायनाय नमः॥ परिक्षीति कुरुमजनंदना॥ जन्मेजय
आगुपानिधाना॥ अवधान वार निरोपणा॥ जे कसांगे नसांक्षेपे॥१॥ तिनि सप्तके
वेळा धरणी॥ निक्षत्रिकरुनि आपुल्या बाणी॥ भार्गवराम अनुष्ठानि॥ महेंद्र प
र्वति वैसला॥२॥ सोमसुर्याचि राजवंशी॥ संतति विणपडले वास॥ लवे ब्राह्म
णाऋषि तापस॥ राजांगणी प्रार्थीला॥३॥ सोडुनी उनिउसे ना कामसिद्धि॥ केव
ळ मनाने हेतु रधि॥ विर्यदान मागुनी द्विद्धि॥ राजवंश वाढविले॥४॥ ब्रह्मवृत्ती
जे ब्रह्मक्षेत्रि॥ जन्मले ते हि सर्व धरित्रि॥ अक्रमुनि परम पवित्रि॥ वसति केले
विवेके॥५॥ पृथु प्रिय व्रताचे धर्म॥ जगि वाढविले निशिम॥ इच्छिले फळ य
ज्ञ धर्म॥ स्वर्गभेदु निआणीति॥६॥ गाइ ब्राह्मण साधु॥ आदरे पावले परमानं
दु॥ न्यायपाळणे प्रजासि खेदु॥ जगा वाहेरि उचविला॥७॥ यावरि राक्षसदान
वदैत्य॥ प्रबळ जाले अमेदुत॥ ते हि सप्तपाताळ मंदिर॥ आरोपिले निज बळे॥८॥
परस्त्रि परद्रव्य परहिंसन॥ ब्राह्मण हेळणा देवळ पावमान॥ अभक्ष भक्षे अपी
आपाना॥ अधर्माचार वाढला॥९॥ स्वयरक्षके पाडिले विबुधि॥ सापडले तेसुर
ले पदि॥ मानवलोक लक्षा वधिा॥ निर्मुळ केले भक्षोण॥१०॥ रूपधरुनिया कर्क
श॥ नाना परि बहु तापस॥ पावोनिया परम त्रास॥ प्राण बहु निसागिले॥
॥११॥ दयाधर्म न्यायनिति॥ विवेक जालाना हि क्षिति॥ पापभारे सर्व जगति

आक्रांतासिबहुसाल ॥१४॥ तवक्षिधरादेव ब्राह्मण ॥ ब्रह्मदेवासि गेला शरण ॥ पिंडपरीसोनी चतुरानन ॥ चित्तदेवला दयाळु ॥१४॥ हरिहरमेळउनी सवादे ॥ आज्ञाकरिसमस्तविबुधा ॥ दुष्टदेत्याचिया वधा ॥ वंशावतारधरावे ॥ ॥१५॥ तरी त्रेतेदेत्यराक्षस ॥ तेचि द्वापारिन्टपकर्करा ॥ प्रथ्वीपिडिलाबहुवस ॥ धेनुजैसेबहुव्याघ्र ॥१५॥ नानायोनितजन्मले ॥ नानारूपबहुधरुनिवहिले नानापरिपिडतजाले ॥ तेनानायतिवधाचा ॥ १६॥ ऐसबोलताचतुरानन ॥ अवश्यह्मणसहश्रनयन ॥ उत्पुत्सालेअवतरण ॥ आवतारधरिलेनेअका ॥१७॥ शजाह्मणचतुरेश्वरा ॥ बासस्थिस्यसुरसादरा ॥ स्रष्टादिसिसुरअसुरा ॥ उद्भवकैसाकोणुका ॥१८॥ तेआदिकरूनिकथन ॥ ममपुढाकथीनिरोपण ॥ देवदैत्यवंशावतारण ॥ विस्तारसिवदावे ॥१९॥ प्रश्नैसंतोपानिवरुन ॥ हणेपरिसीधरित्रीनाथा ॥ जेअेकतासर्वज्ञता ॥ श्रोतियआंगिआवतरो ॥२०॥ आदिपुरुषाचनाभिकमळि ॥ ब्रह्मजन्मलाश्रष्टिच्यामुळि ॥ तयाचियासंकल्पजाळि ॥ मानसपुत्रदशसंख्या ॥२१॥ तेचिजगाचियउद्भवा ॥ कारणजालमाधविधवा ॥ तोहिश्रेवपबोधवरवा ॥ हायतेसातुजसांगा ॥२२॥ मरिच्चिअत्रीअंगीरश्रेष्ठ ॥ पुलस्ति

पुलस्त्यक्रतुवसिष्ठ ॥ भृगुसातवा अणिव सिष्ठ ॥ दक्षनारद दाहावा ॥ १७ ॥ मरिचि कश्यपमुनि ॥ त्यासि स्त्रियातेराजणी ॥ दक्षकन्या कन्या ॥ नावे तेके नरवर्या ॥ १८ ॥ अदिति दिति दनु काळा ॥ वैनता कपिअणि कद्रु ॥ दनायु सिंहिका मुनि नृपाळा ॥ क्रोधा वरिष्ठ विमळा ॥ १९ ॥ अदितिचि द्वादश आदित्य ॥ धाता मित्रा अर्यमा सत्य ॥ वरुण भग अंशु ॥ विवस्वान अर्वा ॥ २० ॥ पुष्पा सविता त्वष्टा विष्णु ॥ जो परमात्मा जगजिष्णु ॥ मुख्ये करुनि आमरशरणु ॥ आदितिये जाणावे ॥ २१ ॥ दितिपासावे दैत्यराणा ॥ हिरण्यकश्यप प्रह्लाद सगुण ॥ विरोचन बळिचा बाण ॥ शंकर गण अग्रगण्य ॥ २२ ॥ दनुचे पुत्र पाच शत ॥ दानवराज महासमर्थ ॥ आमरे सहित आमरनाथ ॥ त्रासे ज्याचे दृष्टि ॥ २३ ॥ प्रथम प्रलिति नाम ॥ शंबर नमुची मपुलोमा ॥ वातापि वृषपर्वा असिलोमा केशि दुर्जय विरूपाक्षि ॥ २४ ॥ हे मुख्ये करुनि असंख्यात ॥ नामे सांगता वाढे बहुत ॥ आसो हे दानव बळोन्मत ॥ दनुचे पुत्र जाणावे ॥ २५ ॥ काळकेचे काळकेय ॥ क्रूर ॥ देसदा नवा परिस उग्र ॥ विनाशन क्रोधि क्रोधि रक्त ॥ हे मुख्ये करुनि असंख्य ॥ २६ ॥ विक्षुर्य बळ विर्य व्रत नाम ॥ महासुरादि नृपसत्तम ॥ देत्य विरोधक काळप्रतिम ॥ दनायुसा प्रसवलि ॥ २७ ॥ सिंहिके चि चौघ कुमर ॥ राहु सुर्य चंद्र चद्रहर्ता ॥ चंद्र विमर्दन महाक्रुर ॥ वैरसुर्य चंद्राचे ॥ २८ ॥ मनुचे मौनेय सा जाण ॥ अष्ट गंधर्व साचेम

हिमान॥याचेनामेकोणकोण॥तेहिऐकतिया॥७५॥भीमसेनउग्रसेनसुपर्णी॥
वरुणागोप्रतिध्रतराष्ट्रजाण॥सुर्यवर्चासुपुत्रचाम॥यकवर्णप्रयुग॥७६॥
भीमचैत्ररथिसिकसीळ॥प्रद्युम्नकलिनारदजवळ॥असेगंधर्वराजसाव॥मु
निजेमोनयजाणावे॥७७॥गपाककोधव्रंरारौद्रकर्म॥अरिमर्दनकरुनिसंभ्रम॥
तुंरुपाकलवर्म॥कोधिदेविप्रसवलि॥७८॥अनुवधाअनुराया॥अनुनाम
णिअरुपप्रिया॥अनुपासहगाघासिइया॥श्राधादेविप्रसवालि॥७९॥चरिके
चेदेवगंधर्व॥विद्यावरिमहाअपुर्व॥ज्याचेसंगतिऐकतासर्व॥तांडवनृत्यअ
बलरे॥८०॥सीधबर्हिदुसरा॥पुर्णायमहायशाचतुरा॥ब्रह्मचारितवर्चलाखरा
सर्वनामासातवा॥८१॥विश्वावसुचंद्र॥हाहाहिविद्येचिसमुद्र॥वरिष्टरुपेनरेंद्र॥दे
वगंधर्वमुख्येहे॥ज्याचेमतेचक्षरुपागरुड॥हितवप्रसिधजगतिरुढ॥यकसा
रथिसुर्याआड॥येकतावाहनविष्णुचा॥८२॥अलंबुशामिश्रकेसि॥विद्यापुर्णी
रावंध्यरासि॥अलुकाअनुपाअनुघाऐसि॥आक्षतादिनिजनामे॥८३॥
रंभामनोरमाअसीत॥सुबाहुसुभजाअर्पीसुचेत॥सुश्रीयाअतिबाहु
रुपनाथा॥हाहाहुहुतुंबरहे॥८४॥मीत्रआप्सरगणाचेइंद्र॥रुपाविद्येनेअ
तिप्रसिध॥स्वर्गसोख्यपैसुखद॥[illegible]॥याचेनियोगबोलेजलि॥८६॥अमृत

गा ३ अपि ब्राह्मण ॥ पुण्य गंधर्व अप्सरगण ॥ हा कपिलेचा विस्तार जाण ॥ स्व
र्ग भुषण स्वर्गस्था ॥ ४७ ॥ राम बाहुगि अनंत पुलक ॥ तक्षक कालिया कर्कोट
क ॥ हे मुख्य करुनि सहस्र देख ॥ काद्रव्य कद्रुचे ॥ ४८ ॥ देस दानव कालकेय ॥
क्रोध आपीर नागषय ॥ यांचा कुलगुरु शुक्राचार्य ॥ भृगुनंदन मातापिता ॥ ४९ ॥
स्याचा वस्त्र राग मर्क ॥ शुक्रपुत्र चौघे देख ॥ विद्या विशारद जैसे अर्क ॥ तपोतेज
तपस्वी ॥ ५० ॥ त्रयोदश स्त्रिया संतति ॥ सांगितलि ऐसि यारिति ॥ कश्यप दृष्टि
यच्चिये अर्थी ॥ ग्रंथकर्ते बोलति ॥ ५१ ॥ प्राणियके निरोपण ॥ देवऋषि पासुनि गह
न ॥ जन्मलेय कादशान ददशा ॥ येकादश रुद्र बोलति ॥ ५२ ॥ मृगव्याध शर्व नि
रुति जाण ॥ अज कपाल अहिर्बुध्न्य ॥ पिनाकि ईश्वर कपालि दहन ॥ भवरुद्र
पशु आकरा हे ॥ ५३ ॥ ब्रह्मयाचे दश नंदन ॥ सात मरिचि श्रेष्ठ जाण ॥ कश्यप तयाचा
आपण ॥ विश्व विस्तार कश्यपि ॥ ५४ ॥ आपिउरले न वकुमार ॥ तया पासुनि
जो विस्तार ॥ तो हि सांगेन अति सादर ॥ श्रवण केले पाहिजे ॥ ५५ ॥ अत्रिऋषिचे
असंख्यात ॥ वेदविद शांतदांत ॥ याम सिध जाले बहुत ॥ मुख्य तिघे त्या माजि
॥ ५६ ॥ मुर्तिमंत देव त्रय ॥ अनुसया मज श्रेष्ठ त्रये ॥ चंद्र दुर्वास देव दत्तात्रय ॥ वि
धि श्रीकंठ श्रीपति ॥ ५७ ॥ अंगीरा चे वियेसंतति ॥ बृहस्पति तथ्ये विश्वसुमा

नि ॥ प्रमा ॥ जि श्रेष्ठ वाचस्पति ॥ उपाध्याये आमरांचा ॥ ६२ ॥ पुलस्ती ब्रह्मया
चि नंदन ॥ विस्वश्रवा तपोधन ॥ वेदघोष विर्यजाण ॥ त्रृण बिंदु कन्या प्र
सलि पथ ॥ विस्वश्रवा ते माहाराज ॥ वरिष्ठ जाला दोनी भाजा ॥ ब्राह्मणी
भारद्वाज प्रसजा ॥ दुजि राक्षसि कैकासि ॥ ६३ ॥ देववर्णी चनिदोष ॥ कुबेर
जन्मला देवपुरुष ॥ जो यक्षराज मुख्य केर ॥ परम मित्र शिवाचा ॥ ६४ ॥ सु
मा राक्षसाचि कुमरि ॥ कैकसी या निशाचरि ॥ राक्षस जन्मले तिचा उ
दरि ॥ तिघे पुत्र एक कन्या ॥ ६५ ॥ रावण आणि कुंभकर्ण ॥ तिजा पवित्र वि
भिषण ॥ जिच्येने केले हे रामायण ॥ रचले जाण शूर्पनखा ॥ ६६ ॥ यवं राक्ष
स यक्ष किंनर ॥ उग्र ताम सेहर किंकर ॥ पुलस्तीचा विस्तार ॥ सकळित सांगीत
ला ॥ ६७ ॥ शार्दूल व्याघ्र सिंह ॥ किंपुरुष ॥ वरहा मृगादि रुक्ष शाखा ॥ एक्हे
पासोनि हे अवघा ॥ जन्म पावले जग ॥ जिजे ॥ ६८ ॥ क्रतुचक्र तु समान जाण
पतंग सहचारि देदिप्य मान ॥ जे काव्रत परायण ॥ असंख्य पुत्र निपजले ॥ ६९ ॥
अग्नीष्टोमादि अश्वमेधात ॥ सत्यलोक स्वच्छ मूर्तिमंत ॥ ते क्रतुनाम क्रतुच सुत ॥
संकेत जाण कुरुवर्या ॥ ७० ॥ भृगुचि विस्तार अन्वय बोधे ॥ च्यवन और्व रुचिक

आंगे ॥ याचा दमग्नि रेणुकासंगे ॥ पुत्र चौघे प्रसवला ॥ ६९ ॥ याप्रसिध भार्गवरामा ॥ जो क्षेत्रियांतकमाहाभीमा ॥ ज्याच्या संकटि स्मरलां नाम ॥ भस्म होति अरिष्टे ॥ ६९ ॥ अपि कष्ट मुन्यिसंतति ॥ कविशुक्र धर्म स्मृति ॥ और विचा हिनमो कि तारा लसह स्त्रिविस्तार ॥ ७० ॥ वशिष्ट शक्ति पाराशर ॥ व्यासदेव शुकयोगेंद्र ॥ वसिष्ठान्वयसुचंद्र ॥ निष्कळंक तिहि लोकि ॥ ७१ ॥ शास्त्र प्रसिध्द तष्टतिस्मृति ॥ इतिहास संहिता पुराण पंक्ति ॥ व्यास ब्रह्म ते पासाव जन्मति ॥ विस्तारिलीं महिमाने ॥ ७२ ॥ परमेष्ठिच्या चरणांगुष्ठि ॥ दक्ष जन्मला वरिष्टसृष्टि भार्यासाची यपवित्र सृष्टि ॥ वमाग्ुणी निपजलि ॥ ७३ ॥ उनर्धशत कन्यिच्या कुशी कन्या जन्मल्या लावण्यराशि ॥ शशधराते आदरेसि ॥ सत्तविंशति वोपिल्या ॥ ७४ ॥ अश्विनिपासुनि रेवतिवरि ॥ नक्षत्रयोगिणी अतिसुंदरी ॥ एकाएकी मानागगनोदरि ॥ रूपे नामे प्रसिध्दा ॥ ७५ ॥ त्रयोदश दिधल्या कश्यपाते ॥ जे का मागे कथिल्या जुले ॥ दाहा निवेदिला धर्माते ॥ धर्मवृध्दि जाव्हाया ॥ ७६ ॥ किर्ति लक्ष्मी धृति मेधा पुष्टि कीर्ति क्रियासमुद्रा ॥ बुध्दि लज्या मुर्ति हि विरदा ॥ कथा पञ्चिचि आवधारि ॥ ७७ ॥ धर्मापासुनि जे जे गुण ॥ विस्तारति ते ते पासुन ॥ असे जाणति विचक्षण ॥ तुजसारखे नरवर्य ॥ ७८ ॥ देवऋषि तां सिरोमणि ॥ नारद ब्रह्मजा दक्ष मस्थानि ॥ विवेक वैराग्याचा खाणी ॥ ब्रह्मनिष्ठ कुळगुरु ॥ ७९ ॥ सन्यासमार्गी

कु नबीकु। जितेंद्रिय मदनांतकु।। त्याचा लाहो निवरदहस्तुं।। व्यासजात बोलि
का।।८०।। आणिकु अवे कराजा न्रपति।। पिता महा लनया प्रजापति।। याचे पुत्र
अष्टमुर्ति।। आठहि वसु आनामि।।८१।। अपधर ध्रुव सोम।। आनळ अनि
ळ प्रत्युष प्रभासु। प्रभावसु अटवा अतिउत्तम।। आठो नामे आटाचि।।८२।
धराचा पुत्र जेष्ट द्रविण।। ध्रुवाचा काळ महादारुण।। सोमाचा लासुवर्चि
जाण। पितियातुल्य तेजस्वी।।८३।। आग्निचा पुत्र षडानन।। कार्तिकेय
सुब्रह्मण्य।। अनिळाचा महाजवमन।। जो काजि केच पळेस।।८४।।
प्रयुषाचा देवळ रुषि।। प्रभासाची भार्या गुणे करासि।। बृहस्पति भगिनि चियाकुसी।।
विश्वकर्मा जन्मला।।८५।। यंत्र शास्त्र आगमभुषणे।। देवलोकि सदनसुमने।। मन
इच्छा विचरत्ती विमाने।। हे हस्तकळा नयाची।।८६।। पुरे दुर्ग गिड पर्वत।। समुद्र
यानि नौका पोत।। शिल्प विद्यानंत असंख्यात।। मानव जिव विसुलो किं।।८७।।
पुढति ब्रह्मदेवाचि देहिं।। दक्षिण हस्त भेदोनि पाहिं।। धर्म जन्मला नखा गृहि
आल्हाद करि भुतालो।।८८।। धर्माचे निवर कुमार।। जे सर्व भुत मनोहर।। सम
काम हर्ष चतुर।। त्रा क्षित्रयासि आवधारि।।८९।। रती कामदेवाचि भार्या।। प्राप्ति

सामाचि निजजाया॥ नदिहि भगिजाया॥ सुजाणाचा जाणिजे॥९०॥ हस्तीसवि
जंजीथी ताचि भार्या॥ वडरुपिणी काया॥ सुर्यविर्य कुमरद्वया॥ अस्वीनौ देवा प्रस
वलि॥९१॥ अपि ब्रह्मयाच नंदन॥ धाता विधाता दोघजण॥ याचि स्वस्या गुण
निधान॥ लक्ष्मी नाम सुपवित्रा॥९२॥ तिचा मानसपुत्र परम॥ व्योम चारि तुरंग
म॥ उचैश्रवा ऐसे नाम॥ तयालागि बोलिजे॥९३॥ शुक्र देवि वरुणपति॥ तिचि
चे पवित्र गर्भस्थानि॥ बळ पुत्र अपि सुनंदनि॥ कन्या येक निपजलि॥९४॥
प्रजा आनका अनेकातन॥ परस्परे परिरक्षण॥ करिता भुविना स्थान॥ अधर्म
र्म सिंधि जन्मला॥९५॥ तया अधर्मीची जाया॥ निरति नामि माहाराया॥ नैर
त्य राक्षसजन्मा वया॥ जे न भुमिते जाणा॥९६॥ घोर पणा कर्मि निरत॥ भय
हा अपि मृत्यु॥ तिघे धर्माचे सुत॥ कुळांतक रामे॥९७॥ तयासि नाहि पुत्र
भार्या॥ सुलक्ष्मी स्त्रिन्या विक्षया॥ हे चि वाचु निश्चया॥ व्यापारका हि ऐसेना॥
॥९८॥ सुनिका कि अपिका॥ कि॥ ध्रुतराष्ट्र्या पाच विसु की॥ ताम्रा देवी पासु
निलोकि॥ पंचकन्या प्रसिद्ध॥९९॥ काकि पासुन काकजनन॥ भासु निजन्म
ले दोन॥ भासि पासुनी नानावर्ण॥ गृध्र अनेक जन्मले॥१००॥ ध्रुतराष्ट्रि

रानि

पासुनदेख।हंसककाहंसचक्रवाक॥शुकिपासुनिजालेशुक॥निळश्वेतबहु
रंगी॥१॥अपीकजेकंकुरभुषणा॥मृगामृगीहरिसगुणा॥सुरभिश्वेतामद
मना॥आणिमातांगिसदिळ॥४॥मृगीपासुनिमृगआपार॥मृगमदेचेबहु
शुकर॥अश्वरत्नअतिसुंदरे॥आणिवानरहरिचे॥३॥भद्रमनेपासुनिजाणा॥
ऐरावतऐरावणा॥जोकादेवेंद्राचवाहन॥स्वर्गाभुषणस्वर्गस्थ॥४॥मातंगी
चेमानागबहुत॥आष्टदिग्‌जमुख्यमुख्य॥समर्थजिहिटेकुनिदांत॥अवनिभुगो
ळधरिलास॥५॥तोऐरावतपुंडरिक॥वामनकुमदआनदेख॥सर्वभोमसु
प्रतिक॥पुष्पदंतआष्टवा॥६॥सादुळीपासुनिअतिप्रबळ॥व्याघ्रसिंहेआणि
शादुळ॥सरसपक्षिमहाविश्ऱाळ॥गंडभेरवप्रसवलि॥७॥सोळेमेंढीमेषि
खरा॥श्वानमार्जारकर्कोटशुकर॥ग्रामसमंधिपशुआपार॥ग्रामजाप्र
सवलि॥८॥सुरभिप्रसवलिधेनुसिळार॥बहुवर्णवृषभलांगुळधर॥आदरा
धान्याचसंभार॥पृथ्वीपासुनिजअवित॥९॥सप्तस्वयंभरशाळिरळ॥तेल
गर्भातमुख्यतिळ॥असियाधान्याचासुकाळ॥व्रजभकरितांभुलो
कि॥१०॥यवंगोधुमंआणिलदुळ॥राळेसजगुरयावनाळरातुसधान्या

सहितप्रबळ ।। सप्तधान्यअंखड ।।११।। चणकमसुरमुद्गउडिद ।। त्यांक वटाणे तु
रिप्रसिध ।। वाल चवळेकुळथिविषद ।। दशाद्विदळजाणावे ।।१२।। अनेकदेशी
अनेकवर्णी ।। अनेकधान्यानामा ।। चिऊपधान्य ।। अप्रसिध बोलनामने ।। उपग[illegible]
उश्रोतिया ।।१३।। आसोहेधर्मलक्षपक्ष्म ।। शरिरकष्टउमिनिलक्षि ।। धान्याजगासि
केलिसुभग ।। हाविस्तारसुरक्षिचा ।।१४।। आनकानामेशुकिपुत्रि ।। तीपासाधरा
क्षत्रि ।। आउरा भारफळिपत्रि ।। वनस्पतिनिपजला ।।१५।। मंदारपारीजातसतान
कल्पवृक्षहरिचंदन ।। आम्लनिचुलकपीथगहन ।। वटअस्वथबिल्वादि ।।१६।। अर
णभार्याजापासेनि ।। तिचेपवित्रगर्भस्थानि ।। वसिष्टपुत्रजन्मलहो ।। संपाति
अपिजटायु ।।१७।। अदिकद्रुनिरपिदेव ।। सर्वभुतांचापवित्रप्रसव ।। तुजप्रतिनिवे
दिलासर्व ।। व्यासवदलम्यारिति ।।१८।। आलादेयदेउनीआसा ।। यउनिआवलरले
नेरशा ।। मनोवंशावतरप्रकारकेसा ।। श्रवणकरोपाहिजे ।।१९।। पुर्विविप्रचित्तिनामा
दानवराजनृपसत्तम ।। तोनरलोकिपावलाजन्म ।। जरासंदयानामे ।।२०।। हिर
ण्यकश्यपअसुरेश्वर ।। जोदितिचावडिलकुमर ।। तोद्वापारि धरणीधर ।। शुशुपाळ
नामेबोलके ।।२१।। हिरण्याक्षतयाचबंधु ।। यज्ञवराहानयाचियुध्दा ।। तोद्वापारिनर

प्रसिद्धु। दंतवक्रु जाणावा॥ २४॥ प्रल्हादबंधु चोघ सबळ। सल्हाद अनुल्हाद शिबि बा
ष्कळ। तेभुलोकिं नर न्रपाळ। अनुक्रमे चिवके॥ २३॥ शैल्य दु सराध्वस्कलु। ह पर
उपिचौथा भगदत्तु। जो गजपतिसह समर्थु। रणीं कैवारि कौरवा॥ २४॥ प्रल्हाद शि
ष्य नग्नजितु। विष्णुद्रोहि अधर्मनिरतु। तो सुबळनामा मेदिनिनाथु। गांधार
जान्मला॥ २५॥ दैत्यराप धर्म हननि। प्रजा होति जैसिय रणीं। पुत्र राजा जन्म

ला। शकुनि। अपीं गांधारि नरवर्या॥ २६॥ अयैशिर। अश्वशिरा। अयरांकु। गगनमु
र्धा वेगवान यकु। हे पंच दानव न्रप पंचकु। केके राजजन्मला॥ २७॥ केतुमान दान
व बाळि। तो आमी तो जाप्राध्वी तळि। वृषपर्व परिसि त्ग मुक्ति। तो हि दिर्घप्रज्ञ
नरेंदु॥ २८॥ कालनेयि प्रलवन। केसचा पुरदोघ जण। विरदेस अतिदारुणा। पौं
ड्र मस्यक जाणावे॥ ३०॥ राकमीय कलव्य हिरण्यधन्वा। कासीश्वर जयधृत भुरि
श्रवा। कुरराक्षस नरपार्थिवा॥ राजे जाले इहलोकीं॥ ३१॥ वरि गंधर्व श्रेष्ठ।
तो च्यत राष्ट्र नरचरिष्ट। नागायुतबळ बळिष्ट। तो कुरु श्रेष्ठ कुरुश्रेष्ठा॥ ३२॥ कलि
पुरुषाचा पुर्णावतार। तो दुर्योधन कौरवेश्वर। त्रैलोकिंचा मदमत्सर। यकत्र कर
निजो घडिला॥ ३३॥ धर्मद्रोहि विष्णुद्रोहि। मानिको विदुरा म्हणि। ज्याचे कर्व्हे
सर्व महि। भारतिं तपे जालि॥ ३४॥ दुरा समारि कर्कशा। रातभरि संख्ये

जद

बंधु करा ॥ ते पौलस्त्य ब्रह्मराक्षस ॥ मनुष्य देहि अवतरलि ॥ ३५ ॥ चक्षुर्वीर्य
क्षेत्रीवीर्य ॥ गंगानंदन यक्षी आचार्य ॥ प्रतापतेज बारासुर्य ॥ यक त्रिमित्र या
परि ॥ ३६ ॥ द्रोणाचार्य बृहस्पति ॥ राजगुरु जन्मला क्षिति ॥ भुभार नराया
चे अर्थि ॥ साह्य जाला कौरवा ॥ ३७ ॥ रुद्र मणारुद्र देहधारि ॥ कृपाचार्य
अमर शरिरि ॥ गौतुम विर्य कुमर कुमरि ॥ कृप कृपि द्रोणभार्या ॥ ३८ ॥ शिव
रुद्र चीक्रोध प्रतिमा ॥ व्यक्ति सिआलि नरोत्तमा ॥ तो नर लोकि अश्वथामा
सुरागणी सुरस ॥ ३९ ॥ सुर्य विर्य सुर्याशा कर्ण ॥ कांति जय रिपा वला जनन ॥ कु
मारि दशा जन्मला सुलक्षण ॥ न कपिका निनवालिजे ॥ ४० ॥ चरण घे रिपा ॥ दुर्धु
कि ॥ विकृति चे चि शत्रु विशालि ॥ ज्या चे निबद्धे ॥ आल्क्षक कलि कौरवी ॥ ४१ ॥
एवं मागध चेद्य कौरव ॥ अपी प्रथ्वीच बहु पार्थिव ॥ यक्षराक्षस चे घदान
व ॥ अवतरले जाणीजे ॥ ४२ ॥ आता पांडव पक्षीजा पा ॥ देव च आचल ते आपण
ले हिषे का कोण कोणा ॥ अंश कवण कवणा चे ॥ ४३ ॥ यम वरुण पाकशासन ॥ अ
श्वीनौ देव दोघ जण ॥ या चे धर्म भीम अर्जुन ॥ नकुळ सहदेव पांडव ॥ ४४ ॥ ल
कियांश कियरत ॥ देउ मिरवे यचि जन्मले तेथें ॥ धरा कासी पंचादिस ॥ प्र

प्रतापतेजे सतेजसी ॥४५॥ दुर्वासमंत्र मुखा निरुपु कौंतिपासुनी जाले तेजाचे ॥
पंचवीर्य अंशे सुढाळे ॥ कुरुदिपक कुरुकुळी ॥४६॥ कौंतिमाद्रिजठरपात्री उ
जळीला लेजभरलिधारित्री ॥ पंतगप्राय कौरवक्षेत्री ॥ भस्म जालेसपक्ष ॥
॥४७॥ पांचहि दिवटिया भंवा ॥ हाती घेउनी यावें कुरुपाळ ॥ ब्रह्मांडमंडपि
गोंदळ ॥ खेळि नत्तासंतोष ॥४८॥ शांतिपार्वति उभयांश मिळोनी ॥ ज
न्मलि द्रौपदि यज्ञशानि ॥ धृष्टद्युम्न प्रतापतरणी ॥ अग्नीचा अंश जाणा
चे ॥४९॥ प्रतिविंध्यादि पांचै जण ॥ पांचाळीचे पांच नंदन ॥ लहोयिले दे
वगण ॥ निर्धारि सि जाणा ॥५०॥ सुवचनी म चंद्रकुमर ॥ लो अभिमन्यु
महावीर ॥ सुभद्रातनय वंशाधर ॥ पितापरिक्षितिचा ॥५१॥ सिधि
ध्दी सि मुर्तिमंत ॥ कौंतिमाद्रिजा जाणत होता ॥ धर्मानुति विदुक्षता ॥ धर्मा
चला रवळखे ॥५२॥ सात्यकि अणि ससंधा ॥ कृतवर्मा विराट द्रुपद
पांचहि मरुद् पात्र सिध ॥ मनुष्यलोकि आचलरले ॥५३॥ धरुनि
भी म वधाचे दुर ॥ स्त्रीपावा पुरुषवेश ॥ तो जाण जाणति चारा
क्षस ॥ द्रुपदपुत्र सिखंडि ॥५४॥ आदि यादिरव सनातन ॥ मायाति

तरु भचैतन्य ॥ आदिपरमात्मा नारायण ॥ श्रीक्रिस्नरूपउरावतरला ॥ ५५ ॥ कलहिंतभितीगोरा ॥ सर्वसिर्वेत्रजयाचिसत्ता ॥ सा
कारलादेवकायार्थी ॥ यादवकुळिकुळमणि ॥ ५६ ॥ पांडवयादव
कुळाउडि ॥ धरुनिस्वशक्तिसत्ता प्रौढि ॥ कौरवअसुरतरुचापोंड
निर्मुळकेलाभुतळी ॥ ५७ ॥ रमाक्षगवतिरुक्मीणी ॥ सत्यभा
मादेविधरणी ॥ अष्टमासिधर्मेधर्मरखाणी ॥ अष्टनायका
सगुण ॥ ५८ ॥ भनंतशप संकर्षण ॥ तो बळिराम रेवतिर
मण हलायुधप्रलंबघ्न ॥ अच्युताग्रज प्रतापि ॥ ५९ ॥ बहुकाळतपश्च
र्यापरम ॥ करुनिअप्सराइछीनिकाम ॥ क्रिस्नसंगसुरतारम ॥ श्रुद
छाचारेभोगवणे ॥ ६० ॥ सागोपिकागुणवेल्हाळि ॥ लावण्यलतिकाकु
चकुउलि ॥ तमाळनिळतरुवनमाळि ॥ सोळासहस्त्रीवेढीला ॥ ६१ ॥ सन
त्कुमारतो प्रद्युम्न ॥ मदसांब सनकसनंदन ॥ यकवचनआवघजन

इव निलुकयात्स्या ॥ ७४ ॥ रुषिदेवदेत्यदानव ॥ यक्षाचारणगणगंधर्व ॥ नाग
पक्षिपसुप्रसव ॥ निवेदिलालुजप्रति ॥ ७५ ॥ थोडेनबहुत बिंबलेमना ॥ जै
सेकथिलेकुरुनंदना ॥ याचेश्रवणेकळिमळनाश ॥ होयक्षणमात्रे ॥ ७६ ॥
जेजेकामनाजयामुक्षा ॥ धर्मअर्थअथवामोक्षा ॥ श्रवणिंसचितिहो
यप्रत्यक्ष ॥ आमरहजैसाअमृते ॥ ७७ ॥ आदिकविचाआदिगुरु ॥ वि
श्वेराविका विश्वांबरु ॥ भक्तिराकिंनमुक्तेश्वरु ॥ वाक्यपुष्पिअर्चि
ले ॥ ७८ ॥ तेचिविकिंकरश्रोतिया ॥ विनविहस्तजोडुनिया ॥ कथासुप
थिचालावया ॥ सांगातियामजअवे ॥ ७९ ॥ इतिश्रीभारतेआदि
पर्वणी अंशावतारनिरोपणी ॥ राजासंतोषोनिश्रवणी ॥ पुढांप्र
श्नउघवेतु ॥ ८० ॥ इतिश्रीभारतेआदिपर्वणीअंशावतारनिरोपण
नामचतुर्दशाध्यायः श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥ ८ ॥

॥श्री कृष्णप्रसन्न:॥श्रीव्यासदेवेश अनुग्रहिला।वैशंपायना चालुयीभ
रित॥आमच्या पुर्वजा समस्त॥भारत ह्मणति किमर्थ॥१॥हे सांगो नि
सविस्तार॥पौरव अणीवंशधर॥यश किर्ति गुणसागर॥कोणते मा
तपरस विशेष॥कुरुकुळ मुकुटिका मेरु॥भ्रमकरिता राजेश्वर॥वक्का
ळणे ऐकसादर॥नद्याकुसुगंधपदुदा॥२॥कौरववंशी प्रख्यातकि
र्ति॥दुष्यंत राज गुणैकमुर्ति॥श्रेष्ठ भुपाळ चक्रवर्ति॥विर्य शौर्य आ
गळा॥३॥प्राचि प्रतिचि दक्षिणोत्तरा॥चारि दिशा च तु समुद्रा॥आक्र
मुनिया महि द्रा॥सुरेंद्र तैसा भुलोकि॥४॥वपविबस्ला जयदेशि॥कु
मारिखंड छत्रपाति सासि॥म्लेंच्छ मंडळ सिंधु प्रदेशि॥यकवर्ण नरतेथे
॥५॥आष्टदश बावन॥उत्तम मध्यम कनिष्ठ वर्ण॥हीहे वसविते देशसं
पुर्ण॥भोकातोये नर नाथु॥६॥याबगळ यक वर्णी॥सुधुपरिसरि सिंधु
स्थानि॥मंडळि अबीर यवनी॥तेथहि स्वामी ह तयाचे॥७॥जाविजगी
फिरंगि क्रुर॥नाप्तते इंगरेज प्रचुर बार॥काबे कोट कंकमस्वर॥भक्षि

त्रिआपारमांसासि॥थारुमरा॥मरकुरासन॥मुलतानहवशानअवुरुखान
उजबकपठाणतुरुकमान॥वदकसानमेवात॥१०॥घोडमुखथेनुमुख
शुकरमुखरापसमुरव॥वानरमुखरुक्षमुख॥मानवेंहारजयाल॥११॥
केशवसनेरामवसने॥कर्णधारिकर्णवसने॥पादहिनआपानहीन
यकचरणआकाक्षा॥१२॥जळमापारोवनमाणशे॥सिदुरवर्णिचीकार
वेसा॥आनविरहितमेदमांस॥अलिकर्करावाटिनलि॥१३॥तेदेनि
आपुलिआज्ञा॥सननेमिलीपरमज्ञा॥गोवधब्राह्मणदेवआवज्ञा
करियाकरिसुदृढ॥१४॥सवदअवेदेदेशमंडळे॥द्वीपउपद्विपेजाग
के॥वनेपर्वतिनानास्थळे॥यकिआज्ञाचाळलु॥१५॥नवखंडस
सदिपावति॥समार्गविससपर्वति॥आज्ञायशाच्यापिलेजग
ति॥जेविचेवन्यसर्वेश॥१६॥देशविदेशवदावयथे॥नरिसहजस
भार्पवीत॥बोलणआससमयोचित॥राजसुयज्ञप्रसंगे॥१७॥याचि
लागीयाआवसरा॥विशाळेवसुसुवाळोरा॥सावरुनिजवमाधारा

कलाउन्मेशालुरंग॥१८॥आसदुष्यंतराजन्पति॥उभयभुवनी किर्ती जगति॥भोगीला ब्रह्मांडयकांति॥उपमाला जोनिमाघरि॥१९॥रत्न जडितभरितरहि॥रत्नमांदुसारत्नखाणी॥रत्नाकराते हे मेदिनि गुणरत्नपाकिप्रताप॥२०॥हिंसाकारीअधर्मकारि॥आथवा वसिकर कारि॥दुष्यंतराजेआनाचारि॥स्वप्निहिपरिआसेना॥२१॥धर्मनितिचे मे धन॥सउनिसलुष्ट सुरविजन॥स्वकर्मरितिस कल वर्ण॥विहिताचा रिवर्तति॥२२॥रागदरिद्रकाबंधन॥दुःखदुर्भिक्षिआकालमरण॥सर्पव्याघ्र कतस्करजाण॥दुष्यंतराजीआसेना॥२३॥दर्शनमहत्त्वभयकारि॥ब्रा ह्मणनिरंतरसदाचारि॥अहेतदंभसांदिले॥२४॥विषयविष्टलुलुआलि माने॥शरिरवैराग्यसुखदने॥चर्चुनिमिरवतिब्रह्मज्ञान॥जेगासावितेन कृति॥२५॥स्वकालिप्रजन्यवर्षेउदक॥रत्नधान्यसमृद्धिपिक॥पृथ्वी पिकहोमात्रिका॥फळेजैसीश्रीविद्या॥२६॥विष्णुसमानसत्त्वबळि॥ प्रतापतेजसुर्यतेजाळ॥धरातुल्यसहनसीळ॥आक्षोभजेसासागर॥ ॥२७॥पृथ्वीपाळुनिमुद्रावळि॥उपदुसकेऐसासबळ॥दुष्टदंडणीजैसा॥

काव्य॥ चंद्रा तुल्य उपकारि॥ २८॥ निपुणा रसकास्त्रे प्रहरणी॥ आरुढो जापास वैव हनि॥ जेस क्षुपाळ चुडामणी॥ दुर्ग्यं न रा जा मुळी को कि॥ २९॥ समसम द्रि चक्रोट॥ धरा मउकीयकवट॥ तैसे सेनेच संघाट॥ घेउ निवना चालिला ॥३०॥ वाजि वारण रथ पदाति॥ संख्य। करिला न धरे गणिति॥ सेना वसन सर्व जगति॥ पांघुर विलिस मही॥ ३१॥ अनेक रास्त्र धरा चिन्हे॥ अनेक अनेक शब्द॥ गर्जति तपो विचित्र नाद॥ नादावले अंबरा॥ ३२॥ कनक रत्नि निवाळिलि॥ गोपुर गगन भेदि गेलि॥ तेथ वळधानी पाहो ठेलि कामिणि वृंद आवडि॥ ३३॥ चंद्र मंडळिल किंघरम्मी॥ तैसि याश्वेत छत्राचि उभवणी॥ रत्न कळसाचिये किरणी॥ कवि गुरा दाही ओपले॥ ॥३४॥ क्षीरसमुद्रि तरंग उठति॥ तैसे दिव्य चामरे चळति॥ विर श्री यश राजा न्टपति॥ लक्ष्मी चंद्र आवगमे॥ ३५॥ सनसहित सेनाथा॥ नगर गणि जाव मिरवत॥ देखोनी रिराता नुरात॥ मांडिया गपुरि वळघल्या॥ ३६॥ कनक कुसम कनकनाटि॥ आवडि धरा निकर संपुटि॥ आयको कुनिरा जमुकुटि पुष्पांजुळि सा डिति॥ ३७॥ चकि आवलोकिता नयन॥ क्षणोति निवाळे अतः

कर्णा।यकल्पपातिपंचबाणो।चित्तकुरंगविधिला।।३८।।तारुण्यलावण्य
ऐश्वर्यवंतु।गुणऔदार्यनरसमर्थु।देखोनिस्त्रियांचामनोरथु।पतंग
हायेभ्रमावया।।३९।।यकिश्रवितिनिजमानसि।समर्थाघरिहोइजेदासि।
ग्रहणिहोउनिदरिद्रासी।राहटिकरणेजकोते।।४०।।यकिघराचारइच्छाक
रि।स्वपातिपुजुनीशंकरगौरि।असेभ्रतारस्वकियजन्मांतरि।धावोनि
इच्छाभोमागिजा।।४१।।येकिपवित्रपतिव्रता।इश्वरमानिस्वकियभर्ता।ऐश्व
र्येसिअमरनाथा।।भणमन्नायेआवमणीतिा।४२।।असोहेसंसारीकजना
सप्रियेविषयाचिवासना।।विशेषेदेखलाअंतःकरणा।।अभिकासआसेस
वंति।।४३।।तैसीचपुरुषाचेमनो।सुंदरपरस्त्रीआवलोकुन।देखतांक्षि
णीलक्षणीं।।मनंभोगुनीजाणिजे।।४४।।मातांकन्याअथवाभगिनि
याचमैथुनअंतःकरणी।।नस्मरेऐसाकोणी।।लोहि विभीचारमान।।
।।४५।।मननुपजउयाअभिलासु।।तोचिजाणावाइश्वरपुरुषु।पुरुषाहुनि
आगळाइश्वुगनमनीयपतिव्रता।।४६।।यापरिआवलोकितारावो।।ना
रिसीगमलाऐसाभावो।।नारिदर्शनिपुरुषसमुदावो।।विकारअविचा
रपावले।।४७।।साक्षासमुद्रजळसमुद्र।।वाघेगजारि न्टपनरेंद्र।।न

गरटाकुनि चालिला इंद्र ।। नंदन वनापे जैसा ।।४८।। आसिर्वाद घेउन द्विजा ।।
माथा निरवि सहित प्रजा ।। जन प्रदेश लंघोनि पेजा ।। महा विज निप्रवेशे
।।४९।। देखे प्रचंड महा गिरि ।। विशाळ पर्वता बियादरि ।। जळे तुंबळे लिसरिता
सरि ।। समुद्रातुल्य आगाधे ।।५०।। तेथ अरन्नि चाळाबेल ।। कपिथ कदंब
मधु पिंपळ ।। सीरीश पाल्मरा विशाळ ।। न्यग्रोध वृक्ष वाढिनले ।।५१।। ला
ळ हिताळ शाळ सरळे मंदार कांचन तमाळ निळे ।। पिचुंबद देवदार धवळे ।।
अर्जुन वृक्ष अपार ।।५२।। खदिर कंटकि हिंवर सांदोडे ।। हिरडे हिंगण व्याह
डे कुडे ।। आविट पाच्छ काकडे ।। करंज पांगारे चोमेरि ।।५३।। वेणु कळका
३ चिया जाळि ।। औदुंबर फळि सुरंग गंध फाळि ।। नेपति लारुणी घोसा ३
ळि ।। स्वरणी पायटि पिंपरि ।।५४।। अर्क निंब डिंग सदा मस्त ।। मोउला स
शालिदु ग धश्र वर्त्तत जैसा प्रपंच विवेक रहित ।। सुखवोळति विषया
चा ।।५५।। बदरि मातकि आवाळि ।। शाल्मलि कर्वदि जांबुळि ।। चारि
चीळ तकि गुगुळ ।। शामी वेह कळि तिथीणीका ।।५६।। ऐसी वृक्षा चि
आचार ।। दाट्य आगलि घनदाट ।। माजि निर्झरांचे काच पाट ।। सैरा वैरा
धावति ।।५७।। मस्तके उंच ळोनी रीन कार ।। छायरक्षीता अंधकार
माजि श्वापद गण अपार ।। सुर याउ ले सुवस्ती ।।५८।। हरिणाकरि

पासिकरादिक ॥ चित्त चिंतकेलरसनरक ॥ रक्षरा हिगव भा[illegible] ॥ अर
प्यसोइमाजले ॥ ५०॥ रवकु म्हृग कस्तुरि म्हृग गो[illegible] गुके अनेकसे ॥
आप्रसिध कोणसांगे ॥ वृकजंबुकरासादि ॥ ५१ ॥ तुलनभांग्येपातलेमश ॥
श्रीमदेवाकुथ्यादाविश्रेष्ठ ॥ तेसरंगलरंगचेष्ट ॥ मर्कटकरितिबहुवृक्षी
॥ ५२ ॥ प्रस्थानभेरिचिगर्जने ॥ विरमुखिचेअस्फोटणे ॥ तउकयंत्रफुल्ले
तेपो ॥ माहावनचरासुजाले ॥ ५३ ॥ कांडलदेखोनिचौफरि ॥ मुसांडिमारि
तिराजभारि ॥ तेवधिजतिरास्त्रधारि ॥ माहाविरिअसंख्या ॥ ५४ ॥ म्हृगमा
रुनिआसरव्यात ॥ पशुनिभजितिअभजित ॥ पारधिरवेलजालेश्री
त ॥ तेविश्रांतिपावले ॥ ५५ ॥ पारधिरवेलाचया ॥ विहावा ॥ स्वापदसाधावया
चिपावा ॥ सरकच बकाचलाघव ॥ लपणिपक्षिधावति ॥ ५६ ॥ उठतिकु
लिअपी पलि ॥ गोरिगायनदिपकादिसि ॥ चाटपारधिरवेलपारति ॥ कापने
डिरक्षणाध्य ॥ ऐसाकिराल विद्यकराव ॥ रायरवेलोनिम्हृगयारवेल ॥ फलकर
नियामाहासुकाल ॥ सकलह्वातोषविले ॥ ५७ ॥ आवलोकुनीतेवन ॥ राजा
पुडारिगमन ॥ तवदेखिलेकश्यपारंण्य ॥ सिधसाधाकिवसयिले ॥ ५८ ॥ तथेसं

२

२नपारिजात।देववृक्षपुष्पीत।तुळसिवनसुगंधीत।दवनेवनेमघमधीत॥७६॥
सरितासरोवरिंजळें।पद्मगर्भसुसिळळें।राताम्बळेनिळाम्बळे।सीतोसकेकन
काळे॥७७॥तेथहंसकारंडक।चेकोरसारसाचक्रवाक।करिंद्रकरिणीकरिशा
का।स्वइच्छाकरितिजळक्रीडा॥७८॥मयोरगर्जतिविकारे।कोकिळागातिपंचम
स्वरे।षद्पदवाल्हितिझुंकारे।अणीकपोलकुजंति॥७९॥सदासर्वदापुष्पीफळी
विनयभजेसाकुळीनऐश्वर्यकाळी।वृक्षतरुविनतरुपुष्पीफळी॥विनयभजे
सर्वीत्ते॥८०॥चेहुचेदिचिपारायणे।अनेकशास्त्रिअध्यायने।रायपरिसोनि
अलंकर्णी।पापक्षयोभाविला॥८१॥नदिमाजीपवित्रजीवनि।प्रवहाजैसि
देवसरणी।तरंगलिंगसफेणसुमनि।सुपुजीलसुशोभीत॥८२॥तिर्थालयेकि
असंख्याल।स्वेतद्वीतप्रतिमानप्रमुख।श्रोतस्मार्तविद्यानिपुण।अनुष्टानेंत
पश्वी॥८३॥याजकीयोजुनीहोमद्रव्य।होमकुंडिप्रदिसअनळा।हविष्यहवि
तारविमंडळा।धुम्रगंधदिलहविगंधा॥८४॥द्वादशारिसपंचाग्नीधुम्रपानी।भी
स्मिरविचेक्रविलोकनें।वर्षाकाळीवृष्टीसाहणे।शिलकाळिशय्या॥८५॥येक
उभयेकचरणीं॥येकवालांबुपणासिनी।औसियालपाधनाचियाश्रेणी।अ
संख्यांतदेखिले॥८६॥समकोटिअनेकमंत्री।अनेकमंत्री।सागमचतुः

४ ४

षष्टितंत्रे॥ मंत्रोपासकपुजिति॥८०॥ यकमौनियकचरपी॥ यकसाका
रमुर्त्तिध्या नि॥ यकआत्मानुसंधानि॥ सोहस्मीयाबोध॥८१॥ सामि
गद्वलक्षणे॥ पाटकरितिवेदपथ्यो॥ सामकरितिसामगायने॥ अति
सुरसलेराग॥८२॥ थालपरिसोनि भविष्यकार॥ आथर्वणिशानथोर॥ स्थापट
पाचीकिरकर॥ कंटशोषणवाङगे॥८३॥ चार्वाकिलण लिसरीराला॥ यक
प्रयक्ष प्रमाणप्रतिम॥ स्वर्गनर्क आरयश्राम॥ श्रमनरकभोगवि॥८४॥
ओकोनियानरेश्वर॥ मुरारी भटप्रभाकर॥ मीमांसक म्हणालि पामर॥ कर्म
मुख्य आचरनि॥८५॥ लवअवेरो नव्यायीक॥ सहित उपासक वयाशिक॥
म्हणालि कर्ता ईश्वर देख॥ कारण म्हु तजगात॥८६॥ सांख्य म्हणालि सांडमुक्ती
आदिकारणपुरुषप्रकृति॥ यापासावजगउसति॥ शैवआगम संमत॥८७॥
हासोनियावेदांति॥ अवघअंधकेसिंधाति॥ सर्व ब्रह्म नोबिंबजिवेश्वरवाद॥ अं
न्वयव्यतिरेकाचेरबिद॥ अनुगतव्यावृत्तसंकेत॥८८॥ परिणामवादविवर्तवा
द॥ बिंबप्रतिबिंब जिवेश्वरवाद॥ अन्वयव्यतिरेकाचेरबिद॥ अनुगतव्या
वृत्तसंकेत॥८९॥ मुळज्ञान तुळज्ञान॥ यकानेक जिवलक्षण॥ अनेक
विधापक्षापक्षहरणे॥ ब्रह्म पासहमुच्यते॥९०॥ सर्व सहित सर्व रहित॥

श्री सिद्धेश्वर प्रभु विजयग्रंथ॥ १८०

व्यापकाचाळक साक्षात्‌ता। व्याप्तिव्यासंगउपायालिला।अह्नेवत्तेजाणलि॥ ॥५॥ मनोजयेमोक्षकेवळ। निश्चय मानु निपाला। आष्टांगयोगाभ्यास प्रबळ॥ म्हणालि समाधिसाधने॥५॥ ऐसनानापरिच्चवादे॥रायपरि सानि महाविनोद। सांगुनीयाभेदाभेद। यकभावसमस्ता॥५॥ साष्टांग करुनियानमन॥ राहुनीयेनाप्रधान॥ निसंगयेकाकीआपण॥ कश्य पारण्यापातला॥५॥ आवलोकु निकश्यपाश्रमा॥अंतरेपाहेन्रपसत्तमा॥ तवकण्वरुषिचेआश्रमा॥ अतिरमणीकदेखिला॥५॥ आदरेयउनियांनि कटि॥ अंतरपाहेपर्णकुटि॥ मनुष्यविणसर्वश्रृष्टी॥ग्रह सामोग्रिदि सताहे॥५॥ मगराजोनिनराधिश॥ म्हणेयेआश्रमिकोणआसे॥ हेपरी सोनिरंदिशवेष॥ लावण्यलतिकासाजीरि॥५॥ कनककळिकासौदा मिनि॥ किचंद्रकळातनुधारणी॥सुवर्णकेतकिपत्रवर्णी॥सुगंधखाणी हरिणाक्षी॥५॥ रुपयंवनच्यालुर्यभरिला॥ बाहेरिपातलिमुनेस्वरदु हिता॥ असादरेधरत्रीनाथा॥ पवित्रासनबोले॥५॥ स्वागतपुसोनिया चयनि॥ अर्घ्यपाद्यविधिपुजनि॥ राजालोपउनी वद्रुमाभि॥ कुराक

क्रियारीकुमारच्छ्या ॥९०॥ दर्शनीस्वानंद जाल्यानयना । नामस्मरणा करावे श्रवणा । परिचयज्ञाने अंतःकरणा । आप्णपावाभेरचजो ॥ १ ॥ ऐ कोनिचातुर्या किशोरी । राजा चमत्कारला पोटी । ह्मणे हे वयेअति धाकुटी । विचारचक्ष दिसताहे ॥ २ ॥ मगहणे वासुलक्षणे । गुणी विम ळेक मळक्षणे । तुझे वचन मासक्षणे । श्रमहि सर्व पाहरला ॥ ३ ॥ मे थुळनरेंद्र मीजगति । दुर्घ्यंत राजाचक्रवर्ति । ऐकिल्या आसेल तरी हे मुर्ति । बोळखवदाहिसुजाणे ॥ ४ ॥ कण्वरुषिचे दर्शन । इच्छुनी यथेम मागमन । केव्हा यश्लबालवचन । विलोकिंबे अवीहेबे ॥ ५ ॥ शकुंतळा ह्मणे नृपति । ममपिता विवेकमुर्ति । वनफळे घेउनि सिघ्रगति । आ लाय रच्छाश्रमा ॥ ६ ॥ यालागि नरेंद्र तुह्मापी । क्षण येक बैसावेस्व स्थानी । इच्छीत कामरुषि दर्शनी । पुर्णहोइलनिर्धारि ॥ ७ ॥ येकाल दे खोनि निर्मळ । राजहृदयि महाप्रबळ । कामाग्निवाचे फळ्ळोळ । हेच्छा वतिअतिमाने ॥ ८ ॥ राज्ञा पुसे लावण्य रासी । उर्ध्वरेता कण्वरुषि । यासी तु कन्या जालीसी कैसि । हे मज कळलेपाहिजे ॥ ९ ॥ भुजंग

वेणी धरा चतुरा ॥ म्हणोनि राजपरमेश्वरा ॥ पुर्वियेकतपश्वी धरातळि

दर्शना पातलें ॥ १७ ॥ ते पोपुसिलें ऐसियाऐस ॥ साहित्तिकष्वास

गीतलें जैसे ॥ ते मी सांगेन सावकाश ॥ श्रवण केलें पाहिजे ॥ ११ ॥ पु

र्वी गाधिजमुनिवर्य ॥ खडतर करितातपश्चर्य ॥ देखोनि सांडिलें धै

र्य ॥ देवेंद्रें कापेंच ॥ चळ ॥ १४ ॥ म्हणे इंद्रपदा चिचाडा ॥ धरूनि वि

श्वामित्र वाढा ॥ तपश्चर्य अतिप्रवळ ॥ मांडिलें सनिधारि ॥ १२ ॥

यासि उपवा करावा कवण ॥ तपोत पाचसुकृतनधन ॥ हारऊनी हा ब्रा

म्हण ॥ दीन होय सर्वेश्वर ॥ १३ ॥ ते वे कि अप्सरा मा जी श्रेष्ठ ॥ मेनि

का पाचारूनि निकट ॥ म्हणे हें माझें संकट ॥ वारणें जैसें करावे

॥ १५ ॥ तुवा जावोनि तपोधन ॥ कौशीकातें चिचाहर्शन ॥ विघ्न करावें जे वि

कराना ॥ दुरुक्ति नाहिं क्षणार्ध ॥ १६ ॥ माझा ज्ञानिया चिज्ञानकळा ॥ अशेष कीजे

केलि सर्वविकळा ॥ तवि तें पिनियातपोबळा ॥ निर्फळ करिसकामे ॥ १७ ॥ अधर

पान अंबुचदने ॥ गाढालिंगण मेळवणा ॥ आसक्ति बाळा गाउनि मनगवत्याकि

जे द्विजधेनु ॥ १८ ॥ तवि भगमपात्र पात्र वोडा ॥ नेमत्रा हाटिलिंगस्तन ॥ विर्यदो

हनकरुनिक्षीण॥लपश्चर्येनागविा॥४॥पयोधरपें उंचीयाआशा॥विश्वामि
त्रकरुनिहैसा॥पाटिधावरंकालअसा॥विनोददावित्रामुले॥४॥मेनि
काह्मणेजिआमरोत्तमा॥प्रतिसृष्टिरचिवाआपारब्रह्मा॥याचतपश्चर्येतु चे
ह्मा॥क्षयसर्वदाआपार॥४॥वसीष्ठपुत्रयकरातगुणि॥जिणेवसविले
क्रलात्तसदनि॥क्षीत्रिविर्यजुब्राह्मणपणी॥लपोबळेनिरवलु॥४॥जेणेशौ
चार्थभरलिउदकि॥नदिकौशिकिनिर्मिलिलोकि॥श्रवणापासोनिकौतु
कि॥नक्षत्रमाळजयाचि॥४॥दुर्भिक्षकाळिमातंगयाग॥जेसंपादिला
सांग॥तुवाचित्राउनियावेग॥अमृलपानवोपिले॥४॥ज्याच्याक्रोधाचि
दिप्ति॥पालाळ्सेदुपाहेक्षिति॥मरुउन्मळेआपापति॥सल्लजकुक्षिज्याभे
पो॥४॥कोपेप्रळयपंचानन॥चंद्रनिप्रयक्षहुनारान॥चंद्रसुर्यतेसनय
न॥काळजिव्हातपस्वि॥४॥यमसोममहर्षीसाध्य॥वालखिल्लआदि
आज्ञाहिसिध॥जयासन्मुखप्रतिशब्द॥भयेकोपानदेववे॥४॥क्षोभ
विलातयाचिप्रतिमा॥स्वर्गसिहिलब्रह्मातुह्मा॥भस्मकरीलयथेभ्रमा॥
संशयायाचानधरणे॥४॥ सुरेंद्रह्मणेम्हंगडोळसे॥बोलसीतूं तुकेरउक

आसे ॥ तथापि आमुचा कार्यार्थियां ॥ आवश्य गेलें पाहिजे ॥ २९ ॥ म्हणौनी
जे तुझिया संगि ॥ साह्य देल सकामलांगि ॥ तुज आवलोकनें भंगि ॥ ने
मजाइल रूषिचा ॥ ३० ॥ काहिं किरादन मानि चित्ति ॥ आपपाठोउनिया
प्रार्थि ॥ ऐसि साधुनदयिन युक्ति ॥ प्रपावसंग सुजाणो ॥ ३१ ॥ आज्ञा श्रं
कासांडुनिया मना ॥ गनव्य करावें ममाज्ञा ॥ मेनिका आलि तपोवना ॥
साळंकार सुवस्त्रि ॥ ३२ ॥ विश्वामित्रासि करनि नमन ॥ याचेच दष्टि
पुढें जाण ॥ क्रिडा कौतुक सुनर्तन ॥ दाविल जाले विनोदें ॥ ३३ ॥ वस्त्र
टेउनि सरोवर पाळि ॥ स्नान सारूनि कासार जळि ॥ निर्विवस्त्र आवस्था
जळि ॥ यनारासां कविलोकि ॥ ३४ ॥ गंध वायोनें विनोदलें ये ॥ वस्त्र
उडउनि नेलें पत्तेते ॥ यरिधाचे निर्धारिहाते ॥ तवनी वेगिना टापे ॥ ३५ ॥
शालोपछ इंद्रवर ॥ आच्छादिजे विसकुमारि ॥ कामकरे कामगार
कयक्षु धावे नग्नांगि ॥ ३६ ॥ यागतपाचियपुण्यकोटि ॥ मोख ध्याचया
लागलें पाटि ॥ आमोख्यनें रिसकम साटि ॥ लपोनि मुरी स्वहस्तु ॥ ३७ ॥

८

धरुधावेचपजे पांगि ।। सह्जअंगसाकिवेगि ।मुखेनिंदितह्म
णेआंगि ।पडेरपवनापापिष्टा ।।३५।। नाभितकिंचिरोमरेखा ।। सि
द्धमध्यअलिनेटका ।देखतारुबिचियाविवेका ।। भ्रष्टकेलेमन्मथ
।।३५।। सुवर्णगोकर्णीरुभ्रतेन ।वरिसांडिलिसा किनिबिज ।तेसे
रोमांकुरालसहज ।दाउनिलोपिलगबगा ।।३६।। देखलक्षणीवज्र
घाल ।मन्मथेताडिलातथे ।।लपाघेयचिपर्वत ।। चूर्णजालेक्षपाधी ।
।।३७।। संगलानेमाजलडाग ।। नकळलाउडालाकोपिनकाम ।।मेनिका
चंदनलरुचिआंग ।भुजभुजंगिविह्रिले ।।३८।। गोरजानुपयोधरकटि
आवलोकिलाउघाउटि ।धैर्यपकाळेबारावादि ।नाहिंचजालाविचारा
चारा ।।३९।। धावोनिप्रमेदेचाकंटि ।बाहुपंजरिघालिमिटि ।सुरलसंगी
पउलीगाठि ।जेवैराग्यसुटेना ।।४०।। चुबनआलींगमेथुन ।मथघरगुं
तलेमन ।करिलोकायमितोकोण ।हेजाउवणआसेना ।।४१।।
भोगापासिगिलाउलावेळ ।नेपाक्रमलाबहुतकाळ ।कामनादिचक
छोह ।पुरनावेकवोहटला ।।४२।। चिरकाळभोगेपापतविस्मीती ।तप

श्चर्य निघाला पुढती ॥ सुरकार्य साधुनि सुरयुवती ॥ जाती जाहाली सुरस
दना ॥ ७७ ॥ रुषिचें विर्य आमोघ करी ॥ दिव्यगर्भ कन्याकारी ॥ हिमवंत
गिरिचा पाठारी ॥ सांडुनि गेलि आप्सरा ॥ ७८ ॥ वनि यक ते सुंदर बाळ ॥ प
डिले देखोनि पक्षि सकळ ॥ पक्षमट पात्त कि श्ने हाळ ॥ रक्षिले जाले साक्षे
पे ॥ ७९ ॥ चुंचुपात्रें मधु सुटाळि ॥ मुखि वोपिति क्षुद्या काळी ॥ स्वापदे नेउं
नेदिति जवळि ॥ झडपा निनि तिपरोते ॥ १८० ॥ आकस्मात तेणे पंथे ॥ क
ण्व रुषि पातला तेथें ॥ बाळक रक्षिति शंकुंते ॥ देखोनि करि आश्चर्य
॥ ८१ ॥ उचलोनि निघे संगा घेतले ॥ ग्रहा आणुनि प्रतिपाळीले ॥ या लागि
पितयाचे न बाळ ॥ कथिले न्याय यथार्थी ॥ ८२ ॥ शंकुंति रक्षिली वळ्का
या लागि नाव शंकुंतळा ॥ हा काळ परियेल भुपाळा ॥ पाळ पाके ले श्ने हा
ळा ॥ ८३ ॥ विर्यदाने उपजविला ॥ आन्न दाने प्रतिपाळिला ॥ संकटि प्रा
ण रक्षीता ॥ तिघ पिते बोलीजती ॥ ८४ ॥ पुसिल्या प्रश्नाचे उत्तर ॥ तु
ज प्रति सांगितले साचार ॥ कथा ऐके नीरा जेश्वर ॥ अति संतुष्ट मा
नसी ॥ ८५ ॥ ह्म पाहे मे निकन्ये उदरी ॥ जन्मला रुषेश्वर विर्य करी ॥

अनर्थादि व्यासें निर्धारी॥ मनुष्यलोकि दुर्लभा॥ ४६॥ आमुचा गाइदे जनि भावो॥ भार्या होयतो उपावो॥ केला पाहिजे हलपो निरावो॥ बोलतां जाला साक्षेपो॥ ५७॥ ग्रंथ ग्रहणि रससागर॥ भारत साहित्य रत्नाकर॥ गुणग्राहिक श्रोते चतुर॥ अप्रादर परिसतु॥ ५८॥ आदिपर्व माजि गहन॥ शांकुतलेचे चि मकाख्यान॥ भक्तीने मुकेश्वराचे वदन॥ वदलें तें परिसावें॥ ५९॥
इति श्री महाभारते आदिपर्व शांकुतलाख्याने पंचदशो ध्यायः॥ १५॥
०॥ ५ ०॥ ५ ०॥ ५ ०॥ ५ ०॥ ५ ०॥ ५ ०॥ ५ ०॥ ५ ०॥ ०

॥ आदिपर्व पञ्चदशाध्याय सपुंर्णमस्तु ॥

॥श्रीरमाकांताय नमः॥दुष्यंत म्हणे वो सुंदरि॥होइ माझि प्राणेश्वरि॥लज्या शंका सांडु निदुरि॥भोगम्हो गिसाचिये॥१॥आयोग्य वसतु जकानन्ति॥राजमंदिरि ग्रहु स्वामीणी॥होउ निन ना वस्त्राभरणी॥देह श्रृंगारि म्हणे॥२॥नानापतन जेकाळी॥लग्न से मनेमोक्षमार्गि॥स्वइच्छा ते विद्यावेमकी॥सौख्य देइ दुर्लभा॥३॥समुद्रकंकाणा कित प्रश्विजमति॥स्वामी णील अबत्त प्रिति॥सन्नाकंकणलु झेहाति॥आजि पासुनि बांधले॥४॥आश्विकहा माजियथे॥गंधर्व बोलति श्रेष्ट ग्रंथे॥तेणे गंधर्वलग्न वरिता॥अंक सनिआरुढ॥५॥चारुहास्यणि पंकजानना॥बोलिवे स्वरि म्रुगनयना॥म्हणे राजया विचक्षणा॥विहितधर्म बोलसि॥६॥कन्यारहलव निश्चिति॥दिधला पाहिजे पुरुषहाति॥विशाम असा भुपति॥परमदेव पाविजे॥७॥तु सियाअसे माझिया चित्ति॥वर्तला हे अघेत प्रिति॥परतु वडिला न पाला ब्रिति॥विधिवार धर्मि स्रागनसो॥८॥

यालागिनाविकधरिधीर। आश्रमायश्लरुषेश्वर। मान्येकरनिआ
सादर। मजवोपिललुजहाति॥४॥ नरेंद्रलयोवासुजाणी॥वि
चारेआपेआपधणि। आदिमध्यआवसानि। संगेआपआ
प्या॥५॥ विवेकआपआपणामित्र। कुबुधिआपआपणाशत्रु॥
आपलाअपपास्वतंत्रु॥ शिष्यहिआपआपणा॥११॥ यालागि
आपलादेहदान॥ समर्थआपुलामना॥ मासनिसंगेअर्थनाना
वेळणेतुजहालि॥ आदृक्सोगमुतिमंत॥ सांडणेकरनानि
सानिंद्य॥ हेममयीमाणीकयमंदिराल। रत्नमंचकिसुखशय्या।
॥२॥ मंदहास्यनिकुंदवने॥ कर्पुररंभागर्भजघने॥ फलहारव
ल्कवसने॥ लुजआयोग्यसर्वथा॥३॥ शिर्षपुष्पतुल्यसकुमा
र॥ कनकचंपकदामगौर॥ सिकलरुकुसुमनाशाकार॥ भरि
सुपार्णीसाजिर॥४॥ गंधर्विआप्सरामिश्रकेशी॥ रंभातिको
त्तमाउर्वासि॥ तुजलावंण्यमणिराससि॥ लुकिलागुंजलेसिं

1   1

या॥१५॥ सुकेसि चावीं मिसुश्रोणि॥ कंबुग्रिवा पिनसुस्तनि॥ तुम्हि-
या जे सिचोद्दासुव नि॥ आंगना आननसे॥१७॥ सस विंबुंधर कुव
र्ण॥ उसघानै किसा हिरन्याने॥ लक्षिताणु क्षिसुभ लक्षणा॥ मन
कथकपरलेना॥१८॥ पंच बाणाह हृदयभेद॥ कलासा विधिजाणधा॥
बिंबाधरा माजिसुस्वाद॥ कुचाग्र कैपरोने॥१९॥ यापरिप्रबळावि
रहज्वर॥ हरु निकरिसु स्वोपचार्यर॥ जानुउक्लासहि रंभोरु॥ स्पर्शी
वयाभाविक॥२०॥ मदेंत स्वासोर का चिबर्हि॥ धरिस्यांगसुति
सपुष्टि॥ रत निपलक्षकाष्टहि॥ मोला गकैतेनोकि॥२१॥ आष्टवि
वाहाचे नाम॥ सांगेन अैक अनुक्रम॥ विधिने ब्रह्मनेम॥ चतुव
र्णविभागे॥२२॥ ब्रह्मविवहा देवविवहा॥ तिसरा वोल्लिजे कषि
विवहा॥ चोथा प्रज्यापत्यविवहा॥ असुरविवहा पाचवा॥२३॥
गंधर्व विवहा लो सहमा॥ राक्षस विवहा तो सप्तम॥ पिशाच विव
हा लो आष्टम॥ ज्ञानकेले शास्त्रोक्ति॥२४॥ मनुस्वायंभुवाचे वचन

गु

ब्रह्मादिप्रजापत्यगणाचा। च्यारिहि वरावे ब्राह्मणा। अग्रवर्ण निगमाचे गरखा।
ब्रह्मादि गांधर्व परियंत। साहि क्षेत्र वर्णा उचित। हो का राक्षस हि विहित
श्र यंवर वर्णाभेद। २६। वैश्य शुद्र दोघ जणा। असुर येक ने मिलाजाणा।
पुरुषा लोचि विहिवर्णा। आगा हा ऐसे जाणिजे। २७। सोलवा सांडणे
पाक करणा। राक्षस क्षीन लग्न जोणा। तैसे सुलभ गांधर्व लग्न। सुखभो
गणे व काकि। २८। तपो गंधर्व विधिने वरिते। पुरविआ र्थियाचे मनो
रथा। मज समर्थ लागि उचित। दआ दोग आपुले। २९। फडिल ज्यो
चि कंचुकि। हृदये वोपि मज हस्तकि। कलना द्रष्टि तिच्या अनेकि। निरि
या करि पैरोसा। ३०। ऐसे बोलता धरारमणा। संकुल काहो स्यवदना।
लपो आता येक वचन। नेमा चि आवधारि। ३१। तुझे ने विर्य मा सा
पोटि। पुत्र जन्मले तो त्रिसृष्टि। राज्यधर तुसा पाटि। पदाधिकारि
ता कारणे। ३२। ऐसियाने भेदि सिल भाके। लरि घडणार घडो सुखे।
हे ऐको नि अयत हरिखे। राजा सर्व पुढारा। ३३। हस्तधरा निस्य
हस्तके। दता जाला विवार भाके। तुझा पुत्र निज निष्टके। राज्य

सांनिध्यवराजा॥७१॥हमाझ्प्रतिज्ञावचन॥अंगुनसकेचतुराननं॥प
रिसा निआगमलाचे वचन॥याग्गुनिश्चावेअनुसरलि॥७५॥सोडुनि
याहृदयग्रंथि॥तनुमनदिधलेवल्लभाहाति॥पुढेवर्तले लेयुक्ति
बोलताचतुरियारिले॥७६॥पुरत्या मनोरथाच्याकोडि॥सर्वसौख्य
पावल्याजोडि॥आनंदलुकावयापडिपाडि॥स्वर्गला हिटेंगण॥७७॥
यापरियमानिलाभु॥परिडमगलारुबिभयाचाक्षोभु॥दद्वापरा
धेगोलमक्षोभु॥लैसन्यधडेरनथटार॥७८॥भ्रांतिपडले मन्मथेभ्रम
दाभ्रतारलि त्यार्थ॥अनुचितजा पा वत्स्यातखिले॥माहआनर्थ
दिसताहे॥७९॥आतायनुनिलिघ्रगति॥ गमनकरपोहे त्वियुक्ती॥
ऐसे विचारुनिन्रपति॥भार्याप्रतिआनुवादे॥८०॥आवडीदेउनिजा
लिंगण॥ह्मणेआता चितुजलगुन॥छत्रचामर सिबिकायान॥दासि
दाससमस्त॥८१॥प्रधान चातुरंग सेना॥रथसुहृद विषरजना॥सुख
पाठविलो स्वरजाना॥तुजन्यावयासत्र्वमे॥८२॥ऐसबोलुनीआता
जाला॥दके सिनगरप्रवेशला॥उर्ठीनं तरेआला॥कण्वलब्धिआश्र
म॥८३॥पुरुषसंनिशांकान्वील॥बाहेरिनयतसाभरिलगहदेसा।

नि सर्वज्ञ नाथ ।। जापाला जाला मानसि ।। ४३ ।। जा मालकन्या मैथुनिराह
टि ।। रुपिरे खिलेशानद हि ।। परमसंलोषमानुश्टाहि ।। अश्वासिलेकु
मरिते ।। ४४ ।। मणेमाझे निजा मजे ।। बाहिर यरसांउ निल्लाजे ।। कर्तव्य हो
तले सहजे ।। सिध्दिनेले प्रारब्धे ।। ४५ ।। जे जाले ते बहुलवरचे ।। मान्य के
ले मासनि जिवे ।। कशि न मिळे ते धर्मावे ।। पुर्वदेव जोडले ।। ४६ ।। कृपा
अनुग्ना हा वरप्रसादे ।। गौरवि आ शिर्वादि शब्दे ।। रुषिबोले परम आल्हा
दे ।। चिर जिवित लवश्तली ।। ४७ ।। ऐको निपिसियाचि आश्रयवाणी ।।
कन्याय उनिलागे चरणी ।। अथे म्या वरिलगुणि ।। तो ता मान्य करावा ।।
।। ४८ ।। से चिसुरश्रासा रिखे ।। दोघे आसो अक्षयसुरवे ।। चिंत्पुरा तिस्व
मान तुके ।। ऐसपु अनाथसि ।। ५० ।। उरासोलो चि थत निदिवस ।। चढला
वाढ ना मासोमास ।। शुक्लपक्षील राधिश ।। वृधि पावे पै जैसा ।। ५१ ।। व
र्थयकहो लर पुर्णी ।। पाव ताजा राजनना ।। धरामंडळि दैदिप्यमान ।। अ
पारभानु पै जैसा ।। ५२ ।। कि प्रत्यक्ष दिसान काचि मुर्ति ।। रुपोदार्य गुण
संपत्ति ।। शाकुंतळय सोदोघ्यं ति ।। भरत नाम जन्मला ।। ५३ ।। नुलक्ष
णी कराजकुमर ।। दरयो निकपवरुवे श्वर ।। जातकर्मा दि संस्कार ।। के

३

रिलाजाले आदरे ॥ ७७ ॥ चक्रांकित सुलक्षण दिसे ॥ विशाळ भाळ शुभ्र दंत ॥ आजानुबाहु सुशोभित ॥ वृषभ भाळाक्ष नेत्रका ॥ ७८ ॥ कुमार सुकुमार देवगर्भ सम ॥ कीर्ति प्रसाद चिजेरत्नं भ ॥ नाना सौंदर्य लक्षणे कोंभ ॥ धराम डळि डुगवला ॥ ७९ ॥ सिंहाक्री ललिताचा माया गंध मुग्धविर्जक जघन ॥ ऊर्ध्वरेखा मंडित चरण ॥ लक्ष्मी विलसे साजिरे ॥ ८० ॥ सामुद्रिक लक्षी लावण्य दिसे ॥ परमल्हाद लपिना पोटी ॥ अहळ जेते हपाबोगी ॥ कि ॥ सविल्या चिजेकप ॥ ८१ ॥ सागर मेखळा कितप्राधि ॥ भाग्य भोगील प्रलापर वि ॥ पौरव जराजयाचे सिनावि ॥ भार नजे से पट्ट बिलि ॥ ८२ ॥ आश्रम वर्ष भरता गुणी ॥ क्रिडा कौतुके विचरे वनी ॥ व्याघ्र सिंह वराह श्रेणी ॥ मंत्र कुंजर झी सादि ॥ ८३ ॥ धरी निआणि आश्रमी ॥ बांधोनि घालि यक द्रुमी ॥ तया वरियळ घोनी पराक्रमी ॥ सैरावेरा धावतु ॥ ८४ ॥ क्रूर श्वापदाचे गण ॥ बळे करिता चरमन ॥ याला गिटे विल्ले आभिधान ॥ सर्वदमन ब्राह्मणी ॥ ८५ ॥ धनुष्य कोटि ने अर्जुन ॥ गंगा आणि आश्रमा जवळि ॥ पर्वत लो दुनि महितळि ॥ समान करि हिंडा वया ॥ ८६ ॥ ऐसा रुद्रा समान कर्म

आ मनुष्य अति उत्तमे ।। रुषिनें देखो निमनाथ मी ।। विचार करि ।। रा
ज्या सि ।। ६४ ।। आहा युव राज्य देतासमये ।। सर्व विषइ योग्य तन
या ।। त्रैलोक्य जिंतानि दिग्वीजयो ।। क रि ऐसा प्रतापि ।। ६५ ।। पिलि
भेटवा कुमरु ।। असजेले निज भर्तारु ।। रत्नुकेनी कन्येचा रुपाभारु ।।
उतिंपा जालो मी येथे ।। ६६ ।। सुंदर आ यस मर्थ वनिल ।। चिरकाळ पि
नग्य हि आसता ।। लोकनींदे विआव चिता ।। पाषावा जे मस्त की ।।
।। ६७ ।। होका उत्तमा चि कुमारि ।। बहुकाळ वर्तता माहेरि ।। उधला होय
विहिताचारि ।। लो हिरा खंडितजाले ।। ६८ ।। ध्येयं नर्त नगायन ।। मित
न्यस आवलोकन ।। शृंगार कामकरा स्व श्रवण ।। रजबा दुषपकु
ळवंले ।। ६९ ।। माता पितरि स्नेह कवळला ।। बहु काळ समिपटे
विलाबाळा ।। काजळ पितिया चिया कपाळा ।। आवर ख्याति
लोकिकि ।। ७० ।। पर घर अपापर वस्ति ।। जारिनारिं संगति ।। यकथा
य्या यकट पंथी हे कुलक्षण कुळवंते ।। ७१ ।। स्वपक्षपा चंचळपणे
चिरा नेरिया सरसा वणे ।। कळ फेडण घालणे ।। कुलक्ष कुळवंते ।। ७२ ।।

वं

हृदय दाउनि घालिपदर ॥ पुरुषभाव लो किवाउ विहार ॥ परे सियकांत वि
ग्यार ॥ हे कुलक्षण कुळैते ॥७२॥ बहु हास पोरां उ बोलणे मदाहासले गोष्टि
करणे ॥ पर तपरलो निनि रिक्षण ॥ हे कुलक्षकु ळवंते ॥७४॥ अणी कावपिनि
दिसती ॥ पति याग निधाव तिथ ॥ पुरुषअन्हेरनिदेव ता ॥ भजनादुषणकु
ळवंते ॥७५॥ उपेक्षु नि पति ईश्वर ॥ अपीक माहानुभाव गुरु ॥ भजतिले क
निंदेया सोरु ॥ माजे थोर अभिशापे ॥७६॥ यहीं शर्करा टे विजे जेथे ॥ तेथ रीपि
पलिकाला ॥ लितीत ॥ विश्वासे टेविला वनिलाल ॥ तेथ विपरित उद्भवे ॥७७॥
हो दोघटे विजे कवणा सी ॥ काय किजेल वस्तु चिनैसी ॥ बहलयाने निमिलि
जगासी ॥ भ्रमा भ्रमयं त्र ॥७८॥ असो संसारिका चिया गोष्टि ॥ उत्तम वर्ति उत्त
म राहटि ॥ मासी कन्या हे गामटि ॥ सुसिळ अपीपलिरता ॥७९॥ सिखा स्वच्छा नि
सा जिरि ॥ भर्तार म्हणे हि पवि नारि ॥ क्षोभा श्लाक्ष मान्यता थोरि ॥ सभय लोकित
पावे ॥८०॥ यालागी द्विज हो समुदाये सि ॥ सपुत्र रांकुं त ळासरसी ॥ नेवों जिनि
वेदारायासि ॥ हस्तना पुरि उविळं बे ॥८१॥ आता कन्या टेवणे यथे ॥ हे न व्हे

आमचिउ चिले।। तुलीजाउ नियमरित।। साधियालेसमर्पा।। ५४।। ऋषिआज्ञेन
तापसेमवा।। सहितभरतसंकुलहा।। गजसावयापाललाडोला।। लोकदेख
निकोलुके।। ५३।। सभामउ पिराजन्तपति।। मुनिवरासिराजयुवति।। राजकुमरथर
निलातिउमिरेलिसन्मुख।। ५७।। अससिर्वचन जयजयाकार।। करनिवेसला
रुपियभार।। राकुलाअलकुमर।। करिधरनिआदेश।। ५५।। बलंदायलावण्य
गुणि।। तनुजला विलाजनकाचरणी।। लपोराज याउवाकासनि।। दावदेयिवे
सावया।। ५६।। बहुलदिवसपाहिलीवाट।। निस्तुरहोकालमाभिष्ट।। आलामहवरि
ष्ट।। महापातल्याआपल्या।। ५७।। सत्यप्रतिज्ञानरेश्वतम।। आउनिआपुलि
या नियम।। युवराज्यभरतनामा।। पुत्रआपुला अभिषेकु।। ५८।। विश्रामानि
कण्वाश्रमि।। जोअर्थकथिलावागनियमि।। तोयेका थिकियाधर्मी।। करनि
रावियथार्थालछ।। ओकुनिराकुलके चवचन।। कलाकर्मअटवण।। मनेजा
पार्तोआपण।। जालानपालिनेका कि।। ६०।। चेरिजारिजानाचार।। करनिल
हिलणविनर।। तैसानावेकनरेश्वर।। असस भायगला।। ६१।। आकुनिकरिला
पापाचरण।। बाद्धेबालेलिधर्मकथन।। तेविअगुपाउरछादुन।। लोकाभयेअनु
वादे।। ६२।। लपोकेचिदुष्ट तापसि।। कोपाकोहिलकोणदेसि।। कोपकाळेकां

नवासि ॥ संगलालामीनेपो ॥ ७३ ॥ नेपालामाद्रियसुहृदजन ॥ कैसे निज
लिसममांगन ॥ रुचिराजपाललेलभ्मा ॥ कोपातेअथेदारववि ॥ ७४ ॥ देवब्रा
सणअग्नीविबुध ॥ साक्षिकरुनियाउलरुध ॥ धर्मकामार्थ संमंध जाला
कैसिमिनेपा ॥ ७५ ॥ माझेनिवयवयसमान ॥ लाकलस्खलसपन ॥ स्वल
काकेहानंदन ॥ कैसपसचलिसमद्रेल ॥ ७६ ॥ पाहलासाक्षिनमिकेकाहि ॥
मजलरीअनुतरियावनाहि ॥ आताआले निपंथेजाइ ॥ सिध्ययथुनिनिर्ल
ज्जे ॥ ७७ ॥ हासावयालना चिमांहि ॥ सांगआपीनायविनादि ॥ हाहिलेसचिमा
सीयबुधि ॥ किलिमाचारदिसताहे ॥ ७८ ॥ जघंन्यतेच्याकईमा ॥ निर्दोषमा
स्त्रीयानिजनिर्थमा ॥ मुखलोपतापापकर्मा ॥ पात्रहोसिपापिष्टे ॥ ७९ ॥ जेम
जयोग्यनहेमालु ॥ लेकेधिजलसिजगाजंलु ॥ पत्नाणनेचाआचारपंथु ॥
आर्श्रीयित्वादिसलाहे ॥ १०० ॥ आतासांडुनिमाझीगोष्टी ॥ समंधवर्तीनवरा
चेहरीष्ट ॥ स्वाश्रमिजाउनियाराहटि ॥ आवडतेसेवलीका ॥ १ ॥ ऐसेबोलता
मेदिनिपाळ ॥ क्रोधसंतप्तसंकुलका ॥ जैसिपुपाग्निचिज्वाळा ॥ स्पर्द्धीधावे
गगनात ॥ २ ॥ आरक्तलालेउनिनयनि ॥ अजंनभाक्षा कलेअष्टतियनी ॥ अं
धरस्फुरतीजेविपवनि ॥ पत्रपत्रथरकति ॥ ३ ॥ हणेधन्येगापुरुषोत्तमा ॥ उस

मजेसचिरक्षितिनियम॥ कर्मसाक्षिअंतरात्मा॥ तत्सजाला याचवचन॥ ४॥
मनानेपातना हिपाप। वन्हीनेपापाकैचादिप। जीवनेविणवाढलेरोप॥ प्र
थ्वीवरिकादुनि॥ ५॥ जाणुनियाहायनेपों॥ परिचयआसतापुसेकोणा॥ हेल
तवआधर्मीचलक्षण॥ तुजउत्तमआयोग्य॥ ६॥ इश्वरअपिजो॥ ३॥ तेपुंपस
स्मरोनीबोलयथार्थवचना॥ मासिसाक्षितुझेमन॥ तुझअंतरिदिसता
हे॥ ७॥ यथार्थनापालाअतःकर्णि॥ अनिग्रलिपादिजोवचनी॥ तेपोको
पातपापकर्णि॥ केरनाहिसांगणा॥ ८॥ मीयकजाणालासर्वश्रेष्ठी॥ ऐसा
अभिमानवाहसिपोटि॥ सकळमुर्खीचारेसवदि॥ कर्मकरिसीसालुल्य
॥ ९॥ पापयेकांतिकरुनिपाहि॥ तेपाकवणादेखिलेनाहि॥ इद्रीयदेवता
अपिरेहि॥ अंतरपुरुषपाहतसे॥ १०॥ समर्थदेखलाजेकरणा॥ सापलि
पुढेलिनाहितपाप॥ तेपोचिदेइपाविजेतेपो॥ हेलवप्रसिधजाणासी॥ ११॥
आदित्यचंद्रवन्हीपवन॥ आकाशप्रथ्वीअपीजीवन॥ हृदयधमअंतःक
रण॥ ब्रलजाणतिनराची॥ १२॥ उभयसंध्यादिवसरजनि॥ धर्मस्वरुपअं
तःकरणी॥ शुभाशुभराहटप्राणी॥ तेतुकेद्रिष्टिदेखति॥ १३॥ रात्रीअणी
आपुल्यागात्री॥ अगत्यकरितिजनाचेश्रोत्री॥ चित्रगुप्तचिलेखनपत्रि

साक्ष देउनि लोक वर्तती ॥१८॥ व्यवहार साधे साक्षि विण ॥ ऐसे बाल विजन अ
ज्ञान ॥ साक्षी परमात्मा आपण ॥ सत्याकडे निर्धारिता ॥१९॥ आणिक एक कौतुक
कवि करणी ॥ अपूर्व ऐकता श्रवणी ॥ मुदिये लाउनि राकिरा कणी ॥ शब्द अद
लो धवि ॥१६॥ मोहनि जार जारिदाघा ॥ यकां विजाउनि नुपुरे संगा ॥ लव अग्र
हा मस्तकि टाकुनि उभा ॥ दोल फिटा निजाण विषा ॥१७॥ इहि के लिकु कर्म करणी
बव कि आस विश्वाच कर्णी ॥ यथं कर्म केलें लेज नि ॥ आपे आप विस्तार ॥१॥
कर्म साक्षि हृदयस्थ ॥ क्षेत्रज्ञ आत्मा चैतन्य नाथ ॥ त्याक्रियसंतो षयुक्त ॥ सत्
शौच स्वधर्मी ॥१९॥ सोलद्याळ दंड पापी ॥ धर्मराज कर जोडुनी ॥ सेवा मा
गल्ल्पण प्राणि ॥ उर्ध्वरिनलव हा ॥२०॥ ज्याचा आसत्याचार कुकर्मा ॥ देखोनि
प्रकोपे आंलराम ॥ यासि वापु नियम धर्मा ॥ दंड करवि सु बंध ॥ ॥ यंव
हृदयस्थ आत्मया ॥ आधिन सुर्य लनयो राया ॥ सापे भिसा क्षिने या प्राणीया ॥
के लिकर्म भोगवि ॥२२॥ म्हणो निर शर्थरि पाप करावे चि ॥ वेद वडिल लोकी
हृच्चा भयधर नि वर्च साच ॥ लोचि यक वियवेक ॥२३॥ आता असस पर्वत ॥
लला ॥ उभा नराहे कुंभि निपाळा ॥ वरि पड़ल बज्र शिला ॥ परम अकी र्ति

दोषाचि ॥ २३ ॥ मस्तकहो ईश्वरस्पर्शांग ॥ याबोलें न लभे व्यंग ॥ न्याय बोलताउ
द्वेग ॥ विवेकीय न पवति ॥ २४ ॥ सकळ ऐश्वर्य घेउनि भेटि ॥ पश्चापात ऽलियापा
यलोटि ॥ तो सभाग्य कि आभाग्य श्रेष्टि ॥ कायन्म पीसें सांगपा ॥ २५ ॥ अह
ष्ट वियापतिव्रता ॥ योवनि लिलिया गिमती ॥ तो सफळ जन्म भाग्य था ॥
बाळवैधव्य स्त्रिदेहि ॥ २६ ॥ आचळ स्त्रिया आरोग्य काया ॥ सगुणपुत्र
पवित्र जाया ॥ बहुत जन्म हरिहराचा पाया ॥ भजता हे फळ पाविजे ॥ २७ ॥
८ विवेक बुद्धि नसांडि हृदया ॥ सर्वेभुति अभेद दया ॥ बहुत दिवस हरिहराचा ८
पाया ॥ भजता हे फळ पाविजे ॥ २८ ॥ सप्त वस विलेवट नाळया ॥ परस्त्रिसा
ग गुह्येंद्रिया ॥ बहु वेळ हरिहराचा पाया ॥ भजता हे फळ पाविजे ॥ ३० ॥ आ
पुत्राचे आनंद खा ॥ अंडे न भेदि पिपलिका ॥ पुत्र वैदुर्य आ मौक्तिका ॥ का
ग्राहिक नव्हेसि ॥ ३१ ॥ आलावे पुत्र नामासि ॥ आपणा ताचीकृ मरावे रि ॥
जैसे दर्पणा निज मुख वसि ॥ आउ नावभाति बिंब ॥ ३२ ॥ आपणा जन्मे जिअतो
ला ॥ मालौसिच पुत्र माता ॥ लोकि कन व्हे श्रुतिवाक्यार्था ॥ श्रेष्ठ श्रेष्ठा विचा
रि ॥ ३३ ॥ ऐसा लासे वरिष्ठियावचन ॥ यकदा येकनरस्तु प्रपा ॥ मिळाल सक
स्यपारंप्या ॥ कथ्य श्रमा सखेद ॥ ३४ ॥ यद्यालजा अपुलिया ॥ आदेशें आंधि

कारकरविराया।।समर्थनव्हेसियागावया।।सत्यसत्य त्रिशाच।।३५।।याचिये
करुनि।पाजन्मकाळि।वाचाजालीआमाळि।।सार्वभौमग्रथीलकी।।अश्व
मेधशतसंख्या।।३६।।करिआणिकमाहाख्याने।।वंशजेयाचेनिअभिधा
ने।।सारलक्षणविंतिलपुराणे।।कि लिंगानिलयया।चि।।३७।।स्वर्गनायका
माजिश्रेष्ठ।।मेनिका नामेअतिवरिष्ठ।।तीचापोटिंतपोनिष्ठ।।विश्वामि
त्रऋषिवर्य।।३८।।ब्रह्मयोनिंत माझेजनन।।वंधुनि पिता सुहृदजन।।लजवो
निलेहदान।।तेउलीजिवाचेसि।।३९।।ऐसे संकुतवेचबोल।।रायमानि
लेनिरसफोल।।जेसाक्षपणिकनिरोधिसोल।।पीकल्या मधुमाहकाचे।।४०।।
चंपकपुष्पाचेसुवासश्रो।।भ्रे।।वल्लभनकीजजविरोलंबे।।कोकनंदाचीचार
कदंबे।।कुंजरसरिपैरोति।।४१।।नानावेदिचचिथिवाद।।चार्वाकिहणाललि
वेबंधा।।उपनिषधाचगुह्यर्थभेद।।वादिजे सअवगणिलि।।४२।।तेसीपवित्रे
चिपवित्रवचने।।दुर्ष्यं तदुसिआपुलावचने।।हणोहेबहुभाषपीकवणे।।
जिकिलिनवचेबोलला।।४३।।मालत्याहसिक्षोभंदा सर्प।।स्टिष्टब्राह्मणापटल्ला
दिपु।।आमर्यादास्त्रियाचाजलप।।अवरुनसकेविधाला।।४४।।हिनजातिचिया
लक्षणा।।आलाजापावेत्रयामना।।मेनिकातेपंन्यागंना।।धर्मनिशिष्यबष्पाकि।

॥४४॥ अनेके लिंगादकाचे लोय। जीमाजी हालियकवय॥ कंदर्पेचर्म निखुष्टा॥ चम
सांघपि निर्मिली॥४५॥ नगहु स्वादर्पपा॥ आवको किला निवारिकोप॥ वि
यामटि रोवी लिसाहण॥ काष्ट घासिपलताची॥४६॥ कोरिमां उलिदेउवि॥
यला अनाबडविलसकुळी॥ धर्मशाळे चिउरवळि॥ आवउलणे कांडावे॥४७॥
जीचाउदरिउसलि॥ तिचिनि बाउलिअैसेरिति॥ ह्मणे निरवाणी लेसिमा
ति॥ अह्मणालो किप्रसिद्ध॥४८॥ यालागी बोलति वशिष्ठ॥ उत्सयकुळपा
हा निखुष्टा॥ कन्याभ्रणा विप्रसिद्ध॥ विवेकवंश वंशाग्नि॥५०॥ क्षेत्रियघेत
ला ब्राह्मणवेश॥ हा कोण जातिचा विन्यास॥ शुद्र होउनि परमहंस॥ ह्मणे
मिश्रेहसन्यासि॥५१॥ ताको शीककामाचार॥ क्विचर ताउभयविर्य विक
रे॥ गर्भ यागुनि आनादरे॥ दोघे गालिदा पंथि॥५४॥ भोगुनिया गीतिपुष्प
माळा॥ ले विनी मत्स्यरांकुतळा॥ संकुलि राक्षिति भ्रेहा ळा॥ श्रयघडले कण्वाते
॥५२॥ आसोत अप्सरा केउला ऋषि॥ केउति पिशाच यलवनला पासि॥ कचा
पुत्र हेमानसि॥ ष्टतद्रत्यमी नेणो॥५३॥ गणपडो निवीषयस्वार्थी॥ समं
धवावीसी मजसमर्थी॥ अविचार बुद्धि सेउनि आल॥ जादस्वस्छकआ
पुळ॥५५॥ मंत्रिबिजाक्षरि चा बोलि॥ आभद्रजपता भद्रकाकी॥ क्षो॥

मनुतें सिक्रोधानळि॥आंगारयाकिरावरा॥चा॥५६॥पवित्रविश्वामित्रबाळा॥
सांकुतळाआकिकुळा॥अपोकुतंळेमडळेपाळा॥तुचिअविचारजल्पसि॥
॥५७॥स्पर्शपदोषं आयपराचेदोष॥पवैलआयकरिआधमपुरुष॥अ
पुलिदुष्कर्मेअनेष॥मरतुल्यगणिना॥५८॥मेनिकत्रिदशापतीमान्ये॥लो
कमस्तकि जिचे गमन॥मिजापतिसमान॥देवलोदोहिदिव्यस्त्रि॥५९॥
रुद्रचंद्रआदित्यभुवन॥वैकुंठकैलासब्रह्मसदन॥याचिक्षपिआचलाकु
न॥यधेयइनयादेहे॥६०॥तुलवभुचर क्षिरसिक्षिति॥पाहेमाझ्स
सप्रचिति॥श्रेष्ठाशौरिगौरिपति॥साक्षिआपिनयाटाया॥६१॥आपार
श्रष्टिचापरमेष्टि॥गाधिजेमुनिनिंदिसि॥दोषदृष्टि॥हेजेकानिर्को॥ य
श्रेष्टी॥श्रेष्टतुलल्लाजिजेल॥६२॥मामाायका॥सिबोल्सनुन्या॥याहुमिअव
गुपालकवण॥विरोवसमर्थलपाधन॥निंदिताआनर्थराटका॥६३॥परासं
दोषनवोल्तुमुखि॥लोमान्यलायाउभयलोकि॥चिस्णुदलयामस्तकि॥वाहो
निनेलिवैकुंठा॥६४॥करुपनपाहेआरिसावदन॥लवरिवाहरूपाभिमाने॥देखि
ल्याआपणआपारजन॥रूपविशेषमजऊन॥६५॥रूपक्रसविल्पकोण्हान[illegible]

मनि ।। पवित्रदोष नदेखनयनि ।। सदोषिया निर्दोषकोपही ।। भुवनत्रइ दिसेन ।।
।। ६६ ।। सुभाषित श्रवणिसुरस ।। सज्जना गुणि दुर्जना दोष ।। जैसा क्षिर विभा
गि हंस ।। पुरीस भाग शुकराचा ।। ६७ ।। दुरात्मि बोललिअनेआन ।। प्राणांत खेद
साधुचिया मना ।। साधुनिंदा करिता जाणा ।। दुखदुर्जना अनिवार ।। ६८ ।। स्थी
सिकरिता अभिवंदन ।। साधुपावति सुखसपन्न ।। करुनि साधुचा आवमान
परमल भदुष्टात ।। ६९ ।। दोष नदेखति जल्हो किंतसर्वत्र सर्वदा मुखि ।। दोषद्र
ष्टे स्वयं चिदुखि ।। दुखदेति पुढिलाल ।। ७० ।। मुख्य साधुचे लक्षण ।। परदोष नदेखे
लिया प्राण ।। पैशुन्य बोल कारण विणा ।। ल्ला दुर्जन दुरात्मा ।। ७१ ।। दुर्जन ऐसे बोल
लिजनि ।। हे चिलाछ नेहचि हाणी ।। धन्यति साधु पवित्र गुणि ।। परमलाभ याना
मा ।। ७२ ।। जैसा देखता काळसर्पु ।। काहनथोरा उपजे कंपु ।। तेसि सत्य स्वधर्म विपु ।। ये
जलिज या दुष्टा चि ।। ७३ ।। यासि देखोन सकळजन ।। शंका भाविति नवल कोण ।।
मुख्य इश्वर आपण ।। नोहि पावे भया ते ।। ७४ ।। पुत्र उपासा दुनि स्वरे ते ।। लपामी ने पोस जी
न साल ।। देव आश्रय चिंति साव ।। ऐश्वर्य घे हिरानि ।। ७५ ।। विर्थ पाहि पासुनि केल ।। लक्ष
क्रिलमतिपाळीला ।। अन्य क्षेत्रि हि जन्मला ।। पुत्र बोले मनुस्मृति ।। ७६ ।। स्वपति प्रभ
वेल ध्यकिसी ।। चोथा जोका विवर्धितु ।। धर्मकिर्ति मोक्ष पंथु ।। होय जयकाय चे नि ।

॥७७॥ चौघामा जिश्रेष्ठ अग्रगणी॥ स्वरलेस्वात्रिगभस्त्रिानि।जन्मलोतोभुव
णमणि॥ विजयकलुवंशाते॥७८॥ पितरान रकाधिलारावया॥ नोकोतोयकुं
त्रवाया॥ याला गिलनुजवावया॥ अर्दैनकेस्तिनिधारि॥७७॥ नरसिसांदु
निकपट॥ मां ञियबेस विकुमरजेश॥ सत्यधर्मके रिप्रगटावडिलासर्वीद्स्वन॥
॥८०॥ निर्जकियफलुपइवनना॥ तशतवापिकेसमान॥ शलभारिवापिकेचेपुं
ण्य॥ यकयभिपाविज॥८१॥ शलकलुचेशुकृत॥ येकेपुत्रेप्पादनिहोयेप्राप्त॥
त्याचेश्रेयेकोटिगुणील॥ सत्यरक्षणिल्लाहिजे॥८२॥ अस्वमेधशलाचपुंण्य॥
यकिकेडसत्यवचनालुकीतासत्यआगळेजाण॥ मेरुसर्वपदशल॥८३॥ चेदुवे
दिचेसांगितलेज्ञान॥ सकळतिर्थांचिअचमहणा॥ यासिलुकितायथार्थवचन
सत्यअगणितआगळे॥८४॥ कोटिपुंण्ययायलिगलेजकलियेकेआसत्यवचनि
जेसिपावकस्फुलींगकथी॥ ना शिकपुर गिरिला॥८५॥ सत्यापरेतानाहिधर्म
सत्यतेचीपरब्रह्म॥ सत्या सिचोळेगमोक्षधाम॥ स्पर्शीनसकेकल्पांतिं॥८६॥
आसत्यलाचिपेपातका॥ आसत्यलोचिमहानर्क॥ असत्याचेनिसंगेदुःख॥ आनं
तजन्मभोगवि॥८७॥ सत्यनेमिलानचळानेम॥ यासिवोळेगमोक्षधाम॥ सत्या
पासिपुरुषोत्तम॥ सर्वकाळिलिष्टत॥८८॥ सत्यअम्हलाचिबाधि॥ जोजलिनस॥

डिभुलटि ॥ आसस्व र्ष्यिचिनरोठि ॥ आपवित्र होलनालके ॥ ७५ ॥ भुलिंगासि आधो
वदने ॥ गळ्याल विल्या अस्त जीवने ॥ उष्णखासधु म्रवणी ॥ तिटसांडिसकोपे
॥ ७६ ॥ नेआधार सुवासे घा किल्ला ॥ परिमळ धुपेसमंपिलि ॥ रवेद संतापे उजळ
ला ॥ हृदय धवळ दिपकु ॥ ७७ ॥ वाक्यपुष्पि पुष्पांजुळि ॥ सप्तसाक्षिनेराजमौळि
१० वोपितालवत्ते चिकाळी ॥ अतिआश्चर्यवर्तले ॥ ७८ ॥ सप्तसप्तेशुळपाणि ॥ प्रस
न्न जालातलक्षणी ॥ म्हणे निअंतरिक्षवाणी ॥ हालिजालिलअैका ॥ ७९ ॥ वा
ग्वाचा आसिरिणी ॥ गंभिरमेघाचीयाध्वनि ॥ होलासकळसभास्थानि
रुषिजमंत्रिआचार्य ॥ ८० ॥ अैकोटेल सावधान ॥ दिखतिन भिदिव्यसुमनाचा
घन ॥ रुषिजह्मणानिकराम्रवण ॥ वचनदेवदुताचा ॥ ८१ ॥ रेरेदुष्यंतराजन्रप
ति ॥ झणे आपमान सिंहसलि ॥ हक्षोभलियासर्वजगाति ॥ जाकुसके क्षण
र्धी ॥ ८२ ॥ चमेभातकिफुंकिलापवन ॥ तेथुनिको हपदार्थ सुघन ॥ निपाजलि
हसामर्थजाण ॥ हस्तचाळिनयाचे ॥ ८३ ॥ बोलतिसाश्चर्यबालियकल्ले नह्मण
निसस्माहुनिपडिले ॥ जेलेलासेनुसारपुजिले ॥ धनुष्यकोपिपुलिंन ॥ ८४ ॥
तयाचिपरिजाणिजेमाता ॥ पुत्रस्वरुपेउगवपिला ॥ रमताजन्मेवाता ॥ वेद
मुखिचियथार्थी ॥ ८५ ॥ आलागीपुत्रआपुलाघेणे ॥ मानिनिमानेसदनानेणे ॥
१०

आलाप्रत्तारणेविवचन॥नबोले विबहुसाल॥२०॥पाहुनियाआमुचिव
चन॥आंगिकाराविभयरहे॥पुढारबोलसिलतरिआपण॥हरिहरदेवाचि
॥१॥ऐसिऐकताआकशवाणी॥टाकिपिटिलिसभास्थानि॥जयजयका
राचिध्वनि॥परमआल्हादसमस्ता॥४॥राजाह्मणेवृद्धहोऐका॥हासर्वअ
र्थमजटाउका॥परिशंकुतियालोकिका॥कुत्सीमवाक्यबोलिलो॥३॥पहि
लेचीकरिताआंगिकर॥लोकभावितेआनाचार॥कामबाधिराजेश्वर॥निंद्य
ह्मणतिराहटला॥४॥आताइश्वरवचनसाक्षि॥आंगीकरासावाक्षि॥परसोन
सुहृदजनश्वपक्षि॥धन्यह्मणतिरविवर्या॥५॥मगउठोनियालवकरहो॥पुत्र
कडियेघतलामोहे॥आवडिचुंबोनियापाहे॥वारवारवदनाते॥६॥जननि
हृष्टिलागेलसणे॥ह्मणोनिउआपारधनधान्ये॥वोवाळुनिसांडिलतेणे॥या
चककेलेकुबेर॥७॥करिस्निमुर्ध्नआचघ्राण॥भेहेदउनिआलिंगण॥युवरा
ज्यीअभीराचन॥करिलाजालालाकाळि॥८॥भरतसुपुत्रहेतुष्यंता॥ऐसेबो
लिलेदेवदुत॥यालागिनावठेविलेभरत॥जनकेतयाआवडि॥९॥आदरेभी
याधरोनिहाति॥नेलिअंतरगृहाप्रति॥ऊरा किमुनिह्मणोति॥विवादकाहिन
मानावा॥१०॥ससप्रगटावया॥साचार॥वाक्येबोलिलोनोकाचार॥लेतुवा

नमनुनिरेचलुरे ।। क्षमाकरबोमजलागि ।। ११ ।। ह्मणोनि वस्त्रे दिव्याभरणे । वोपिलि जे
सिसचि हिनेणे । राज्यसंपती निजटवपो ।। निवेदिलि निजहातिं ।। १२ ।। पट्टमाहिषि मा
जिमुख्य ।। पावलि अनेक भोग सौख्य । पुर्विलियाने माहुनि अधिक ।। ऐसे आले
प्रचिति ।। १३ ।। दुष्यंत राजे तल भरत ।। विरप्रतापि विख्यात वंतं । दुसरा राजा ब्र
ह्मांडाल । नाहि चक्रवर्ती पुरुषार्थी ।। ।। पंचाशत कोटि विस्तिर्ण । हेमाद्रि श्रृंग
शोभायमान । केले प्राथ्वीचे शासन । यकेछत्र यकाज्ञा ।। १४ ।। गोजित नामा
अस्वमेध । तपे केला जगप्रसिध । लेवकि करुनि ब्रह्मांडभेद ।। याचक इच्छा
फळविलि ।। १५ ।। सहस्त्र पद्म सुवर्णरासि । देउनि पुजिला कण्वरुषि ।। विश्वामी
त्र तपोरासि । केला सपंति समृद्ध ।। १६ ।। याचेनि नामे भरलि किर्ति । विस्तारिलि हे
त्रीजगति । याचि वंशान्वये संतति । भारत वंशी समस्त ।। १७ ।। सरले रसाळ रा
कुतंक । पुढे यथा माहाविशाळ ।। चितकरि निसुनि निश्चळ । कथा कुशळ परिस
लु ।। १९ ।। इति श्री आदिपर्व भारति ।। व्यासकवि ना श्री भागवति । मात्रकार
पे माझी श्रीतिं । पाठिचा लपरिचर्या ।। २० ।। भक्तिने मुक्तेश्वराची वचने ।। ऐके
ला नाधिसज्ञान मने । जैसा कान्च मणी चारवणे ।। रंके सिले सिश्री मंत ।। २१
इति श्री महाभारते आदिपर्वणी शकुंतलाख्यान षोडशोध्यायः ।। १६ ।। ३३०

॥श्री राम श्री श्रीवैशंपायन नमः॥ वैशंपायन धरित्रिदेवा। चतुराननपासुनि दाहवा॥ अत्रि ऋषिपासुनि संभवा। पुर्वजलतुमचि ययाति॥१॥ नयातिस शार्यपवींद्र दोन्हि। शुक्रतनया देवयानि॥ शर्मिष्ठा तव वृषपर्वणी। दैत्यपति आत्मजा॥४॥ नमच ळाचे अपराधि। काव्यतांडिलाशापपद्धि॥ तेणें जर जराव्याधि। क्षीण जाला शरिरि॥ ७॥ यदुतुर्वसगुणसागर। दोघे देवी यानिचे कुमर॥ द्रुह्यु पचार पुरुप्रविर। शर्मिष्ठेचे त्रय संख्या॥ ७॥ विषय भोगार्थिया आर्लि॥ तारुण्य मागत पुत्रापलि॥ चौघिनेंदुष्यलाकुमति सापुनि केले परौते॥५॥ कनिष्ठ पुरुनें आपुल्या वया॥ अर्पिलें उचित दिधलि पितया॥ यालागीं जनकें तुष्टोनिया॥ अभिषेचिलें निजपदीं॥ ध वंशधर राज्यधर॥ तुचि हाऊ असा वर॥ देउनिया पुरुप्रविर॥ श्रेष्ठ केला सर्वांसि॥ ७॥ याचे अन्वये संभुत केले॥ सकळ संतल परंपार सुदाळे॥ वंश वदलि ऋषि पवित्र फळे॥ तुम्हा असे सिकुरवया॥ ण॥ राजा म्हणे वक्तयामुनि॥ ब्राह्मण कन्या देवयानि॥ क्षेत्रियासि पद्मानिनि॥ जालि केसि आदरें॥ थ॥ शरीरशरिरांतरंग॥ केसे निसंचरिले जगा॥ तारुण्य पातलें हि चतुरांगा॥ हमा

च्यर्यमजचाे॥७॥तरिमीआर्तरिक्षु धावेंतु। वद्धितामाघनकादिहालु।
कथासुखेचाविषदार्थु।रसअद्भुतनिरोपु॥११॥वक्ता अपांगुणेकरासि
सांगनअेकासुमेंका।सि।देवद्रब्रह्मआमिळासि।वेरद्द्यासिमंत्री।
॥१२॥युद्धजालेघोरांधार।निर्जरघाईरातजर्जर्रि।दैत्य मृत्कपावतिस
त्वर।वालवेकजाणपा॥१३॥तेअमृत संजीवनेमंत्रे।उठतांउठविनि
मिषमात्रे।सुरपडतिअसुरशस्त्रे।यासउपावआसेना॥१४॥अमृत
संजिवनिविद्या।ब्रहस्पतिनेणोनरसुविद्या।हदेखोनिदेववंद्या।चि
ताशुहागृासिलो॥१५॥ह्मणेनिर्बळस्वामिनपुंसकमती।अज्ञानगुरुंदरि
द्रहाल।ऐसियाचेमनोरथ।सफळहोतिकेसेनि॥१६॥कृपणमित्राचस
जणे।अंधसंगिपगुळचालणे।पोहोनेणेयाधरणे।कासकेसिस्तुंद्र
॥१७॥रोगिवैद्याचऔषध।मोडल्याशस्त्रकरणेयुद्ध।खोटेनाणेबुद्धि
मंद।व्यर्थजेसासंरक्षी॥१८॥वाचस्पतिगुरुतथारीतुळिलफळलिअे
सियापरि।भागेविसामाथचिथारि।तुकिताब्रह्मांडटेंगण॥१९॥याला

१ १

गिअैसापाहिजेगुरु ।। जोसर्वदातांकल्मलरू ।। आनाति सिध्यामाजि इ
श्वरु ।। दत्तात्रयपैजैसा ।।७०।। मुक्तिचगुरुरचना ।। जिकों ।। गुंरु तोचि व्या
ले केवि कसिसीव ।। औसलोक्लात्मकसर्व ।। गुरु निंदार्थकल्माली ।।७१।।
शुक्रासिगुरुत्वदेणे ।। हअसेतला जिर वाणे ।। आणिप्रतापिअपुलगुणे
उघडकरितिआश्लाघ्य ।।७२।। आपलाआपकारचाघार ।। सौख्यबोढे
ज्याच्याहृदयि ।। आउ ल्यालोटांगणयाचेपाइ ।। इश्वरक्षोभायानावे ।।७३।।
आपुलाआर्थलोकावरिबुडे ।। लोकांचदेणेअचुकघडे ।। वैरियाकरिव
मसापडे ।। इश्वरक्षोभायानावे ।।७४।। लाभार्थकश्लाहायहावि ।। आपमा
नपावेपुजारच्यानि ।। सुहृदपरलशत्रुचगुणि ।। इश्वरक्षोभायानाव ।।७५।।
आपुले ऐश्वर्यआपुलिवनिता ।। बालकश्चोगिआपणदेखता ।। रक्षप
पियेदरिद्रता ।। इश्वरक्षोभायानावा ।।७६।। औसीयायुक्तिचचिचाकरु ।। हृ
दइकरिधैर्यविचारु ।। मगब्रहस्पतिचाजेष्ठकुमरु ।। पाचारिलाजवळिके ।।
।।७७।। तोकचनामापरमगुणि ।। दक्षकुरालकार्यसाधनि ।। लयाप्रतिकुसि

व

रापाणि॥आलोचनाकरिविस्वास॥७८॥आपणआमचरद्वपदनहाले॥तुम
चेपुराहितसचाले॥जैसातुचापाहिंकेले॥जेमिसांगनतैसेका॥७९॥
यलकेलियानमिकेश्वष्टि॥तवसुआसेरात्रुचिगाटि॥लेन्निचरोवक
होइजेनिकटि॥हीतस्वार्थाकारणा॥८०॥लोकलाजआणिअभिमान
सांडुनिआपुलेथोरपण॥कार्यसाधितिविचक्षण॥म्हाणाउनीरात्रु
चा॥८१॥यालागिंतुवाविवेकमुर्ति॥जाउनिशुक्राचार्याप्रति॥शि
ष्यहोउनिविनयभक्ति॥पुत्रविश्वासदावणे॥८२॥आवचकपणेकर
निसेवा॥हृदयमांदुसमाजिटेवा॥संजिवनिमंत्रसाधावा॥८३॥भक्तीने
तोषेअंतःकरणी॥लेसिकराविमोहकपी॥साधुनिउरम्रसांजिवगिवं
द्यहोयविबुधासि॥८४॥देवयानिशुक्रतनया॥प्राणापरिसपद्यतिपि
लिया॥तिचेचित्तउपासलिया॥सायहोइलसर्वार्थि॥८५॥मीआइश्वर
चाकुमर॥धरिविद्यविणअहंकार॥सुज्ञसुविघ्नकरिगुरु॥लोय
करालमुर्खजाणावा॥८६॥सर्वाभिमानलोटुनिचरणा॥धुर्तपणुन
अंतःकरणे॥शिष्यहघेताखवलालेणे॥आमोघविद्याकथिजेल॥८७॥

लण३ निआता नला विउसित॥ जाउनि उपासि असुरगुरु॥ नानाकोरी
च्यत निधिरु॥ कार्यसाधिसुजाणा॥७८॥ साकारे ले स्वाधि ह्व करणा॥ क
पुरातेसु वासदेणे॥ पुरुषार्थ तसिकवणे॥ इचिने पिवसांगीतिया॥७९॥
यजमानदेवगुरु बाला शाघउनि निघाला परमज्ञाज्ञा॥ मागीशकुन
सुचिलि संज्ञा॥ कार्यासिधिकारणे॥८०॥ दैसलोकिदैसेंद्र सदनि॥ व्र
षपर्वा राज्यासनि॥ भार्गवाचार्य लयस्थानि॥ मान्य सकळ गुरु हा॥
॥८१॥ सा ब्रहस्पतिचा कुमरु॥ पातला कार्यसाधनिचतुरु॥ दैसेंगुरु
ते नमस्कारु॥ करिता जाला साष्टांगि॥८२॥ मस्तक ठेविले काव्यचरणी
उभाठेला कर जोडुनि॥ अणे श्वामी कृपाकरुनि॥ विज्ञापना परिसावी
॥८३॥ दारावकरायाचआलि॥ पालको होयया विद्यार्थी॥ निश्चय राया
शिष्यपक्षी॥ तोवि भागमजद्यावा॥८४॥ सहश्रसंवसर परियंत॥ ब्र
ह्मचर्य हल स्युल॥ सेवाकरिन प्रेमभरित॥ आनालस्य श्रवदा॥८५॥
ऋषिअंगीराचपौत्र॥ कच नाम ब्रहस्पति पुत्र॥ अनुग्रहा अयोग्यपात्र
परिक्षपे ने योग्य कीजे॥८६॥ असेल वडिला सि विरोधु॥ तो मज नाहिजी

समंघु॥मीशरणागलसुद्धु॥उपाशीता अनुचिता॥४७॥ऐको निशुक्र
विचारिमनि॥म्हणेहा निर्मळ अंतःकर्णी॥यथार्थ जिगळो लेवचनी॥पि
तुनामस्वनाम॥४८॥हावर्तला शवकरती॥रोचकजा लावाचस्पति॥
याचे शिष्यसे निश्चिति॥दीप्यमासा सुरगुरु॥४९॥ऐसि श्लाघ्यतामा
नुनि जिवं॥लेपाबाळकाबहुतवरवं॥आंगिकारुनिआराध्यसेवे॥सुरचम
झहि॥५०॥असुरगुरुचि आज्ञावचने॥गुरुपुत्र वंदिमस्तकिसुमने॥मगअ
होरात्रसावधाने॥गुरुति शुश्रूषे निरतु॥५१॥ब्रह्मचर्यरत चर्येण॥आग्नेकर्के
डुवसुमने॥काष्ठजळ समिधा पर्णी॥नित्य आणुनि निवेदि॥५२॥सडसमार्ज
नलेपन॥पादरोवा आंगमर्दन॥लेपोआचार्याचमन॥सुप्रसन्नसर्वदा॥५३॥
नृत्यगायन पवित्रकथा॥आज्ञापाळेण निर्विकारता॥लेपादवय निचिथाचि
चित्ता॥स्नेहवाढला आपार॥५४॥फळहारकाभोजन॥कंचावेगळे उदकपान॥
देवियानि नकरिक्षण॥जाउनीदिपरौता॥५५॥वर्षेकम ल्ल्यापाचराल॥उना चार्य
धेनुवनांत॥गुरुआसेनेचारिलालेथ॥असुरगा शिक्षिला॥५६॥लपाति
शत्रुगुरूचाकुमर॥कपटबुद्धि धुर्त कानरु॥संजिवनि हरावया चोरु॥हो

वाकरिउक्राच॥ ७५॥ह्मणो निनिद्धुरिखगधाईरा॥ तीळतुल्यछटुनिशेरीर॥ ॥
सुरत्न॥स्वापदगणाच्चार॥ टकजंबुकव्याघ्रले॥ ७६॥ धेनुपालालिआसलमानि॥
सवेगुरुपुत्रनेदखानि॥अतिउद्दीमदेवया॥मि॥सखेदबोलेपिलयाते॥ ७७॥
कवेनयचिपरमसाधु॥वाटेअसुरिकला बधु॥लया नयला पळपादु॥प्राण
देहिनराहे॥ ७८॥ शुक्रविचारिजवशानि॥तवत्रिब्यभक्षिल्यास्वापदगणी॥
मगस्मरेनिशुध्यसंजिवनि॥पाचारिलश्नेहाळे॥ ७९॥ वढळअगछइहिवचनि
हाकारिता वलक्षपि॥सभिपपालळाथावानि॥लोटागंणीअतीनम्र॥ ८०॥
मजप्रयोजिता प्रचंडे॥स्वापदजटरिखंडखंडे॥यकचयोनिसजिवपुढे उभा
टेलात ला॥ ८१॥ करुनिसाष्टांगनमस्कार॥विदितकलासमाचार॥ओ
कोनिह्मणेकरुणाकर॥श्रमलासिममवच्छा॥ ८२॥पुढलियकदिवसिजाणा॥
सुमनआणावयासुवना॥देवीयनिपाठविवना॥तवलक्षीलादानवि॥ ८३॥
लणालिवाच्चला सिमागुर्लिं॥नुष्टिचकरुअसेआला॥ह्मणानिग्रवलेघा
ला॥द्विषदेवपुज्या॥ ८४॥याचकरानियाहलन॥सवचिकलेदहदहनगअसोरक्षी
कर॥निचुर्ण॥मंद्याद्वकमेळविली॥ ८५॥तेसुराअसेलमधुर॥पाठन॥आचार्यसि
करविलपान॥ह्मणतिनिरोल्यजालेमन॥यलखळादेवाचा॥ ८६॥कचन

येता भस्म मानि ॥ अति दुखित देवयानि ॥ पुसे पिता याले आर्थी नि ॥ शिष्य विचारि केउता ॥ ६९ ॥ तो म्हणे अलक सद् सदना गेला ॥ दानव दुसरेनि मारिला ॥ आता नवचे पाचारिला ॥ खेद सांडिये काळे ॥ ७० ॥ ऐको नि तात मुखिचे वचन ॥ देवयानि करि रुदन ॥ म्हणे तत्काळ त्यजिन प्राण ॥ जीवे तनया न देखता ॥ ७१ ॥ जीतेंद्रिया परम शांत ॥ थोर पुत्र विनयवंत ॥ त्या लागि विचारि यथार्थ ॥ खेद के सा न करावा ॥ ७२ ॥ उशना पाहे ज्ञानदृष्टि ॥ तव चित्रा सजउ आपुले पोटि ॥ मग सजिव निज पोटि ॥ सजिव करि गर्भस्थ ॥ ७३ ॥ ते धुनि आदरे बोभाये ॥ म्हणे बाळका जालें काये ॥ ये म्हणे त्रास्त्र घाय ॥ दुष्ट दानवि बाधियले ॥ ७४ ॥ देहदहन करा निरक्षा ॥ सुरा मिश्रीत पर मदक्षा ॥ प्राशन कर विल्हि अध्यक्षा ॥ जठरात ठुज लागी ॥ ७५ ॥ कृपा अनुग्रहा समर्थ करि ॥ सर्व हि स्मरे तुझीया उदरि ॥ परं तु याचया बाहेरि ॥ मार्ग यथे दिसेना ॥ ७६ ॥ पिता कन्येसि बोले वचन ॥ कच उठविता माझे मरण ॥ मिआ क्षरइ तरि जिवना ॥ जीवा सजा घेउना ॥ ७७ ॥ दोहि माजी आवघ काये ॥ ते मज यथार्थ सांग माये ॥ ते म्हणे उभय वमी चीघाये ॥ मरण बाधा सारिखी ॥ ७८ ॥ मृगि अर्ध पलपा वाकी ॥ उडि घालि कुपोदकि ॥ प्राण हारपिल व मारि खि ॥ प्राप्त जालि मज ऐसी ॥ ७९ ॥

४

तुझे निमे समजभ्रम ॥ यथनक द्विसरा अर्थ ॥ जीविपावना जिवघात ॥ तो
हि मळ चितु मानि ॥८०॥ लया निसर्व ज्ञा समर्था ॥ परिहारु निभय अनर्था
दोघ आक्षय सुखावस्था ॥ पाव ऐसे करावे ॥८१॥ शुक्रे विचारिले तःक
र्णि ॥ आन उपाय न दिसे नयनि ॥ आला विद्या संजिवनि ॥ गर्भ स्ताले
उपदेशु ॥८२॥ हा वासिनला मास्थ उदरि ॥ पुत्र होय निज निर्धारि ॥ विद्या
धनाते अधिकारि ॥ पिनीया चि आमजु ॥८३॥ विरापदेवया निच म
नारक्षावा हे कारण ॥ यालागि संजीव निर्दर्भ ॥ आगस केलपाहि
ले ॥८४॥ उदर विदारु नि मास ॥ बाहिर पालत्रियास हजे ॥ मासी उप
देरा मंत्र बीजे ॥ जपोनि मोल जिववि ले ॥८५॥ कन्येचा हि मनोभावो ॥
ऐसच जाणा निअभिप्रावो ॥ ओर ताजातक विचारावो ॥ जट रस्थे
सिल ऐका ॥८६॥ ऐपा गुरु पुत्रा मम पुत्रा ॥ वचन ऐका परम पवित्रा ॥
घे संजिवनि मंत्रा ॥ प्रणव बीज सबिज ॥८७॥ मासे शोवेचे हे फळ ॥
सुफळ होका तुजता काळ ॥ येणे मंत्र आमरस कळ ॥ मरूपा साव
रक्षावा ॥८८॥ ब्रह्महत्या रुदुर्बुधि ॥ दैत्यविनाश पावलियुधि ॥ ऐसे बा
को निमाह सिधि ॥ संजिवनि वोपिलि ॥८९॥ शुकदेवाने गर्भस्था नि ॥

५

उपदेश। कर्णीचेनि पाणी॥ कि प्रह्लादाने नारद मुनि॥ दत्ता जाहला हरि

मंत्र॥ ७० ॥ तेस विद्यामंत्र॥ उत्तान उपदेसि उदरस्थ॥ जैसे देवपाळ आ

लेआसा॥ विश्वासे निदाविजे॥ ७१ ॥ कि गर्भस्थ गारि॥ ब्रह्हदयाजवळा

फुंकोनि उजळिलासोज्वळ॥ मंत्रोपदेशा वदनानळा॥ करुनिया कुक्षदी

पकु॥ ७२ ॥ पुसोनिय आज्ञाशब्दु॥ करुनिया कुक्षभेदु॥ बाहेरि पाळला

इंदु॥ पुर्णिमेचा पै जैसा॥ ७३ ॥ कुक्षिहुनि बाहिर येता॥ गुरुपावला नि

जैवावस्था॥ शिष्यस्मरोनि विद्या म्हणता॥ वदनवाते स्फुरता॥ ७४ ॥

उयेनि बैसला लाकाळि॥ जैसा थपटिला करताळि॥ नियोगे स्म

रणाचाळि॥ सावधान विराजे॥ ७५ ॥ तैसा संतु प्रस्वस्थानि॥ देखे निगुर

पुत्र लागे चरणी॥ मग जोडुनि अभयपाणी॥ स्तुतिवाद गर्जतु॥ ७६ ॥ त्रै

लोक्यगुरु समुद्र मेळि॥ मध्यनायका विश्वमौळि॥ गुरु ब्रह्मांडमेळि॥

तुसे विसाजयकाला॥ ७७ ॥ द्वादशादश गुरुभेद॥ सविस्तार बोलिले ब्रह्म

विंद॥ परि नोळु जसी तुकिता भय॥ जिवें देसि उपमावा॥ ७८ ॥ आयगुरु

विचार गुरु॥ धातुवादि पारिस गुरु॥ कछप गुरु चंदनगुरु॥ दर्पण

गुरुआत्वा ॥४४॥ छाया निधि नाद निधि ॥ कौंच पक्षिणियाबु धि सुर्थ
कांत कार्पास विधि ॥ बारा प्रकार जाणावे ॥४०॥ यक आम्ह आम्ही केला
यक विचार अनुभव आला ॥ धातु वादिय मेळविला ॥ साधनाचे क
चाटि ॥ धारु ॥ अथवा राजवर्ग ॥ न झणे स्पर्श मणीचें अंग ॥ न
घालि अधिकाराचा पांग ॥ तापरिस गुरु जाणावा ॥ १ ॥ केवळ आवलो
कनिचा साटि ॥ कुर्म पिलियालु दृष्टिपुष्टि ॥ तैसा यक कृपादृष्टि ॥ शिष्य
करिति सुस्वरूप ॥ ३ ॥ सन्मुख देखलाची जाणा ॥ चंद्र चकोर अमृतपा
न ॥ तैसे यकाच दर्शना ॥ होता सर्वार्थ साधलि ॥ ४ ॥ गांधीच वाकु
लिवेणुजाति ॥ चंदन अतेव वनस्पति ॥ तैसे कुठि लो यारु निसुमति ॥
ब्रह्मस्वरूपे गुरु संगे ॥ ५ ॥ पाहे तयाचे वदन ॥ सन्मुख दावि जे दर्पण
तैसे येकाच वर्तन ॥ पाहता वस्तु आतुडे ॥ ६ ॥ छाया निधि पक्षि गग
नि ॥ छाया स्पर्श सयाचि मुष्टि ॥ लो होय छत्रपाळ चुगमणी ॥ ऐसा गुणाचि
लयाचा ॥ ७ ॥ तैसा यकाचा हस्तकु ॥ आवचच स्पर्श जो मस्तकु ॥ तरि फिटे
निजीवीं कळंकु ॥ चिद्रूप तो होय ॥ ८ ॥ नाद निधि आसा जथे ॥ धा

तुझा। ना पापावेगळेथो। ८॥ स्त्राना सुवर्णाति। हा चमत्कार लयाचा। ९॥ तैसि वादी निस्तवन। बैकोनि पुरे गुरुचकान। उपदेश करिना चिजाण॥ सर्वार्थ सिद्धि शकडि॥ १०॥ कर कुंचिपक्षिणी दुरि। पिल्लिं ठेविं हि गिरि कोयरि। चराया जाति द्विपातरि॥ सहस्त्र येक याजने॥ ११॥ तेथुनि आठविल अंतरि। बालके जिति अंडोदरि। तैसियक दिनोध्यारी। स्मरोनि देति सर्वार्थ॥ १२॥ नाहि किरणी हुनि पडिला। न दिसे सुर्य कांति श्रवला॥ कापुस वन्हि भगटला। प्रस क्ष दिसे लोचनि॥ १३॥ तैसि निशानरि सेडोळा। शब्द झानि बिना ळभोळा परि अनुग्रहिला चिला काळ। आत्मानुभवि विरोध्याले॥ १४॥ तैसि गुरुचि बहुल लक्षणे। सांगतु आगळा बहुत गुणा॥ अमर तेहि आमर करणे हे सामर्थ्य तुज पासि॥ १५॥ धालुर्वादि या परिसावे॥ जिंतुके अंतर बोलति झाले। गुरु ह्मणति याम जिंतुले॥ जिंतुला पाउत्रे लोकिय॥ १६॥ वैरागा रिचा मुख्य मणि। आवचट समर्थ पारायणि। तोहि काउनि वरभुषणि। मु गुटि मिरवन्हपाचिया॥ १७॥ तैसेचु वाकेले माले। अपुले ह्मणोनि सिविले लेहाले। देवगुरु सहज विसरले। लयप्रसाद चरणाचा॥ १८॥ स्वामी द्वादि काच गुरु। माझ्या पाइ पादुका प्रगट। लेय विलेथा हुनि श्रेष्ठ॥ काभनो

कोणा अनुवादि ॥१८॥ म्हणानी नभजे गुरु विद्यापाय ॥ तो टाकुनी जाये
नरकालया ॥ गुरु भक्त नोदेवत्रय ॥ वधी होय निर्धारे ॥२०॥ ऐकोनि वि
द्याचे बोलणे ॥ भार्गवाचार्य संतुष्ट मने ॥ आलिंगुनि आदरे ह्मणे ॥ स्तुति कांहिं न
बोले ॥२१॥ नाशी परिहरिली मुर्छना ॥ लेभज पावलि गुरुदक्षणा ॥ यकभावे
अंतःकरणा ॥ लेथे स्तवन वाउगे ॥२२॥ परम दुष्टरा न वजाली ॥ मद्यपाने प
डुनि भ्रांति ॥ ब्रह्महत्या माझिय हाति ॥ बळ कारे कर विलि ॥२३॥ लेणे दोषे
दुर्जनी ॥ विष्णुह स्तो पावति मरण ॥ लेसे चि रापो नि मध्यपान ॥ वर्ज केले ब्रा
ह्मणी ॥२४॥ आजि पासुनि सुरापाने ॥ कोणही करि जो ब्राह्मण ॥ ता इहलोकि
निंद्य जाणा ॥ नरकवास परलोकी ॥२५॥ धरु नी आम मिकाच बळ ॥ मानुनि
ईश्वर वाक्य प्रबळ ॥ मद्यपान करिता प्रबळ ॥ अधःपतन पावति ॥२६॥
तो चि मर्यादा त्रैलोकि लिहि ॥ आद्यापि चालत आसे पा हि ॥ हरि हराचि
प्राप्ती नाहि ॥ भगवया शुक्राज्ञा ॥२७॥ या चि प्रतिचि रोक डि जाण ॥ शाक
नि करिति मद्यपान ॥ टाउक होय सर्व जन ॥ वाकिला पडे सर्वथा ॥२८॥ यावरि
संलापे निश्चणात ॥ सहस्त्र वर्षे पाकिले व्रत ॥ आला स्वर्गा जाउनी हरित ॥ श्रम
आपुला परिहारि ॥२९॥ माहा प्रसाद घेउनि गुणी ॥ मस्तक टेविला श्रीगुरु च
रणी ॥ नमस्कारीली श्री गुरु पत्नि ॥ देवयानि समेव ला ॥३०॥ प्रयाण करि तय

आवधरि ॥ देवयानि धरिला करि ॥ अपाद्धी वार वधिलिया असुरि ॥ पुर्णजन्म
माझनि ॥ ३१ ॥ युक्ति बोधोनि आचार्या ॥ जिवीवीत्या यक्य कार्या ॥ जेहा मज
फार निश्चार्या ॥ प्रीया होउनि आसावे ॥ ३२ ॥ कुळरूप विद्या गुणि ॥ तुज सारि
खा न दिसे कोणही ॥ माझनि पाउ चतुर रमणी ॥ दुसरे कोणही दाविणा ॥ ३३ ॥ या
लागी सोडोनि संदेहा ॥ होउनि माझ प्राणनाहो ॥ साह्य आचार्याचा स्नेहो ॥ वि
शेष करि न वादला ॥ ३४ ॥ कचे विनवि देवयानी ॥ बोलसि तआघडित वाणी
तुझा माझा यक रुछानि ॥ वासु जाला जाणसी ॥ ३५ ॥ जियउदरि तुझा वासु ॥
ला तेथ माझिहि वासु ॥ पिता गुरु दैवइशु ॥ ऐसु तुझा यक चि ॥ ३६ ॥ तुझी आझी
य कोदर ॥ बंधु भगिनि सहोदर ॥ या लागी बोलसि उत्तर ॥ का निकोसि जे १८
८ का वि ॥ ३७ ॥ मज बोळवि कृपा करूनि ॥ तुज मी शुक्रा समान मानि ॥ क्षो
भलि बोले देवयानि ॥ शतनष्टा कलघ्न ॥ ३८ ॥ उपेक्षोनि जातो माते ॥
संजिवनि न फळतु ते ॥ मंत्रविद्या होति व्यर्थी ॥ हे निश्चये जाणपा ॥ ३९ ॥
नं यरहस्यवो गुरुस्मरनि ॥ न्याय बोलता तमामुणी ॥ अविचार करिणि
चापी ॥ जलसि हा अधर्मी ॥ ४० ॥ जे बोलिलि सि शापवचन ॥ तेथें आ
पुलि शाप उसेपा ॥ तुझ्या रहो द्वितिय वर्णी ॥ भागिजेल निधारणा ॥ ४१ ॥
तुते न वरिल ब्राह्मण श्रोत्रि ॥ वरिल सामर्थ क्षत्रि ॥ विशेष कोपा

त्तरिगुरुपुत्री ॥ यालागिकाहिन बोले ॥ ४४ ॥ नपासि विद्यानफळेमाला ॥
फळलउपदेसिनलयाते ॥ जैसापरिसवेधुनिघालुते ॥ पावणकरि
जगाते ॥ ४५ ॥ ऐसबोलोनिसिध्रगति ॥ पातलादेवालोका प्रतिन
मस्कारि लाबृहस्पति ॥ देवगुरुनिजपिता ॥ ४६ ॥ क्विचारजापानलाज
नके ॥ नपानकरिआनरांके ॥ कुमरउपदेसिका मुखे ॥ विद्याफळल
ला काळी ॥ ४७ ॥ लालआलनेसंजीवनि ॥ विस्तारिलासुमनेभणि ॥ बिं
बालिजे सिसुर्पर्णी सर्वोच्चाय ॥ प्रसक्षा ॥ ४८ ॥ तेवेळिसयुक्तप्रकारा
दि ॥ देविदुदुभिचा नानावाद्यी ॥ कचपुजिले विबुधि ॥ सिधिसा
धिलीम्हणोनि ॥ ४९ ॥ दिव्यांबरे कनक सिंहासनि ॥ अभिषेवि
त्ना दिव्य रत्नि ॥ दिव्यगंधिचर्चिल सुमनि ॥ परमआल्हादेपुजिला ॥
॥ ५० ॥ प्राप्तजालावोजयकाळ ॥ ऐसहोउनिभामरपाळ ॥ निघ
ला जालाहलकल्लोळ ॥ करावयाभसुराले ॥ ५१ ॥ इति श्रीआ
दिपर्वभारता ॥ कचोपाख्यानपुर्वययाले ॥ मुकुंदेश्वरि कविविरचि
ता ॥ देशभाषा प्रबंधे ॥ ५० ॥ लपारसावे कविपंडिति ॥ त्युन्यते पुर्णकरा
वे मुक्ति ॥ जे सिदुर्बळाचि यत्नस्ति ॥ समर्थवेचिहा तिचे ॥ ५२ ॥ रति

प

श्री॥ आदिपर्वभारते॥ कचोपाख्यानं संपूर्णमस्तु संग: ॥२७॥ ५०॥
५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥ ५०॥०

६

॥श्रीकृष्णप्रसन्नः॥ साधल्यासंजीवनिसिद्धि॥ परमाल्हाद मानुनि बुधि॥ निघतेजाले माहा मांदि॥ आसावया असुराचि॥१॥ तया मार्गि रिमणीकेचन॥ चत्रदय वसंत रु तगहन॥ यामाजि सरोवर विस्तीर्ण॥ मानससरोवर सारिखा॥ थासहस्रदकिन धुपुल्हारे॥ विकासति तेथे सुवारे॥ रोलंब गातित आदरे॥ दिकमरा छेपरिसति॥३॥ तेथ म्रगसहस्रलोचना॥ चंपकगोरा नयावना॥ तिरि फरु निवस्त्राभरणी॥ जलि खेळति विवस्त्र॥४॥ दाहाराल परिचारिका॥ मा॥ जीरामीद्दा मुख्य नायका॥ देवयानि लावण्यलतिका॥ आपावेरि जळकेळि॥५॥ फळिकमळिय रथेरि॥ जळसिंपिलि परस्परि॥ गालिगजे तिसरोवरि॥ दिव्यअप्सरा जैसिया॥६॥ हदेखोनि आमरपाळ॥ विनोदार्थ पाट विअनिळ॥ लणे भ्रमे निवस्त्रा मेळ॥ गुंजाळि लायकत्रा॥७॥ दुरि परीसा निपुरु पवाणी लटकाधा विनलीयाक॥ निपी॥ वस्त्रवेठीला घाबिरपक्षी॥ फरोवनिल गवगे॥ ना॥ शर्मिष्ठ चेहेमउनखक॥ स्वार्ग विनवे ढिलेदरख॥ देवया॥ निचा क्षिरोदक॥ राजकन्या मेसलि॥७॥ दुरिगेलिया आमरगण॥ पुढेलि होउ

निसावधान ॥ आपुला स्त्रीबोळखुन ॥ चलाजात गमस्तकी ॥ ९० ॥ भार्गवी बोले कौ
धनेत्रि ॥ शिष्यपुजिका चिये पुत्रि ॥ पवित्रे चिवस्त्रे अपवित्रि ॥ नेसलिस अवि
चारे ॥ ९१ ॥ पितृभाग्य चढलिमदा ॥ उलंघीसि समर्ममरियादा ॥ येणें दोषें श्रेष्टपदा
पासुनी चळसि उध्धते ॥ १२ ॥ मासिया पितियाचे आज्ञाउदके ॥ पासुनि जिनसे
तु सा जनक ॥ राज्यपदाची थभिक ॥ शुक्र ऋपने बोपिलि ॥ १३ ॥ ऐकोनि कोप
लि नरेंद्र तनुजै ॥ म्हणे भिक्षुकियाचका सज्जा ॥ पोशीकला हेळसित लाजा
पोष्यकैसपावेना ॥ १४ ॥ अयोग्य विषयें सितंउ ॥ निरास्य धुरसी भाउ ॥ दात या
सि मागुलतोंड ॥ थोरीव बोले आपुलि ॥ १५ ॥ आवलोकीला लोकतिहि ॥ माग
ण्याहुनि परसा काहि ॥ तो जिवनोपायापाहि ॥ नौरवलुल्य भिक्षुक ॥ १६ ॥ यो
वियाचौपष्टिकळा ॥ चातुर्यता नगुणा गुळा ॥ मामोजाती गोळां गुळा ॥ आये
भासे परग्रहि ॥ १७ ॥ जैसि आदियाझाडे ॥ सन्मुख खोलति सुर्याकडे ॥ किपत्रे पस
रलीयरुडे ॥ आवरु नेणे सर्वथा ॥ १८ ॥ तैसा दातयासन्मुख ॥ सदपसरलाहे
स्तक ॥ नाना अपेंदुःख ॥ तेविभागलयाचा ॥ १९ ॥ निरंतर होउनि नागरिण
आहोरात्र वर्पि नाकारि ॥ उसावा ळगेजाउल्याकरि ॥ शुक्राचार्य आसुते ॥ २० ॥

तया भिक्षुकाचियकुमरी ॥ म जन्म हसि बोल क्षिथोरि ॥ आपुल्याजिव्हादे वकरि ॥ सिक्षापावसिसुबंधू ॥ २१ ॥ अपा गिरासिचिय हानि ॥ पुष्टिमदि लिमुष्टिघावि ॥ कुपिसाडुनिसमस्ति ॥ जाय जाल्या स्वच्छाना ॥ २२ ॥ भा गीविनिमालिनिरोष ॥ औसामाना निसंतोष ॥ दानविसातउ निरोष ॥ राज गृहिप्रवेश ॥ २३ ॥ लेचिकाकीत चिक्षणी ॥ वेधोनियारधियच व्यसना ॥ य यातिपातलासावना ॥ अश्वारूढ्यकाकि ॥ २४ ॥ धावता दवभारअंतरला ॥ क्षुधे त्रिशानअतिश्रांतला ॥ उदकशोधितपातला ॥ याचीकुपाजवळिके ॥ २५ ॥ लवयासचलोदकि ॥ रूपेइंद्रिसारिखि ॥ आरक्तकेशाचिरकंचुकी ॥ म्लान मुखसुविवस्त्र ॥ २६ ॥ दीर्घस्वरेकरिरुदन ॥ क्रोधेसंलग्नदोन्हीनयन ॥ रायदउनीअस्वासंन ॥ पुसतजालासाक्षेपे ॥ २७ ॥ तुकवणाचिनंदिनी कु मारिकिवासुवासिनि ॥ यथेप ॥ किसकोणवसनि ॥ खदकरिसी किमर्थ ॥ २८ ॥ तेणे दुःखद्रवजघाले ॥ देशेदानवाग्रासिता ॥ असे ॥ तयेजीववी निजसामर्थ्ये ॥ शुक्रा चार्यजापासि ॥ २९ ॥ सा चिकन्या मिगोरटि ॥ त्राणपाहलिसामान्यदृष्टि ॥ अगि त्रनेयेसंकटि ॥ लोटियेलमरावया ॥ ३० ॥ आताकनककाटनलेकति ॥ मासह स्तधरनिहालि ॥ कुपालुंनिकुपामुर्ति ॥ मजबाहेरिकाढाव ॥ ३१ ॥ कुलिराया

लवियवंतु ॥ यश्रखीर जाजगविख्यातु ॥ मम्सास्यत्राचियाहस्तु ॥ योग्यहोसिनि
धरि ॥ ३४ ॥ रायाचोजवलेवचनि ॥ लपाहेजातिचिहेश्राअणी ॥ मगअपुला
सख्यपाणि ॥ देताजालेआदरे ॥ ३३ ॥ करनळरातोसजेसुरंग ॥ नखमणिपाचे
दम्म राग ॥ सकुमारपपोभुपलिश्रृंग ॥ धरनिझलिवरुले ॥ ३७ ॥ निक्षेपका
ढिजपायाचे ॥ सिध्दिसाधिजेयोग्यकुशळे ॥ लेखिकुपिहुनिकपाळे ॥ आस
णकन्याउध्दरलि ॥ ३५ ॥ ममस्रपेजाइतातसदना ॥ श्रेहेआसादेअतः
करणी ॥ परिझणेवासना ॥ पुणकिर्तईश्वर ॥ ३६ ॥ स्वइछागेलीयारी
जात्तमा ॥ भागविपावलिअसुरग्रामा ॥ बाह्यप्रदेशीअशोकद्रुमा ॥ तलि
बैसेसरोके ॥ ३७ ॥ लेखुनिघुर्णिकासाक्षेप ॥ समिपपाचारिलाआरोप ॥ तिन्नतिसा
गनिरोपे ॥ शामींश्चदुःखुल ॥ ३८ ॥ आपघुर्णिकीवरायुक ॥ पितियाजाणविरं
ताल ॥ सांडुनिअसुराचासांगात ॥ आलाचियथुनिनिघावे ॥ ३९ ॥ सकुनिदुष्टा
चिसंगति ॥ सुखवसविआमरावति ॥ शिघ्यकरावाआमरपति ॥ सहवर्तिलिध
र्म्मा ॥ ४० ॥ ओसानिरोपजाणविजनका ॥ सखेदधाविनलिघुर्णिका ॥ दुश्चि
तसांगेकविनायका ॥ कन्यामरोनिवाचलि ॥ ४१ ॥ राजकुमरीननेउनीवना ॥
दुष्टवचनिफारनिछळणा ॥ सखिध्मावयाप्राणा ॥ उपायकेलानि

हुरि॥४१॥ताडण करु निपर हस्ते॥सां डिले न कुपाआलोलं॥देयये॥गवाच लितुले॥पाहु इछियेकाकि॥४२॥अे कानिपिनयासदृष्कटि॥त्यावो निपा लत्ताकन्ये निकटि॥सोबा नियर यराकटि॥शोककरिआक्रोश॥४३॥स्नेह कळवळु निपाटसि॥थुक्रांतविआ मजेसि॥अपमानबोल मजसि॥ खेद सांडिसा हिका॥४४॥द्रवया निम्रपोताल॥ना हि प्राणवधाचि व्यथा दुराकिचा संनाप चिंता॥साहवेना मज लागी॥४५॥वनिसर्गिशीने वृधीले घार कुपि निक्षेपीले॥नहुसपुत्र मोचन केले॥आपवलते मज लागि॥४६॥बहु काळीचा मित्रसंबंधु॥तो डियक वोसत्तारबंधु॥घटचि नासदु श्राचा॥४७॥नानालपाचियजोडि॥स्वकामाना सतिकोटि॥प रस्त्रहि घउरसाचि गाडि॥हवडियक हेळणा॥४८॥ज्वर वन्ही ग्रीष्म आत पु॥याचा उष्मा अहत स्वलु॥याहुनि बोलाचा संतापु॥आगळा असे॥म जवाटे॥५०॥हृदयि नष्ट लोहाचसळ॥साहोय इलआनल काळपरि दुष्कराळ॥चिज ळजळा॥मरणानि हि शामेना॥५१॥सोने आथवा हलचर पा॥मोडिल्या संदि विचेक्षण॥फुटले मोतिं तुटले मन॥आवरु नसके विधा ता॥५२॥जोलु विस्व अंगमणी मान्या॥विक्षयने जिंकिसि चतुरा जना॥

याउजबाल लिवचना॥असुराघरिमागता॥५३॥स्तवेंथ करितिअपिया
चिता॥नियपरान्नेत नुपाळीता॥तया मिक्षुका चिदहिल॥परहिनयाच
कि॥५४॥हेचिआसे नायथार्थ॥तरिमीप्रसन्नकरि नतिते॥शरणजा
उनिकोपाले॥५५॥आत्तायालेयेजुनीदेवा॥रीध्याकिजश्रेष्ठमघवा॥
हेतुज नमने जिवा॥घालकरिनताका॥५६॥उन्नाह्मणेजेकमाले॥
दैसदानचस्तविति ज्याते॥संकटि मामुलि जिवदानाले॥हीनुहेउनिया
परि॥५७॥त्रैलोकिचेवैभव जितुके॥तजयोजनी निज निष्टके॥ज्याचिया
सामर्थासितुके॥असानाहि ब्रह्मांडि॥५८॥ज्याचे जलदानमेघदृष्टि
जिवनोपाय जिवस्रष्टि॥स्वहास्वधाकारतुष्टि॥देवपावलिसमस्त॥
॥५९॥तयासामर्थाचिकुमारि॥केउनमानिहिनोतरि॥सकळदाल
याच्यासिरि॥मीरचमाझीपादुका॥६०॥स्तवनिमागणीयाचशोक
तुझेआगिनलगदखे॥दखलेतकेयमुर्ख॥नेणोनियागुरुमहिमा
॥६१॥निचबालपणिचवचन॥लयाचिलघुलपा विजेत णां॥ले
परीसानिच्यक्षणा॥खेद काहि नमाना वा॥६२॥माझिया प्रता

३ ३

पाचिकळा ॥ प्रचितिहाचि नयाचिकाळ ॥ परिस्रो क्रोधाग्नीचिया ज्वा
ळा ॥ शांत कीजे मानसि ॥ ६३ ॥ क्रोध आधिविकाराधि ॥ क्रोधतोचि
माहाव्याधि ॥ क्रोध सुद्ले प्रमादि ॥ सारासार जाणिले ॥ ६४ ॥ क्रोधतो
चि भ्रंसार ॥ क्रोधलाचि सुतसंचार ॥ क्रोध कीजे पिशाच नर ॥ परम
चतुर विवेकी ॥ ६५ ॥ उपिबोललाउपिया ॥ क्षेमेने साहालि शाह्णी
या ॥ त्रैलोक्य संपति राणीया ॥ भोक्ता होये नायका ॥ ६६ ॥ यापरि
शांत निदुहित ॥ क्रोध देउनी संगात ॥ सुक्रपातला आश्चा निते
शानवद्र ज्याप्रश ॥ ६७ ॥ द्दष्टि नघालुनि भ्रुत्छानि ॥ न बैसु विणु ज्यास
नि ॥ उभ्या उभ्या जोडुनी पाणी ॥ उरा झो मागसखरे ॥ ६८ ॥ म्हणतु भी
देसदानव ॥ मजविणभ्रागसुखराणीव ॥ रूपानबंधुरले देव ॥ व
णेवाद्यउसयना ॥ ६९ ॥ प्रारब्धनेरले तेथ जाणो ॥ स्थरु विलने सरा
हणो ॥ संगुनिआवमाना चिस्थानै ॥ महत्व लप तो भिजे ॥ ७० ॥ नलगे
आवलेच पावो ॥ तव चिभ्रासनिसे विजरावो ॥ सासुनि मान हाणी वाघावो गत्वा
भइछी तो मुखी ॥ ७१ ॥ औको निभ्राचार्यी चिगोष्टि ॥ असुरकलांतभावि लिस्टष्टी
यकनस्तकि घालि लिपाटि ॥ यकसोब लिचरणाले ॥ ७२ ॥ रूपपवाह्मिणदेया ॥

आपराधकोणतेसांगावा॥तुवां घेतल्या आह्मासवी॥मरण रोकडियेका कां॥७३॥
तुझेनि बके ब्राह्मणोत्तमा॥तोड सिरखिलिशकप्रतीमा॥विष्णुप्रतापउनाचळ
गरिमा॥तृणप्राय आमुतं॥७४॥पाक कतेनि सुदले विरव॥मानलेउपटील्ले बाळ
क॥परिवासंडिलारंक॥तेथप्रयत्नकासिया॥७५॥दुकक्षिभयागदवडिता॥श्रीछ
रत्ना विआधर्मपंथा॥रक्षके प्रवर्तेनि घाता॥तेथप्रयत्नकायसा॥७६॥तेविता
आह्मा अवेहेरिले॥याचेना विम्हसानिर विले॥व्याघ्रवनियजविले॥गोरक्षक
घेनुते॥७७॥तथापि राधहोयविदित॥तरी आचारादेखात प्रायश्चित॥समुद्र
मज्जनपर्वतपात॥कापावकिप्रवेशा॥७८॥सुंकेहपोआश्रीलजनि॥पुत्रक
न्याबंधुपत्नि॥यासवन्युन्य अभुचेकर्णि॥घालुपाहेमुरवेत॥७९॥तथापि नसांग
तानकळे॥यालागी बोलिजेतेपोकाळे॥सामीषि ने माझिया बोळे॥क्षातके
रत्नाकाननि॥८०॥छ्छ्कुमिना नादुष्टवचनी॥तरहुनिसांडिलिकूपाजिवनि॥दे
वेचार्चली तेसदनि॥नप्रवेशो वनस्छा॥८१॥सांडुनि आलातुझा संग॥नालरिक
रिलप्राणत्याग॥यापरिहारा उपाय चांग॥उपाय द्रिष्टि दिसेना॥८२॥दानवह्र
णआचार्यदेवा॥शामि स्याकेतु नाकबा॥दंडकोणानेमावा॥सध्याकरिनस्वह
स्ते॥८३॥यागी यधिन आथवा आन॥देयथा निसदेउनदान॥रतुक्यासाखि आ

पुलमन ॥ सखेदकाहिनकरावे ॥ ८४ ॥ कृपापियुषमहोदधिते ॥ क्रोधविषार
काचेभरिले ॥ पातलेमाझिनिचिंते ॥ परमाश्चीर्यमानिजे ॥ ८५ ॥ देवयाभि
तुसबाळ ॥ सांगकवणाचआभिसकळ ॥ धेनुसरिसेवत्समेळ ॥ तैंविये
उतुजपासि ॥ ८६ ॥ देवयानिलेआपमान ॥ जालियासंलक्षकरिसिमन ॥
देविआमुतकेलियादिन ॥ तोहिआवमानतुझाचि ॥ ८७ ॥ शांतपियुष
रसाचपात्रि ॥ तुझहृदयिअतिपवित्र ॥ तेक्रोधाचेस्थानआपवित्र ॥ स्य
शौनेदिसर्वथा ॥ ८८ ॥ म्हणानिमस्तकिटेविलेचरणी ॥ क्षमानम्हणततु
चशिमुर्धिं ॥ शुक्रेस्परोनिआपाणि ॥ म्हणेएकविचार ॥ ८९ ॥ तुम्ही
जाउनियाचनि ॥ प्रसन्नकिजेदेवयानि ॥ तबोळत्यामाझामनी ॥ सह
जचिकाहिआसेना ॥ ९० ॥ देहदेहेंद्रुसहित ॥ समुदायसिपातलेतेथे
श्रीपर्वतापालखाजेथे ॥ जेविभ्रमरिद्धनि ॥ ९१ ॥ राजाआणीअसुरगण ॥
धरितिदेवीयानिचेचरण ॥ म्हणतिकृपेनआवलोकन ॥ करिआमुते
जननिये ॥ ९२ ॥ कायआवडलेसांग ॥ द्यावदुर्लभतेमाग ॥ पुरउनसकोळे
निलाग ॥ रागाआमुचापुरवार्थ ॥ ९३ ॥ अमुचिसंपत्तिजानजीवुके ॥ तितुके
शुक्राचेचापीके ॥ अनीथाआसलेतरिपाउके ॥ दिव्यआसेत्रियाचा ॥ ९४ ॥ देवया

निलपोहरिता।बोलसितरियथार्थी।तरिगासहस्त्रदासिसहित।दासिमाझिरामि
र।।७५।।करनिरेश्माझाकरि।।पितावोपिलजयाधरिलियहेउनिकाम।।रि।
सर्वार्थयावेमजवस।।७६।।रसुकेकरनिद्राविल्या।येथे।।माझाक्रोधाग्निहोइल
शांत।।तुमचेअैश्वर्यतेयथार्थ।।तेचघेउशुक्राचे।।७७।।अैकोनिगुरुकन्यचे
वचन।।राजाजालासुप्रसन्न।।पाचारुनिसिबिकायान।।कन्यायेथंआणावि।।
।।७८।।धाया।ह्मणेनृपबाळके।।चकुरुबुध्यानवनवापिके।।तुजेदेउनितुझेनि
जनके।।प्रसन्नकेलिगुरुकन्या।।७९।।यरिह्मणेयाहिपरता।।श्रेष्ठलाभका
णलाआता।।मजदेउनिमाझापिता।।अक्षईआसोस्वजनेसि।।८०।।रायघर
नियाकुमरि।।वोपिलिदेवयानिच्याकरि।।ह्मणतिसहितदासिसहस्त्रि
दासितुझिरामिष्टा।।८१।।पितालाउनियालग्न।।तुलवोपिलययागुणीं।।तथेंहि
यरत्नजाण।।सवेलागोनिसांगाते।।यासहितसहस्त्रपरिच्यारिका।।तुलदि
धलिकुळबाळिका।।अन्यथामासिवचनदेखा।।करनसकेविरंची।।८२।।ह्मणो
निचरणपीठविलामाथा।।क्रोधसांडिह्मणेआता।।हासोनियाह्मण
उहिना।।संतोषलिसर्वथा।।८३।।शर्मिष्टेसिदेवयानि।।प्रवर्तलितानस
दनि।।देखआपुल्यानिकेतिनि।।वसतजालेसंतोष।।८४।।यायरिक्रमल।

५

५

हे

किंचिंकाळ॥ घेउनीदासिचामेळ॥ इछुनीयनकिडेचा खेळ॥ देवियानिनि
घालो॥ ६॥ पुढतिपातलिसाचीवना॥ तेथेचि प्रारब्धयोगजाणा॥ वेधुनि
पारधिचियाव्यसना॥ ययातिराजापातला॥ ७॥ आम्रवनिसुखेलोळे॥ बैस
केघातलीकमळदळे॥ भक्ष्यभोज्यनानाफळे॥ घेतिदेतिभक्षीति॥ ८॥
कनककलतिकारत्नसुमनि॥ माजीकिडतीदोघिहंसिणि॥ किरिटिसि
क्षिमाजिस्वामीणी॥ रमाउमाजैसिया॥ पातेसिळावण्यखाणि॥ ह्मामा
जिमुख्यरुपी॥ रामीष्टा अपीदियथानि॥ सर्वगुणेआगळिया॥ ९॥ सकु
मारदेवयानिचचरणा॥ असुरिकरिसंवाहन॥ नानाउपचारिचामरव्यं
जन॥ बहुलाजपाजाणविति॥ ११॥ मृगपाठिधावलाशवो॥ अंतरित्व
पेनेदाविलाभावो॥ अपांनिदेखिलाठावो॥ शोधितत्तेथपातला॥ १२॥ अं
तरिराहोनियाउभा॥ पाहिकामिणीकदंबशोभा॥ दृष्टिविगुंतलिलोभा॥
तेमाघारेपरतेना॥ १३॥ मगह्मणेपांचतुरेश्वरि॥ सांगकवणाचितुसुंदरि॥
राजकन्याकामानदुरि॥ शावाकरितिलकवणा॥ १४॥ परिह्मणेमाहाराजा
मिब्राह्मणीशुक्राह्मजा॥ हेरामिवृषपर्वद्हनुजा॥ परंतुमासिनिजदा॥

दोघे

सि।१५।।दासिकें सिजालिज्ञपासी।।तरिहेस्वभावेंपुढेजाणसि।।श्रोतापुसे
नलविश्वासि।।वचनबोलिन्हपवर्या।।१६।।मिहिबोकस्वलुजल्गुनि।।त
थापिआपुलावचनिं।।नामगोत्र सकळश्रवणी।।प्रगटबोलअपुलें।।१७।।
यरह्मेपासीनहुराकुमर।।जाणययालिराजेश्वरु।।सोमवंशिचाश्रीगारु।।
संततिअत्रीरुषिची।।१८।।होलिउदकाचिवासना।।आलावर्तआनभाव
ना।।हासनिबोलपश्नानना।।रछ्यापुरवोरश्वरु।।१९।।विलासारिरवमीळे
डुसर।।तथसोख्याचासागरभरे।।यासिलुकावयालिसरे।।प्रयत्नीहिमाघा
रे।।२०।।योग्यायोग्यमिळेआवचट।।त्यालागिबोलिजेभाग्यश्रेष्ट।।अयोग्य
संगतिचेकष्ट।।खदेदेतिक्षणाक्षणा।।२१।।भ्रमररौघिलापुष्पयालि।।आक
स्मालमिळेमरलवि।।तेयरयरुउपक्षितिगेहेकैसेनिघडेल।।२२।।साहितदासी
न्हपनंदनी।।मीहोलसेपदस्थिराणि।।भ्मलारहोउनिपाणीग्रहणी।।इछा
पुरविआपुली।।२३।।राजाहयपातुभ्राणदुहिता।।विशेषकापिरसमर्थपि
ता।।यासिनेणलाहेकथा।।कानिकेसिऐकावि।।२४।।यरिज्ञपणमासेव
चन।।पीतानमेडिअनुप्रमाण।।त्याचेमिआज्ञेपाणीग्रहण।।आवश्यके
ल्नपाहिजे।।२५।।ज्ञपानिपाटविलिधाया।।वृत्तांतसांगमुकाचार्या।।म

विव्य निश्चये जाणोनिया ॥ आला तेथ भार्गवा ॥२६॥ आला देखो निज सुरगुरु ॥ नरेंद्र करी नमस्कारु ॥ आशीर्वच नि राजेश्वर ॥ गौरविला आचार्ये ॥२७॥ मनोरथावाप्तिरस्तु ॥ म्हणोनि तथास्तु म्हणौनी तथास्तु लो

वा कुनि गोटिया धिलि ॥२८॥ कन्या बोले ग्रह व्यजनकागलवोदर सागरिचा मौक्तिका ॥ गृहिकपालला परमनिका ॥ इंदिरावरा सारिखा ॥२९॥

लरिनु अपुले निहसैंके ॥ मातवो पिया कौतुके ॥ इतुले निमनोरथ म्हा

लुके ॥ सर्वपावरे मजलागी ॥३०॥ याचे गव्हा आन विचारु ॥ लत्याम्हा मिला

विभिचारु ॥ जाणोनि कन्याचा निर्धारु ॥ आवस्य म्हणे आचार्य ॥३१॥

बृहस्पतिसुता च शापवचन ॥ दुसरे ब्रह्मसुप्रमाण ॥ मनोगत कन्येचे

जाणोन ॥ शुक्र बोले आदरे ॥३२॥ रूप चातुर्य गुणनिधान ॥ आमोल्य

मासे कन्यारत्न ॥ कृपेने तुते देतसे दान ॥ अंगिकारि नरवर्या ॥३३॥ ब्रा

म्हणा कन्या क्षेत्री भर्ता ॥ या वर्णसंकर भया चि कथा ॥ लागोनें द्विमि सर्व

था ॥३४॥ निजसामर्थ्य आपुलिया ॥ [३५] म्हणोनि प्राणिग्रहणा विधिग

न्त पावो पिलि लावण्यनिधि ॥ आंदण्या वो पित्या रिद्धि सिद्धी ॥ सहसद

सिशर्मिष्टा ॥७५॥ पुढतिवोले आचार्यराज ॥ सांगणेआस रहस्यबीजा ॥ श
र्मिष्टानव्हनरेंद्रतनुज ॥ दासिमाझकन्येचि ॥७६॥ दासिपणिचदेवित्वेना
मु ॥ परिहन्नपकन्याउत्तमु ॥ इच्छादाइं इंद्रियनेमु ॥ चंक्रपालुकानकरावा ॥
॥७७॥ देवयानितयाच्युत ॥ इलवोपित्यारतदान ॥ माझेसाप महाविघ्न
पावसितताळाळि ॥७८॥ राजाह्मेणानघडेऐसे ॥ द्विजह्मणेप्रमाणाकर
निसंतोष ॥ पाणीग्रहपावसिसावकाश ॥ देवियानिवरियेलि ॥७९॥ शुक्राच
ळापासुनिसरिला ॥ अनेकवस्तुसंपत्तिभरिला ॥ रायपाव तादेशाला ॥ अ
श्रमसमुद्र आचमसे ॥८०॥ देवयानिशामीष्टेसि ॥ सहवर्तमानसहदासि
आज्ञामागोनिआचार्यासि ॥ नगरआपुलेप्रवेशे ॥८१॥ वंदुनिसा
गीविचचरण ॥ श्रृंगारवनिविश्रामसदन ॥ तेथ्येदेवि लिसुखसपन्न ॥
दासिसहितशर्मिष्टे ॥८२॥ वस्त्रेसहितशय्यासने ॥ हेमरत्नदिव्याभरणे ॥
भक्ष्यभोज्यमधुरसपान ॥ श्रृकचंदनइत्यादि ॥८३॥ अंगसंगविपाककष्ठ ॥
सर्वोपच्यारसुपुष्कळ ॥ राजाकरिचीसर्वकाळ ॥ मधजेसाधरणोते ॥८४॥
काहोनिदेवयानिचसंग ॥ इद्राउर्वसिचेभोग ॥ ॥८५॥ गिलालोसभाग्य ॥ नि

रामयशरीरि ॥ ७५ ॥ शुक्रकन्याच्या धलितेपो ॥ रायासिआल्हादअनंतगुण
ब्रह्मांडतेहिमानिस्वरूपा ॥ ब्रह्मलोकपदेसि ॥ ७६ ॥ वनिउपवनिपर्वत
मौळि ॥ गंगावनिसरोवरजळाउपरिकाग्निहिहेमराउळी ॥ क्रिडाक
रितुसंतोषे ॥ ७७ ॥ देवयानिचे संगसुरवाडे ॥ वर्षेनिमिष्याचेनिपा
डे ॥ क्रमिताकौतुकवतीवपुढे ॥ तेआदरेपरिसिजे ॥ ७८ ॥ मुकेश्वरा
चियाग्वल्लरि ॥ संचआवदानसुरतरूनरि ॥ वर्षिलिहिमणानिसफळ
संभारिलेउनिआलिरसरूपे ॥ ७९ ॥ इतिश्रीआदिपर्वभारत ॥ यया
तिआख्यानअद्भुत ॥ तुलाकिचेपरमामृत ॥ लोकोपकारापानले
॥ १८० ॥ इतिश्रीआदिपर्वणी ॥ ययातिआख्यानआठादशोध्यायः
॥ १८ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥श्रीगणेशाय नमः॥ यानंतरें श्रृंगारवनी॥ शर्मीचेसरवावंण्यखाणी॥ प
तिभोग विरहित कामिणी॥ सर्व सौख्य अनुभविण॥१॥ परंतु पुरुषसंगविण॥
उपभोग जो श्रृंगारचंदन॥ तेरवदिसां गरसमान॥ शर्मिष्ठेते वाटती॥२॥ म्हणे
पुर्वकर्म वकिवंत॥ तेणे आवमा निर्दिदु हित॥ दासिरुपें आले हात॥
तेथ पतिसंग नदरवे॥३॥ श्रेष्ठ न्रूपाचि नंदनि॥ श्रेष्ठवरु आसावा मजलागु
नि॥ आथवा दिन दुर्बळपणी॥ तेथेहि पतिसंग आसेना॥४॥ भोगितसभा
गसकळ॥ तुल्य मजला गतिहळाहळ॥ पुरुष विणशरिर विकळ॥ निद्रा
नळ गेली न सि॥५॥ रमणीयकासार जळविण॥ सुंदर मंदिर दीपविणा॥ रा
जशरिर प्राणेविण॥ तेवि पुरुष विणा मज होये॥६॥ जळ विण मछ तळमळ
ति॥ दिनमणिविणा दीनलोकमळि॥ ते विश्वतारें विणा वेल्हाळि॥ दिनेसी
दुखित॥७॥ तंव कोणे राजा ययाति॥ सकळरोना सजुनि निगुति॥ म्रगया
च्यां अवना प्रति॥ आसादरें निघाला॥८॥ दिव्य रथिं चुकजामा॥ चरिक
नकदंड चामर ढळल॥ छत्र आतपत्र विराजिलं॥ मस्तकावरि न्रपाचिया
॥९॥ पुढे वाजिवारणरथ॥ आउाउपायाचालत॥ कडकडोठव गाजात॥ पा
रधिलागी भुपति॥१०॥ न्रपकाननि प्रवेशला॥ तेथ म्रगया खेळो लागला

हे

ळ

यरि

आपार स्थापदाचा पाळा ॥ वधिता जाला वारधारि ॥ ११ ॥ नानापरि रणया सेळे
खळला सिपाल्ग ढळा पाळ ॥ नगरा परतला आस्ता चळा ॥ सुर्य पावत जाल
॥ १२ ॥ राजा ह्मणे प्रधानालागोनि ॥ आजि राहवे श्रृंगारवनि ॥ निके ह्मणे ॥
निलतक्षणी ॥ तेणे सैन्य राहविले ॥ १३ ॥ वाजि वारण पदाति रथ ॥ यारुठ
र उतरले वनात ॥ यया लिपातल्या हृरित ॥ नामीं हेच मंदीरा ॥ १४ ॥ तित
जाला बहु आनंद ॥ नमिले नृपतिचे पादारविंद ॥ सहश्र दासिचे वृंद ॥
नमस्कारिति नृपाले ॥ १५ ॥ उदकटे चिलदासि जनि ॥ रामिष्टान्न अंगेकरनि
नृपति सअभ्यांग घाळुनी ॥ नेसविले क्षिरोदके ॥ १६ ॥ षड्रस अन्न निपज
उनि ॥ दिधले राजयाने भोजन ॥ दिव्य मचकि अरळसुमन ॥ वरि निजवि
नृपाते ॥ १७ ॥ येळा कर्पुर सुगंध युक्त ॥ तांबुल नृपाले अर्पिले ॥ मगसले
ग्रोनि आवलोकिल ॥ राव वदनलीयेचा ॥ १८ ॥ जे सिसुवर्णा चांपक कि ॥
किवो तिलिमन्माथा चिपुतळि ॥ अयेन तारुण्य भरल वेली ॥ परि विनय
सकुमारा ॥ १९ ॥ राजस वदन चंद्रिका ॥ भाळिरे खिलि कस्तुरिका ॥ आकर्णप
रीयंत कज्जलरेखा ॥ नयनतेणे शोभलि ॥ २० ॥ दृढ निल्ह पीस्तन ॥ बरिसु

१

१

न

कुजा कि विराजमान। हृदरपद कद्धि ब्यमान।। तेज फाकेहरुयां कि।।२१।।
कर रावक कसुंडादंड। तैससरळ बाहुदंड।। कंकणे रत्नाजुगाविप्रचंड।। म
रनालेच तवावया।।२२।। सिव्हकटिवरि शोभे धटि।। उभिस मुखगी
रटि।। न्टपाल व्यंकटादि हरि।। लक्षितसवेल्हा कि।।२३।। असिदेखला म्रग
नयना।। मनेभाविनहु पनंदना।। खुलविले मग बोलेवचना।। रामीहि
सिआदरा।।२४।। नृपोपरिस न्टप नंदनि।। तुलावण्य चिंतामणी चिखा
णि।। तुजअंगसंगहावा मनी।। हबहु काळवसे माझीया।।२५।। परिसं
धी मात्तेन काचे।। तेआजी साधिलि निजदैवे।। देउनि अंगसंग निव
वावे।। कामानळ मा शिया।।२६।। येरि म्हणे जिम्रजा पाळा।। जै शुक्र
कन्यावैरी वल्हाळा।। तैम्यामनो पकजाचिमा ळा।। तुझा कंटि घातलि।
।।२७।। ते घडि ल मिथ्या कुटि।। ते कोपी हुआहे मोटि।। करिल आपुल्या
जिवासि सा टि।। म्हणोनि संगन करावा।।२८।। असबोलताच वचन।।२
पतिच्या पित्रा मदने करुन।। उटोनि दिधले आळीगण।। सुरत सुखरम
ला।।२९।। कामानळ रामरियावरि।। राजा विचारिअंतरि।। कोपेल

रुक्म। चिकुमारि॥ तरि हे गुप्त चि रखावे॥ ३०॥ न्रपसैन्यें सिंगेला नगरा॥
मग स्वामी हिन जाली गरोदरा॥ दिवस पूर्ण जाहला पुत्र॥ प्रसविलि आप
याले॥ ३१॥ शर्मिष्टे ते जाला कुमर॥ ऐकोनि चिंतातुर॥ श्रृंगारवनाअ
तिसत्वर॥ पाहो आलि साक्षेपे॥ ३२॥ तपो हे केस जाले प्राप्त॥ पुत्र लक्षणी
लक्षणवंत॥ यरिक्ष्मणे सव आश्रमात॥ रूपे भ्रयकपालक्षा॥ ३३॥ प्रा
र्थनिया तपोधना॥ मामां निघे तरुणा विर्य दाना॥ साचे नि प्रसारेहु जाणा
रतद्रिष्टि देखिला॥ ३४॥ देवयानी वदे वाच॥ नाम गोत्र सांग पा याचे॥ य
रिक्ष्मणे अैश्वर्य याचे॥ देखो नि सुखावय॥ ३५॥ भार्गवि ह्मणे निज
निर्धार॥ अैसे आसे न साचो कार॥ तरि मी संतुष्ट साचार॥ रवद काहि
असेना॥ ३६॥ रुषि विर्य भिजते जाळ॥ तुझ्ले मासेथा कुट्याळ॥ ऐसे बोलुनी
गुणवेल्हाळ॥ ग्रहा गेलि आपुलिया॥ ३७॥ यावरि संतुष्ट कर्मता काळ॥ देवी
यानि तदुसरा बाळ॥ रूप गुणि अति तेजाळ॥ तुर्वस नामा जन्मला॥ ३८॥ असु
रतनया न्रपसंगमे॥ गुप्त कानरि पुत्र लला मे॥ द्रुह्य चारु पुरु या नामे॥ कु
मारत्रय प्रसवलि॥ ३९॥ यानंतर येके दिवसि॥ देवयानि राजा यास रसि
विनोदे आलियाचनासि॥ तव कौतुके देखिले॥ ४०॥ राजलक्षणी साळ

कलालेजे पावक चंद्रादि समपुत्र खेळविले तेथे ॥ जनरा यकत्रयसुती॥
॥७१॥ राजा ह्मणे राजा आवडे लोकिता नयनि ॥ धावोनि बैसले अंकासनिं ह्मे
हे स्त्र श्र करि धरुनि ॥ फळ मागति भक्षावया ॥७२॥ आरखोनि दैवे लिंबळ काळ॥
चंडक लिउ द्विगुणलावि जाळ ॥ आश्ट बिंदु पाल ल्हेडोळा ॥ मग राजा विचारि लो॥
तु ह्मि रूपाचि आपार बिंबे ॥ ते सि अथिलि परमशोभे ॥ सलक्षिक रितिअयेतले
भे ॥ हबाळके ककपाचि ॥७३॥ राजा भया भितअतः कर्णी ॥ वचन ह्मणे जाल्यामौ
नि ॥ लस्करजे ताराजसद नि ॥ अधोदृष्टि लवस्ता ॥७४॥ मग कुमारातें करि धरुनि॥
ह्मणे मी जापा तुमची जननि ॥ पिता कोण दाखवा नयनि ॥ शर्मिष्ठेचा वल्लभा ॥७५॥
कुमरि तर्जनिका संकेते ॥ प्रगट केले नरवर्याते ॥ हृदे खोनि भामवी चित्ते ॥ संतापलि
बहुसाल ॥७७॥ सरोष बोले शर्मिष्ठेसि ॥ मज स्वाधिन माझी दासि ॥ मज नेणता म
ह्मिके सि ॥ वस्तु चोरिले पापीष्टे ॥७८॥ ह्मणासि तपिपाललोय थे॥ लगे बोधिले पुत्र
फळाते ॥ असत्य दोष लुझीयेथे ॥ जिव्हा करिल रानखंड ॥७९॥ असुर खापिमा शिंज
न्मा ॥ ह्मणानि असुरि दुष्टकर्म ॥ आचरलिसी रांकाधर्म ॥ साडुनि याभयमासे ॥८०॥
सक्रोध बोलता देवयानि ॥ असुरि बोले मधुर वचनि ॥ ह्मणे मी वदले सत्यवाणी ॥
ना हिअसत्य सिव तलो ॥८१॥ न्याय ते अधर्म ता आचरणा ॥ करिता पराचभयरार

पा ॥ व्यर्थ मानसि हे कोपा ॥ हे विने के विचारि ॥ ५१ ॥ जेव्हा तुवा वरिला रावो ॥ तेव्हाचि
न्याय केली लाना हो ॥ सर्वी शर्तीं धर्म तापा हा हो ॥ भ्रतार मासा निश्चये ॥ ५२ ॥
पुज्य मान्य स कव्हा परि ॥ श्रेष्ठ मात ब्रह्मकुमरि ॥ तुझी याद्रु राति कि विहिता चारि ॥
सा हेण मासा श्वधर्मी ॥ ५३ ॥ तु जहि पुन्य विशेषी ॥ श्रेष्ठ राजया राज रुषि ॥ म्हणोनी व
रले यथार्था सि ॥ रा हटि केल यथार्थ ॥ ५४ ॥ ऐको नि शर्मिष्ठे वाणी ॥ विशावकोप
लिदे वयानि ॥ म्हणे राजयाये चि क्षणी ॥ तुज याग्रु निजात से ॥ ५५ ॥ सहसा नव्हे
तुझिया सदनि ॥ आहे लात सांगे न्स्तुक्र श्रव णी ॥ राजा मस्तक टेवि लिचरणी ॥ क्ष
मा करि म जहलणे ॥ ५७ ॥ शुक्र भय अति उद्दीप्न ॥ रा मिष्ठे ने धरली चरणा ॥ करिता
बहु साल्व समाधान ॥ परि लस ह सा नायके ॥ ५८ ॥ पाय ल्रोढु नियामाथा ॥ शर्मी
ष्ठे ते हाणे लाता ॥ शुक्रा प्रति शुक्र दुहिता ॥ अति ससरे निघाली ॥ ५९ ॥ शालक रा
वया सवेग ॥ राजा धावमाग माग ॥ परि तमनाले हि ल्मपा रागे ॥ राहमा ग मंद्या ॥
॥ ६० ॥ सवेग पात की लात सदन ॥ दिर्घ स्वरि करि रुदन ॥ धरत निज आचार्य चरण ॥ तुकसा तुक
सि स्फुंदत ॥ ६१ ॥ दुखिल रखो मि सुंदरि ॥ जनका जापा वलभे लरि ॥ संगि हो ति असुर कुमरि
विपरित का हि वर्तले ॥ ६२ ॥ पुढे पात लिदे वयानि ॥ पाठि सि राजा ग्रहांगणी ॥ गुरु चर्या कें

२

३

टागणी॥ नमस्कारि सार्ङ्गे॥६२॥ देवया निझेपे ताला॥ रायस्वधर्मी होणा निकाला॥ दासि
माझी दियरुहिला॥ विश्वामित्र मज केलि॥६३॥ कळोनें दिला कवजाले॥ तिचे पुत्र वोपिले
तिल॥ दानिनाचु जन्मले तुले॥ देव हिन मज पाठि॥६४॥ छे दीक्षा सहाचअस्वथा॥ नवम
यदिधर्मश्चेस॥ भंगील्या म्हणोनि क्रूरमात॥ सांगावया पालला॥६५॥ जाणो निरायाचे
अपराध॥ दरवानि देवया निचरवद॥ आचार्यासि चटला क्रोध॥ माहारुद्र सारिखा॥६६॥
म्हणे धर्मज्ञ उच्छेदि धर्मी॥ ताचि बोलिजे पुरुष अधम॥ आला घेरश्या पडु गमे॥ आलों हरि
रिहरा॥६७॥ घे तारुण्य धनाचि हाणी॥ जरा जाकळु ये चिसपि॥ गंधाची क्याचा म्हास्म
शानि॥ पीसाच्च पापिष्टा॥६८॥ राजा यिन विजाडिल्या करि॥ कामानके दग्ध किनारि॥
प्रार्थुनियेका त आवसरि॥ रत्नु प्रदान याचिले॥७०॥ अतिनें दिला रत्नु भिक्षेते॥ म्हण
ह यादि पातके याते॥ येणे धर्मेरा स्त्रमले॥ वियदिता मीजालो॥७१॥ देवया निकुरा
वोनि॥ नाहि च तेले अधर्माचरणी॥ गुरुल पाहे कुराळ वचनि॥ मीजाण कुटिळाचा॥७२॥
अंतरि धरुनि विषबुध्दि॥ त्याला विघचन धर्मसमधि॥ आचरे अनाचार विधि॥ तो दावि
कुद रामा॥७३॥ ऐसा तो अनुवादिलिते राया॥ माझे शापें कीन वचे वाय॥ बोलतेक्षणी
काया॥ वलित पलित आणिके॥७४॥ चटनी वोसपड लिद रान॥ अंधत्व जातके नयमा॥ ब
हिरत्व पातले सुश्रवणा॥ हस्त चरण न चळति॥७५॥ सा शिरी उठिला कंपु॥ मर्कट रूप अवग

लिं पु। चावळे लाहि याम्लानु। आर्थहिनउ मजेना॥ ७५॥ मस्तकस्मश्रु निळेनळे। बका
चे रंगे अतले धवळे। घ्राणी कफ आमुखि लाळ। श्रवणि नैकु ऐकु॥ चउतानि गुणा ले
तैया गुणे। घनुष्या कानिआ लस्ताण। नम्र विनत मरण क्षणे। प्राणादान खालता॥ ७६॥
विकार रोगाचे दारुण। काम ति कुश्चीलचि बापा॥ त्रास मानोनि स्वकीय जनि। धाकेप
के लिप रोले॥ ७७॥ ऐसि जरहि मिठि। पापपड लिन्ह पाचे कोट। दंड प्रायेन मायष्टि।
कर निप्रार्थीस्थरकाले॥ ७८॥ देवयानि सिशोभकर्मु। अद्यापि जालि नाहि सामु। तु कपच्या
केल्मदमु। कामना पुर्ण करावि॥ ७९॥ देवयानि सिभागरली। अजु माळ पुरलि नाहि अ
र्ति। यालागि जराकरुनि परति। तारुण्य देयि मज मास्ति॥ ८०॥ ग्लानि त्यापिता नहुष
लनय। कुपैन कच किले ब्रह्महृदय। अणे वरदो कि आप्रमेय। ऐकमाझी महिपती॥
॥ ८१॥ तारुण्य याचिता कुमराते। तु मी वाक्य ऐकउनि साते यौवनतुने प्राप्त होइल तुते
लोदेयिल तयाचे॥ ८२॥ मद्वाक्य प्रतापाचे बळ। प्रचिल पाहे पात्ता काळ। राजा म्हणे दीन
दयाळ। विनंति केली परिसणे॥ ८३॥ जो निज वय बापिलमाल। मिरेयिन स्वराज्याते
य विषयि प्रसन्नचित्त। अभय दिधले पाहिजे॥ ८४॥ ठोले सचि म्हणे गुरु। जो तारुण्य
वोपि कुमर। तो राज्यधर वंशधर। आचरथ्यलु वाकरावा॥ ८५॥ येविधि माझी चि
ति। नाहि स्वार्थ विषादस्वंति। आज्ञा मागानी नृपति। नमरा प्रतिपालला॥ ८६॥
पाचाहि पुत्राते पाचारि। म्हणे मम माझा वंदुनि सिरि। तारुण्य सहस्त्र वर्षे वरि। देउनि जरा

श्विकारा ॥८९॥ सहस्र वर्षानंतर पुढती ॥ चाइन वार्धिक्या चिवुथी ॥ तुम चेता
रुण्य तुह्मा प्रति ॥ संचरल निर्धारे ॥९०॥ ऐसे उत्तर सपात्रा वरी निरविते ॥ उटविजे
तैसा भोगमर्थी ॥ अपुर्ण माझा मनोरथा ॥ पुर्ण करावा वयदाने ॥९१॥ शर्मीष्टाच
कनिष्ट कुमर ॥ वेगळा करु नि पुरु नृपवर ॥ चौघ मन पाहिला विचार ॥ आटक
आह्मा वाट तसा ॥९२॥ दुःख दोषाचा आगर ॥ वार्धिक्य तेचा नको घोर ॥ त्याचा
करुनी अंगिकार ॥ तारुण्य आह्मा नेदवे ॥९३॥ विशेष मा दे संयोग कामा ॥ ता
रुण्य मागसि पुत्र आह्मा ॥ देता मातृगमन कर्मा ॥ पात्र आह्मी निर्धारे ॥९४॥ ऐसे
कोशि पुत्राचे उत्तर ॥ पिता कोपला अतिसत्वर ॥ अणे दुष्ट हो नि दुर्धर ॥ शाप
घातला चौघ हि ॥९५॥ यदु यादवकुळ संतति ॥ आराज्य छत्रहीन राज्य संपत्ति ॥ प
राचे न आश्रये जिति ॥ महेंद्र वयान से ॥९६॥ तुर्वसा तुझे संतान ॥ भोहि
सक मध्यपि जाण ॥ आरक्त रोम वर्णी यवन ॥ समुद्र वासि जन्म ति ॥९७॥
प्रतिलोम जअधर्म निरत ॥ गुरुदारा संगासक्त ॥ पशु धर्मी पापनी रत ॥ ज
न्मति लद्दरिद्री ॥९८॥ द्रुह्या तुझे विर्य संभवि ॥ नौकाजीविति मछ जीवि ॥ भुतभो
ज ययाना वि ॥ जन्मतिल अराज्य ॥९९॥ आणा तु ज अन्वय जात ॥ आप्र यौवनि
पावति मृत्यु ॥ हिन वर्णी धर्म रहित ॥ जन्मतिल दुरात्मे ॥१००॥ यंत्र कार लोहका

राज्य क्रांति रहित नर । वेदबाह्य असिपामर ॥ निचानिच जन्मती ॥१॥ चौथे आपु
निकले परते । मग पाचारिक निश्चाते । अलिंगुनि प्रेमे हृभरिते । प्रेमादरें बोलता
॥४॥ ह्मणे पुत्रा तु पुत्रा नमा । पुत्र तु माझा प्रिय आत्मा । वयोदर करा नेमतो मध्या
सफल केले पाहिजे ॥२॥ ऐको निपित्र मुखिचीवाणी । पुत्र मस्तक करे विलाच
५ रणी । अवस्थ ऐसे त्रिवार वचनी । बघह स्त्र उनुवादे ॥७॥ शरिर प्राण यवन ५
धन । सर्व तु से वद प्रमाण । तुझे तु जद्या वया कोण । संदेह क प्रिदु राला ॥५॥
इखो निज राज जर रूप । मातेउ पजे देह संताप ॥ माझ निवये तारुण्यदीप ॥ पु
ढलि उजाळि आपुला ॥६॥ ऐको निपुत्राच बोल । पिया पात्तल स्वानंद जोल
आळिंगुनी ह्मणे अमोल । ते ते सर्व पावसि ॥७॥ केले म माझ चपाळण । तु जमी
सदा सु प्रसन्न । जव्हा जे जे इछिमन । ते ते संपुर्ण पावसि ॥८॥ अयुष्यवंत आरो
ग्यवंत । बळवंत व्य विवेकवंत । तुझे निविय जे भाग्यवंत । पितृभक्त जन्मलि
॥९॥ माझी या राज पदि वाजा । भाग्य भागीति तुझिया प्रजा । ऐसा प्रतीज्ञा सार्व
माझा ॥ मेरु प्राय भगेना ॥१०॥ राज्यधर वंशाधर । माझ परि तु सकमर । ऐसा
घेइ आक्षयवर । माझा अपरिरु क्राचे ॥११॥ ऐसा बोलता मेहादरा वय

पाळिले परस्परे ॥ तारुण्य लेइजे नृपवेरे ॥ जरक मेरस्त्री कारिली ॥ १४ ॥ जे वि
काराध्या राकि ॥ यक येका चरूप होति ॥ तारुण्य बाधिर्क्य जैसियारिती ॥ पितापु
त्र पावले ॥ १५ ॥ लोहानि तारुण्य अमोलिका ॥ नृपपावला परमाहरिला ॥ मग
पाचारि उभय नायका ॥ असुरि अपि ब्राह्मणी ॥ १६ ॥ सम स्वधर्म अविरोधि ॥
कामपुर वियथा विधि ॥ भयवनी ताचे संवादि ॥ सुरलानंदे क्रिडता ॥ १७ ॥ यथा
कामा सह तोषे ॥ यथाकामे यथासुखे ॥ स्वधर्मपाळक विवेका ॥ तु सिया जैस
र्लत ॥ १८ ॥ यशील सकळे देव ॥ स्वाभिलाषले पितु सर्व ॥ अनुग्रहे दिनमा
नवा ॥ दुःखस्तु भिहिरतले ॥ १९ ॥ इछिल पुर्ण करुनि काम ॥ सुरिचके ले हि
जसत्तम ॥ प्रजापाळणि वांग नियम ॥ चकोनेरि सविधा ॥ २० ॥ इछाभोजन
रसोदपानि ॥ अलितय तिपाघिले प्रतिदिनी ॥ अन्नस्वरा करुणागुणी ॥ शु
द्र्याति पाळिल्या ॥ २१ ॥ देशमारक ग्राममारक ॥ मार्गमारक ग्रहभेदक
पारा लस्कर बहुमोहक ॥ मनुष्य घाति बहुवेषे ॥ २२ ॥ लस्कर अपि अतिसार
निग्रहशासने शास्त्रघार ॥ महिमंडळि केलेना हि ॥ दोष जैसे कृतायुगि ॥ २३ ॥
सिरछेदन शुळेसदन ॥ यंत्रमुखि निक्षेपण ॥ कुंजरचरणी घातले चुर्ण ॥ दंडशा
सन रायाचे ॥ २४ ॥ हस्तदंड पाददंड ॥ कर्णघ्राण चक्षुदंड ॥ जीव्हादंड खंडखंड ॥

रीरिकरणकुष्टांचि ॥२३॥ यापरि चोर जारहनन ॥ कलियाजोडे महायज्ञ ॥
प्रज्यासु खांडा निपुण्य ॥ विभागे देतिन्रुपाते ॥२४॥ न्यायपाळुनि सक
ळ प्रजा ॥ स्वधर्मे भोग भोगिले वोजा ॥ सहस्र वर्षे लोटला लज्जा ॥ वैराग्य
चिपातलि ॥२५॥ पश्चातापे वेद्ये सुमति ॥ विचार उरवाळ मात्र निगुतीदे
लावांतिउपजलि चित्ति ॥ कामपथ परिहारा ॥२६॥ तेथे जिवें वरिष्ठ अलंक
र्पा ॥ अणे हे अन्त्य मन वासना ॥ भोगिता हि श्रांगिली तृष्णा ॥ दिवस दिवस
होतसे ॥२७॥ सरलि आयुष्या चि जोडि ॥ ठेलि इंद्रीबळाचि प्रौढि ॥ तरि विषया
तृष्णौति वाढी ॥२८॥ आगळी दिसे वाढता ॥२९॥ भंगला कुंभ शिता हाति
से विस्चि विलागिला पुढति ॥ तैसे विषय विषय भोगभोगिले अंति ॥ न
दिसे काहि रावावस्था ॥२०॥ हचि पाप भक्षिता वैश्वानरा ॥ नदि पारा नजळसा
गर ॥ विषयभोगिला पामर नर ॥ तृप्त नव्हे कल्पांति ॥३०॥ धान्य हिरण्य पशु
व निता ॥ स्वइच्छाचरे काळ भोगीता ॥ पुरे पुरे न लगे आता ॥ अणता कोण्ही
ही सेना ॥३१॥ आता जाणत नेपुरुषे ॥ याग करणे हेचि विशेष ॥ तेणे परत्रि
सायकाश ॥ विश्रांति तेपावेल ॥३२॥ विषयांगविषमोक्ष ॥ माझु निश्चण

६ (left margin, beside line 5)
६ (right margin, beside line 6)
ची (left margin, beside line 7)

ति ज्ञानदक्षा तेमुख्य सभेचे अध्यक्ष ॥ माझे मति मानले ॥७३॥ विप्रयत्ना
गुनि समस्त ॥ उभय अंगना समेवत ॥ वनि होउनि वान प्रस्त ॥ आत्म हिता
र्थ साधावया ॥७४॥ मृग पक्षि वृक्ष सांगी ॥ केवा निवे त्याची अंगी ॥ तप
श्चर्या आचरे नजगी ॥ जे न करवे तापसा ॥७५॥ पुत्र पाचा तुनि सुमति ॥
अंकी घेतला परम प्रिति ॥ अनेक निष्ठा श्रेष्ठ अर्थि ॥ पुर्ण केलि वाय का ॥७६॥
घेइ वयसा हे आपलि ॥ राज संपदा तुज वो पिलि ॥ माझीये अति वचन फु
लि ॥ पुष्पांजु लि तव माथा ॥७७॥ सर्वज्ञ क्षिया वंश ध्वजी ॥ चरद्भला का मि
रवे माझी ॥ पृथ्वीपाळु नि वसे राजि ॥ अचळ अज्ञे माझीया ॥७८॥ माझी आ
ज्ञा पाळि थोरा ॥ या लागी तुचि राज्य धर ॥ श्रेष्ठ ते आ नाधिकार ॥ अव
ज्ञा दोष मि केले ॥७९॥ करि प्रजाचे समाधान ॥ तेणे माझे पाळिले वचन
ताम्या मान्य केला मान्य ॥ तुम्ही विरोध करावा ॥८०॥ कनिष्ठ स्थापिला
जेष्ठ स्थानी ॥ तुम्ही वर्तावे या जवळी ॥ अवश्य जनि सकळि ॥ पुरुत्र चिरंव दिला ॥
॥८१॥ ऐसे उनिज राज जर कथा ॥ करि धरुनि उभय वनिता ॥ कांतार प्रवेश तो समता ॥
यासी गुनि ययाति ॥८२॥ करुनिया अरण्य वास ॥ ताप समेकि वर तापस ॥ तिव्र तपा

-याह व्यास॥ धरिता जाला निज धैर्य॥४३॥ निग्रहुनि इंद्रियग्राम॥ दवडुनि सांडिले-
क्रोध काम॥ लोभ ममताचे कर्दम॥ लागोनें दिअ गुहि॥४४॥ घेउनि वानप्र
स्थाश्रम॥ वन्हीमुखि नित्यहोम॥ फळेंदकि क्षुधाश्रम॥ जाति लिचा परिहारि
॥४५॥ स्नानसंध्याजपहवन॥ नित्यस्वाध्याय देवतार्चन॥ देवऋषि पितृतर्पण
विधिने सांग संपादि॥४६॥ शिलोंछवृत्तिअवलंबन॥ तेणेंचि शाकअन्नभोजन॥
ऐसिसहस्रवर्षे जाण॥ कार्या साधक लोटला॥४७॥ यावरि तिसवर्षेवरि॥ शरीर
नेमिलें जर्जेहारि॥ वायुभक्षणे निर्धारि॥ वर्षे यक तपस्वि॥४८॥ पंचाग्नीमाजी
काया॥ वर्षयेक दंडिराया॥ दृढासनियकपाया॥ चरणाउभा षण्मास॥४९॥
यानंतर पुण्यकीर्ति॥ लाहानि दिव्यदेह प्राप्ति॥ स्वर्गी प्रवेशला सुकृति॥ सर्व
हुनि आगळा॥५०॥ वसु साध्य मरुद्गण॥ यक्षगंधर्व सिद्धाचारण॥ विमान
यानि आवघेजन॥ वेगिं सन्मुख पातले॥५१॥ सहित देवसवेश्वरा॥ स्वरूपा
तला समोरा॥ असनि पुजिला राजेश्वरा॥ अयादरे समस्ती॥५२॥ तथ वळे
पाले विमानि॥ स्वइच्छा प्रवेश ब्रह्मसदनि॥ तेथहि मानपावानि॥ नंदनवनि क्रि
डला॥५३॥ सुर्यसामधर्मस्थान॥ ययाति पातला अवलोकन॥ वोपुनिस्वर्कि

यं सिंहासन ॥ बंधु हास्ति वेळ मासि ॥ ५७ ॥ कोलुके यके दिवसी जाण ॥ सहजपा
तल ॥ शक्र भुवन ॥ इंद्रं देउनि मुख्य स्थान ॥ गौरउनि आदरे ॥ ५५ ॥ ऐश्वर्य
देखोनि अति अगळे ॥ सुरे शाप ॥ तलार्पनिले ॥ कुटिल भाव न्हदुं मवाले
वचन बोले नृप ॥ सि ॥ ५६ ॥ राज्य देउनि निज नंदन ॥ जरा घेउनि जातासी
वन ॥ सावकि हितोपदेश वचना ॥ बोलिला सिपुत्रसि ॥ ५७ ॥ तआमुनेक
वेश्रवण ॥ ऐकला पावले विश्रांति मन ॥ पुंण्य लोकाच सहज स्मरण ॥ पाव
न कीर्ति ऐकतिया ॥ ५८ ॥ देव नाहि जरि दुर्बळा ॥ समर्थ पाहवे डोळा ॥ राजा अरज
पवो भोग्य ॥ पुत्रोपदेश अनुवादे ॥ ५९ ॥ गंगायमुना मध्य भुमिके ॥ राज्य भोगावो ति
तुके ॥ इतर भांग्य प्रत्येक ॥ बंधु तु सभ क्षिति ॥ ६० ॥ धरे तुल्य धरा ॥ विसमा ॥ स
य माधुर्य वाग्मीयमा ॥ आधीपाळो निब्राह्मणोत्तमा ॥ मग अजातसाभा कि
॥ ६१ ॥ क्रोधियादुनि श्रेष्ठ अक्रोधि ॥ हव मी चतुर जाणीजे आधी ॥ ६२ ॥ ज्ञा ॥ कर्य
दुनि सुबुध्दि ॥ सहनसीळ आगळा ॥ ६३ ॥ आ मानुष्या हानि माणुस ॥ विचार
जाणावे विशेष ॥ केवळ नेणाया माजि विदुष ॥ श्रेष्ठ पंडित विवेकि ॥ ६४ ॥ कय
र वाग्बाण वर्म टाइ ॥ मरणांत सौख्य पराचे हृदयि ॥ राहे ऐसे सेदुरा की घाइ ॥

मारनकिजेकोणाते ॥ ॥६४॥ परवर्मभेद निंदु रांकि ॥ लभवलक्ष्मीअकिर्तिभ
वगति ॥ नवाचाप्रत्येक्ष शिष्यकि ॥ हींसाकारिआज्ञात्के ॥ ६५॥ आणो निंदु वांक्य
न बोलावे ॥ पराचेआपणासोहा निजाचे ॥ याहुनि श्रेष्ट साधन बरवे ॥ भुव
नत्रइआसेना ॥ ६६॥ साधु सद्भावे पुजावे ॥ सज्जन संकटि रक्षावे ॥ खळा
पवादसाहु निजावे ॥ हे चिवर्तणो श्रेष्टाचि ॥ ६७॥ सत्य विनीत मधुरभाषी ॥
सकळप्राणिवस्यत्यासि ॥ कोणापासुनि तयासि ॥ आपायका हिअसेना ॥ ६८॥
मुख्यसत्यअंगे विनित ॥ तेणे जिंकिले जनसमस्त ॥ इहि लक्षणी अक्केला ॥
चेलुरे जालपाहिजे ॥ ६९॥ सर्व स्तुतिकणाव ॥ नयानमरकारिलिद्ये ॥ अक्षयसु
खवैभव ॥ चढेवढिवो पिता ॥ ७०॥ याच्लागीअवाच्यपुरुषवचन ॥ नबोलावे
गलीयाप्राण ॥ कराचापुज्याचापुजन ॥ कोणाकाहिन मागावे ॥ ७१॥ ऐसेउप
देशो निकुमर ॥ मीपावलो वनगंव्हारा ॥ भलाभलाह्मणे निचतुरा ॥ याके
बोले मागुति ॥ ७२॥ मनुष्यलो कियज्ञदान ॥ पुंण्यजोंलीकोणकोण ॥ तेऐको
विलुसे निवचने ॥ ऐसिभावडि मानसि ॥ ७३॥ हि व्यंक्तकनिवासिं ॥ त्या
माझितुझीयसुकुलसि ॥ लुक्पापावे नाआहासि ॥ प्रगटकेल पाहिजे ॥ ७४॥

ऐसें बोलता पाकशासन ॥ राजा जाला हास्यवदन ॥ ऐसें विचारीं विण वचन ॥ सर्वज्ञ कवि अनुवादे ॥ ७५ ॥ कैंच सागरातुल्य कासार ॥ मेरु समान गिरिवार ॥ सुर्य सारिखें तेजाकार ॥ कोणतें वस्तु उपमावी ॥ ७६ ॥ माझिया प्रचंड पुण्याचा जो ॥ तुज कोणे घालिजे काण काटाळा ॥ ब्रह्मादि सम रुधिका मेळा ॥ पासंगा लेन पवति ॥ ७८ ॥ माझीया पुण्य धनाचिका हणि ॥ ऐकता संख्या न धरवे मनि ॥ माझी करावया करणी ॥ शक्ति कैंचे अनाते ॥ ७७ ॥ ऐसें बोलता ययातिराज ॥ राक्षभावि साधले काज ॥ कोपानि ह्मणे न यलाज ॥ स्वस्तुति मुखें बोलता ॥ १८० ॥ सकळ स्वरूप ईश्वराचे ॥ महिमा न जाणे कोण कोणाचे ॥ श्रेष्ठ अवमानुनि वाचे ॥ गर्वि स्वाध्य लाभ निति ॥ ८१ ॥ गर्वे नाडिले तपाधन ॥ सुविधान सिवि स्मरण ॥ स्वकिर्तिनि भस्म ति पुण्य ॥ तें लवघडले तुज लागि ॥ ८२ ॥ पुण्य लोका पासुनि पतन ॥ पावति अंतवंत स्थान ॥ ये चि काळे नक्षगना क्षण ॥ मृत्यु लोकी प्रवेशो ॥ ८३ ॥ ऐसें बोलता सुरेश्वराते ॥ ययाति विनवि जोडल्या हस्तें ॥ कें लेनि कर्मे सुखदुःखाते ॥ प्राणी पावे सर्वथा ॥ ८४ ॥ माझे निमी पाव लो खेद ॥ हा तुज कासया टेव पराध ॥ ना टउनि मम मापराध ॥ यक देथि मज आता ॥

॥८५॥ स्वर्गापासुनि हिन अक्रति ॥ पतन पावे न अधः पाति ॥ पडे न तेथ संत
संगति ॥ जोडे असे करावे ॥ ८६॥ साधु संगि न्युन्य ते पुर्ण ॥ सौते से वारम
ण ॥ आपदा संपद समसमान ॥ सं ज्ञान संग जोडल्या ॥ ८७॥ याला गि संता
च संगति ॥ मातठा कृपा कृपामुर्ति ॥ इंद्र दया अद्रव लाचिंति ॥ शांति अनी
भानुवाद ॥ ८८॥ चरदचच निसल श्रनेत्र ॥ अयेन रेद्र नहुष पुत्र ॥ पडसि
लेथे अतिपवित्र ॥ माहानुभाव भेटति ॥ ८९॥ याचे नियोगे सिघ्र गति
पुढति लुजस्वर्ग प्राप्ति ॥ पावसि तेथ संरायचिति ॥ न धरि काहि प
वीत्रा ॥ ९०॥ पुढ तरि होर गाहापा ॥ न करि कोणाचि आवगणा ॥
आत्महितार्थ सुखसाधना ॥ भुतमात्र आसावे ॥ ९१॥ असे बोलेलवन
ला ॥ ९२॥ असनि चळलान्त पाळ ॥ जैसे खच लेरविमंडळ ॥ कि नक्षत्र
उलंडलि कि ॥ ९३॥ यापरि लोटिला ययाति ॥ प्रथ्वि लक्षील अधोपंथि
उतरला साचि यअंगदि सि ॥ दाहि दिशा जिउ घेडा ॥ ९४॥ अंतरिक्ष मंडळेच
रा ॥ अवघे करिति हाहाकार ॥ ॥ ययाति स्वर्गभोग नेथवे ॥ मनुष्य मरणासी
सिवा ॥ ९६॥ असो ययाति पडिला असा ॥ पुढ विनोद वर्तला कैसा ॥ ता श्री
व्यास वदला ते सा ॥ मुक्तेस्वर कवि वदे ॥ ९७॥ ५ इति श्रीमहाभारते आदि

पर्वणी ययाति स्वर्गलोक पतन नाम नवदशो
मोध्याय प्रसंगः ॥१९॥०६५०॥५०॥६५

॥ श्रीरामचंद्रायनमः ॥ छकणाकरा निकपरयुक्ति ॥ इंद्र लोटिला न्हपयया ।
ति ॥ वरुनि पडताक्षीति ॥ कौतुक केसे वर्तले ॥ १ ॥ आ छकादित पश्चीवोप
गंगा वटा क्रियाग ॥ याचियाहो मधुम्रेआंग ॥ आकाशाचभेदिले ॥ २
हविगंधे पवित्र धुमा ॥ स्पर्शकिरी ताराजो त्तमा ॥ पडत पडताभाजिहो मा
कौतुक केसे वर्तले ॥ ३ ॥ धुम्र नव्हे मुनि सुकृते ॥ वर्चा वरिल होते ॥ अश्क
लेपा आश्चर्य येथे ॥ काय द्रिष्टि देखतसो ॥ ४ ॥ गगनिहु निरखचलबिंब ॥ अ
तरिक्ष राहिले नसता स्तंभ ॥ अवलोकुनि होतसे लाभ ॥ अनंदाच्या उंतरि
॥ ५ ॥ दुरुनि वंदे जोडुनि पाणी ॥ विनंति बोले मधुर वाणी ॥ विष्णु समानरूप
गुणी ॥ सुर्य चन्हीसमतेजो ॥ ६ ॥ दिव्यदेहि दिव्य अगळा ॥ दिव्य कुंडले दिव्य
माळा ॥ दिव्यगंधे सुतेजाळा ॥ दिव्यांबरे शोभति ॥ ७ ॥ तोतुकचपा परमपुरु
षा ॥ सकळाहृदइ चिया जीशासा ॥ तुझे संकटपावो नाशा ॥ आमुचे भिरवी
ने ॥ ८ ॥ साधुजन सुदल्यापाटि ॥ शक्रहि पाहो न सके द्रिष्टि ॥ सुकृत नापासो
नि वळला श्रृष्टि ॥ या अश्रेया संताचा ॥ ९ ॥ प्रतिष्टेपासोनि भ्रष्टला ॥ तो

सत्संगयोगे बळेवहिला ॥ पुंडलिम हिमे तेपावला ॥ वंद्या जाला विख्यात ॥१०॥ वंद्याते हि वंद्य बहुत तबहुत ॥ श्रेष्ठ गुरु सह अभ्यागत ॥ आणी तिपुरु

ययाहेत ॥ विहित ओसअमुते ॥११॥ मातापत्रुलयेखा न्हरा ॥ अकारा धर्म

सप्रभाकरा ॥ सर्वाधार हेणा निधरा ॥ गुणिजहे अगक्ति ॥१२॥ प्रियामाजि

श्रेष्ठहे आमरा ॥ सुहृदामाजि अगाकिदारा ॥ अतिति पुजना चारहे चतुरा ॥ श्रे

ष्ठत सिद्धावोलिजे ॥१३॥ अष्टकाचवि सिष्टोत्तर ॥ ऐकोनि बोले राजेश्वर ॥ मी

ययातिनहुषकुमर ॥ पुरपिता जयासि ॥१४॥ सकळभुताचा अवमान ॥ क्र

तपुण्याचा उच्चारण ॥ घडले याल्लागि माहापतन ॥ स्वर्गिहुनि पावला ॥१५

श्राधिलअसलादवदान ॥ संतसंग तिथाकिले माल ॥ तपाध्यहे लुभाले

वयावद्ध हि वंदिजे ॥१६॥ धउत्तम पुरुषा हापरियसा ॥ विचार मान्य होवे

नोहे वयसा ॥ वैराग्यतपे अनाअद्वा ॥ ताचि पुज्य जगाते ॥१७॥ वडिल

हुधर्मी अपण ॥ हा मज ना हि मुख्याभिमान ॥ वयोधाकुटा तपोधन ॥ ज

नी विराधजगा ला ॥१८॥ विरुद्धकर्माचे सेवन ॥ साची नावपापाचरण

पापिर मी तिपापिजन ॥ न सज्जन नसेविति ॥१९॥ ग्रासअसलाध

नसंपदा ॥ स्वर्गलोकी नाहिं ऐश्वर्यमदा ॥ भाग्याहानिचे विषादा ॥ पावलो ना हि येकाळि ॥ ७० ॥ जिवकर्माधिन सकळ ॥ कर्मे पावती सुखदुःख फळ ॥ सुखापासे चिजळजळ ॥ वेथ्थ वाहवावी कि कि ॥ ७१ ॥ सर्व ने स्वयं ज्ञानवंता ॥ ज्ञानी ॥ तथे कायसा लोभ ॥ काय सिराणी ॥ स्वप्निं दरिद्रलक्ष्मीदा न्ही ॥ जाग तिया केउती ॥ ७२ ॥ ऐसा निःस्पृह कांविवेकमुर्ति ॥ कायबोले भावयुक्ति ॥ विरोमला भजे संगति ॥ मतमचि घडली सुकृते ॥ ७३ ॥ ऐसे कहाणे नरदेवोत्तमा ॥ क्षेत्रे ते सांवोत सिधर्मा ॥ कवणा कवण लोकि परमा ॥ दिव्य भो गपा गिलें ॥ ७४ ॥ कवणकाळ परियंत वास ॥ देवतादेहि सुखविलास ॥ भो गिला ते सांव कारा ॥ श्रवणा करि आम्हुते ॥ ७५ ॥ स्वर्गपाकि जे पुराणी ॥ परि ते मानवा अदरानयनि ॥ मरोन कायहो तसे भाणी ॥ हेहि को णा ने णवे ॥ ७६ ॥ प्रत्यक्ष देखिले भोगिले ॥ तो तु बोलसी अपुल्या बोले ॥ तुसे निमुरवे ऐ किले ॥ तो निर्धार यथार्थी ॥ ७७ ॥ भोगिता असता देवसदना ॥ कार्णं कोपाजा ला पतन ॥ ऐसे पुसता चोघजण ॥ ययाति सांगे निज मुखे ॥ ७८ ॥ सार्वभौ मं मी येक्षिति तालधुनि पावलो स्वर्गाप्रति ॥ महाल्पीं कि केलि यास्ति ॥ सहस्र

न्यज

२

२

यर्षदेचा नि॥ ९ ॥ येथुनिया परमस्थान॥ प्रयेश तो इंद्रभुवन॥ अमराव
तिआनंदसदन॥ शक्रपुरि बोलिजे॥ १०॥ शतयोजने सुविस्तारे॥ रत्नख
चित सहस्रद्वारे॥ जांबुनद कनकागारे॥ भास्करोपम झळति॥ ११॥ दिव्यां
बरे दिव्याभरणे॥ दिव्य सुगंध लेपने॥ दिव्यास्त्रियाचि आलिंगणे॥ भोगभु
वनं सुरताक्षि॥ १२॥ कल्पद्रुम पारिजात॥ कामधेनु असंख्यात॥ चैत्र
सोपान मंडित॥ चीद्रत्नि बांधिले॥ १३॥ अमृतफळ फळभक्षण॥ अमृत
रसाचे रसपान॥ गंधर्व अप्सरां गायन॥ क्रिडा विहार पुष्प कि॥ १४॥ ऐसि
सहस्र वर्षे जाण॥ इंद्र समान भोगिता मान॥ तेथुनिया विशेष स्थान॥ ब्रह्म
लोक पावला॥ १५॥ इंद्रानंदा सहस्रगुणि॥ विलास आनंद ब्रह्मसदनि॥ या
हि सुखाचि शिरोमणी॥ उरलो नाहि भोगिला॥ १६॥ वेद याग मंत्र देवता॥ जेथ
नांदति मुर्तिमंता॥ त्याचिये संगति सुख भोगिता॥ सहस्रवर्षे लोटले॥ १७॥
तेथुनिया विशाळ॥ देवदेवाचे महास्थळ॥ पावोनिया आनंत काळ॥ स्वर्ग
सौख्य लोटला॥ १८॥ उच्चैःश्रवा ऐरावति॥ विमान यानि स्वइच्छा गति॥
पुजा क्रिडा शाचि हाति॥ इश्वरा तुल्य पावला॥ १९॥ तेथुनि नंदनवना
आलो ते॥ वर्षायु ताची अनेक राता॥ कर्मे त्याने तरे देव ऽते॥ हा कदि

धलीअवचिति॥४०॥सरलिसुकुलन्का कि धालासहस्वर्गीं त
कि ऐसे बोलताता का कि॥४१॥पडोनि आलोयायाया॥४१॥
जैसे मनुष्य लोका अंत॥द्रव्य गेलीया दरिद्र प्राप्त॥तैसेंची सो
यरसमस्त॥अव्हेरिति सर्वथा॥४२॥तयाचि परि स्वर्गलोकें॥
पुण्यसरिलाता का चिक॥लोटोनि सांडिति बधोमुखें॥ते
म्या अंग भोगिले॥४३॥ऐश्वर्यहानिची विकळता॥अनुमान
हि मासीया चिंता॥वीशोपलाभजे महंता॥लुझोदखिलय का कि॥४४॥सा
त्विक पुण्य असता गाठि॥अक्षय बैस का स्वर्ग पाठि॥रजतम स्पर्शेति के
ल्हि॥क्षयो पावतिला का कि॥४५॥लोलुप मान विषयासक्त॥जे रजतम
अहंताभरिते॥तपयज्ञदानदमयुक्त॥नरदेहि करितिभुलोकि॥४६॥
ते स्वभप्राय स्वर्गस्थान॥ते देखो निपावति ताका कपलन॥इयभुमीवर
कि जाण॥दुःखभोगितिबहुकाळ॥४७॥कंकगोमायु मांसभक्षका॥देहध
रितिदुःखदायका॥म्हणो निवीवेकि साहिका॥निंदा कर्म नाचरति॥४८॥भै

नरकामा। जिणं धरीले। कं कक्षितितयाते। कैसे भ्रमपाळतील यथार्थी। अ
घणकरा सज्जन हो। ४४। अवचट लाहो निधारीरें। निषय मानुनि भ्रमे लाहाद
कर। अयुष्य नासुनि सिश्नोदर। अराधिलिआ धर्मी। ५०। कृपल्य कार्पण्य अ
धैर्यता। परि हिंसनि उत्साह चिता। वाग निष्ठुर अनभ्रता। ऐस्वर्यमदें ज्या
पासि। ५१। काम क्रोध मद मत्सर। लोभ दंभ निसिद्धाचार। हीं सकळ पापा
चार। जीवा जि हिं जोडिले। ५२। मरणांतरे त्या संकटि। केल्या पापें पां
पडे गांठि। दुःख भोगिला कल्पकोटि। अरयुक असेना। ५३। सारिसह
अवर्ये दुःखि। यालना भोगिति यमलोकि। आंत सहस्र वर्षे होकि। अंतरि
क्षतिष्टति। ५४। लोहचुंचु लोहदंष्ट्रानि। कंक गोमायु त्रासिति गगनि
ळ पावयासि लागुनि। अस्त्रयो कोट असेना प्रपपा। तेथुनि पडता ई यक्षी
ति। क्रुर राक्षस कंटाळति। तीक्ष्ण दंष्ट्रा लोहादानि। चिसंचि ति देहाते
। ५५। तेथुनि पाप कर्मदेहस्थानि। प्रवेशलि हे जाण प्राणी। ते हि कु
र्म गति चिकाहाणी। लपो धन परियसा। ५६। पुष्प फळ औषधि जीवन

याचे निसंग गर्भस्थान ॥ पावो निया हिना हिन ॥ देह धरिति प्रारब्धे ॥ ५९ ॥
द्विपदे चतुष्पदे षट्पदे ॥ ऐसे शरीर अनेक विधे ॥ धरूनि कर्मभोग तिअब्दे ॥
मनुष्याचि असंख्यात्मथा दुःखभोंच पर्वत ॥ सोसिला जन्म असंख्यांत ॥ पु
ण्ययोगे अकस्मात ॥ मनुष्यदेहि पावती ॥ ६० ॥ वासना लिंगदेहे कार ॥ शुभा
शुभ करून संस्कार ॥ अन्नोदकि षंड रस सारे ॥ वीर्यरूप अवगाति ॥ ६१ ॥ तेम
न्मथेयो निस्थानें ॥ रेत रक्त चि समभेळणी ॥ गर्भ आकारे करणी ॥ प्रारब्धा
चि विचित्र ॥ ६२ ॥ नारि ह नर ह क्लिब लजाण ॥ सकुरूप कुरूप गुणा गुण ॥ अ
वयव संग छिन्न भिन्न ॥ पापपुण्य पावलि ॥ ६३ ॥ असे अवलर शरिरे ॥ तव्या
पिजे अहंता भर ॥ मग म्हणे ब्रह्मांड सगळ नपुरे ॥ प्रबळ स्वार्थ आपु लिया ॥
॥ ६४ ॥ मनो गुणादि चेतविते ॥ इंद्रिय विषयालेच नविल ॥ विषयालोभा
लाभ दिस ॥ लोभा अणी शोकाल ॥ ६५ ॥ ले चि जन्मा नरिचे बिज ॥ हे धर्म को
हाने पावे सहज ॥ शरिर सुखाच भोज ॥ संयसंसार भाविले ॥ ६६ ॥ आयुष्य
अक्षइ मरणधर्म ॥ पावला लोप रूपे नाम गत वेळी क्रिमि इशाभस्म ॥ ६७ ॥

निहरपसारिरहरपे ॥६७॥ कर्मकरितादेह पडिला ॥ वासनारूपे जीवबांधि
ला ॥ लोखभन्यायेराकुनिगेला ॥ जन्मालागीमागुति ॥ ६८॥ पुण्याधिक्य
श्वर्गायतन ॥ पापाधिक्यअधःपतन ॥ पाप पुण्यसमसमान ॥ तेनरदे
हलाधीजे ॥ ६९॥ पापपुण्यज्ञानानकी ॥ जकोनिजातिजेसमुक्तीगतेमोक्ष
श्रीयचारङवि ॥ अच्युतानंदभोगपे ॥ ७०॥ तवंसंसारिकाजिव ॥ कधिलाक्षयजन्माप्रभाव ॥ परिजन्म निष्ठमहानुभाव ॥ संमधुयाचाअसेना ॥
॥ ७१॥ याहुनिम्रष्काविवेकमुर्ति ॥ पुसावयाचिआवडिचित्ति ॥ कायकलिल
मजप्रति ॥ बोलवहित्नागुणज्ञा ॥ ७२॥ मा॰ तामाहातोरोहित्र ॥ जन्मकरि
तिअतिपवित्र ॥ सर्वज्ञते पकपवित्र ॥ विष्णुक्षेत्रज्ञयिश्वास ॥ ७३॥ लया
मुल्यतुअमुते ॥ वचनबोलसीश्रेष्ठभरिते ॥ आलासागिसर्वतोअ
वडिअसीआसेअैकावया ॥ ७४॥ स्वर्गलोकिअक्षयसुख ॥ कोणसाध
नेसाधक ॥ पावलिज्यापरनदुःख ॥ कल्पांतलहिस्पर्शेना ॥ ७५॥ दानतप
योगयाग ॥ यामाजिसाधनकोणचांग ॥ ययालीक्षपाहोतिव्यंग ॥ मार्ग

परिसा निश्चये ॥ ५ धा या धर्मा चि सत द्वारे ॥ संत बोलति निजनी
धरि ॥ जेथ पतन भयाचे वारे ॥ लागो नसे को सर्वथा ॥ ७७ ॥ २ भ फळ
शा अहंता माने ॥ स्पर्शलि दिसा निजे साधने ॥ तलेदे ति अधः पतन ॥
फळ हाति चे हिरोनि ॥ ७८ ॥ पहिले तप दुसरे दान ॥ शा मदम पात कीलज्ञा
आण ॥ अर्जव सातवे सर्व भुषण ॥ सर्व भुति अनुकंपा ॥ ७९ ॥ स्फीति
श्या ना चि विटाळि ना सिवेति निष्काम सोव कि ॥ लयो निअक्षय सु
खराउ कि ॥ अचळानंद भोगिति ॥ ८० ॥ रहि द्वारि जो साधक ॥ प्रवेश
ता पावे अक्षय सुख ॥ अनंत कल्प गेलिया दुःख ॥ कण निसि वे तयाचा
॥ ८१ ॥ चद सास्त्राभिमान मदे ॥ पुण्य ॥ पांडित्य ॥ मदोन्मदे ॥ सभे माजि
छळणा शब्दे ॥ पराचिये नासिति ॥ ८२ ॥ आतया त अनवंत लोका ॥ जन्मोण
मी वाद लेदुःख ॥ फळला काळ पावे अनेक ॥ अंतरा ना गविति ॥ ८३ ॥ इंद्र
खचे दविद्यातिन्ही ॥ फळनेंदिति बहु साधनि ॥ ८४ ॥ अन्न जीवविपरिभी
ताहारि ॥ अधिक जालिया तें मारि ॥ ते सिकर्म द्विज कारि ॥ भयाभय

प्रसवलि॥७५॥अग्नीहोत्र दुसरे मौन॥तिसरे सांगवेदाध्यायन॥चौ
थे कर्म सर्वयज्ञे॥संस्थायेक विज्ञाति॥७६॥च्यारिनिज्काम विहित्ता
चारे॥अभयप्रदे निज निर्धारे॥सकाम ता सहकारि॥ते चिरे ती
भयाते॥७७॥जो सन्माने न पावे हर्ष अपमाने न धरे संताप रोष॥ता
देवलोकि पवित्र पुरुष॥पुजा पावे विशेष॥७८॥परि जे साधु वामदा
साधुबुद्धि नुपजे केदा॥अपो नि उभय लोकि अपदा॥अनंत काळे
भोगिति॥७९॥अपो नि श्रद्धा क्यवत न वेभव॥धावे यो जावे अभ्यासा
चे॥लक्ष्मिच श्रेय यज्ञे विपावे॥भयादारुण साधुक॥८०॥अष्टक
ह्मणाति अंगा वक्तिला॥चहु अश्रमा मा जिव हिला॥अक्षय लोकाते पाव
ला॥सांग कोणते निवाड॥८१॥ययाति ह्मणे अश्वमेध र्मी॥कश्रीमवंत्रे साका
म कर्मी॥ते अक्षय देव धामी॥सुख पावति के से नि॥८२॥सा क्षेप जाहानि
गुरुकुळि वसे॥सुविद्या साधि अनालस्य॥न सांगता गुरु कार्य उल्हास
यक अंगि संपारि॥८३॥सर्वा पुर्वि प्रभाते उठि॥निद्रा करि समस्ता
पाठि॥वेद विष्णु स्मरण पापरिपाठि॥गुरु वि शुश्रुषा संपल्या॥८४॥न्हदु

५ ५
द्वा
तो

दांत धर्तीमं डिलू जिव्हो पेरुछवे। कँजीयरुणभित। साबधान अप्रमत
श्या ध्यायेसिळ सर्वदा॥७४॥ ऐसा तो ब्रह्मचारि येकु। पावे अक्षय ब्रह्मलो
कु। येराक्षायरुप स्वर्ग नर्की। कदा न सुटे जाणीजे॥७५॥ धर्मन्यायध
नाचि प्राप्ति। तेणे अर्ची देव अतिथि। पराचा अर्थ निसिवे हाति। नेघे
कादे ताकाहि॥७६॥ श्री कारि न्यायार्जित धना। लहुशा निनिरुपुर्ण।
अतिथि च प्रेम गहन। प्राण मित्रासारिखे॥७८॥ परोपकार का श्राधो
देरा। जोडिले वेचीधन उल्हास। प्राण संकटि सायासे। असत्य तों
डेन बोले॥७९॥ ऐसा यकु च ग्रहस्त जाण। पावे अक्षय ब्रह्मसदन।
याचे गके ते पलन। प्रासहो तिज णावे॥८०॥ आता वानप्रस्तवनवा
सि। सांडिला अवगुण अरीष्टदोषी। अपुल्या शक्ति उदरपोषि। अपोक्षि
तिथि अक्रिया॥८१॥ अरंण्य द्वेदा बनविधि। मागो निपराते संतापा
नेदि। ता वानप्रस्थ अक्षय पदि। अधिकारि पाजाणावा॥८२॥ जे
रंज तिजनाचे मन। अजा अतिशा वाटजणे। ते कळा काया वाचा
प्राणे। प्रगटु नेपोरुनो कि किण॥ परम्रहि नसे नवसे मति। सर्वत्र

मुळ मोहाचिया गा ॥ ३ ॥ ज्याचे जितेंद्रिय सृष्टी ॥ निरभिमानें

आथिलें ॥ ४ ॥ वृक्षा रथि निद्रा स्वल्प ॥ असे पाव स षोस्वल्प का ॥ ५ ॥ अनेक

देशआटी नामक ॥ संग न लभे दु जियाचा ॥ ५ ॥ मळमुत्र साये प्रमदा धन

यागिले न करि अवलोकन ॥ शिष्योपाधि गुरुत्व मन ॥ स्थान संगी पाव

न ॥ ६ ॥ ऐसिया परि जो सन्यासि ॥ पावे अक्षय ब्रह्मपदासि ॥ इतर वे

षधारि ऐसे यासि ॥ अधःपत न सुटेना ॥ ७ ॥ अविद्या रानें जीं किल्लेलाक

भोगिलि अविहित कामसुख ॥ परमार्थी क्रिया कौतुके ॥ लोप केले द्रिष्टि

देखेन ॥ ८ ॥ ऐसि प्रपंच लोका राहटि ॥ रात्रि मानुनि विचार द्रिष्टि ॥ विवे

क विवेकसे साधु जग जेटि ॥ अरण्यवासि जितात्मा ॥ ९ ॥ सर्व भुतांचि जे

नीशा ॥ तेचि तया चिजागृत दशा ॥ विश्व जागे तेथे सहसा ॥ जागा

नोहे संकल्पा ॥ १० ॥ ऐसि येरिचा विजेन वासि ॥ अभ्यंतरि चाशुसन्या

सि ॥ उभय लोकि मान्यता यासि ॥ विष्णु समान जाणिजे ॥ ११ ॥ दाहपुर्वे

शाहापर ॥ ज्ञाति सहित येकविस नर ॥ उद्धरुनी पुण्योदार ॥ अक्षय सुख

नंदावि ॥११॥ अष्टक ह्मणति येक्रय गुप्ता ॥ बाह्य नियम व्रतस्थ मौनि ॥ मनन
सिळ तुं सत्य मुनि ॥ कोपालो यये भगळा ॥१२॥ ययाति बोल्ले सिधी तवच
न ॥ साधु हो तुह्मि विचक्षण ॥ जायात सा परिद्धी करण ॥ माझे निमुखे कि
तसा ॥१३॥ विवेक कर्त्ता ज्ञान रासि ॥ तोचि जाणावा सन्यासि ॥ ग्रहस्ताश्र
मअसोनि त्यासि ॥ क्लिष्ट नव्हे सर्वथा ॥१४॥ लोकिक वानी विराइक कामा ॥
अर्थ स्वार्थ कपटोद्यमा ॥ हा पिकाकिसंताप भ्रमा ॥ औसीया दोष वेगळा ॥१६॥
औसा ग्रहस्त ग्रहनिवासि ॥ तपोवनिचा तोवन तापसि ॥ सन्यासाचे फ
ळ्यासि ॥ ठेविले आसे अइत ॥१७॥ वनि असोनि व भिताधना ॥ स्मरोनि सर्वदा
सुरमन ॥ ग्रामवार्ता कि श्रवण ॥ ग्राम्याकर्मी उद्भत ॥१८॥ लो वनि असोनि
पनवासी ॥ योग ना भोग दोन्ही त्यासि ॥ फळ नेदिति निश्चयेसि ॥ जाणावे तो
जाणिज ॥१९॥ अनग्नी अकेतन अगोत्राचरण ॥ कौपिन असे तनु वाचीव
सन ॥ प्राणधारण मात्र आशन ॥ स्वादास्वाद विरहित ॥२०॥ तो वसो ग्रामी
अथवा वनि ॥ फळ सारिख्य दोन्ही स्थानि ॥ स्वर्ग सौख्य लपाचरणी ॥ वळग
ति सर्वदा ॥२१॥ परित्यागुनि सकळ कामा ॥ जितेंद्रिय युक्त कर्मा ॥ मुनिमो

यअचळनेम॥ अवलंबुनिजोअसे॥२२॥ तोपरलोकिअक्षयसिधि॥ निश्चय
णाहाहा निश्रुभुधि॥ सुखक्षयाचिक्षय व्याधि॥ कल्पांत हिजाणेना॥२४॥
कळनस्वधौनरंत॥ सदासुखातअळत॥ निष्कामसकर्मविरत॥ तोचिपुज्य
देवेल॥२५॥ जपेकर्मिलेवळसमस्त॥ क्षीघ्रमांसअस्तिश्रोणित॥ तेणेइहलोक
परलोकाथी॥ जिंतिछाहेजाणीजे॥२६॥ धेनुचिया जैसेअघोमुख॥ आहार
सेवितिमानसिक॥ तेणेहे वसुनिस्वर्गसुख॥ मोक्षधर्मजींतिले॥२७॥ अं
तरिंनिराभिमाननिश्चिंत॥ तरिचफळतिबाह्यव्रते॥ बाह्यक्रियाबहिर्मुखा
ते॥ सोगप्रायजाणावि॥२८॥ निर्लोभिनिमानिनिर्दंभु॥ तोदेवालभकदुर्लभु॥
भक॥ सिदेवअतिसुलभु॥ त्तणिकाविपार॥ शि॥२९॥ कोठा निजयुध्या
चिप्रासि॥ जन्मानिवर्चलेपरमार्थि॥ तसभाग्यजैसेपुढेतोपुढति॥ कायल
गेसांगणे॥३०॥ परितेभोगनिर्विषयसुख॥ सखिविरतिपावोनिदेख॥ उ
रलेनिजयुध्यपरलोक॥ साधितिलसुघन्य॥३१॥ अनेकसाधनीअन
पंथि॥ श्रयेपावलेनेणो॥ कितिामीहिलरलोसंतसंगति॥ तुमचिघडि
येकाचि॥३२॥ जैकोनियथातिचेवचन॥ चोधपावलेसमाधान॥ घा

८ ८

स्तु नियालोठागंण ॥ असादेरवोल ति ॥ ७४ ॥ अष्टकपर्वेलभनसुमना ॥ चौ
थाउसिनपुत्रजाणा ॥ ३१ ॥ बिन्दपाळ्या चियारुणा ॥ लुळणातयाभसेना
॥ ७३ ॥ चौ घडाणतिमानुजनका ॥ अमुन्चियालपोबीजास्तवदेखा ॥ फळ
स्वरुपदिव्यलोका ॥ कोणकोणादेखावे ॥ ७४ ॥ दिविअथवा अतरिक्षि ॥
जेअनुवालक्षिलचक्षि ॥ तेनिरोपिचचनसाक्षि ॥ लुक्षिअलाप्रमाण ॥
॥ ७५ ॥ केसेतेथिलभोगविशाळ ॥ कवणकाळपरियंतअचळ ॥ यया
तिहोणवाचाविकळ ॥ सांगोजातजातसे ॥ ७६ ॥ जवपरियंतश्य क्षि
ति ॥ नरसंचारगोसंतति ॥ आरण्यपर्वतवनस्पती ॥ धृक्षियलदेखिजे ॥ ७७ ॥
तवपरियंतलुमचलोक ॥ भोगविति अक्षयसुख ॥ जेथेपतनभयाचे
दुःख ॥ कल्पांतिहिस्पर्शेना ॥ ७८ ॥ घ्रलकल्पाक्षीरसारिल ॥ रत्नवापितात्र
म्हभरिला ॥ मधुबिंदुचाअखंडिला ॥ मेघवर्षेसुधाधारि ॥ ७९ ॥ याहिवेग
किअनंतसोख्ये ॥ काय विस्तारूयेकमुखे ॥ तलुमचेसुकृतेनदेखा ॥ भोग
वयावोगरिलि ॥ ८० ॥ चंद्रसुर्याचेनिप्रकाशे ॥ भुतकिवर्तेतिजीवमाणु
से ॥ तववरितुलासावकाश ॥ शाश्वतलोकिसुखवस्ती ॥ ८१ ॥ ऐसे

परिसोनितयाकाळी॥ चेहुजपीउदकांजुळि॥ संकल्प घातलाभुतळि॥ मा
लामहासन्मुखा॥ ४९॥ म्हणतिअमुचेलोकराया॥ उचितवोपिलेनुसी
यापाया॥ ग्रंगुनियापतनभया॥ सिघ्रहोइस्वमीस्ता॥ ५०॥ राजाबोले
स्वधर्मयुक्ति॥ काहिक्षेत्रियक्षेत्रियाप्रति॥ प्रतिग्रहघेतलाहे ग्रंथि॥ ना
हिअघापिजेकिले॥ ५१॥ पायस्पर्शोनकाहे क्षिति॥ वरजरदेउच्यपंथि
अह्मी॥ जाडिल्यास्वर्गसंपति॥ भागिरथीकासारिख्या॥ ५२॥ ज्यासिअयो
ग्यजेकाष्टद्विज॥ तोतासिवनासंकट॥ दारिद्रपिडीतास्वर्गश्रेष्ठ॥ म्ले
छवृत्तिनरिघीजे॥ ५३॥ दारिद्रक्षयविपुलद्रव्याते॥ जहीअपेक्षअन
यज्याते॥ आमुच्याअर्जिलेअर्थाते॥ अधिकारनुलेघ्यावया॥ ५४॥
तेणेनियविप्रकाहि॥ प्रतिग्रहाचानिषेधनाहि॥ अलीनरपेन्द्राकि
र्तलेकिपुढतिकरतपाता॥ ५५॥ यातिहाणेसप्रेमबोरे॥ फळघेउ
निदेइजेमोळे॥ पतितमानेउद्धरिले॥ हाचिफळहोताळाचे॥ ५६॥ असे
उभयतासंवादता॥ नभाहिरण्यमयपाचरथ॥ गगनिहुनिभ्येकस्पात॥
यताहिटिदेखिले॥ ५७॥ दिव्यपताकादिव्यसुमनि॥ घंटाघोषदिव्य

८

६

गापी॥ दिव्य दुंदुभीचा ध्वनि॥ पाचायाने पातलिं॥ ५१॥ सन्मानुनि देवदु
ति॥ य याति बाहिला यकरथि॥ त्यारिहि अपिले चौथा प्रति॥ नराह
ति विरक्त॥ ५२॥ ह्मणातिमागा॥ अलस्वर्ग॥ देउनि घडे लाकल्पा भु
प॥ आता मगुलि मांडु नि तप॥ पुंण्य जोडि जोडणे॥ ५३॥ अवचं कुपुण्य
घन॥ चाटवा॥ वोपुनि पाटविल पार्थीवा॥ नवे स्वर्ग कुल जोडो निज व्हा
ये पो घडेल काकि॥ ५४॥ सहज ययउ मामिलिकडे॥ आला नरजे ययाति
पुढे॥ यात्के निर्भाग्य गोरव कोडे॥ मवे पुरली समुचि॥ ५५॥ दुलकरिति नि
ज्ञापना॥ तुह्मी सुकृत दिधली दाना॥ याचे निफले सहस्रगुण॥ ग्रंथी लु
बांधिले॥ ५६॥ ऐसे जाणा निज गदखरे॥ अमतपाटविले आदर॥ पति
तउह्मणी अपार मां हा पुंण्य जोडति॥ ५७॥ अग्नि नेजळता ज किडुना
शिरछेद नि प्राणदाना॥ दुर्भिक्ष काळि प्रतिपाळीला॥ अन्नदानी दीनाते
॥ ५८॥ सकळ पुण्य सकळ फळे॥ पुरुषार्थ मुक्ती येके वेळे॥ ईश्वर घेउनि
सर्व काळे॥ लयाजवळि लिहृतु॥ ५९॥ सुकृत श्रेय घेउनि हाली॥ पुढील
देउनि उध्दरति॥ या चिवेचि रिपुंण्य ग्रंथि॥ ह्मणता मु खे निर्धारि॥ ६०॥

भुमिपउ ला प्रतिष्ठाले ।। जो फाउट विंअ पुव्य हाते ।। त्रैला क्यि सर्वसुकृते ।।
टाकुनि यत्तिसापासी ।। ४ ।। म्हणो नि सांडा अग्रैवा नि ।। बळकारें वाहो
नियांनि ।। मग हा सोनिपाच्चविमा नि ।। पाचहिजणाचालिले ।। ४४ ।। क्रमी
तजस लासुर मंडळे ।। बिंबिचि विमान अलिसकोळे ।। पुढधावता जवागळे
चौघपुसतिन्हपाले ।। ४३ ।। यकसा रिखपा चरणा ।। सेव्यश्रद्रे सिसमान ।।
संगिमाग सांडुनि आपण ।। त्रिबिचा मिकपुढारा ।। ४६ ।। यया निरांतवि
महनुभाव ।। इय विषइकायसाह्वे ।। गुण विद्याधता गौरव ।। विरारा क्षार
पावलु ।। ४५ ।। रांरिरवावयासुख ।। जगी जोडिति भोग अनेक ।। येणे शरीर
लेहिदेख ।। परोपकारावे चिलेग ।। ४४ ।। दानेतप सहधर्म ।। तरिश्री मान्द
सोम्यलानेम ।। तितिक्ष्यादि गुणल्लामे ।। अवयव प्रायेबादेहीं ।। ४७ ।।
धालुनाजिबाबुनद ।। रत्निपअराग प्रसिद्धा ।। नेसाअसा माजिपला
वृक्ष ।। पुंण्य भाग्य अगळा ।। ४८ ।। याल्ता मिपुढआसेजालु ।। अमुतआ
स्काद बहुतु ।। असो क्रमुनिउ धर्मपंथु ।। अक्षयधाम पावला ।। ४९ ।। अ
सिया परिमोचे स्तुती ।। पावले हाउक्षरपर मगति ।। जन्मोजया किरा

ळ कित्ति। अद्या पवित्रसभाग्य ।७०। ऐसा दोहित्रि ययाति। पति
तनेला उर्ध्वगति। याला गिसंताचि संगति। साधन के ळेसि पात
का।७१। ययातिच महादाख्यान। परिसे तुद्द्याचे वदन। तो ययाति
अष्टकसमान। अक्षयलो किसुखभोगी।७२। ययाति अ णीदोहित्र
चौघेमा धरिसुपुत्र। याचे सविस्तार चेरित्र। उद्योगपर्वि कथिय ले
।७३। पुढे उत्तरचय ययाव। स विस्तार निरोपिले यथे। पुढे चलरि
सावाचिंत। विस्तासतिअवधारा।७४। व्यास वैशंपायन सौति।
तिघामुखिंचे उचीष्ट क्षिति। सांडले सज्जन मति। स्वीकारनि
अनुवाद।७५। लिकाविश्वंभरप्रसाद। भारत नकाणी चिअरवि
दे। मुक्तीराअक्षुल्लगुणानुवादे। महादाख्यान संपली।७६।
चेलुरी चंचरिकाचिमांदि। सविलामा ललेब्रह्म नंदि। साधुधा
धुरहिरावदी। गुंजारवे गर्जति।७७। इतिश्री भारते आदिपर्व
णी। ययाति अष्टक स्वर्गारोहणनाम विंशोध्यायः।२०। ९०।१४

श्रीकृष्णपरमात्मनेनमः॥ वसुधरेचाईश्वर॥ राजयाराज परमेश्वर॥ जन्मेजयारत्नाकर॥ चातुर्याचाअनुवाद॥१॥ वैशंपायनाविवेककुश
ळ॥ अमृतपुर्वजापासुनिसकळ॥ मजपरीयत्ननाममाळा॥ पुर्वज्या
चिपरसवि॥२॥ जेअैकेलाश्रवणपुटि॥ प्रत्यक्षदेखिलेबोटपोठि॥ लुब्धीया
मुखिच॥ गोष्टि॥ पीयुषपाना साखिव्या॥३॥ जवजवहे कथावढि॥ सुरस
जालेपल्हाळि॥ तवतवहर्षा चिअगळि॥ बाढिमात्तेहालसे॥४॥ हासोनि
वैशंपायनसुमति॥ म्हणेपरिसजगतिपति॥ आदिकेशवब्रह्ममुर्ति॥ पील
पीलामहाचा॥५॥ त्याचेनाभिसरोजिजाण॥ जन्मपावलाचतुरानन॥ चतु
राननाचनंदन॥ दक्षब्रह्मदुसरा॥६॥ यादक्षाचकन्यारत्न॥ देविअदितिगुणसंप
न्न॥ अदितिचाविवस्वान॥ मनुपुत्रतयाचा॥७॥ मनुचिकन्याजाणइळा॥ इ
ळेचापुरिरीवनृपाळा॥ पुरिरीवाचाज्ञानकुशळा॥ अयुनामानरेशु॥८॥ अ
युचानहुषनरेंद्र॥ जोइंद्रपदेचादुसराइंद्र॥ नहुषगुणसमुद्र॥ ययातिमाघाक
थिलाजे॥९॥ ययातिचापुरुप्रसिद्ध॥ कौशाळामजातयाचिवधु॥ तिपासावंश
पैकसिंधु॥ जन्मेजयलवनामी॥१०॥ तेणेजन्मेजयराया॥ माधविनामवरी

त्किआया ॥ तिच उदरिं जन्मला तया ॥ प्राचिन्वान हें नाम ॥ ११ ॥ सुर्य उदय परीयंत कोपे ॥ प्राचिनी तें लिकिंअटोपे ॥ प्राचिन्वान रुद्र प्रतापे ॥ पुर्वज लुमच्या तारया ॥ १२ ॥ प्राचीन्वानकेकेनाम्नी ॥ सेव रिवरिलि लावण्य खाणी ॥ तीच्या उदरिं जन्मला गुणि ॥ शर्याति राजा या नाम ॥ १३ ॥ शर्याति नरं नदु हिता ॥ प ट्टमहिषी वरिलि कांता ॥ तिचा कुमर वसुधानाथा ॥ अहंयाति जाणपा ॥ ॥ १४ ॥ शर्याति चीअहंययाति ॥ कृतवियकिन्या भानुमति ॥ वरिलि तिचा सुमति ॥ सार्वभौम या नामे ॥ १५ ॥ पुदकेकैराजदुहिता ॥ सुनंद नामे चतुर भरिता सार्वभौमे वरिलि कांता ॥ जयसेन तयाचा ॥ १६ ॥ सुपर्वा वैदर्भ राजा तनय जयसेन प्रपालि भार्या ॥ तिच्या जठरिं जन्मला राया ॥ आवाचिन नृपनाथु ॥ १७ ॥ आवाचिनाची अंतुरि ॥ विदर्भी जाणदुसरिं ॥ महाभोमे भोगिला उर्वि ॥ प्रसेनजित सु मांधवि वरिलि तिच्या उदरिं जन्म बि ॥ प्राचिधान्वा सु चंद्र ॥ १८ ॥ अब्द्र की सुजन्या सुन ॥ भुरा प्राचिद्धान्या सुयंद्र ॥ १९ ॥ चि सुपति तिच्या तनयो परम गुणी ॥ अयुत्न नाव कि ॥ २० ॥ अयुतनाचि अगन श्रथ चवदुहिल करनंदना ॥ भा चिनाम तयाचा जाणा ॥ अक्रोधर ॥

महाभौम्यतिच्याउदरीं ॥ प्रतापवंत जन्मला ॥ ८ ॥

१

१

नाथु ॥ ४१ ॥ अक्रोधन चिरुभमानीनी ॥ रेणुकालिंग आश्रिदा नि ॥ तिचा
तनयो प्रतापतरणी ॥ देवतिथि धामीकि ॥ ४२ ॥ तिचे निवेदमीमयही ॥ दे
वतिथि चि पुण्यप्रमदा ॥ तिचा उदरि स्वानंद प्रदा ॥ रिच नाम सुपवित्र ॥ ४३ ॥
रिचे मर्यादा याचि नाम ॥ वनिला वरि लिराज्य धर्मी ॥ तिचा पुत्र पराक्रमे
रुक्ष नाम पुरुवंरि ॥ ४४ ॥ ज्वाळा नाम तक्षक दुहिता ॥ रुक्ष प्रपुनि केलि का
ला ॥ तिचा उदरी धरित्रि नाथा ॥ मतिनर नाम जन्मला ॥ ४५ ॥ मतिनर सर
धर्मा चा शिपवित्र सरस्वति चा तिरि ॥ संपुर्ण द्वादश वर्षे वरि ॥ दीर्घसत्र
आर्चेला ॥ ४६ ॥ यज्ञ समासीहातातेथे ॥ नदि आंगमुर्तिमंत ॥ सरस्वति
नामे रुक्ष पावन ॥ माळ घालि रायाते ॥ ४७ ॥ सरस्वतिस भोगित संभो
ग ॥ राज विर्य अति अमोघा कुमर जन्मला सभाग्य ॥ ४८ ॥ त्युरु कालिं
द्रि संयोगे ॥ इलीन जन्मला संभोगे ॥ रथि नसुरत्ना नंद योगे ॥ दुष्य
लराजा निपजला ॥ ४९ ॥ दुष्यंत भार्या शकुंतला ॥ जैं स्वामीस पिथि
बाळा ॥ तिचा भरत नृपाळा ॥ भारत नाम याचेनि ॥ ५० ॥ भरत कीर्ति

क
र
वि
वी

किसावंशोली ॥ सुनंद नाया अभिधा । निवरिलि तिया प्रलापतरवी ॥ सुहोत्रना
मा नरेंद्र ॥ ७१ ॥ सुहोत्र इक्ष्वाकु राजकन्या ॥ सुपर्णा देवि वरिली मान्या ॥ तिया
लोक धन्या ॥ हस्तीप राजा पासि ॥ ७२ ॥ यातेपो हस्तीपे अपण ॥ अपल्या नामे
पट्टण ॥ वस विले क्षणा निसकळ जन ॥ हस्तनापुर बोलति ॥ ७३ ॥ हस्तीपे
त्रैगर्तिय सोदरा ॥ सेवरि जिं तिनि पवित्र दारा ॥ तिच्या उदरी राजेश्वरा ॥
विकट नामा जन्मला ॥ ७४ ॥ विकट नामाची स्वधर्म कांता ॥ याद्व कुळींचि कु
ळदेवता ॥ तिच्या उदरी धरित्रि नाथा ॥ अजमिढ्य नामा जन्मला ॥ ७५ ॥ त्या
चा अजमिढ्य महाराया ॥ प्रासीजा हलिया पाच भार्या ॥ याचि नामे श्रोत
या ॥ पंचदीप्ति प्रकाशकु ॥ ७६ ॥ केकै नामा अभिगं धारि ॥ विमळा सुमु
क्षका पंचनारि ॥ चतुर्विंशति शंकासरि ॥ पुत्ररत्ने प्रसवल्या ॥ ७७ ॥ चे
तुर्विंशति राजकुमर ॥ यामाजि श्रेष्ठ वंशधर ॥ संवरण नसी प्राणेश्वर ॥ जो
जामात सुर्याचा ॥ ७८ ॥ संवरणभार्या वैधाति ॥ स्त्रीयारूप नारी पति ॥ तिया
उदरि प्रख्यात किर्ति ॥ कुरु नृपाळ जन्मला ॥ ७९ ॥ या कुरु विर्य संतति ॥

यालागि कौरवकुळाप्रति ॥ कुरुक्षेत्र पवित्र क्षिति ॥ तिर्थ तेणे निर्मिलि ॥४१॥
कुरुते अमृत माधवि ॥ भार्या जालि त्यासि मोरवि ॥ तिपरिक्षीति ज्याचा नावि
नामा थिलत तप तप ॥४२॥ परिक्षिति अंगना परम ॥ बाहुदा सुदत्ता स्वरु
पधाम ॥ तिचा क्षीभज्य त्ये नाम ॥ पंडुपुत्र प्रगटविले ॥४३॥ भीमसेन केयें कुम
री ॥ रूपनामे सुकुमारी ॥ प्रतिश्रवा तिच्या उदरी ॥ तोचि प्रतिप बोलिजे
॥४४॥ प्रतिपा रौ विसुनंदा नारि ॥ वरिलि स्वरूपे जैसि गौरि ॥ देवापि शांतनु
तिचे उदरि ॥ अणी वाल्हीक तिसरा ॥४५॥ यामाजि वंशधर नृपति ॥ शांत
नुराजा चक्रवर्ति ॥ त्यालगि गंगा भागीरथि ॥ वरिति जाली सप्रेमे ॥४६॥
जिर्ण करि स्पर्शजि लुके ॥ यालागि शांतनु त्यास मुखे ॥ सर्वा नृपा श्रेष्ठ
माना धिके ॥ नाम जाले त्यासि ॥४७॥ शांतनु विर्य प्रतिज्ञावंत ॥ जान्हवि उ
दरि देवव्रत ॥ अष्टवसुचा वंश भुत ॥ भीष्माचार्य पिता ॥४८॥ जो रा
माधरा परमगुरु ॥ अरि कुळा प्रळय वैश्वानरु ॥ ज्याचे तुळणे नसावि
रु ॥ बाळता शंके शारदा ॥४९॥ पितियालागि नेम ॥ स्वीकारि ब्रह्मचर्य

सुवर्मीस्त्रिनकरिचिंत्रभेनिसिमा ॥ संततिचिरखंडलि ॥ ४९ ॥ शांतनातेभा
यदिसरि ॥ गंधवतीनेमिळिनासि कुमारिद्रौलिचाउदरि ॥ व्यासका
न निजन्मला ॥ ५० ॥ प्राप्तजालियाशांतनाते ॥ दोघपुत्रजन्मले तिते ॥ चि
त्रांगद नामायकात ॥ विचित्रविर्यपाटिचा ॥ ५१ ॥ यकनामाचा इसाळे
गंधर्व राजेगंधर्व मळे ॥ चित्रांगदे वधिलाबळे ॥ कुरुक्षेत्रीसमामी ॥

३ ॥ ५२ ॥ उरला विचित्रविर्यअनुज ॥ यासस्थापुनि गंगात्मज ॥ राज्यचाल
विसुतेज ॥ धरासुर्यप्रतापे ॥ ५३ ॥ काशिरायाचियकुमरि ॥ भीष्म ३
जिंतोनि स्वयंवरि ॥ अंबिका आंबालिका सुंदरि ॥ विचित्रविर्याचोपि
त्या ॥ ५४ ॥ राज्यकरिला राज्यधर्मे ॥ उभयास्त्रियासि सुखसंभ्रमे ॥ व
र्ततअसतापुर्वकर्मे ॥ आपुल्या अयुष्यवेचला ॥ ५५ ॥ राजाअक्षमरो
गव्याळे ॥ ग्रासिला प्राणानि स्वल्पकाळे ॥ मरणपावला तेव्हीमुळे
वंशद्रुमाचिखंडला ॥ ५६ ॥ देखोनि सत्यवादियाव्यास ॥ प्रार्थुनिप्रेरि
ला इश्वरपुरुष ॥ माताअंज्ञेनेकौरववंश ॥ विर्यदानेवाढविला ॥ ५७ ॥

धृतराष्ट्र पंडु अणि विदुर ॥ व्यासापासाव पायनाचे कुमर ॥ विचित्रवीर्य क्षेत्री
चे तुर ॥ वंशाधर जन्मविला ॥ ५० ॥ धर्मचारिणी गंधर्व दुहिता ॥ गांधारि
त पतिव्रत पतिव्रता ॥ धृतराष्ट्र वरिली कांता ॥ यकशत पुत्र तिचे ॥ ५१ ॥ दुर्योध
न दुःशासन ॥ विकर्ण येयाचे नंदन ॥ शतामाजि भीमसेन प्रबाधांच्या ॥ ना
गायुतबळियांत ॥ ५२ ॥ कोंत भोजाचि कोंति ॥ माद्रि मद्रराजाची गुण
ला वंति ॥ उभय वर्नी पंडु नृपति ॥ वरिला जाले स्वधर्मी ॥ ५३ ॥ मृगया खेळ खे
ळता वनि ॥ रूपे धरुनि युग्मास्त्रिया मैथुनि ॥ मृग मारुनि विंधिला बाणी ॥ ति
यो हि कोपुनि शापीले ॥ ५४ ॥ स्त्रीसंयोग पावसि मरण ॥ मरला वर्तला शाप
दारुण ॥ पंडु पावला नीधान ॥ संतती विषये स्वधजाले ॥ ५५ ॥ दुर्वास ऋ
षिच वरदाने ॥ भ्रतारांचा आज्ञावचने ॥ होनि कोंति पाचारने ॥ पाचा
पासाव पावलि ॥ ५६ ॥ धर्मापासाव युधिष्ठिर ॥ वायोपासाव वृकोदर ॥
इंद्रविर्य महावीर ॥ अर्जुन नामा जन्मला ॥ ५७ ॥ पृथेसी बाधु मित्राय
ना ॥ माद्री करा विसंतलीवंत ॥ अश्वीनौदेव विर्य लेथे ॥ नकुळस

हदेवजन्मला ॥६६॥ द्रौपदि द्रुपद राज तनया ॥ पाचा जणा जालि भार्या ॥
तिचा उदरि पंच विर्या ॥ पासाव जन्मले ॥६७॥ प्रतिविंध्य धर्मराज कुमा
रु ॥ भीमापासाव श्रुतसोम विर ॥ श्रुतकिर्ति धनुर्धर ॥ अर्जुन पुत्र जाणा
वा ॥६८॥ नकुळ विर्य रातानिक ॥ श्रुतकर्मा पाचवा देख ॥ सहदेव तनया
राजटिळका ॥६९॥ हा चेगळिया कुमरि ॥ पाच जणि पाचनारि ॥ वरिल्या
याचे पवीत्रोदरी ॥ पुत्र पंचक जन्मले ॥७०॥ गोसावि राज कंन्या ॥ देवीका
नामे परम धंन्या ॥ स्वयंवरि वरिलि मान्या ॥ धर्मराज धार्मिका ॥७१॥
तिचिया उदरि धर्मरते ॥ यौधेयनामा पुत्र तिते ॥ जन्मला तो सर्व धर्मा ते
चालिपि नियासारिखा ॥७२॥ बळधरा विर्यशुल्का नाम्नि ॥ भीमे वाख्वा
जी तिलि हरणी ॥ त्याचा पवित्र गर्भस्थानि ॥ सर्वगभीम जन्मला ॥
॥७३॥ वसुदेव कन्या बळिराम भगिनि ॥ सुभद्रा देविला वंपय स्वामी ॥
अर्जुन वरीलि तिये भागुणी ॥ अभिमन्यु राजा जाणा ॥७४॥ चेद्य
कन्या रेणावति ॥ नकुळ भार्या परम सति ॥ तिचा उदरि सगुणमुर्ति ॥

८ ८ न्य

निरमीत्रनामाकुरुकुळि॥७५॥विजयमंद्रराजकुमारि॥युधिस
हदेवसंयवरि॥पुत्रजन्मलातिचाउदरि॥सुहोत्रनामापवित्र॥७६॥
हिडंबिराक्षसीचाउदरि॥भीमवीर्येंक्रुरशरिरी॥घटोत्कचजन्मला
॥रणाचेवारि॥जोकाकर्णेमारिला॥७७॥ऐसाचिप्रकारापांडवय॥या
माजिअर्जुनाचितनय॥अभिमन्यनामासुभद्राये॥वंशधरकुरुकुळी
॥७८॥तयाअभिमन्याचिकांता॥उत्तराविराटिविराटदुहिता॥तिची
याउदरिलुसापीला॥परिक्षीतिराजजन्मला॥७९॥पांडवसंततिचे
सुत्र॥छेदनाब्रह्मास्त्रद्रोणपुत्रे॥सुदर्शनेचक्रीत्रैलोक्यमीत्रे॥जो
कागर्भिरक्षिला॥८०॥यापरिक्षितिनिमाद्रवति॥पाणीग्रहणीपर्णी
लिसति॥लुसीमातानेलुजमलि॥सहजपडिलेसांगणे॥८१॥परिक्षी
व त्रिपुत्राजन्मेजया॥पुष्टमाजेलुसीभार्या॥तिचाउदरिकुमरद्वया॥
जन्मजालेतबवीर्ये॥८२॥सताणिकशतानिक॥लुसपुत्रपवित्रस
गुणा॥सतानिकाचेअंगनारत्न॥विदेहकन्यावैदेहि॥८३॥लुसाना

तुलीचीयकुसि ॥ चंदनगुणोकरासि ॥ लुमचिसंबंध माळा असी ॥
निरोपिली विस्तारे ॥ ७२ ॥ ब्रह्मदेवापासुनि वंश ॥ कथित आलो कि
र्तिघोषे ॥ आटेताळीसावा पुरुष ॥ तुसानातु जाणीजे ॥ ७३ ॥ बादरा
यणामुखभारती ॥ वदला बहु साल फलश्रुति ॥ याचे निपटोणे श्रवणे
प्राप्ती ॥ कैवल्याची कौतुके ॥ ७४ ॥ सर्व सुकृति जोडतिकरी ॥ सर्वपा
तकाहोय बोहरी ॥ सर्ववर्णी पुरुष नारी ॥ सर्वी श्रवण करावा ॥ ७५ ॥
पेरेरा तिरका विस्वंभर ॥ मुक्त पापी मुक्तेश्वर ॥ वदे ललेथे प्रमादर ॥
सज्जनि केला पाहिजे ॥ ७६ ॥ इति श्री महाभारते आदिपर्वणी ॥ क
थारूपे कीष्टावेणी ॥ निवटलि सगमदारव विनयनि ॥ प्रवहापंथे
चालता ॥ ७७ ॥ श्रीधर श्रीशैल्यपर्वतावरणी ॥ पुर्वसमुद्र अद्य
स्थानि ॥ संस्कृतप्राकृत उभय वदनि ॥ ब्रह्मानंदे समरसे ॥ ७८ ॥
इतिश्रीमहाभारते आदिपर्वे वंशावळि निरोपण नाम यकोवे
सातिमोध्याय ॥ ७९ ॥ छ० ॥ छ० ॥ छ० ॥ छ० ॥ छ० ॥ छ० ॥

श्रीकृष्णाय नमः॥ वैशंपायन म्हणे नृपति॥ कथा ऐक सावधमती
रसना कवं विचि कवित्ती माहाभिषयाने वो॥१॥ लपैसागरांतभव
नि॥ बहुकाळ भोगी लिन्याय षड्गुणी॥ पुण्य जोडिलि यज्ञदानि॥ पुण्य
श्लोकासारिखि॥२॥ अस्वमेध सहस्र येक॥ वाजपेय राजसुय देख
करुनी अमराचा नायका॥ प्रसन्न केला सुकृतें॥३॥ संतोषोनि सुराचा इंद्र
लयावोपिला स्वर्गवासु॥ तथ भोगि नाना सुखविलासु॥ वर्षे अपार लोटला
॥४॥ कौतुक पुण्यदिवसी जाण॥ देवऋषि ब्रह्मभुवन॥ चतुराननाचिया द
र्शना॥ समारंभे पातले॥५॥ कनक अलंकार भरित॥ महाभिषपा नल
लेध॥ पवित्र ब्रह्मसभे आला॥ कौतुक काहि वर्तले॥६॥ सकळ सरिताचि
स्वामीणी॥ गंगा भगवति स्त्रिरूपिणी॥ दिव्यांबर स्वंद्रवर्णी॥ वंदिला हाति
चतुरानन॥७॥ वाटे वसन किटलापा हाहा॥ वस्त्र विणपरस्त्री देहा॥ द्रि
ष्टी पडे म्हणोनी समुहो॥ माघारला विबुधाचा॥८॥ यकि वदने पाहि
मोरी॥ करूनि नयन सांकोलि करि॥ अधोमुख निर्मळा चारि॥ नेत्रपाति

लाविली ॥ ९ ॥ महाविषपसरा त्रिनयन ॥ केले न गंगना अवलोकन ॥ हेदे
खा निचतुरानन ॥ कोपा विष्टअनुवादे ॥ १० ॥ हपोहा मानवदुयचारि
नग्नआवले किंपरनारि ॥ विनाघचि विहा माझा रि ॥ शंका काहिअसेना
॥ ११ ॥ महाविष्यदेखला नग्न ॥ गंगा अकुमाव्हास्यवदन ॥ हहालेक्षो नि
विचक्षण ॥ भावजा पाहे रचा ॥ १२ ॥ मनुष्यदेह धरु निदोघे ॥ वासना पु
र्ण करावयेग ॥ कर्मक्षयरे वयोग ॥ पुढति स्वर्ग पावाल ॥ १३ ॥ ऐसे बोलो
नी कमलासन ॥ उठिला सभा विसर्जुन ॥ विबुधवंदु नि चरण ॥ जाले जा
ले स्वस्थान ॥ १४ ॥ गंगा विचरला गंगन पंथी ॥ अष्टहि वसु दिव्यमुर्ति ॥ खे
दभुलचिलावाती म्लानवदन देखिला ॥ १५ ॥ याने सरिता साशेपयुक्त ॥ ह
घोदु ऱ्हिचना कायसयेथ ॥ लोपेथरहो अतिसमर्थ ॥ निस्तेजलुहीकां
सा ॥ १६ ॥ वसुम्हणति देवतटणी ॥ स्वल्पअपराधे पडिलो बेसनि ॥ व
सिष्टशापे मनुष्ययोनि ॥ प्राप्तजालि आमुते ॥ १७ ॥ त्रैलोक्य पवित्र
कारके गंगे ॥ उपकार पाललालुसे निभागे ॥ दुस्तरापासु निऊपावा

गे ॥ दीनेमारिद याचे ॥ १६ ॥ अहे भरित सुरजान्हवी ॥ मनुष्यकाया
धरुनि बरवि ॥ पवित्रउदरीये जन्म वि ॥ १७ ॥ मानविगर्भअतिकुश्चि
त ॥ रक्तमुत्र इष्टाभरित ॥ तेथ प्रवेशतां चित्त ॥ मानिअयेतकंटा
ळा ॥ १८ ॥ याला गितुसीयेनी मळोदरि ॥ आमुतधरि निर्जरोदरि ॥ अव
स्यह्मणे निश्रापेश्चरि ॥ माहाथिलाअनुवादा ॥ १९ ॥ मनुष्यलोका हो
अलौता ॥ विर्यदानें तुम्हचाकर्ता ॥ नामकोपालोल हता ॥ जापातेनोम
जसांगा ॥ २० ॥ भारतवंशि प्रतिपकुमर ॥ शांतनुनामा राजेस्वर ॥ हेतानि
तुसाप्रापाध्वर ॥ जन्म विलभामुते ॥ २१ ॥ तुझीयगर्भमुक्तिके विमळे
शांतनुरतस्यातिजके ॥ जन्मतिजअष्टहि सुतापळे ॥ परिलेमानवाअ
योग्य ॥ २२ ॥ यालागी मागपोआसेयेके ॥ तेहाघावे अवस्यक ॥ पुत्रजन्म
तातात्काळिका ॥ गंगाजळियागावे ॥ २३ ॥ रवडोनि मनुष्यदेहा चिउतो ॥
स्वर्गपावे ॥ निसिघ्रगति ॥ पुर्विल अक्षय पदाचि प्राप्ती ॥ होतुझेनिज
मुले ॥ २४ ॥ गंगाह्मणे हे अतिदुर्गम ॥ कोपिअपत्यानि हिंसाधर्मी ॥ तो
कटेविधि कुकर्म ॥ राक्षसीचे मजमाथा ॥ २५ ॥ प्रस्तउ रिपुत्राचे आष्टक ॥

शंकि वंध्या म्हणति लोक ॥ लक्षणशब्दाचा कलंक ॥ न लगे ऐसे विचार ॥
॥ ३८ ॥ वसु म्हणति मागिल कडे ॥ अश्म पुत्र तुझिये चडे ॥ देउ नि जेले वाडे
कोडे ॥ सर्वश्रेष्ठ पालावा ॥ ३९ ॥ आयाचे निअंशायकु ॥ कुमर घरवंश ति
लकु ॥ प्रतापतेजे जैसा अर्कु ॥ जीतेंद्रिय याम्नमी ॥ ३० ॥ देवतापिंड
म्हणानि रेले ॥ दक्षिनपवक्षु लोकाले ॥ ब्रह्मचर्यव्रत नेमस्त ॥ गंगा
मरणी धर्मा ला ॥ ३१ ॥ ऐसा उभयता निश्चय उत्तरे ॥ न मने मिलन पर
स्परे ॥ चरित्र वर्तल पुढारे ॥ बतु परिसे नरेश्वरा ॥ ३२ ॥ प्रतिपरा स्वाह
स्त नापुरि ॥ मृगयाव्यसन वन गर्भारि ॥ फीरत फीरत जान्हवि तीरी ॥ ख
स्वासनि बैसला ॥ ३३ ॥ विषय उष्णे अतितापला ॥ तृष्णा तृषेने अ
ति श्रांतला ॥ गंगा देखोनि विश्रामला ॥ नाश जाला भवतापा ॥ ३४ ॥
मंद वालुका पाहो ॥ दुग्ध वर्णीजल प्रवाहो ॥ क्रिडासौख्य जलचर स
मुहो ॥ उपहास निस्वर्गस्था ॥ ३५ ॥ नाना कमल सुवासु ॥ भ्रमर झंकार ॥

प्रवेशाकरितु॥ तेणेहृदयलिंगाहोतु॥ हरिजागुरुस्वानंदे॥ ७५॥ सुघोषेकर्णी
सागवर्म॥ गंगातेपरज्जुकादाम॥ विष्णुचरणीअतिउत्तम॥ शुळग्रथि
गोविला॥ ७६॥ गंगाशावनुचक्रधरु॥ धाइबांधोनियादारु॥ अपपापा
सिअतिसवरु॥ वादुनिलेपेआणिले॥ ७७॥ असोमाथावंदोउदका॥
वोल्हाविद्यअवके॥ तृषासर्पिणीचेविख॥ जळप्राशनपरिहा
रिले॥ ७८॥ तवगंगेअतुनीअकस्माता॥ अपारलक्ष्मीमुर्तिमंत॥ दि
व्याभरणेरत्नखचित॥ स्वेतवस्त्रासुनेत्रा॥ ७९॥ गंगावाळिचिकमळ
कळिका॥ लावण्यवनिचिकनकलतिका॥ शंकरमस्तकीचिमाळीका॥
सुटोनिपडलिरूपाकि॥ ८०॥ सौंदर्यगगनिचसौदामिनि॥ सळकेते
सिप्रकाशाखाणि॥ आनंदवनिचिहरिणी॥ सगदभुपसारंगा॥ ८१॥ या
परिअपुलेस्वरूपप्रगट॥ करुनिगंगापातलिनिकट॥ अश्चर्यकरिनरव
रिष्ट॥ ह्मणेरमाकिउमाहे॥ ८२॥ येउनिदक्षपाजानुवरि॥ बैसतिजालीस

उकरी ॥ लपराजया मातवरी ॥ वल्लभा स्वामीनि भोगार्थी ॥ ४३ ॥ नातरी चपळ
कुरंगी ॥ सचैव राजहंसाचे अंगी ॥ अंगकुशामना लागी ॥ ४४ ॥ हे वोड
नुवादे ॥ ४५ ॥ दोषकुंजर विदारण ॥ उग्रदेखा निश्री हरिचरण ॥ याचे कव
पासुनि जाय ॥ आपाधा केपकाल ॥ ४६ ॥ हा वरिपंचानन नाचे नावा औ
कोनि भयव्यापिले जीवे ॥ अधोपंथि घेउनि धावे ॥ जन्तु जट रिथोक

२

ले ॥ ४७ ॥ मृगधर अपी मृगपापीन ॥ संगी सांडुनि उभय मृगा तेगकी

२

र्ति कस्तुरि मृग तुते ॥ भोगावया पातले ॥ ४८ ॥ यं कालबिजनिरावं
प्यखापी ॥ स्वयं अनुकुळशरीरदानि ॥ तथापि निर्मळ अलंकृपी

च

विकारतेमासळे ॥ ४९ ॥ यापरि धैर्यकिनकोंव ॥ नियमासनि निश्चील
अटळ ॥ हासोनि भ्रमपासुं रे विकळ ॥ बोलतसे नेदिसनाहे ॥ ५० ॥ ज्यासि
जो अयोग्य पदार्थ ॥ तो के विधी कारावे अर्थी ॥ यालागि कल्पसिलाव्य
थी ॥ मासाटाइसंकल्पु ॥ ५१ ॥ पाळ कि बाहकाचि सजे ॥ हृष्ठ आदर के
से नि निजे ॥ कुमासि वक्गेण नसाजे ॥ पागलत सर्व था ॥ ५२ ॥ परास्त्रि

संगे विभिचार मळु॥ स्पर्शला नाहि मज अळु मात्रु॥ यालागि रोषाय
विगळु॥ सगट नेंदिमान सा॥५३॥ सरिता बोले सुरस वचन॥ म
नुष्य लोका माजि जाण॥ नव्हे मि पराची अंगन॥ अनुपति लिंधी
रे॥५४॥ यालागि विघिन पापिष्ट हणि॥ मि होइन पद्माचि राणी॥ राज
ह्मण वायक पनि॥ अखंडित तव मासा॥५५॥ आणिक असे भावो॥ वा
मां कि स्त्रियेचा ठावो॥ तो हा सांजे ब्राह्मणा निनावो॥ संकल्प ब्रह्म
ताकेला॥५६॥ शुभ्रागि निकन्यका॥ दक्षिणे मांडिये बैसका॥ यालागि
पुत्राचा नायक॥ हेउनि वलभ्र हि॥५७॥ पुत्रा लागि अंगिकार॥ म्या
केल्या निर्जें धरि॥ भविष्य जाणा निसाचार॥ अवस्य ह्मणा नि जाक
वि॥५८॥ मासी या पुत्राचि सुपत्नि॥ होइ राज्याचि स्वामिणी॥ निके ह्मणा
नि सत्य वचनि॥ राजा भाषेगोविला॥५९॥ पुढति बोले जान्हवि तनुजा॥
होउनि तव पुत्र भाजा॥ तुझिय भारत वंशीं ध्वजा॥ कीर्ती पताका धिमिरदि
ना॥६०॥ पावन करिन सकळकुळ॥ पुत्र प्रसवेन गुणा विशाळ॥ ज्या

नि

चरीयें अद्भुत विमळ ॥ हारि आपी हरितो ॥ ६१ ॥ ऐसें बोलोनि लेक्षणी ॥ अ
दृश्य जाली देवतरुणी ॥ प्रलिप पुत्राचिअनुदिनी ॥ करिलें टेलि प्रतिक्षा ॥
॥ ६२ ॥ यायरि राजा भारतोत्तमा ॥ इछिल जाला पुत्रफळाचा कामा ॥ भा
र्यासहित पुण्याश्रमा ॥ सेविता जाला पुत्रार्थी ॥ ६३ ॥ जान्हविनटि रमणी
कवना ॥ सेऊनि कंदमुळ जिवन ॥ वेदुनी यावल्कळे वसन ॥ तपश्चर्या वि
चरे ॥ ६४ ॥ प्रसन्न करुनि दुर्गारिमण ॥ पुत्र लाधला राजीव नयनु ॥ माह
शिष्यमानवलनु ॥ राजतनु होउनि जन्मला ॥ ६५ ॥ महाभिषक राजतनु
जाला ॥ पुण्य प्रताप उदय आला ॥ रायहस्तों पुरि केला ॥ मोह सांवोसं
लोपे ॥ ६६ ॥ दिवस दिवस वयाचि का चिकाटि ॥ चढतिसावण्य सरि
ला गाटि ॥ लारुंण्य पावला परवडि ॥ कन्याजन किमांडी ति ॥ ६७ ॥ राजे
आपुलाली दुहिता ॥ द्यावया प्रेरिल जाजा रुदुल ॥ राव्कोणानें हि
पिता ॥ लेपेशां करांत नु ॥ ६८ ॥ स्मर सन्नसजाणानि लुत्तनुज ॥ पि
लायं कालीं सांगे गुज ॥ पुत्रा ऐक रहास्य बीज ॥ तेहा अवस्य करावे ॥

॥६९॥ मृगयाखेळा गंगातटि॥ दिव्यांगना प्रगटे द्रिष्टी॥ तिसि नक
रा निअन्य हे गोष्टि॥ अयादर प्रणाचि॥७०॥ कोण कोणाचि उ येथे॥ अे
सन विचारावे तिते॥ सांगेल आदर बहुते॥ अज्ञा पाळण करावे॥७१॥
अंतु स्त्रिया अधिकार॥ ग्रह अण निसोपस्कारे॥ भोग भोगावे त्यांकरे॥ पा
वे तिसि ज्यापरि॥७२॥ अेसा बोधु रिसुपुत्रा॥ आपिसा किर्तिमा राज्या
सनि॥ अपपात्र बैसला॥ नि॥ मोक्षकामि वैराग्य॥७३॥ शांतनु राजा प्र
तापवंतु॥ वसुधा सागर वळाया किंतु॥ अनंकमुनि स्वधर्मनिरतु॥ न्याय
मार्गि वर्तत॥७४॥ पियाच वचन स्मरानि मनि॥ मृगयाखेळे खेळे वनि॥
जान्हविचे तिर नयनी॥ अवलोकिता साक्षी॥७५॥ दिव्याजंने भरु नीव
यन॥ पायाळ पाहे निधिचे स्थान॥ ते विरोधित प्रमदा रत्न॥ देव सरिता
परिसरि॥७६॥ नवयौवन तयाकि देवदमा॥ ता रुप विश्व इश्वरमा॥
जे विरमे चिअपर प्रतिमा॥ रु जिउपमा उभची॥७७॥ राय अवलोकि
ला नयनि॥ मुनि विंबलि हृदयभुवनि॥ अज्ञा हिय पाश बंधनी॥ म्र

गत्रायसरकला॥७०॥किबालावण्यसरिताजळा॥भरिलानयनअंबुभाळा॥प्रीतिकाअतिवेल्हाळा॥पाल्हे जलिविस्तार॥७१॥तोअंकमध्यपान्चढोनिलोहे॥कुचफळातस्पर्शोपाहे॥अधरपानालागिमोहे॥वाटीघतरछेचि॥७२॥मगअदरेबैसोनिकटि॥बोले मंजुळवचनगोष्टि॥म्हणेतुकोणवोगोरटि॥महारंभ्रीयेकटे॥७३॥देवीदानविगंधर्वि॥अपसरायक्षीणीमानवि॥नागकन्यावनदेवि॥सुमध्यमेमजसांग॥७४॥जेहासियास्वरूप॥मोलवरिसौभाग्यदिप॥भायहिडनिभलिभसुप॥सर्वसौख्यअनुभवि॥७५॥नपडेअनुमानेगुंति॥लोकलाजदवडिपरोति॥इंपानिपपाचिगुति॥पाडिलेहातुह्मातें॥७६॥दलतेजउजळुनिदिक्करा॥हासोनिलणेनरविरेशा॥भायीहोऊनपरमपुरुषा॥साक्षकरुनिनेमातें॥७७॥शुभहोकाअशुभकर्णी॥करिलावाराविनावचनि॥अभिप्रायकरिताजेचिक्षणी॥याउनितुलेआइनु॥७८॥ऐसियानेमचर्नसिराया॥नरिमीहोइनपट्टाचिजाया॥मासेनि

संगसुरालया॥ मृत्युलोकि भोगिसि॥ ८७॥ रायअंगिकारु निर्वचना॥ ह
स्तकिबापिलेभा॥ स्यरत्न॥ शिबिके वाहानिया॥ गुपा निधान॥ राजमु
हापातला॥ ८८॥ योगियासाधे योगसिधि॥ रुपपासापडे निक्षेप
निधि॥ तैसाशालनु ऐश्वर्यउदधि॥ गंगालाभे संतुष्ट॥ ८९॥ दिव्यत॥
रुपदिव्य संपदा॥ दिव्यलाधलि दिव्यप्रमदा॥ तेवे क्रिसाचिया आनंदा
ब्रह्मांडवाटे ठेंगण॥ ९०॥ वनेउपवनेसरितासरि॥ मल्याहिमाल्ये परिस
रि॥ स्पटिकमये गोपुरेसिखरि॥ सुवर्णसदनि क्रिडनु॥ ९१॥ जानविसु
रनसंगसुरवाडा॥ स्वर्गनिंदुनिसांडिलाकेडा॥ वर्षनिमिषाचे निपांडे
भागानंदिलेटलि॥ ९२॥ पुंष्यवतिरुतुकाळे॥ अमोघविर्यराज मेळे॥
कुमरजन्मलिसुलाफळे॥ शुक्तिगर्भीजियापरि॥ ९३॥ रुतुकाळेसंभवे॥
पुर्णदिवसिपुत्र प्रसवे॥ उपजलक्षणि निर्दयभावे॥ गंगागर्भिसाठवा॥ ९४॥
रायविर्यअमोघरेते॥ अष्टपुत्रजन्मलेतेथे॥ यातेराजयानदाखविते॥
पुत्रसकलबुडविले॥ ९५॥ अपत्यप्रसवेतेचिक्षणि॥ बुडउनीसांडि गंगा

जीवनि॥सागसयेथरनिमनि॥राजाकाहिनबोले॥४५॥ससपुत्रसांडि
लेजाकि॥अष्टमकुमराचियपाळि॥धीर्यनधरेमोहजाळि॥राजाबोले
सकोपे॥४६॥अम्हिलुकोणदुष्टराक्षसि॥परमनिर्दयामानसि॥आपु
लिबाळेवधिलाकेसि॥कलपाकाहिआसेना॥४७॥नारिवधलुसर्पि
णि॥बाळेभक्षिलिपापिणि॥वंशवाढिचिरवंडणि॥कालिनीहुरेकुठारे
॥४८॥हासोनिबोलेसुकलनिधि॥जालाकाळमर्यादावधि॥मीजालुसे
राज्यपदि॥भोगभोगिमजधिणे॥५०॥नव्हेपन्नगिराक्षसिणि॥देवगंगा
मनुधारिणी॥वसुश्रापविमोचनि॥मनुष्यलोकापालटे॥५१॥कार्या
कारणेलुसियाघरि॥वात्सल्यकस्नेहाकाळवरि॥आताजालसोहट्यां
तरि॥स्नेहस्मरणपावसोदे॥५२॥वसिष्टकापाचियाअंगे॥अटहिवसुलाजि
स्तरागे॥मनुष्यदेहेधरुनिवेगे॥स्वर्गपावालमागुते॥५३॥याचेकरनीया
जनन॥रायामज्जनदेहमोचन॥करुनिमागुतिस्वर्गस्थान॥पावि
लेयथार्थ॥५४॥आपिकनिजकारण॥तुसीकामनाकरावृत्पुर्ण॥ल

धं

हिसंपादिलजाण॥जाणेअनाखरुरकाना॥५॥शांतनुपुसे तिर्थश्वती॥क
वपआपराधवसुचेसिरि॥मानवदेहनुस्याउदरी॥अल्पायुषिजन्मले॥
॥६॥गंगाह्मणेऐक कथा॥देविमरुष्णंतिचेभर्ता॥वसिष्टवारुणिन्दप
नाथा॥बहुतामुखिजाणासि॥द्क्षदुहितासुरभीजाण॥कश्यपविर्य
तिपासुन॥कामधेनुजन्मलिजाण॥चौदारलिप्रसिध॥७॥संतोषे
निचतुरानने॥होमार्थवसिष्टालेदान॥दिधलेतिचसंरक्षण॥प्राणानु
ल्यलुकरि॥८॥पुष्टिनेभावलाऐसि॥वर्णसुवासेकर्पुराराशि॥सुवा
र्णपुछच्यामरासरसि॥चंद्रकीपीकवकले॥९॥रत्नखुर सिंगेसरळे॥
सच्यारोममदसमवाळे॥सुकर्णनयनअतिविशाळे॥१०॥सभाग्यभागि
निश्रीयेचि॥११॥जीचेग्रासिलियाक्षीर॥दाहासहस्त्रवर्षेनर॥अमरहोय॥
येचमत्कार॥पयप्राशनिलियाचा॥१२॥मरुपार्श्वीवसिष्टाश्रम॥अति
रमणीकपवित्रपरमा॥दिव्यललिकादिव्यद्रुमा॥सदाफळितवसंते॥

॥१३॥ निर्भय धेनु चारिता तेथे। नाना वनी क्रिडा करिते। अष्ट हि वसु स्त्रा
ये सहिते। तया टायि पालके॥ १४॥ तिहि नयनी कामधेनु। लक्षिला
धवले तनु मनु। म्हणति अनर्घ्य वस्तु हे क्षणु। या मुनी परते न वजावे॥ १५॥
दरिद्री हिंडता महावनि। सुवर्ण वापिका देखिलि नयनि। ते जे वि नष्ट
के तिपासुनि। ते विजाले आरोते॥ १६॥ सामाजिये काचि अंगना। पलि
ते प्रार्थी करुनी करुणा। धेनु हरणी मन वासना। बहुते माझिये॥ १७॥
सगुणा सुंदर मनुष्य लोकि। जितवति नाम माझे सखि। सुदा वोगोत
मि सारिखि। कन्येने जैसा सारदा॥ १८॥ राय उसिनर चा। चिदु हिला।
लिते देउन्या विउथिता। ऐसे वर्ते मासी था चिता। तेतुही अवस्थ करा
वे॥ १९॥ सेवित्या नंदनिचा क्षीर। मासी भगिनि अजरामर। होइल ऐ
सा उपकार। घडे मातेतुमचेनि॥ २०॥ ऐसे यद्यपि चवचन। पुरुषी मानि
ले वेद प्रमाण। ऋषिशापाचे महाविघ्न। नपाति चि स्त्री लोभे॥ २१॥ मग

७

सवसधस निलाति। चोर निनेलि स्वस्थळाप्रति ।। गुमरखुनि श्रु
त्ना चिंति। परमलाभ मानिला।। ४३ ।। वारुणी घेउनीया फळ।। अष्ट
मा पातल। उतावेळ।। धेनु न देखोनिया डोळा। दाह दिशा विलो
कि।। ४४ ।। शोधिता धेनु न सांपडे ऋषि।। मग विचारि ज्ञान द्रिष्टी।
तव कपटे नेली आसन द्रिष्टि। क्रोधानळे धडकला।। ४५ ।। रागे पातला
वसुसदना।। वदला जाला शापवचना।। अपेद्रु यहो मह वर्सेना।।
केल्या कर्मा पावला।। ४६ ।। स्वर्गसुखापासुनि पतन।। मनुष्य योनि
माजि जनन।। जन्म लक्षणी देह मरण। दुराम होपावाल।। ४७ ।। ऐसे
शापोनि ब्रह्मकुमर।। धेनु घेउनि पातला घरा।। वसु येउनि वसिष्ट
द्वारा। लोटांगणी आथिलि।। ४८ ।। उःशाप मागति हेउ निदीन।। येरु
म्हणे नाहे अन्यथा वचन।। परंतु मागुति स्वस्थान।। सिघ्रकाळे पाव
ला।। ४९ ।। तुम्हामाजि एक पुरुषु निरापराधि आटवा वसु। पुरुषा
माजि उत्तम पुरुषु।। भीष्माचार्य याचा मो।। ५० ।। भारतवंशि कर

निख्याति ।। स्वइच्छामरण स्वर्गप्राप्ति । पावेल ऐसें वसु म्हणति । वसिष्ठ
वदला यथार्थी ।३०।। मनुष्य वेश देवतरूपी । होइल तु मचिपविभ्रज
ननि । वासना आक्षिइ स्वर्गभुवनि ।। पास्तव्य करील समस्त ।३१।।
वसिष्ठाचि भविषोत्तर । तैसें चि वर्तेल पुढारें । रणानबंधास्तव निर्धा
र । नेमी ओळ्लो हिला ।३ यालुवाइछीला पुत्रयकला । तो भीदेयी
न गंगादत्त । ऐसें बोलोनि कुमरें सहित । अदृश्य जालि जान्हवि ।३२।
आवडिचे हारपले सुख । लयाचेना चरे खेद अधिक । तैसा राजा अति
दुःखित । शोककरी अक्रोश ।३४। राज्यभोगि न वाटे सुख । अमृत चा
खता लागला विख । गंगावियोगाचें दुःख । क्षणक्षणा जाकळे ।३५।।
मग विचारनिसांगालि । चित्तें टेविले चिद्रुति । सर्वभावें यति स्थिया
युक्ति । खेद दवडि बाहिरा ।३६। इंद्रियें नेमुनि दमन । वाचे सिस असीळ
सुलग्न । ईश्वराचें तनि लाऊन मन ।। राजधर्म वर्तलु ।३७। सर्व नारीप
निवृत्त । तापसाना हि लोकी प्यता । गृहस्तीना हि ज्ञोळ्यंगत । भुत

का ८ ६

कृपा सर्वत्र ॥४०॥ अकाळ मृत्य दरिद्र संग ॥ नाहि दुर्भिक्ष व्याधि रोग ॥
मछ पक्षी विरा होम्र्ग ॥ हिंसा याचि असेना ॥४१॥ प्रताप प्रभे चारी
नकर ॥ शत्रु तापनि वैश्वानर ॥ दुष्ट दंडणी महा क्रुर ॥ यम धर्मासारि
खा ॥४२॥ अव्ययत नेश्रान्य कुबेर ॥ उदार जैसा जळधर ॥ मान्ये
लणे सुरगुरु ॥ इंद्र जैसा नृपाते ॥४३॥ चंद्र ऐसा कृपाळु सक
ळा ॥ पवना तुल्य जवागळा ॥ सर्व संतेचि यावळा ॥ धर्ल रत्ना
न्य अवगम ॥४४॥ अशो लोकपाळा चि मुर्ति ॥ यकिअवतरली
वारेक्षी तिग वनीता करु नियाविरक्ती ॥ स्त्री कामना दवडिलि
॥४५॥ गंगा वियोगदुःख मनि ॥ ह्मणोनि न वसे राज सदनि ॥ गव
स्तिकरु निवन कानानि ॥ स्त्री कामना दवडीलि ॥४६॥ ऐसी
या परि काळ क्रमिता ॥ छतिस वर्षे लोटलि गणीता ॥ पुढें मृगया
मिसे अटता ॥ गंगा तिरा पातला ॥४७॥ आगाध भागीरथिचे
जळ ॥ वरुते तुंबळ महा खळाळ ॥ तरिअवहा अति निर्मळ ॥ स्व
ळ्प वाहे सुळसुळा ॥४८॥ आश्चर्य वाटले नृपवरा ॥ ह्मणे काअ

टलासरितादारा ॥ जळनिरोधदुसरा ॥ आगस्तिकैचायेराश ॥ ४७ ॥
भीष्माचार्यअतिसंधानि ॥ प्रवाहरोधिलिद्ववलटणी ॥ रायद
रानिपाहतिनयनि ॥ महापुरुषदेखिला ॥ ५० ॥ स्वपुत्रऐसना
हिज्ञान ॥ परिस्नेहेद्रवलेअंतःकरण ॥ सपोवकिशयथेतुक
वपा ॥ शुभलक्षणीसाजीरा ॥ ५१ ॥ गौरवर्णकनकनाळुगर
लाभरणीसुवेजाळु ॥ धनुर्विद्येविरंचिगोळु ॥ तुळितापासिटगणा
॥ ५२ ॥ केवटअस्त्रविद्येचबळ ॥ वारिरोधिलेजान्हविजळ ॥ हस्तलाघ
विकळाकुराळ ॥ नाहिऐसादेखिला ॥ ५३ ॥ पुढआदरेअवलोकिलु ॥ ल
वअदृश्यजालागंगासुतु ॥ लेवेकिराजारवेदभुतु ॥ धावाकरिगंगेचा
॥ ५४ ॥ हापोवक्ष्णेअपुलेवचन ॥ ससकरिवेकुपेकरुना ॥ प्रसक्षदेउनी
द्दरिपा ॥ दुःखमोक्षपरिहारि ॥ ५५ ॥ अष्टपुत्रदेइनतुते ॥ विसरलिससस
नेमाते ॥ आलभेटोनियामाते ॥ बोलकाहिसुवानी ॥ ५६ ॥ तवहानिधर
निकुमराने ॥ गंगाप्रहार्क्षपावलितेथे ॥ लाभकाकिसभाग्याने ॥ परिवो

पिदेवता ॥ ५८ ॥ वस्त्रआभरणे पदकमाळा ॥ दिव्यकुंडलेकटिमेखळा ॥ ऐसा
पुत्र धरित्रिपाळा ॥ देतिजालिहस्तकि ॥ ५९ ॥ मगतेनुज लागी वाढविला ॥
सर्वविद्येअळंकारिला ॥ नेमनेमिलायाबोळ ॥ तुसावोपिलातुजहाती
॥ ५० ॥ वशिष्टापासोनिवेदाध्यायन ॥ सांगघडलेयासंपुर्ण ॥ शास्त्रविद्या
कळेनिपुण ॥ शुक्राचार्यसमर्थी ॥ ६० ॥ ब्रहस्पतिपासुनिमंत्रशास्त्र ॥ अध
र्त्मापरमपवित्रे ॥ गुणिसपन्नलुसापुत्र ॥ पितृभक्तहिलोकि ॥ ६१ ॥ भार्ग
वपासुनिधनुर्विद्या ॥ आलाप्रथिपाळवंद्या ॥ सपुर्णकेलियानसुवि
द्या ॥ पुत्रनेइनिजगृहा ॥ ६२ ॥ युवराज्याचावरासनि ॥ अभिषेकावानराग
णी ॥ सागरांलहेमेदिनि ॥ संरक्षिलेतवला ॥ ६३ ॥ ऐसेवदोनियावाणी ॥ गु
रुजालिदेवलटणी ॥ राजारेलालक्ष्समोनि ॥ मुहुर्तमात्रआश्चर्यी ॥ ६४ ॥ मग
हातिधरुनीयाकुमरा ॥ हर्षपावलाहरुनापुरा ॥ प्रजाआलीयानमस्कारा
राजपुत्रासन्मुख ॥ ६५ ॥ लागलियाभेरिमंगळतुरे ॥ ध्वजापताकासुवर्णम
खरे ॥ श्रृंगारिलिंगृहगोपुरे ॥ रत्नमाळातोरणी ॥ ६६ ॥ युवराजिस्थापुनि

कुमरा॥ वोपिता जाला॥ राज्यभारा॥ यरसर्वी विषइचेलुरा॥ कार्यमंत्रीं दक्षता ॥ ६७॥ सुहृदे सुहृदाचे वासे॥ हरवीयासंतोषे जेविउपजे॥ तेविराजासवि काजे॥ सिध्दिर्लि असेमानितु॥ ६८॥ देवताप्रतिमेचिया गुणी॥ राजासंत इपुजासनि॥ इच्छाभोजनमानदानि॥ साधुवृंदि पाळीलि॥ ६९॥ दयापा रूपाचे सुजत्किा॥ प्रजावळ्हि गेलियापाळीकाळी॥ फळल्यावस्तुनाना फळिा॥ शोभादेति ऐश्वर्य॥ ७०॥ अधिकवेतनअधिकमाने॥ वेधलिशे वकाचमने॥ मगयांचेइच्छेनेदाने॥ देउनीकेलेधना॥ दय॥ ७१॥ असी यापरिसावकाश॥ सुखेक्रीडलिचहा॥ रिवर्षी॥ यापरिपीआजन्मनरवे शे॥ पुढेब्रह्मचर्यव्रतधारि॥ ७२॥ इतिश्रीआदिपर्व माहाभारते आदिपर्वेपी आगाधव्यासऋषिचेवाणी॥ अमृतभरितमंदाकिनि॥ लोकत्रयाला रका॥ ७३॥ तेथसुकेस्वराचिवाणी॥ क्षुद्रनदि मिनलिमिळणी॥ पवि त्रनासुरचार गुणी॥ समानसँत्तिभानिजे॥ ९७४॥ इतिश्रीमहाभारते आदिपर्वणी भीष्मासंलिनाम बाविसोध्याय॥ २२॥ ६४॥ ६४॥ ६५॥

श्रीरामसमर्थ।।अवलोकुनि गंगासुत।।राजा मनि उल्हासयुक्त।। अपो
अयुव्यदेउ निधाना।।जीवउ यातबहु काळे।।१।।स्वभावे यक दिवसि दे
खा।।संगिसा डानी सकळिका।।सहज गलि पाव ला नटका।।यमुनातटा
समिप।।यातव वरिली कुडु नी मदानिळु।।लोटु नी अर्णी दिव्यपरमळु
राजा हेउनि आळी उळु।।गधो न्मुख चालिला।।२।।सुवासित
वस्तु कवणा।। तिचे करावया शोधना।।मार्ग करूनि गंधागमना।।
गंगा तिरिचा मको।।चालय दासनगरा पुढे पाहि।।यमुना वाहे ज
ळ प्रवाहि।।नौका माजि दिव्य देहि।।दासकन्या देखिलि।।५।।
पितुअज्ञने ते कुमारि।।नौकारक्षिय मुनेतिरि।।अंगिया गंध
प्रथ्वीवरि।।योजनमात्र फाकला।।६।।रूपसुंदिपेदरांगे जाण
पलंग जालेन्रपाचे मन।।अंगसुवासे भयनयन।।भ्रमर जाय
वेधले।।७।।मग साक्षेप येउनी जवळा।।अपालोकेय चिवेळु काळ।।
अहारात्र यमुना जळा।।माजि नौका रक्षि सि।।८।।यतलेप दासनंदनि।।
पितृअज्ञे नौका यनि।।पाथिक उलरावया जिवनि।।यथे तिष्टे सर्वदा।।

।थो। हृदयभेदित मन्मथो। राजा भोगार्थ गुन्तला चित्ते। रहा जाउनि दास
ते। असा दरशेटला।१०। दासे सन्मानि नृपति। म्हणे जी कृपा केलि केउ
ति। अह्मा आपण गादि ना प्रति। येपेलु मत्ये दुर्लभ।११। राजा म्हणे पासका
म देख। तुझे प्रति जैलोस याचका। मागणे असकाहि येक। तेव्हा दिध
ले पाहिजे।१२। केवलि कविन चिकर जोडुन। बोवा वुनि संतोष प्राण।
१ ह्मातुनि वसु अगळिक वण। जे दिजे तु ह्माले।१३। राजा संतोषोनि पो १
टी। आम्ह तो वेथा पटिपाटी। म्हणे मिच्रा माझि गोष्टि। न मोडावि सर्वथा।
तरणी॥ ।१४। तुसी कन्या स्वरूप सुंदरी। होय माले पट्टाचि राणी। तो श्वीकार करत
निष्फल करणी। निश्चय राव करावा।१५। दास म्हणे जी साचार। या हुनि
काम नाहि थोर। बोलणे आसे येक विचार। ते नावेक परिसणे।१६। मा
झे निकच नने मिळाने मु। अंगिकाराल मानुनि सुरमु। तरि च हृदय का
मु फळ दइलतकालि।१७। इच्या पोटि जन्मेल कुमर। तो राज्यधुरं
धर। करणे ऐसो निजनिर्धार। प्रमाण वाक्य करावे।१८। राया सात
नुच पोटि। तो चि बैसवावा राज्यपटि। ऐसि सभास्था नि गोष्टि। ऐक

विजे समस्त ॥१५॥ ऐसा जालिया अवसर ॥ तुटलिया संशयाचा फासा ॥ व
सुभपुरि निवासा ॥ यत्निका किनइजे ॥२०॥ दुष्करु ऐके कौनि दासवचन
जेष्ठपुत्राचे सेके म्हणे ॥ रायनें दिला प्रमाण ॥ मोनु उटिला तेधुनि ॥२१॥
हृदयि दासकन्येचा काम ॥ धरुनि पावला स्वकियधाम ॥ पहिल्या ऐसे आदरे
प्रेम ॥ सुहृदावरि मंदले ॥२२॥ सत्यवतिये हिरतले मन ॥ विरहे लागले तिर
ध्यान ॥ त्यागुनिया असान पान ॥ चिंतातुर सर्वदा ॥२३॥ उस्वास टाकि वदृष्टी
अश्रुबिंदु ढकलि नयनि ॥ हे देखोनि चातुर्य खाणी ॥ पुत्र पुसे आदरे ॥२४॥
हेप खेद करावयापुरता ॥ कारण विषयो न दिसे तात ॥ तुम्ही हृदयी का
यसि व्यथा ॥ ते मज सांग यथार्थ ॥२५॥ मुखे न बोलसि अनुमात्र ॥ हृदइ
जकसि म्हणे हा शंत्र ॥ काय न प्रगटि गुह्य मंत्र ॥ शंका न धरि आमची ॥२६॥
कारणाके किलिया चिंता ते ॥ जाण मी परिहरिन तिते ॥ राखिजेल तु सेनिअ
र्ते ॥ पुरविन तत्काळि ॥२७॥ जनक म्हणे ऐक वचन ॥ तु सपुत्र तेमि धन्य ॥
कोपा विषइ नाहि नुन्य ॥ भाग्यभोग सर्वार्थि ॥२८॥ वंशि संतति दिसे स
रूप ॥ हा मज हृदइ चिंतासर्प ॥ तो मज म्हणे निसंताप ॥ अहोरात्र हो

लसे मना ॥ ६९ ॥ तुज सारिखा प्रतापवंत ॥ पुत्र न मीळे त्रैलोक्यांत ॥ परंतु
दह भंतवंत ॥ काय केल्हा कळेना ॥ ७० ॥ यक द्रिष्टिचा ओळसु ॥ यक चरणे
चालता पुरुषु ॥ यंक हस्ता हव्यासु ॥ पाहता व्यंगजन द्रिष्टि ॥ ७१ ॥ यक पु
त्रे पुत्रवंतु ॥ ह्मणे तोन याताजा पाबहुतु ॥ क्षपक्षपाला म्हसु ॥ अयुध्यना
सि जगाचे ॥ ७२ ॥ थापवाह प्रसुतिकल्हाचारे ॥ तलु स्परी रोग संचारे ॥ यकसार्य

२

चाभ्रलारे ॥ दुःखजैसे गोगीज ॥ ७३ ॥ यक निष्ठअसलिया गंथि ॥ कायवा
मिरवे कुबेराचि पंक्ती ॥ ह्मणोनि तुज लागि सांगाति ॥ बंधुवर्ग असावे ॥ ७४ ॥
भारतवंशी विराक्सदन ॥ स्तंभ तुयेक त्रायकजाण ॥ पडला न लगे अर्ध
क्षण ॥ हे दुश्चील मज पुत्रा ॥ ७५ ॥ जैसा दरिद्रि ते लरुकारु ॥ घाणा जुंतियक
दोरु ॥ तो अउलिया सर्व विचारु ॥ व्यवसाया चा खुंटला ॥ ७६ ॥ तो चि प्रस्तावो
दिसे माझे ॥ याला गिनावरे दुःख भरिले ॥ सर्व सांडोनि भरण्याते ॥ सेवावे
वाटते ॥ ७७ ॥ ऐसे अनुवादला रावो ॥ भीष्म चा तुयेज भलाटवो ॥ नया
सि सर्व कळला भावो ॥ जाला हरुश्व तेल ॥ ७८ ॥ पाचारु निमंत्रियाले ॥ गु
जसांगे याभावार्थे ॥ ह्मणोनि वधुरनरायाले ॥ सोभाने दिलि सर्वथा ॥ ७९ ॥

रायासिनाहिविषयस्वार्थी॥नाहिरूपीयोगाचआर्त॥परिआमुचेनिमना
गत॥ ८२॥हिगृहिणीआसावि॥ ८३॥वयविरुपगुणसुंदरि॥ऐसिया
राजकुमारि॥कुरुरायातेअलंकरि॥इतुकेनिसंतोषआमुले॥ ८४॥ निकेल
ग्रो॥निअश्रीतजन॥निघतेजालेबहुतब्राह्मण॥रायालागीअंगनारत
रोधावयातालिडि॥ ८५॥ऋपोविप्रुत्राचाव्रतांकु॥पितापुरोगटि मनोरथु॥
पाचारुनिपुरोहितु॥त्यासंकेतजाणवि॥ ८६॥ऋपोबोधिदेवव्रताते॥म्र
हस्तकरणआहेमाते॥तरिनिपजावेद्विधियहाते॥सांगेननअनुष्ठा॥ ८७॥
जाउनीदासरायाप्रति॥मागोनीघेणेसत्यवति॥जेजेअन्नाकाकल्पीति
चित्ति॥तेतेसर्वहिंपरिहार॥ ८८॥यावरीकेमिनहोन॥सहसानकराव
अपण॥लिवेगाक्लिअंगनाआन॥मीसर्वथावरिना॥ ८९॥पुरोहितमुख
अभिप्रावो॥जाणलाजाल्याभ्रमदेवो॥घेउनिअसाचासमुदावो॥निघता
ताजालानाकंठि॥ ९०॥प्रधानमंत्रिपुरोहित॥वृधववडिलबुधिवंत
सेनाचालुरंगणीसहित॥वाद्यघोषेनिघाले॥ ९१॥निकटआलेदास

य

नगर ॥ कैवर्तपावला सोमारा ॥ सन्मोनि राजेश्वरा ॥ सभारच्छा नाम पीत्ते ॥ ४८ ॥
भीष्मविन विदासराया ॥ जन्नीपालले कवणीया कार्या ॥ चिंतरे उनि याज
भिप्राया ॥ सिध्दिनेलि पाहिजे ॥ ५० ॥ या जन्म गंधा तनंदनि ॥ सालना खामी
स्वधर्म पनि ॥ अमुले होय सुखी जननि ॥ ऐसे अवश्य कराव ॥ ५१ ॥ दास
ह्मणे मानलें मनाग नाहि प्रयोलर याबचना ॥ य कअशंका विचक्षणा ॥
भावाच्या लागे बोलणे ॥ ५२ ॥ शांतनु ऐसा राजेश्वरा ॥ तपेकरिता नमी
त्लेवरा ॥ दोषय कचि आहे थोरा ॥ तो हि प्रगट अनुवादो ॥ ५३ ॥ समर्थ
निच धरि त्नेहा ॥ तिगलथोर कळावे सकळार्थी ॥ हे अमुचि वासना कोण
युक्ति ॥ सिधि पावसांगणा ॥ ५४ ॥ सा पल अनिबकिष्ट ॥ को पल्या करिब्र
ह्मांडपीष्ट ॥ तु नमी ताक निष्ठ ॥ दाइज वाचे केसेनि ॥ ५५ ॥ ह्मणोनि समर्थे सिराटे ॥ समर्थ घेता श्लाघ्य वाटे ॥ दीने आपुले मिवाटे ॥ मर्यादेने
आसावे ॥ ५६ ॥ योग्यले कुंजरि कुंजर ॥ सानेमा जरीमाजेरु ॥ अहा
तुह्मा संबधाचा रु ॥ तैसा दिसे स्वामीया ॥ ५७ ॥ जेष्ट स बळ अक्षो
र्नि ॥ जोइ छीत राज्यासन ॥ तपे अवलुनि मरण ॥ मग हासं कलुधरा

वा॥५९॥ आसोशब्दाचि गरिमा॥ संमध घटितआत्मा तुह्मा॥ येथे अ
खेति नसे ब्रह्मा। तेमते मस्तकि माझीये॥ ६०॥ ऐकोनि दासमुखिचे व
न॥ श्री [illegible] बोले अति गर्जन। ह्मणे ऐका आवघेजण। उत्तर मासे मनाचे
॥ ६१॥ इचियापोटिंज मेले कुमर। तोसांतनु पाटिं राज्यधर॥ त्याकर
पोहा निर्धार। सससस त्रिवाचा॥ ६२॥ राज्यपदाचा अलसमंधु। मज
ना हिहाप्रमाणशब्दु॥ अन्यथा होये तेहावेदु॥ म्लेछमुखि प्रवेशा॥
॥ ६३॥ हे ऐकोनि निर्वाणसकळिक॥ साधुशब्दपिटि [?] टिटाळी। दासह्मणे
हृदयकमळि। अर्पीकयकअसांका॥ ६४॥ तुह्मापासुनि होइल पुत्र। तेहि वि
भागिसंतत्र॥ आह्मा [illegible] तुह्मीयाजिला मंत्र॥ तोहि पाहिजे करावा॥ ६५॥ तुस
सारिखे तुह्मे कुमर। होतिबळीया उदंडुर्धर॥ मुख्याधिकारि साचार॥
जेष्टसंततिया हेतु॥ ६६॥ तयासि वारसके कोण॥ तेकाय जलि पेधु [?]
ना॥ तुह्मे ऐकोनि प्रमाण॥ सर्वमुख्यता स्थापिति॥ ६७॥ ऐसे बोलता
दासोत्तमु॥ भीष्मासिकारि अचाट नेमु॥ जोऐकता अतिदुर्गमु॥ क
रिला कठिण सर्वांते॥ ६८॥ ह्मणे संततिपासोनि आपावा॥ खागे [?]

ऐसा तुमचा भावो। तरि मी अंगीकारावो।। मी निर्मुळ करिलसे।। ऐसी
पुरवावया पितृकामु। अंगीकारिलि सरानेमु।। लोपरिस तु पुरुषो
त्तमु।। पितृभक्त धर्मात्मा।। ६९।। आजिपासुनि निश्चित।। अक्षरब्रह्मचर्य
येव्रत। अंगिकारिले नमस्त। पिसाला गिसङ्घावे।। ७०।। स्त्रिमात्र इय
दृष्टि।। गंगेसमान मासी येद्रीष्टी।। जितद्रियेगुणांचा मुगुटि।। वीरअं
कुराखा विले।। ७१।। मस्तक मदने नाचे छेदुनी।। विरवाकि बाधिलाच
रणी।। वागनियमाचि त्रिभुवनि।। मीरवे माझी पाताका।। ७२।। संतवि
पामिनिदीषु।। पावेन अक्षय स्वर्गवासु।। ऐसा बोलताकुरु नरेशु।। ज
यजयकार प्रवर्तला।। ७३।। धन्यरे धन्य ऐसिया गोष्टि।। समस्तीच
रणवंदिले मुगुटि।। गगनि हुनिसुमन दृष्टि।। भीष्म माथा होसे रावि।।
।। ७४।। दास आहालादो निचित्ति।। कन्या वोपिलि भवाहाती।। ये रेचा
होनिकनकरथि।। समारंभे निघाला।। ७५।। हस्तपपालला हस्तिनापुरा।।
नमस्कारिले राजेश्वरा।। अंतरस्थ हि गुणासुंदरा।। जननि जनकां अर्पि
ला।। ७६।। जेसा विचे कउदार कीर्ती।। जननि माउनिध नसंपत्ति।।

वोपुनिधर्मीजनकामतिं।।उर्लिपिहोयेपुत्रहा।।७७।।आपपाल्कीगीदुष्कर
व्रत।।भीष्मेअंगिकारिलेअद्भुता।।हेजाणोनिप्रसन्नवंत।।वरवोपितपुत्रा
ले।।७८।।अणसुपुत्रकुळदीपका।।उपमेचुतुसारिखा।।लुवाजिंति
लेउभयलोका।।रामचंद्रासारिखे।।७९।।ब्रह्मचर्येसत्यव्रतनिश्चलुचिअंगका
पित्रुभक्ति।।संततीविणपरमगति।।ब्रह्मनिष्ठाहोलुते।।८०।।इहलोकीनी
र्दीर्घकिर्ति।।परलोकीसायोज्यमुक्ति।।स्वच्छंदमरणतुसीहाति।।वर
प्रदानवोपिले।।८१।।पुत्रगौरवनिवचनि।।वेदविधानेपाणीग्रहणी
विवाहपूर्वसंभ्रमेकरूनि।।अंगीकारिलिसुगंधा।।८२।।सातियमिसं
गमलाभे।।धुलिपुलल्लाविषयलोभे।।मोक्षश्रीयेचियशोभे।।करा
असेमानीतु।।८३।।ऋतुप्रासकाळावसरि।।राजवीर्यपवित्रोदरि।।
पुत्रप्रसवलिसुंदरि।।चित्रांगदयानामे।।८४।।पुढतियकसंसरा।।
कुमरजनमलादुसरा।।विचित्रवीर्यराजेश्वरा।।शुभलक्षणीअव्व
क्रत।।८५।।जातिकर्मीदिसप्रेमे।।पितवस्त्रेमोलनामे।।वाढुनि
रायेव्यणीपीष्मे।।अतिसंतोषमानिला।।८६।।बाळहवर्ततापुत्रा

ते ॥ नारूप्य प्राप्त नव्हता ॥ सोलेगशांतनु राजा का वधमति ॥ अच्छ्रयोग पावला ॥ ८१ ॥ तेवेळिं कुलर कार्य सकळ ॥ भीष्म संपादि कर्म कुराळ ॥ द्रव्य दक्षण पुष्कळ ॥ बहु याचका वांटलें ॥ ८७ ॥ सारूनि मेल कार्य चिगु ति ॥ सत्यवति चि मनो व्रति ॥ राजि वैसविला न्टपति ॥ चित्रांग दुस्थानं मे ॥ ८८ ॥ तेपें चित्रांगरें स्वशक्ति ॥ जी तिलि सप्त द्वि पा वति ॥ विरोष देख जे संपति ॥ लेले हिरोनि घेलसे ॥ ८९ ॥ यदु नियां अमरावति ॥ आवमा नुनि आमरपति ॥ तेथील आपुनियां संपति ॥ श्रीगां रिलि स्वर्गी न ॥ ९० ॥ बळ देखोनि सर्वा मेळ ॥ यक नामाचा इ सों को ॥ गंधर्व राजे बुद्धि कुश ळे ॥ सग्राम या सिमांडिला ॥ ९१ ॥ कुरुक्षेत्रि बहु का ळवरि ॥ वां ग्रा सि बहु घोर सुसारि ॥ कपविये चा गुसमारि ॥ राजा प्राण घेतला ॥ ९२ ॥ चित्रांग द नरनायका ॥ मारूनि गंधर्वराज देख ॥ प्रवेशला गंधर्व लोक ॥ भीष्मा सपोते फाकि ॥ ९३ ॥ हस्तनापुरि सत्यवतिसुल ॥ नकळता गंधर्व केले घात ॥ भीष्मा चार्य अति दुःखित ॥ ह्मपोहक र्म अमुच ॥ ९४ ॥ सपाटु निप्रेत कार्य थी ॥ वि

५ ५ ॥ ७ ॥

चेके शांल विलिमाला ॥ विचित्र विर्यक निश्चाता ॥ राज्यास निरुछापिखा ॥ ६७ ॥ रक्षक होउ निसवीरा क्षि ॥ राज्य चालविअनु जाहाति ॥ प्रजा पा

ळि धर्म मुलि ॥ मांधाता सारिखा ॥ ६८ ॥ वेद शास्त्र धनुर्वेदु ॥ निपुण जालि

या कनिष्ट बंधु ॥ उपनयन नंतर राव्दु ॥ विवाहाचा प्रगल्भा ॥ ६९ ॥ बंधु रा

जकुमरि ॥ मणे हा विचारा नोवरि ॥ स्वपरातिचि येसरि ॥ कादमर्यं तिसा

रिखी ॥ ७० ॥ वार्ता सांगीजतसी स्वरी ॥ काशीश्वर अपुला नगरि ॥ राज

मे केविले समारि ॥ कन्या त्रय तयाले ॥ ७१ ॥ अंबा अंबिका अंबालिका ॥

रूप चातुर्य अभोलिका ॥ राति धर्न्याचा अगाणिका ॥ ७२ ॥ हि कहोयबळ

छा ॥ ७३ ॥ श्रवण अवेश गंगात्मजा ॥ कन्यात्रय जाणो निर्पेजा ॥ अनुजाला

गि करपो भाजा ॥ इछा जालिमान सिा ॥ ७४ ॥ विलंब द वउनी मा घारा ॥

अळ सन भेटता ॥ विचारा ॥ समागमे घेउ निसुरा ॥ निघता जाला ताका

शिा ॥ भीय करथे राा सनधारि ॥ पावला वारणासिपुरी ॥ रंगभुमिके मासा

रि ॥ हेम मटप उभविले ॥ ७५ ॥ त्राहपा वकुळिचे राजकुमरा ॥ उभे करा निदि

यश्रृंगार॥स्त्री भ्रमदेखोनिला॥हनथोर॥विषाद यातें उपजेलो॥७॥कुंजर

रावकाचमैके॥सिद्धदर्शनेहोतिव्याकुळ॥नानापातकिया आचार

सिळ॥कर्मीस्पष्टकापति॥७॥तैसिजाणो निभीक्षरा की॥मा निलिअ

भिषमेलेहाति॥निर्बळपणनिंदायुक्ति॥चाकितजालेसमस्त॥८॥ह्म

णतिजेजे यौवनदशे तरुणे॥धरनीपाळनरस्त्री का मने॥तेथेयाच्या

ब्रह्मयेणे॥कारणकोणविशेषा॥९॥पित्नीयाचिविवाहकार्यी॥मुख्य

ने मिरवीब्रह्मचर्यी॥ते अवघेचिगेलेयाया॥उत्तरवर दिसताहे॥१०॥

ऐकोनिगंगानंदन॥कोपरवचकलादारुण॥अपेमुद्रहो ऐका वचन

प्रतिसेचा अवधारा॥११॥अवमानु निभ्रयोग्यते॥जंकोनियाराजस

भेते॥पुजाने इजे वरपंडिते॥विद्याबळ ज्यापरि॥१॥थाले वितुमचिअ

ननेकाळी॥करुनि नतसे तिधीबाळी॥सोडविनायाचि मोकि॥चरण

माशान्यसित्रास॥१२॥लपोनिउतरो नियाक्षिति॥राजकन्याधरि

लियाहाति॥रथवाहोनिभद्रजाति॥नगरपंथे परतला॥१३॥पुर

प चिन्हे जो अथिल ॥ खांड मिसियाचा दुंडुळा ॥ तेपो आउट ॥ कुनिवहि
ला ॥ संग्राम मज असिकरावा ॥ १५ ॥ औकौनि भिष्माचे उत्तर ॥ कोपा
चडले राजकुमर ॥ सर्जुनि अपुल्याले भार ॥ वरवा केला संग्रा
मा ॥ १६ ॥ घ्या घ्या ह्मण ति आवघे जण ॥ सकळा बोलेन्यु न्यवच
न ॥ कन्यानेतसे हिरोन ॥ अव्हेरुनि समस्ता ॥ १७ ॥ संग्रामसंकेत
भेरि ॥ त्राहटिल्या भ्यासुरि ॥ श्रृंगकाहाळ वरपामो हरि ॥ गवरिडंडु
भि बाहिल्या ॥ १८ ॥ चालुरंग शैन्य सपति ॥ हास्तिवाजिरथपदाति ॥
वर्मकि कर्म वापुस्त्रजाति ॥ कर मंडित विरांचे ॥ १९ ॥ राउत वळघले
अस्वावरि ॥ हस्ती पबैसले कुंजरि ॥ रथियें अरुढले रहंवरि ॥ उ
तूर स्वरि पैयेक ॥ २० ॥ प्रचंड करिति रादयान ॥ श्रवतिमदोदक घन ॥
दिव्य असह्य हाणलिपक्ष न ॥ पेजा मांडुनि माघारे ॥ २१ ॥ विकटविराचा हाका ॥
रागे फोडतिल ऊका ॥ हळपाति नदि चिया बाळका ॥ सोना समुद्र गिळीतला सि॥
गरस्त ॥ चेदंन नेता कुठार धारि ॥ रागें वेदिजेंद्र विकारि ॥ निधान साधीता पं
चाक्षरि ॥ सुतवकी वेढिला ॥ २२ ॥ जैसे अवगुण पाचे वृंद ॥ विशां डियकवि

चार सिंधु गले सा भिष्म संग्राम द्वंद्व ॥ आसिल जाला पराले ॥ ७५ ॥ ते वि
भीष्म सिंजुसारि ॥ घ्याव या ध्या विजे मही विरि ॥ रथ वेढुनि चौमेरि ॥ ना
ना रास्त्री हाणीत ॥ ७६ ॥ धनुष्य साउनि घेतले मुष्टि ॥ गुणी सज्जी त्या उभ
यकोटि ॥ कोदंड घटा चिंघोभाटि ॥ मह झाडित परस्थे ॥ ७७ ॥ अमरा असुरासा
रिखे थार ॥ युध्य मांडीले घोरांधार ॥ देखोनि मंदाकिनीचा कुमर ॥ वरित
जाला वीरश्री ॥ ७८ ॥ सागुनि ब्रह्मचर्य नेमा ॥ तिसरा लब्धा राजकर्मा ॥ परागं
ना राज प्रतिमा ॥ विर्य पंके लोपरत्या ॥ ७९ ॥ धनुर्विद्या हस्तलाघव ॥ देखो
नि आश्चिर्य करिती देव ॥ सोडण्या वोडण्या चीटेव ॥ मनपवना लक्षवेना ॥
॥ ८० ॥ तिनि तिनी यकयेक ॥ पाच पाचे हेम पुरव ॥ सुटला पर सेने कौतुक ॥ व
र्षले तेअेकपा ॥ ८१ ॥ धनुष्य तै डिलिहालि ॥ ध्वजाग्रिनाहि चक्रे रथि ॥
वर्म चर्म भेदिताक्षिति ॥ असंख्य प्राण सुकले ॥ ८२ ॥ मुकुट कुंडलसा क्रेले ॥
सिर सरोज राला नुशले ॥ प्रथ्वी किंशी सुशोभिल ॥ पुजा मिरव भिष्मांचि ॥
॥ ८३ ॥ यक कराारि बहुवारणा ॥ हंसाभे वले वायस गणा ॥ यकसाधु बहुत

र्जुनाते विबुहुलयेकासि ॥२४॥ कर्णासि सावमलियासेलि ॥ तोरे निर्नि
को दिसलि रतिाले सिंथासिर विणपक्षि ॥ रंजाचियाचौमेरि ॥२५॥ आसा
च्य जाणो निलाभाले ॥ साधक सांडि तियनालागले सेवरु निआपजया
ले ॥ प्रथ्वीपरतला ॥२६॥ परशारसंधान मेघधारि ॥ शाकोळ्ळागांगेयागि
रि ॥ परिखवकाचियेदुरुक्षीमारि ॥ शांलजेसाचे केला ॥२७॥ असंख्यसो
डुनिबाणजाळ ॥ गजरिवुनि केलेअचळ ॥ रथावर वृक्षनिश्चळ ॥ तैसे
अस्वसारसि ॥२८॥ दाहासहश्रमहारथि ॥ पराभविले संग्राम पंथि ॥ पा
ठिदेउनि पळति ॥ आपधाकदिशा ॥२९॥ संधान नेकेलचि विचित्र ॥ च
पळभी ष्माचे सकामकर ॥ वेनारथीयाचधैर्यविरु ॥ संदील जाहलेस
गउता ॥३०॥ वीरश्री निरीयाग्रंथि ॥ सुटलि नावरे उभयहास्ति ॥ आपयुध
साकुनिपरति ॥ पळेसहराळाजलि ॥३१॥ आवमान पावलाराजपत्नी ॥
देखोनिशाल्व सोभपति ॥ धाविनला क्रोधमुर्ती ॥ भीष्मासमोरआवे
शो ॥३२॥ म्हणे स्वस्तरे गंगापुत्रा ॥ जीतिंद्रिया अतिपवित्रा ॥ स्त्रिलागेआ
जिपवित्रा ॥ दंडपावसि मजहस्ता ॥३३॥ म्हणो नि सोडिले बाणकोटि ॥ जेवि

मुरवीचिया ज्ञानगोष्टि । भीष्म सर्वज्ञे तयासाटि । अवगुणनि सांडिले ।
॥ ४५ ॥ वारुणास्त्र लाऊनि रुपी । च्यारिहि अक्षय केश्यपी ॥ मारुनि सार
थिचा मुष्टी । गगनमार्गी उडविला ॥ ४६ ॥ धरिला युध्याचि अवेश ॥ त
को प्राण हारल नाश ॥ सांडुनि संग्राम हव्यास ॥ राल्व माघामाघोर
६ ॥ ४७ ॥ जीवदान देउनी तथा । राल्व सोडिला जीवे जीता ॥ जैसे सविनि ८
र्मल्य आमक ॥ सगिलेले न पाहे ॥ ४८ ॥ जिणोनि रायाचा समुदावो ॥ वि
जयपावला भीष्मदेवो ॥ विजयलक्ष्मी सहित ठावो ॥ हस्तनापुर पातला ।
॥ ४९ ॥ भगिनि सवे वडिल बंधु ॥ श्वशुर संगि पुत्र वधु ॥ नानाजन कृपा
सिंधु ॥ कन्या आपी माहेरा ॥ ५० ॥ तैसा विजयलक्ष्मी सहित । कन्या अ
णुनिया तेथ ॥ मात हस्ती वोपिउचिल । कनिष्ट बंधु कारणे ॥ ५१ ॥ पाचा
रुनि रिषि ब्राह्मणा ॥ विवाह सुलग्न विचारणा ॥ अरंभीला वडिल वचा
ना ॥ आंबा बोले भीष्मासि ॥ ५२ ॥ म्या अपुले मनो भावि ॥ राल्व वरिला आ
से पुर्वी ॥ राल्व राजे अपुले जिवी ॥ इछा मासि धरिलिसे ॥ ५३ ॥ तरि आ

तीचेहृदय अर्ती। रूपे नपुरवि तिरूपावंत॥ ऐसे हे विघजीत। अद्भुत॥५१॥
प ग्रंथि बोलिले॥५२॥ तरि धर्मरक्षका धर्ममुर्ति। तरि धर्मरक्षकी सदा
चालसि धर्मपंथि। स्वधर्म विचारु निचिति। उचित धर्म वर्तवि॥५३॥
विवेके विचारु निसुमति। परवस्तु मानुनि आंबासति। धाडीता जाल।
शाल्वाप्रति। गोरउ निस्क्रमाने॥५४॥ समागमे ब्राह्मण। नपुसक दास
दासिजन। देउनि याशि लिकायान। अंबासोपाठविलि॥५७॥ अंबि
का आंबालीका दोन्ही। विधिने अर्पिपाणी ग्रहणी। अनुजावेघुनि
याजनमि। तोषविलि अपार॥५८॥ व्यासादिक ऋषेश्वर। शरीर संभ
धिन्द्रपचर॥ गोरविलि अपार॥ द्रव्यदाने याचका॥५९॥ दुकाकिम्ही
ष्टान्न भोजन तोसिगले विलारुपयप्रमदा प्राज्ञि॥ विचित्रविर्य मदनधु
र्ति॥ स्त्रियासंगी रममाण॥६०॥ दोन्ही करणी माजिगज॥ किंगंगेय
मुनेत निर्थराज॥ ते विक्रि उतुभीष्मानुज॥६१॥ यवनिता सुखभोग॥
॥६२॥ किन्चीर्काळ सुखसाम्रमे॥ भोगिता सहव र्तिसी प्रेमा॥ अकस्मात
दुष्टकर्म॥ विघ्न केले मासारि॥६३॥ राजयक्ष्मण महारोगे॥ व्यापिले

या।

रायस्त्रीआंङ्गागे॥काळसर्पताळगळावेगे॥आसाध्यजे सउतारा॥ध्रु॥
धन्वंत्रि मान्त्रिकागुणी॥उपचारिताना नाय निपञे स्तमाभिव
स्तवेतरणी॥तेविषावला निधानाते॥ध्रु॥अंम्रताफाटिप्रगटे
चिरवा॥सुखासारिखेवाटेदुःख॥भाग्यासारिसे दैन्य देखा॥सर्वचो
रघ्राय वर्तला॥ध्रु॥असेंकर्तीलें तेथ॥राजा निमाला अकस्मात गर्भवे
किदुखाचापर्यंत॥भीष्मा अणिमालते॥ध्रु॥विचित्रविर्यप्राणहाणी
सुहृद्बुडाले दुःख जीवनी॥अनुजदेह हुताशनि॥गंगानंदनुजेवोप
ला॥ध्रु॥उत्तरकार्य साधुनि सकळ॥सचिंतचीते अति व्याकुळ॥पु
ढ वर्तले ते कुशळ॥कथा कोसरन्य परिसलु॥ध्रु॥इतिश्री आदिपर्व
भारतकथा॥आवदान द्विजश्रोता॥मुक्तेश्वराचिया सावार्था॥भग
वंततुळसीकृपाळु॥१६॥ध्रु॥इतिश्री भारते आदिपर्वी॥त्रयाविंशोध्यायः
॥२३॥ध्रु॥०॥ध्रु॥०॥ध्रु॥०॥ध्रु॥०॥ध्रु॥०॥ध्रु॥०॥ध्रु॥०॥ध्रु॥०॥०

॥श्रीकृष्णायनमः॥ शोकपुराचामहालो टि॥ सत्यवतिभीष्मसंकटि॥ बुडतायेश्यराकटि॥ सोबोनिरउतिअक्रोशा॥१॥ विवेकेबालक रिता मात॥ नावे पुत्रशोकाचिव्यथा॥ मगह्मणेभीष्मऐकआता॥ सांगे नलेसाकराचे॥ यासंततिहिनजालावंश॥ शास्त्रिलुयकपुण्यपुरुषा॥ माझावचनिअतिवीस्चासे॥ घरनियककरावे॥२॥ विचित्रवियचिअ यरले॥ अपुत्रिमानुनिस्वतंत्रे॥ स्वविर्यनिक्षेपपवित्रे॥ अजाद्राधितेकरा वे॥३॥ येथकरीलाचेअनुमान॥ वाशिखंडेलसंतान॥ भीष्महणेऐकव चन॥ अयःकारदोपदिप॥५॥ पुर्विसुत्तीयाविवाहकायी॥ त्यानेमिलेब्र ह्मचर्यी॥ तेअन्यथाकरावया॥ सामर्थ्यदशाअसेना॥ धाउष्णतासांडि वैश्वानरा॥ प्रभासांगीलशैनकरा॥ हीमांराद्वविलसहस्रकरा॥ पदि मीसत्यसांडिना॥६॥ पृथ्विसोडिलअंगीचागंधु॥ परीमीनातनेअसत्यरा ब्दु॥ अनाचारिसंचरसाधु॥ हेकैसेनिघडेल॥७॥ शब्दविषयसांडिल गगन॥ रूपतेजस्पर्शपवन॥ रसविषयात्यागिलजीवन॥ नव्हसत्य

पैमासे॥१०॥ त्रैलोक्य बुडता यचिंद्र प्रि॥ परिमीनय्यळे ने मासनि॥ कुररा
ज्याते कवचमा निम्ज्यालगिसांडिसहाते॥११॥ आलाअेकयक्षसुगम॥
असकाकिअपधर्म॥ राहुयेनि निस्तेरलदुर्गभे॥ मांगा वडिवीविकि॥१२॥
ये केविसवेळाहेभे दिनि॥ निर्धारिकलीभाग्यिबापि॥ तेवकीसमस्तरा
जगणी॥ ब्राह्मणकुळप्रार्थीले॥११॥ याचेनिचिर्य क्षत्रियवंश॥ वर
ताकेला निज निर्दोष॥ येच विषइ व्यास इतिहास॥ पुराणनपरिस
पा॥१३॥ ब्रहस्पतिचावडिलबंधु॥ उतथ्या नामे प्रसिद्धु॥ ममतादेविन
याचि वधु॥ गुणलावंण्यनेटकि॥१४॥ तिसिंव्रहस्पतिकामशक्ति॥ संग
मा प्रवेशलायंकाति॥ ममतादेवरातेप्रार्थि॥ मी गर्भिणी सर्वज्ञा॥१५॥
तुसियाअमाघरेलधारि॥ लाकाळजन्मेत्त्वदेहधारि॥ दोघजणरहजदरि॥
वस्तिसटावअसेना॥१६॥ येरे नायकोनि बोला॥ मैथुनि निघेकामा
थिला॥ हृदरवोनि॥ विनविलाजाला॥ गर्भवासिलयातें॥ म्हणेलाताबिवे ॥१७॥
कमुर्ती॥ मज चियावोसंकोचवस्ति॥ तुझा बिर्य जयेतापुढति॥ मांणना
रातिघाले॥१८॥ सुरगुरुनायकेलवाणी॥ सुखाउलासुखमैथुनि॥ रेलप

उतालेपांचिचरणी॥योनीद्वार राधिले॥सास्तव विर्यपउतालकी॥ब्रह्मस्य ॥१५॥
लिकोपला क्रोधानळी॥म्हणे पापीया कवण्या काळी॥संतोषमासे भंगी
ला॥१७॥मैथुनांतिरत्नपाल॥जीवमात्रांसि आहाला करील॥नेयांविर्य
लोटिलेघात॥केला वाटे मज दुःखे॥१८॥म्हणोनि शापिले तयाते॥ग
र्भि अंधपण जडो कालुत॥लो सर्वधि जन्मला याले॥दिर्घतमा हे नाम॥
॥१९॥तया दिर्घतम्याच कुमर॥गौतमादि रुषेश्वर॥तपोलजे अति
दुर्धर॥विश्वामीत्रासारिखा॥२०॥लियवर्त मानिपाहि॥व्यभिचारानि
षेधनाहि॥म्हणोनि परागमनेचराइ॥प्रजा होपर विर्यी॥२१॥दिर्घमाचियु
वति॥सेजेटा कोनि अंधपति॥निघतिजालि अपीकाप्रति॥स्वेच्छाचा
रिरमावया॥२२॥हे देखोनि दिर्घतमा॥विषाद केला क्रोधप्रलिमा॥शापे
लिमर्यादेचि रिमा॥नेमीलाजालालौकिकी॥२३॥अजिपासुनि परवनि
ता॥परपुरुषेसिसंग करिता॥तोजाइल अधःपाता॥असंख्य वर्षदेखा
चि॥२४॥निधकुरा२६घेउनी माथा॥इहलोकि जातिभ्रष्टता॥मरणा
नंतरे अधःपाता॥घोर नरकाते पावति॥२५॥तेचि मर्यादा अद्यापि

चरि ॥ वर्सतआसलेकाचा रि ॥ पुढेत्याचीया कुमरि ॥ कायकेलिअेकपा

॥ ऽबा शाप वद्ला तेपारागे ॥ काष्टडोणी निर्गुनिभंगे ॥ अधतावेस

निवेग ॥ गंगाजिवनिसोडिल्या ॥ ३ ॥ तप्रवाहजळाचे निर्धारे ॥ लंघो

निदेसादेशांतरे ॥ बाकि नामेराजेस्वरे ॥ अपुत्रेअंगेत्रसिला ॥ ११ ॥ थ

डिल्या ग ता काष्टडोणी ॥ अवलोकिताब्राह्मणगुणी ॥ परमतपासिवि

२ ख्यासुखापी ॥ जाणोनिपुजिलेआदरे ॥ ३ ॥ आलाराजासंततिहिन ॥ म २

निविचारि उपाय गहन ॥ करू प्रजाचेउसादन ॥ यापासुनिसाक्षेप

॥ ३ ॥ याचेनिविर्ये स्त्रियाचपोटि ॥ संततिव्हिाार गोमटि ॥ हविव

घुतवदो निगोष्टि ॥ शाय्यासनापाटविली ॥ ३४ ॥ अंधत ब्रह्मदोष

प्रगट ॥ देखोनियरिमानीलाविट ॥ अपण न वचोनिया निकट ॥ विपरि

तचर्यावर्तलि ॥ ३५ ॥ आपुलेवस्त्रअलंकार ॥ दासिसकरुनि श्रीगा

र ॥ अंगसंगानिरंतर ॥ रुपिसंगम विला ॥ ३६ ॥ काक्षिकवंशादिक

राजे ॥ अकरासंख्यापेजाणीजे ॥ शुद्रक्षेत्रिसाचेनिबीजे ॥ जन्मलेहेजा

णीजे ॥ ३७ ॥ संततिनव्हेचिस्थिर ॥ राजाविचारिदिर्घतमातें ॥ तोम्हणे

अथवा मासि मुनि माले।। समिप तब भायी।।३८।। रायकोपोनि सुचेष्टोसि
यसे धाडिले विपासि।। मग पुढे तयेचे कुशि।। आगाध राजे जन्मले।।३९।।
यालागी ब्राह्मणविर्ये निरविळ।। दृधिपावले क्षत्रियकुळ।। अणोनि
धनधान्यपुष्कळ।। ब्राह्मणोत्तमा प्राथीयां।।४०।। याचि निर्विये पौर
ववंश।। वाढला कीजे निर्दोष।। अैकोनि मातेते उल्हास।। रहस्य काहि
वदा वया।।४१।। अणो सर्वज्ञा अैक नि रलेग सहज प्रसंग पावलये थे
वदोनय ते हितु तो सांगितले पाहिजे।।४२।। कुमारि दशा तात सदनी
तरि रक्षीला सरिता जीवनि।। पाराशर महामुनि।। तेणे पंथ पातला।।४३।।
तपतनयेचा परपारा।। नेता पावले मध्य लिरा।। तेथ तो वश्य होउनि मा
रा।। संगमाले मागीतला।।४४।। कुमारि भंगा भेणे।। विचारि घातले अन्
मानें।। हे जाणो सर्वज्ञ तेणे।। तेरे शंका परिहारिली।।४५।। तेणे आवलोकी
ने त्रिसुगंध उठिला सर्वगात्रि।। दिवसाचि करुनि रात्रि।। चमत्कार दाखवि
ला।।४६।। याले वापिला रहस्थान।। व्यास जन्मला तत्क्षणी।। भुवनत्रय ज्याची
लुळपा।। पावे महेश विष्णु।।४७।। तो हि गुलत भास वचनि।। स्मरता पाव

श्री

लनलक्षणी॥ लोपावल्न्या ३ यवेसनि॥ सो ऽ वील सामर्थ्यी॥ ४७ रूपीलेणप
डिलकुमरगलुशा॥ अग्रजसहोदर॥ अनुजक्षेत्रिअधिकार॥ प्रजोहति
कारण॥ ४८ आजरिहेमानेललुसीयामना॥ लरिष्ठार्थिनेचियपायना॥ वि
चित्रवियचिअंगना॥ प्रजावेनाकरविन॥ ४९॥ असेअनुवादलालेकालि
क्षिष्मेहालपिटिलिवालि॥ प्रणेहेक्रियहेकालि॥ सिद्धिनेलेपाहिजे॥ ५०॥
सणिकरसिवचथान॥ यरिपदकरक्षा॥ अकरनिस्मरेला॥ व्यासभगव
न॥ प्रगयजालालेकालि॥ ५१॥ चंद्रसुर्यहुलार॥ येकेमुरागेलितारस
असेव्याचअंगप्रकार॥ सवाद्योनिकविपाहाया॥ ५२॥ व्यक्तोकिलाज
याचिमुर्लि॥ दुःखदोषहोयेशांति॥ जिवपावेसुखविश्रांति॥ श्रवणमात्रेज
याचा॥ ५३॥ भिष्मेकरिनमस्कार॥ भावेअर्पिपुजोपचार॥ म्हणेदेवगु
रुस्थिर॥ लुसवंशअमुचा॥ ५४॥ मोलसिकरनिनमन॥ असेहिंधलेआ
लिंगण॥ पुराकरावयासकरण॥ कारणकोणसांगपा॥ ५५॥ व्यालागीचित
नकेलेमास॥ लेकार्यसिध्दिपावेललुझा॥ पसिसानिश्रमाचेनिभोजे॥ धरि
आवडिपोटेसि॥ ५७॥ म्हणोपुत्रासंकरहरपा॥ रालनुपावलियानिधाना॥

३

वेधव्यभोगिताबंधन। पुत्रशोकाचिपावके॥ ५८॥ लुसे निअनुजादोघी जपी॥ प्रवत्र्याकेला काळा ननि। यंश खंडला राज्यासनि। आधिकारिअसे ना॥ ५९॥ तरिया कुळाचाकुळ समं घुणलुज हिआसे हाविवाहशाळु॥ अपत्याकिये। बंधुवधु। पुत्रवंताकरावेया॥ ६०॥ भारतवंशाचेयस्त्र॥ विशीर्यकरले चित्रविचित्र। व्यासवियीचेपसुत्र॥ साधुनिकरिघडेतो॥ ६१॥ अैको

ना।

निमातेचावचनाथी। आवश्यझणोव्यासासमर्थी। वर्षयेकऋमुनिनेमस्ल॥ व्रतस्छा नारिआसावे॥ ६२॥ तयानंतरे सरिरसुधि जालिया उपजेलधैर्य बुधि॥ आमोघविर्यधारणसिधि। तपव्याधेके स्त्रिया ते॥ ६३॥ हळाहळ कवळितत्रिवे। स्पर्शलाजळतिमानवे॥ माझेहिरण्यधरवे॥ अैसेथी येधरवना॥ ६४॥ माताझणे ताहाकाळ॥ पासजाल पाहिजेफळ॥ विळंब घालिलाचिरकाळ॥ धीर्य मातेपुरेना॥ ६५॥ व्यासझणे अैकआता॥ मांसीयारुपाचिउग्रता॥ शरिरबंधाचीतिव्रता॥ अतिउष्णतातीव्राचि॥ ६६॥ स्वस्तचित्तहेसाहिजे॥ यानावमहाव्रतबोलिजे॥ यपोतपेफळपाविजे॥ शछिलेतेताहा॥ ळेग६७॥ मैत्रावरणीसमसमान॥ पुत्रजन्मतिगुणनि

घान॥ ज्याचे पवित्र महादाख्यान। विस्तारले त्रिलोकि॥ ६५॥ सत्यवतिहृ
पोनातालुचित्रुपेनेफळअर्पीले॥ ॥६५॥
गाचिनथालिआता। पुरविमाझीयामनोरथातुसेनिविर्यजरातुनीपंथा॥
मोक्षाचियामजलाशि॥ ७०॥ बरवेह्मणेव्यासमुनि। आसनारुढ गुढ ध्यानि
निद्रा। काळीविवेकरवाणी। चतुरा। बोधिप्रजार्थी॥ ७१॥ करुनियामगळस्नान॥
हरिहरप्रतीमापुजन। देउनीब्राह्मणभोजन॥ सदक्षणसमेवत॥ ७४॥ शुचि
र्भुतश्रींगारसि। अंबिकाधाडिलिऋषिपासि॥ उग्रतादेखोनिसर्वांगासि॥
कंपसुटलाचळचळा॥ ७३॥ रवदिरांगारतैसेनयन॥ पिंगटस्मश्रुविकटदश
न॥ पाहतांसुररुपदेखलाप्राण। निघोपाहेबाहेरि॥ ७४॥ संगमामिळेताद्वै
यपायन। घाकेसा किरेउभ्ययनयनाउदरिविर्यनिक्षेपुन। ऋषिबाहेरिपा
तला॥ ७५॥ हालिधरुनीव्यासमुनि। अयादेरपुसेजननि। पुत्रजन्मेरतो
लक्षणी॥ कैसामातेपरसावि॥ ७६॥ हासोनिबोलेद्वैयपायन। ह्मणेकैकभ
वीष्यवचन। कुमरजन्मेलसलक्षण। परिलउचायेंकागी॥ ७७॥ नागा
युतबळकिबळिष्ट। कौरवकुळिप्रख्यातश्रेष्ठ॥ संपत्तिसंततिवरिष्ठा। बुधि
वादेआगळा॥ ७८॥ तयालेहियकराल। पुत्रजन्मालिबळीसमर्थी। दीर्घ

युधिष्टिर ख्यालवंत । प्रज्ञाचक्षु यानांव ॥ ७७ ॥ मात्र आचरगुणविकारि । गर्भांधि हो
रला स्वशरिरि । लेकाळीकपाळपिटिकारि । इच्छ असे न केचि ॥ ७८ ॥ स्वकुळ
सुखा सुलक्षणी । अंधअधिकारि राज्यासनि । सुषण लप न दि सेजनि । चक्षु
हिनया हेतु ॥ ७९ ॥ याला रिपुदलि कृपा करुनी । मानदे माझी या वचनि ॥
अपीक सुपुत्र गुणी । द्वितीय क्षत्रिनिर्मीया ॥ ८० ॥ आनिके लपो निले चिक्ष
णी । अदृश्य जाला व्यासमुनि । काळें काशी स्वरनंदिनी । पुत्र असवे फौ
सल्या ॥ ८१ ॥ ते धृतराष्ट्र प्राज्ञ चक्षु । पौरव कुकि सवधियक्षु । कुमरत्र
यामाजि मुख्य ॥ गर्भांधि जेष्ठ हे ॥ ८२ ॥ पुढति सुमुहुर्ते अभ्यागी ॥
आव्हानिला निष्कामयोगी । पुजा अर्पुनी साष्टांगी । भीष्माकी वंदिला
॥ ८३ ॥ रुक्मिणी आणवा बालिका । श्री गारु नीरनावंध्यकळीका । साथ्यास
ना प्रेरिला रंका । अद्भुत तथ पावलि ॥ ८४ ॥ कपिल जटा स लंब वो ष्टि ॥
लिक्षणा नखे आरक्त दृष्टि । विरुपता देखोनि पोटि । घैर्य न धरवे सर्वथा ॥ क्रि
॥ ८५ ॥ पांडुर वर्ण सर्वगात्रि । आश्रकाशाचंद्रवर्जे । रुपिने आवळोकोनि
नेत्रि । अंग संगा प्रवर्ते ॥ ८६ ॥ उदर मांदुसे वियघन । निक्षेपु निभुधा

चमना ॥ बोहरियला स्वनंदना ॥ मालपुसे सादरे ॥७०॥ अकेक तरुण लक्ष
णी ॥ राजपुत्र जे भले गुणी ॥ जे सियागोड अमृतवाणी ॥ वृत्तिकरि कणी
ते ॥७१॥ रुषि ह्मणे बहुतक लोके ॥ शरिरवर्णी कपुर जैसे ॥ लेहि मानेहि चे
निदोषे ॥ धीर्य अपुरे ह्मणोनि ॥७२॥ पांडुर पावलि सर्वांगि ॥ पंडु जन्म
ला स्वेत रंगि ॥ तेचि नाम तयालागि ॥ पंडुराजा कुरुकुळि ॥७३॥ देह हो
इल पांडुरवर्णि ॥ ह्मणोनि पंडु या अभिधानि ॥ पाचारिले सर्वजनि ॥

५ राजकुळिकुळदिपा ॥७४॥ तयासी होति पाच कुमर ॥ पांडव सुराचे अव ५

तार ॥ ज्याचेनि होतिकम कावर ॥ भार फेडिल पृथ्विचा ॥७५॥ पांडुरता
मानुनि बाळाते ॥ माता विनवि सुपुत्राते ॥ याचकहेतु नियतुते ॥
फळ आणिकम ज देइ ॥७६॥ आवडि आलींगुनि ह्रदइ ॥ ह्मणे या वचना
मान देइ ॥ त्रितियपुत्र ऐसा देइ ॥ यंत्रायंत्र उधरणा ॥७७॥ पंडु राजा पां
डुरवर्णी ॥ बळसंपन्न प्रतापतरणी ॥ त्याचा पाचपुत्राचा कर्णी ॥ वर्णी
भारत इतिहास ॥७८॥ वचनि अस्वासुनि सुभांग ॥ गुप्त जाला योमार्गि

काळआधा क्रिकाअंगे। राजपुत्रप्रसवलि।४९। पुढामागुतित्री
तिरेखपे। ऋषिमातचियऋपे। यताजालापैसाक्षेपे। फळतिसरेद्या
वया।५०। पुढलिकौसल्यापारविलि। तीरूपाचिउगतेभ्यालि। दासि
श्रीगारुनिवाहिलि। पुत्रकामापारविलि।५१। तियभोगोपचाराबि
रतासे। रुधिरंजविलासंतोषे। उयविरूपलेचिपिसे। स्वरीनेंदेमा
नसा।। ध्यानमनस्तवनविनयभजन। अंगसेवादेहदान। इस्वर
भजनभजताकृष्ण। अतिसंतोषेमानिला।।२। परिचारिकाहिन
जालि। हृदयनिर्मळभावभक्ति। देहिहुभिउत्तमरिति। श्रेष्ठबाष्ठ
रुषिले। नादिखांनिलिचाअचकभावो। प्रसन्नजालाव्यासदेव।।
विर्यदानधर्मराव। देहधारिजन्मला।।५।। सर्वलक्षणीसुलक्षण।।
विवेकाचेजन्मस्थान।। धर्ममुर्तिगुणनिधान।। विदुरक्षताजन्म
ला।।६।। माउव्यशापरविनंदन। शुद्रयोनिपावलाजनन।। भक्तीज्ञा
नेअतिसपन्न। सत्वसिळाअतिधर्मात्मा।।७।। सत्यवक्तिवाचारूपा।

परिहारनिंद्य यपायना। मातसिकरूनी नमन। जाता जाला स्वस्थान॥ ॥८॥ विचित्रवियक्षेत्रे। दासीसहित पुंण्यपात्रे। व्यासवियर्यें अतिपवित्र। विस्तारते पावली॥९॥ रर्वंउलावंशापुढली। दृष्टिपावला औसारिति। द्युचगर्भतुल्य नृपति। कुमर त्रयेजन्मले॥१०॥ हे परिसला महदाख्यान। संततिसंततिहिन। वचन व्यासाच प्रमाण। सत्य सत्यत्रिवाच्ये॥११॥ इतिश्रीभारतेपर्वआदि। श्रवणे हरतिसंसारव्याधि। किला विश्वंभरप्रसादि। मुकेश्वरकविह्मणे॥११॥ इतिश्रीभारते आदिपर्वचतुर्विंशतिध्यायः॥२४॥७०॥६७॥७०॥६७०॥०

॥ श्रीव्यंकटेशाय नमः॥ राजा ह्मणे चातुर्ये सिंधु॥ कवण हा ऋषिच अपराधु॥ यम आचरला लोविरुद्धु॥ अर्थ मातें परस विस्तारि॥१॥ कवण दोष कवण बोला॥ सापु निदासि पुत्र केला॥ वैशंपायन ह्मणे भला॥ ऐक आता येकांग्रता॥ यात्र मांडव्य नामा ऋषेश्वर॥ तपोवनि तपस्वी थोर॥ अनुष्ठानि अहोरात्र॥ काळ सार्थक करितसे॥३॥ वृक्ष मुळिय केचरणी॥ उभा तिष्ठे वल्कल वसनि॥ उर्ध्वबाहो दिवस रजनी॥ तपश्चर्या आचरे॥४॥ नगरामाजि नृपमंदिरी॥ भंडार फोडीले तस्करी॥ हेम रत्ने कोटिवरी॥ अनेक वस्तु या चोरील्या॥५॥ येउनि पकलो नरगवगा॥ राजदूत पातले वेगा॥ धावोनि देसरे पापी लोगा॥ मुनिरछा नाते आले॥ धारधिधा नरलनेणे काहि॥ तस्कर द्रव्यसहित पाहि॥ गुप्त ठेले आश्रमगहि॥ रछ कोरछ किसया भित॥७॥ धावणे पुसमुनिसि ज्याते॥ चोर पळाले येणे पंथे॥ सिंग्रसांगा हो त्वया ते॥८॥ ब्राह्मण ह्मणति हासापपा॥ नेणो वैसियाल स्कर॥ चिखुण॥ पळाले ते मार्गी जाण॥ अह्मा नाहि सर्वथा॥९॥

शोधित। पातले राजदूत। तस्कर गेले वस्तुसहित। अपानिलापसी
नेहेयत।। महामैदकपटिहा।।१०।। पारतस्कर वाटपाडा। वेशादाउनि
सिंलर मुंडा।। चोरसंग्रहु निघाले।। नामविलज गांले।।११।। अणा निउट
१ विक्ता असानि।। रारिरपिडिलेदंडपाणी।। लाडणा करबंधनि।। राजगृहास
तला।। त्या तस्कर सहित तस्कर न्याधार्थ धरनि अपीका वस्तुसहित।।
राजा निरोपिला धयुला। शुकरंडीदंडावा।।१२।। आज्ञा काला चित्ताला १
कि।। मांडव्य नेउनि घालल शुकि। तेलपश्चि निश्चय बाकि।। धीयसिनि
चेकैना।।१३।। शुळपिटाचे असन।। करूनि मांडिले अनुष्ठान।। योग
बळे रक्षुनि प्राण।। तपश्चर्य आचरे।।१५।। असे का हिलोटले दिवस।।
निलिरा कोपुनिलापसा।। धरनि पक्षियाचे वेषे।। तयापा शिपालक
।।१६।। सखेद पुसति मांडव्याते।। कवण अपराध घडले तुते।। तो म्हणे काया
वाचाचित्ते।। पापका हि जाणेन।।१७।। निरापराधे आसनि तुनि उठुनि
तिक्षपाउ बासनि।। तनुसुद लिजताणी।। हेचियेक मिजाणा।।१८।। नवि

चारिवा नर नायके। ध्यान करिल आपुल्या मुखे। शरीर दंडिले महा
दुःखे। कारण काय केले नाथा। १९। ऐसे बोलला अनुवाद ता। हे रिखे
किल्हे काली। जाणा विक्रे नर नाथा। रुषि बधिला हणानि। २०। रा
जा प्रधान परिवारेसि। धावोनि पातला श्रुष्ण पासि। तपस्वी देखोनि मा
न सि। खेद अद्भुत पातला। २१। पालुनि याचा टांगणा। उग्र शरधा राज्ञव
तिन यना। न कळत घडले असाना। क्षेमा समर्थ करावि। २२। अणु हेसु
त्र कुराळ। केचि चरवंडणा केला शुक। हृदयी भेदले प्रबळे। कानु जाता प्रा
णां लु। २३। अणानि उपडाने दिहाते। श्रृंग गुप्ता येह दयावरते। टविले मणा
नल याते। अणी मांडव्य हे नाम। २४। कोपन करिता राज्यासि। रुषी पातला
यमलोकासि। राय पुसे धर्म रायासि। किमर्थ मोत दंडिले। २५। कवण्या क
र्मे कवण्या दोषे। मज नुवादु:ख दिधले ऐसे। यम लणे सावकाशे। सेमाची
ल अचधारि। २६। बिंदु प्रमाण पुण्य कीजे। समुद्र प्रमाण भोगिजे। तैसा
चि दु:ख चळला हिजे। तीळतुल्य पाप केल्यानि। २७। ऐसे कर्माचे विचित्र खे

ळ॥ स्वरूप दृति अचारफळ॥ हे जाणतिश्रात्रकुशळ॥ यरांव मकिळेना॥ ७१॥
सुक्ष्म किटकस्य पक्षदेखा॥ तयान विपंतगिका॥ नेखावो पीलि कंटका॥ ॥
पुर्वि जाण नेणतो॥ ७२॥ तयादोषास्तवयेकाकि॥ सरीरपिडिति काष्टधुळि॥
ताचिका पल क्रोधानकि॥ म्हणे अविचारे जाल्यासि॥ ७३॥ श्वस्नम पापस
घत्रायेयवेट॥ दंड मत्तचे निपाडे॥ धन्य न्यायतुझियातोंड॥ तुझानुज

२

चिबोळना॥ ७४॥ दुरात्मया विचारभ्रष्टा॥ जगहिंसका अतिपापिष्टा॥ ध

२

र्माधिकार अति नष्टा॥ कोणातुतेरचापिले॥ ७५॥ परमपदापासुनि पतन॥
शुद्रयोनिलपावेजनन॥ दासिपुत्रहेलछन॥ मनुष्यलोकि तुजलागी
॥ ७६॥ स्वयं अंगिकारु निशाप॥ शांत केला ऋषिकोप॥ व्यास विर्य प्रचंड
दिप॥ हिनपात्रि तुजकीला॥ ७७॥ आजिपासुनि चोरांवरुनी॥ जन्मपाव
सि परमपुरुषा॥ मनुष्य रहो पावो निर्दोषा॥ नातळसि महावाक्या॥ ७८॥ प
रब्रह्ममुर्ति मंत धर्मी॥ पुरुषामाजि पुरुषोत्तमु॥ गुणाउपमेनिरोपमु॥
पंडिताचार्य विवेकि॥ ७९॥ कामक्रोध लोभालोभ नजाणा॥ स्परलिंगा
जयाचि मना॥ जो अनन्य योज्ञान विज्ञाना॥ पक्षपातिकुरकुळ॥ ८०॥

तोइंदुरगापुरुषेश्वरा।।ज्ञानियामाजिअनुभविखरा।।सप्रेमभकीय
देवविरा।।प्राणप्रियापंडियता।।३८।।उत्तमाकुळा।घरोघरि।।रत्नतोरे
णेमटपद्वारि।।मखरेश्वंघारिळ्किसरि।।वरिपनाकामिरवति।।३९।।यव
कुरुवंसी विवर्धने।।पुत्रजन्मकेतिघजण।।भीस्मप्राताप्रधान।।परमआ
ल्हादपावले।।४०।।विस्तारिलिनगररचना।।स्वर्गीभलेवापालिसदना।।
दैवकळेने चरित्रजाणा।।अष्टैश्वर्यशोभति।।४१।।विधवावंध्याउभययती
दरिद्रिनपडे प्रमदापति।।सुपुत्रसोभाग्यसंपति।।नांदतिसुखसंभ्रमे।।४२।।रो
गिदरिद्रनपुसक।।दुःखरोकाचाकळक।।पुरुषामाजिनदिसेयक।।कोणाअं
गिआसेना।।४३।।इक्ष्वाकाकिवर्षेघन।।प्रथ्विमसवेसकळधान्य।।पुष्पफळ
सचापुर्ण।।कंदमुळइत्यादी।।४४।।ओसाधिवोपितिआपार।।रसनिर्यासिकपु
रभार।।कस्तुरिकुंकुमकेसरा।।चंदनागरजवादि।।४५।।मच्छपितेगोरोचन।।मु
ळलेळसुंगधचुर्ण।।केतकिकुमुदकल्हारसुमन।।बहुपरिमळअथिलि।।४६।।
नाळिलदुर्वाबाळपर्णी।।पक्वफळिघृतसुवर्णी।।दिव्यपरिमळाचिखाणि।।

घ्राणमाषिनसेटो ॥४८॥ अष्टधातुनवहिरति ॥ पृथ्वीपिकेअनंतगुणी ॥ विचित्र
वस्त्रीविचीत्रगुणी ॥ माचारीलिबहुसाल ॥४९॥ धेनुम्हैसीसपिंदुधा ॥ वस्त्रपलि
सांडुनिमर्यादि ॥ अरण्यमक्षिकासुस्वाद ॥ सर्वसस्यपिकति ॥५०॥ हस्तिवाजि
सरउष्ट्रखर ॥ वृषभसहिथोरथोर ॥ अजआविकाचाविस्तार ॥ धरालकीधरये
ना ॥५१॥ क्रिमिकापासिउर्णजनीते ॥ लरजेआजीनिसुगंधभरिते ॥ सुवर्णरै
या प्यतंतुमंडिले ॥ अतिसामर्घेआपारे ॥५२॥ मृगपक्षीअतिसंतोष ॥ नाहिपार
धिचात्रास ॥ उद्दिमवाटलसौपास ॥ बावनवर्णिसारिखा ॥५३॥ जेजेदिसजे
उ जेवस्तु ॥ याचाविस्तारवाटलाबहुतु ॥ धर्मन्यायमगासुतु ॥ पृथ्वीपाळिजणो
नि ॥५४॥ कुमरत्रयसभाग्यश्रेष्ठि ॥ जन्मलेयालागिपवित्रराहाटि ॥ कृतायुगा
चेपरिपाठि ॥ विस्तारीलिसर्वत्रा ॥५५॥ नंदादीपदेवाप्रति ॥ अहोउजळुनीनिवी
ति ॥ काजकितोडोनिअहोरात्रि ॥ सावधानरक्षिजे ॥५६॥ जैसेसंतमंडलसाधु ॥
परिहारनिकेराबाधु ॥ अचळस्वरूपसुखानंदु ॥ परमहर्षेसोगविता ॥५७॥
वर्णपंक्तिचेवर्णाक्षर ॥ तोडोनिसांडिलिअर्थज्ञानचेतुर ॥ तेविद्वज्जनधापत

स्कर ॥ पुसुनि हालि सांडिलें ॥५७॥ हंस परडउनी वोळि । अक्षरें रेखिली मौळि
तैसे गुण वलउन्च स्थळि ॥ मानेआपा निबैस विरें ॥५८॥ मात्रा वेळा दिव्यांज
न ॥ मस्तकि माने गुरु सज्जन ॥ उकार होउनी अग्रजणी ॥ पाइं भजे विनयें ॥५९॥
यसत्राळे अंयज ध्यान ॥ दुरि घालि तिरखउन ॥ तैसे लोभि निर्दियक्रे पण ॥ प
थ्वीत किंवा किलें ॥६०॥ मन क्रोध क्षोभ रहित ॥ पुर्णयुक्ति अनंद भरित ॥ भ
गवद्भजनी अलंभुत ॥ जन समस्त नेका किं ॥६१॥ वनवाटिका दिव्य आराम ॥
जेव्हे सुस्वादे अमृतोपम ॥ सदा फळिफळति द्रुम ॥ सर्वदे सिसुखाडे ॥६२॥
चैसे रचना स्थळो स्थळिं ॥ अपासुदल्या सुगंध जळि ॥ दिव्य मिष्टान्नरसमेळि
सत्रागारिया चका ॥६३॥ कामीकाळागि मनोहरे ॥ मार्गि निर्मिलिं वेस्यागारे
असुवे मोरेयेक मधुरे ॥ पानकसा वोपिलें ॥६४॥ जे विशास्थळा च्यावद नि ॥
संचरनसके गो वक्रवाणी ॥ नातरी श्रोतिया चा सदनि ॥ पलांडु भक्षणे असे
ना ॥६५॥ ते विद्युतिका जारजारि ॥ प्रवृत्ति नाहियां व्यापारि ॥ पुर्ण कामस
दाचारि ॥ ययेनिषेधकारिया ॥६६॥ जजो मागेल ते यादेणे ॥ अवड तेतेसो

जनकरणे ॥ यायाध्या घ्याहेचिवचने ॥ कानीपडलिसर्वदा ॥ ६८ ॥ कीटिलिज
गाचिअवदसा ॥ जगींबापालिऐश्वर्यदशा ॥ ऐसायोगचरित्रिधिरा ॥ गदिसे
मांउलातेकाळि ॥ ६९ ॥ श्रीसहितस्त्रिसुंदरि ॥ लांउवंनाचेघरोघरि ॥ गर्जे
नाहेलभगंळतुरि ॥ अहोरात्रतेकाळि ॥ ७० ॥ रत्नेपरिपुर्णरत्नाकर ॥ ते
विसंपनिहस्तनापुर ॥ उपमेतुकिता निर्जरनगर ॥ भरेहजुवटआकाविं ॥ ७१ ॥
खंउरेकुळपावलेवृध्धि ॥ देखोनिरयंडिलेअधिव्याधि ॥ राजाप्रजासुखानं
दि ॥ क्रीडाकरिलिसंतोषे ॥ ७२ ॥ पुत्रत्रयाचासंभ्रम ॥ आवडिकरिपिताभि
ष्मा ॥ जेजेइच्छीमनोधर्म ॥ गेतेपुरविताकाळि ॥ ७३ ॥ गर्भादानपुंसवन ॥ नव
रोभनसीमंतोन्नयन ॥ जातकर्मनामकरण ॥ निष्क्रमणासातव ॥ अन्न
प्राशनचौलोपनयन ॥ माहानाम्नीव्रतपैजाण ॥ मला व्रतअणिगोदान ॥
उपनिशचौदावे ॥ ७४ ॥ हेसंस्कारसकळसांग ॥ पावतिविवाहकार्याचे
अंग ॥ द्रव्यदाराचतुरंगा ॥ संपादिलेकुरुवृध्दा ॥ ७५ ॥ वेदाध्ययनदा
स्त्राभ्यास ॥ स्मृतिग्रंथिअर्थप्रकाश ॥ सहीतापुराणेइतिहास ॥ वरुके
लेअभ्यास ॥ ७६ ॥ सप्तकोटिमहामंत्र ॥ चतुषष्टिविधानयंत्रे ॥ आग

मउपासना तंत्रे॥ ज्ञान केले क्रियेसि॥७८॥ निति शास्त्री न्याय कुशळ॥
धर्माधर्मि बुधि प्रबळ॥ चौदा विद्या कळा सकळ॥ वसया जाल्या त
यांपे॥७९॥ उपनिषद ग्रंथ सिधांत॥ तत्व निर्धारु मनि पदार्थ॥ साहीत्य
नाटक संगित॥ जाणते जाले गुरुमुखे॥८०॥ नेत्र नाद करसंकेत॥ लिपा
भाषा गुह्य पार्थ॥ जाणते केले समर्थ॥ गंगापुत्रे सुपुत्र॥८१॥ अस्वर
थ गजारोहणि॥ धनुर्वीद्य शरसंधानि॥ नाना शस्त्राचा साधनि॥ स
मजाविले निपुणता॥८२॥ पंडु धनुर्विद्ये कुशळ॥ धृतराष्ट्र अंग बळे सब
ळ॥ शास्त्र ज्ञाने व्युत्पति विवेक॥ बुधि प्रकार विदुराचि॥८३॥ भीष्म कृपी
प्रधान जनि॥ विचारुनी मांडिला सभास्थानि॥ अपत्य श्रेष्ट राज्यासनि
कोण तोय स्थापावा॥८४॥ जेष्ट अंध हा गुण विकळ॥ इदुरक निष्ट अनु
मानिला॥ राज्यासनि अभिषेचिला॥ पंडु राजेस मस्ती॥८५॥ विदुर जाणोनि
परम चतुर॥ भीष्म पुसे निज निर्धार॥ वडिल ह्मणोनि आनादर॥ सहसा न क
रितया त॥८६॥ होता अन्वय तंतु तुटला॥ मज लागि मातेचा असुति सुत्र जा

जोनिकेला॥ वेदव्यासबोटता॥ ७७॥ कुमारदशामाघारली॥ तारतंण्यकळऊदया

आली॥ विवाहविचारणाउटिली॥ इच्छामात्तेआपार॥ ७८॥ सुलभसमारंभे

कोडे॥ पुत्रामेळउनिअंगना जोडे॥ तेणेसं ततिमंगापुढे॥ सहस्रमुखेवि

स्तार॥ ७९॥ कन्याबहुतीम्याओकिलिया॥ सामाजितीनिनामाथिला॥

चित्रकपटिगोचरकेल्या॥ वरिवानिल्यापरिक्षीकि॥ ८०॥ यकगांधारि

सबकदुहिला॥ दुजियादविपवित्रपृथा॥ तिजिमंद्रराजदुहिता॥ मंद्रावतिया

नाम॥ ८१॥ जरिमानेरलुझियामना॥ तरिभंरसुविचारणा॥ विदुरेनमस्का

रनिचरणा॥ अणेजेकयथार्थ॥ ८२॥ मातापितालुचिगुरु॥ तुचिअह्मा

निजइश्वर॥ तुजमानबाविचार॥ तोचिमान्यसर्वाति॥ ८३॥ कौतुकसांगी

जेरुषश्रधरि॥ सबकामलाअतिसुंदरी॥ तिचियाताहिचेतुरी॥ स्वल्पकाहि

ओकिजे॥ ८४॥ अचरानिरवडलरत्न॥ प्रसन्नकेलागिरिजाकांत॥ वरुपाव

लिअतिसमर्थ॥ शंकरमुखेलाभेका॥ ८५॥ बलिष्टरायाचिअतुरि॥ होउनिभो

गिसिअैश्वर्यथोरि॥ अरुधलिचिसमसरि॥ मान्यहोसिपीतधर्मे॥ ८६॥ यकरा

चराजकुमर॥ पोटिजन्मतिमहाशुर॥ यकिकन्याअतिसुंदर॥ पुत्रापारि

ग्रसवसि ॥ ९७ ॥ ऐसे वरदान धुर्जटि । वदोनि गेला उपाद्दष्टि । कथपासभा ग्य
वैसेलपारि । हेहि जाणे लोयेक ॥ ९८ ॥ ऐसीपरिसो नियामातु । सादर आ
रका गंगासुतु । यले गांधारिसुवस्तु । इठीपुत्राकारणे ॥ ९९ ॥ वंशिसंतति
विस्तारावि । ऐसिआवडिथोर्था जिवि । म्हणे सबळालजाकरावि । श्री
या प्रासाचेवस्तुते ॥ १०० ॥ म्हणोनिपुरोहितसुमति । प्रेरीला सबळरायाप्रति ।
भी म्हणावा कथ गांधारपति । वेदप्रमाणमानिला ॥ १ ॥ कुरुवंशाचेक्रवति । वरिष्ट
बुधिबळ संपति ॥ अंधसदोषनधरोनिचित्ते ॥ दिधलेपाहिजेसंतोषे ॥ २ ॥
कन्यानेमिलिधलराष्ट्राते । निकेमानलेसमस्ताते । श्रवेणस्विकारिलेमाले ।
राजपुत्रिपचित्रा ॥ ३ ॥ अंधभ्रतारऐकत । गोष्टि । पाटबांधला आपुलादृष्टि ।
रूपाकोपेपाहतासृष्टि । नारिमारिताकाळि ॥ ४ ॥ मगीमिश्टंगारोनिरथि । साकु
निरोवासहसंपत्ति । पातला कुंजरपुरा प्रति । लग्नासिधिकारणे ॥ ५ ॥ संभ्रमे
पाणीग्रहणविधि । अंधावोपिलिसौभाग्यनिधि । आंदण्यावोपिलिसम्टधि ।
कुबेराश्रियासारिख्या । धाकस्तिवा जिसुवर्णरथा । दासदासिसाळकेलामे
पिधनुव्रषभस्वेनपुष्टखरमयादी ॥ ६ ॥ करणीअपिराकटि । रत्नभारसुवर्ण

कोटि। परि बहुपाह नाइछिसी ॥ समुद्र प्रायेअकामे ॥ ९॥ रुषिराजा सुहृद जना॥ आ
दरे आपिल विवाहलग्ना ॥ उभयमंडपि रक्षणा ॥ बहु याचका वाटती ॥ अत्र हो
निगांधारि चित्ता क्षिति ॥ महत्त्व जाला कौरवनृपति ॥ पतिव्रता महासति ॥ सदा
सिव पतिले ॥ १० ॥ अंबिका आंबालिका काली ॥ भीष्मसासुरा राजमौली ॥ या
च्या इसदा काली ॥ इश्वर भाव भजलिसे ॥ ११ ॥ देवराया जी अतिमर्यादा ॥ कु
टुंबाने विचारिसदा ॥ दासदासि तसंपदा ॥ पुरविरघासारिखि ॥ ॥ आपुरपव
कथ आसत्याकर्णिका ॥ कौण्हा न लगेश्रवणी मनि ॥ धन्य श्रेहा अविघ्न ज
ननि ॥ हल्लोकि बालिजे ॥ १२ ॥ यापरि धृतराष्ट्र गांधारि ॥ अेकथमीन लिघरा
चारि ॥ पंडुलग्न चित्त पुढारि ॥ विचारणाम्भी भ्राति ॥ ॥ सुरनामा वसुदेव पि
ता ॥ याचि कुमरि पवित्र पृथा ॥ भ्रेहेवाद धर्म दुहिता ॥ कौतिभोज्ये दिधलि
॥ १४ ॥ तेवर्लता जनकाघरि ॥ कुमारी दशा सहजाचारि ॥ भाग्योदया चाअ
वसरि ॥ महालपक्षिपालका ॥ ॥ धालपोल जे बेसा तेनरमुर्ति पार्वतिम्रा
पोश्चर ॥ देवी अनुसूयेचा कुमर ॥ प्रसिद्ध नामदुर्वासि ॥ १७ ॥ कौतिभो

जा चिये भक्ति ॥ किंचित का न राहिला वस्ती ॥ सर्व भावे याचि प्रीति ॥ अतिथि
प्रसादे ॥१८॥ जे अर्काहि अपेक्षी जेव्हा ॥ तैं तैं ताका पुरवि तेव्हा ॥ पाने भो
जने शरीर सेवा ॥ चंद्र याप्रे प्रेमे समर्पि ॥१९॥ देवपुजा अतिथिपुजा ॥ कराव
या पवित्र तनुजा ॥ जनके याजि लिहिले बोजा ॥ सर्वयत्ने तो पवि ॥२०॥ आवलो
कुनि उत्तम गुण ॥ अति संतोषला ऋषिचा मन ॥ प्रसन्न वदने वदे वचन ॥ घे इथ
सादर पाणि ॥२१॥ भाव देखोनि पवित्र ॥ वरा वोपिले पाच मंत्र ॥ रहस्य बोले
अत्यपापात्र ॥ स्पर्शोनि हस्तकि ॥२२॥ भविष्य जाणोनि पुढा निरुत ॥ आपध
र्म लागि तुले ॥ पाच मंत्र पाचे देवत ॥ बाधोनि दिधले तुज हाति ॥२३॥ दिन
कर दंडपाणि पवन ॥ चौथा देवलपाकशासन ॥ पाचवे अश्विनौ देव जाण ॥ ७
भयाके तुज देति ॥२४॥ यथे मंत्रे गुप्त करासि ॥ जे जे देव आव्हानिसि ॥ त्याचे
प्रसादे लाधसि ॥ पुत्र प्राप्ति ना काळ ॥२५॥ अमोघ मंत्र अभिचारिक ॥ फळक
ळिला तत्कालिक ॥ ऐसा अत्रीचा कुलटिळक ॥ वदोनि गेला स्वाश्रमा ॥२६॥ त्या
स विज्ञपण वध्याने ॥ यी हृदयि धरिले यत्ने ॥ विधि निक्षेप जे पज विस्मरणे ॥ न
विसंभा जेम नसि ॥२७॥ आवलोकोनि गंगात ॥ उजिकाफीन होता निक ॥ ह

गांमुचि विकग्रम ॥ म समीप्या मंत्राचि ॥ ७४ ॥ म पा निग्रणवबिजाक्षरी ॥ आदि
सआव्हानिलामंत्रि ॥ चमत्कार देख नेत्रि ॥ तेचि काकिले ऐका ॥ ७० ॥ सुर्यमं
उख रच्चलेधरणी ॥ तेसास मिप पातला तरणी ॥ मंत्र सामथ्याचि करणी ॥ अ
सदुल नबोलवे ॥ ७१ ॥ जांबुनद कनक पुतळा ॥ पाहला तेजन लक्षवेळा ॥
मुगुटकुंडले कटि मेखळा ॥ हेमांबर शोभिले ॥ ७२ ॥ भास्कर नरस्वामिनि
कि मर्थ पाचारिले स्मरणी ॥ इच्छित सांगावा सुजाणि ॥ पुर्ण करिन सुक्षण
धी ॥ ७३ ॥ उभय पक्षा च भय नावरे ॥ कुमारि सर्वांगी मन घाबिरे ॥ भास्करन म
स्कार निसीरे ॥ भीलभी न अनुवादे ॥ ७४ ॥ आव्हानिले अरज भावे ॥ ते मन
उपसाहिजे देवे ॥ कोण्हा न कळतौ रावे ॥ सीघ्रगंलव्य यथुनि ॥ ७५ ॥ तालआ
शे रक्षीतिसदा ॥ जे बाधिली धर्म मर्यादा ॥ स्वइच्छा आचरण निषेधा ॥ बडि
रत्न आलको नेंदिली ॥ ७६ ॥ धाले हेतु चिर जाक्रियाच्या ॥ पुढा नलज्जेवराधि
हेचि बापुढले पुरली ॥ बाधमा दस्वामिया ॥ ७७ ॥ रुप आच्छादोनि वहिले
सिध्र यापापा हिजकेले ॥ प्रगट होता नव्हे भले ॥ आलौकिक लौकिकी ॥
॥ ७८ ॥ हास्यवदने वरे सविता ॥ हे के से नि येडेल आता ॥ अवंतजा भि चासु

७ के ८

कुष ॥ घेतिलाभेटिआसुचि ॥ ७४ ॥ भाग्यादरिअ मुन्येयेणे ॥ फळनेदितान
घेउजाणे ॥ जेकाआराकायाहसिमन ॥ तेदेवउिनमाधारि ॥ ७५ ॥ भयमानसि
ज्याआधि ॥ आलकोनेदिलतयाआनधि ॥ किर्तिप्रमदे चियामाथी ॥ सुपण
हासिपवित्र ॥ ७६ ॥ नाझजाळिया आंगसंगु ॥ कुमारियनपवभंगु ॥ पुत्रज
न्मेलप्रसंगु ॥ अतिवरिष्ठनररत्न ॥ ७७ ॥ अग्निअंकेसुमध्यन ॥ तुलेवरि
जेल्नसाक्षिभोमे ॥ देवताविर्ये अतिउत्तमे ॥ पंचामृतप्रसविसि ॥ ७८ ॥ मग
आदरेघरतनिहाति ॥ सुरतानंदेदिधालेहाति ॥ आमोघविर्येमहामुर्ति ॥
आपारसुर्यजन्मला ॥ ७९ ॥ सुर्यविर्ये जोजन्मला ॥ सुर्यसमानतेजा
गळा ॥ किरिटकुंडलेमेरवळा ॥ दिव्याभरणेशोभित ॥ ८० ॥ सुवर्णकवच
स्वयंभआंगि ॥ तेजपाहतानमायेजागि ॥ ऐसेदेखोनितन्यांगि ॥ भय
कापथरथरा ॥ ८१ ॥ घालोकरांकेशंकोनिबाळि ॥ आलिव्याकुळहृदयक
मळि ॥ बाळकसांडोनिगंगाजाळि ॥ जातिजालितात्काळ ॥ ८२ ॥ आपुत्र
प्रसवोनिआंगना ॥ जालिकुमारिनवयवना ॥ प्रयेशातिताळसदन ॥
सागुनियापुत्रालि ॥ ८३ ॥ गंगोदकीसोडिलेबाळ ॥ बुडउनसकेगंगा

जक।।जननिजान्हविश्नेहा।।कृपेनजातिरक्षिलि।।४५।।हरिकरि

या झलित।।नरंगरंगिरेवळेविल।।राधारमणआकस्मात।।दैवेंद्रि

ष्टिरेखीला।।५०।।राधापतिकिरातपाळ।।लेणेउदकिरवेळेताबाळ।।

धावोनियउतलावेन।।घालिउडिधशवया।।५१।।करिधरूनीकाढि

ल्नाथडिये।।श्नेहभावघतलाकाउये।।आवलोकिताघडियघडिय

ल्ह्रिन्हेडोळीया।।५२।।पाचारूनिराधापति।।कुमरभाउनिदिधला

हाति।।तयाश्रीकाह्मणोनिह्मणतिगराधेयेनामेतयाले।।५३।।वसुभु

षणिभुषण।।मातृजटरिपावलामरण।।याका गिसानाचे वसुसेन

सुतदेविभावडि।।५४।।संस्कार विद्यावेदाध्यायन।।राषिमुखे

जालानिपुण।।आलिविद्यनेसंपुर्ण।।धनुर्वीध्येकुलगुरू।।५५।।अ

र्जुनापासावव्पापावो।।लागेतत्रऐसाधरूनिभावो।।यापरिहाराभा

नुदेवो।।घतजालेजवळिके।।५६।।श्नानकरूनिगंगाजळीसु

र्योपस्थानजपकाळि।।पुत्रासमिपउअंरामाक्ळि।।श्नेहभरितपा

लन्ना।।५७।।गुजसांगेकापी।।ह्मणेहोचेनिश्चयेधरावेमनि।।या

चक। आलियाउदारदानि। उदारहोइसर्वस्वा॥५८॥ पारिखां गिचकवचजाण॥
सहसानव्हावेआपण॥ येणेअलकोनसके मरण॥ शत्रुमारिशत्रुच॥५९॥
ऐसेसांगोनिसुपुत्राते॥ भानुगेलास्वस्थानाते॥ नेमनचलेचित्तयाते॥
परमउदारह्मणोनि॥६०॥ अर्जुनपुत्राचियास्वार्था। कर्णबळाचिथरनि
व्यथा॥ अवलंबुनिकपंथा॥ शक्रआलाछळणार्था॥६१॥ कर्णअसताअ
नुष्ठानि॥ भिक्षुकवेषवज्रपाणी॥ दानमागेदीनवचनि। कवचदेइअंगि
चे॥६२॥ रीश्रीनेमांसछेदिलेहातिं॥ दधिचिरुषिनेदिधल्याअस्थि
जीमुनिकवाहरपुण्यकिर्ति॥ जीवदानिउदारु॥६३॥ तयाहुनिगुणीवि
शेष॥ अंगिआगळातुझिदशा॥ विचारवंतामहापुरुषा॥ आदेयकाहि
असेना॥६४॥ ऐसेंकोनिकब्राह्मण॥ चिवचने॥ मधुरवाक्यप्रसन्नमने॥ न
मस्कारुनिघेइभगवा ह्मणे॥ माहापात्रइस्वरा॥६५॥ सुलग्नअंगिचियासुवें
र्णकवचा॥ शस्त्रकाढोनिदिधलेत्याचा॥ अद्भुतदेखोनिदेवाचा॥ नाथजाला
विस्मीत॥६६॥ संतोषोनिअमरपति॥ भउचिलावोपिलिदिव्यशक्ति॥ ह्मणेहेमां

त्या आकांति। ऐयोजा विसंग्रामी॥६७॥ देवराक्षसमनुष्यति। त्यावरि भर
सिलरा कि। लोपाण सिरारिराकृति॥ नाहि होइल क्षणार्धी॥६८॥ वचनि
गोरउनि कर्णाते। साधुनियां पुत्रकार्यार्थे। अमरावतियेअमरनाथा। ऐया
पाकेलेताकाळ॥६९॥ ऐसाउदार चक्रवर्ति। त्याचिरात्रु अतुलशक्ति। उ
पमाद्यावया त्रिजगति। दुसरा द्रिष्टि दिसेना॥१७०॥ तैसाचि क्षात्रुससुंसा
र॥ रास्त्रिअस्त्रिसंग्रामचतुर। धनुर्धरा दिक्षागुरु। जमदग्नासारिखा
॥७१॥ पाहतासौंदर्याचे रूप। काजेनिमाघारे कंदर्प। चंद्र उपमे अयेतस
त्म॥ क्षयरोगिया म्हणोनि॥७२॥ त्याच्यामुखचंद्रावलोकने। समुद्र भर
ति स्त्रिया चिमने॥ सोमकांत कामसदने। द्रवोन गतिआवडि॥७३॥ अ
सो कर्णाचिउसति। नुजसांगित लियथानीगुति। पुढु सिगासजालिकों
ति। तेहि ऐकालाएकपा॥७४॥ इति श्री भारते पर्वचतुर। अवगममानस
सरोवर। राजहंसश्रोतेचतुर। प्रेमानंदे क्रिडती॥७५॥ शब्दार्थ मोतिया
च्याचारा। चरोनिंदनिसुखदेकरा। पुढे प्रार्थिमुकेश्वरा। कथासादरप

॥श्री कृष्णायनमः॥ वेदव्यास सिष्या मंजुळवाणी॥ ऐंपेकुरुवंशाचु डामणी॥ ऐसा कर्णतो कानेनि॥ कौंतिजटरि जन्मला॥१॥ रमारमण पादारविंदी॥ त्रयतापहं त्रिजन्मलिनदी॥ तिचानंदन हृदयारविंदी॥ वि चारकरि आमाथा॥२॥ विदुरा लिहिले आउन॥ आणि पंडुचकरावलग्न॥ पु रोहिताने पत्र देउन॥ कुंतिभोजा प्रति पाठवि॥३॥ कौंतिभोजा भेटला ब्राह्मण॥ मान्य केले तेणे वचन॥ लग्नपत्रिका देउन॥ भुसुराते बोळ वि॥४॥ अपण घेउनि सर्व संपति॥ गेला वसुदेव पिया प्रति॥ भीष्म प रिवारे सहित॥ यादवनगर प्रवेशला॥५॥ पंडुकौंतिचलग्न॥ विधि युक्त भीष्मे संपादुन॥ अपार आनंद पावुन॥ हस्तनापुर पावला॥६॥ विदुर विचारे गंगानंदन॥ पुरोहिताते बोलाउन॥ पंडु सिद्ध सरे आंगन। रत॥ मेळवावे प्रयत्ने॥७॥ विप्र धाडिमद्रदेशासि॥ तेणे जाउनी सांगता त्यासि॥ भीष्माचि आज्ञा वंदु नि सिसि॥ माद्री घेउनी निघाला॥८॥ सक ळ संपत्ति शोभ्या समवेत॥ आला हस्तनापुरा नरनाथ॥ पंडुसि लग्न लाउ नि विधियुक्त॥ स्वगृहा तेनेगेला॥९॥ पंडुरायालक्ष्य मानीनी॥ जा

ना

लिया। असेत विलासिनि ॥ लेणेतें सुखाउनि मनि ॥ कामिनि सिक्रीड
ल ॥ १० ॥ मग भीम वेद विदुर मत ॥ अस्वमेध करावया येथे ॥ आज्ञापित
पंडुरायातें ॥ सर्व सैन्ये सिलो निघे ॥ ११ ॥ सेनावस्थेने सर्वजा गलिगने
सउनी पंडु नृपति ॥ जिंकावया भुभुजा प्रति ॥ उत्तर दिसे चालिले ॥ १२ ॥
सर्व सैन्ये अतिलुब ळ ॥ जैसे वज्राग्नि चज्वाळे ॥ कि प्रताप भंवु निधि
चे कल्लोळ ॥ उसाहनदि वरिउसळेति ॥ १३ ॥ भिष्म होता सवेरे ॥ व्यास
मज चालिला उत्तरे ॥ तैपो सकळ रायाचा मद उतरे ॥ शरणयतित
यासि ॥ १४ ॥ कोप ही करिति युध्य कंदन ॥ चरणा को णी येति शरण
करभार आपार घेउन ॥ समाग गमे चालिला ॥ १५ ॥ अनंत दिशि
न्या नृपनाथ ॥ बळे भीम जिंति ता वरित ॥ शाकल द्विपिच्या नृपना
थ ॥ प्रतिधान नामा जिंकिला ॥ १६ ॥ पुढे गंधर्व जिंतिले दरा ॥ तो
हि जिंकुनि नराधिशा ॥ सवालक्ष पर्वल अशेष ॥ नराधिराजी कि
ले ॥ १७ ॥ हिमवत स्वेत पर्वत ॥ किंपुरुष खंड समस्त ॥ पद्मरागादि
आपर मीत ॥ रत्ने आपार आणीला ॥ १८ ॥ गोरक्ष पर्वत प्रसवेसु

चर्पी॥पुढा मानससरोवर जाण॥राख्यपाटलेथ पुणी॥जबंधअयो
ध्या॥१७॥मानससरोवरिकमळणि॥भोवत्याहाटकरत्नाचिरवाणि॥
प्रवाळलतिकजिवनी॥उतीरल्यापेअमोघा॥१८॥कपुरकर्दळिकानने
कस्तुरिमृगनियमपणा॥करिरावकाचरवळणे॥भुपाळनयनेपाह
तसे॥१९॥मुक्ताफळगुच्छशोभतिजाळि॥दिव्यसरोवरसुवर्णकमळि॥
स्वइच्छा मराळनामरदळि॥सुखानंदिक्रिडलु॥२०॥कोण्हीनदेतास
हजे॥ज्याआवडलेणेघरजे॥सुवर्णरत्नेहेमाबुंजे॥मुक्तप्रवाळइत्या
दि॥२१॥उत्तरेहरिवासगंधपुर॥जेथेयोजनविस्तार॥नानागियाभेद
लिधराधर॥जैसरश्रिकेलटाश॥२२॥उत्तरदिशाजीकोनिसकळ॥
वळिजग॥नाथादीरा जलुंबळ॥पुर्वदिशेचभुपाळ॥वेगीसर्वजिंकिले॥
॥२४॥कन्हाडअणिकर्नाटक॥चोळमंडळादिअनेक॥देशमल्लपाळभू
तरिक॥पंडुराये जिंकिला॥२५॥श्रीरंगपट्टणशिवकंचि॥समुद्रवासीरा
याचि॥स्थानेजिंकोनि रूपाचि॥आपारधनआणिलि॥२६॥चोदास्या

ळ कोंकण। घेतले करिणकोळवण॥ आपार बंदर घेउन॥ आणी सिंद्र अर्ध
समुद्र॥ ४८॥ कांबकोटेकमसूर॥ मछ्य आहरि अलिकुर॥ सर्व जिंको
निरूपवर॥ धन आपार आणिली॥ ४९ पुर्वे पश्चिम उत्तर दक्षण॥ आष्ट
दिशा तेजींतोन॥ हस्तनापुर आला आपण॥ आपार कर भार सि॥ ५०॥
रत्नमांदुसा सहस्र श्रोणी॥ बाजिवारणउष्ठ्र यानि॥ आपार स्चकट भरूनि॥ धन
आणिले पंडुनें॥ ५१॥ नाना दिव्य आळंकार॥ आपार वस्त्रांचसंभार॥ नेणो
कोटले गिरवर॥ हस्तनापुरा दिसना॥ ५२॥ सुवर्णनिष्क सहस्र कोटि॥ जांबु
नद कनका चियार वाटि॥ सकाळिहा यमेघवृष्टि॥ तैसिसं पति आणिली
॥ ५३॥ दिग्वीजय करूनी जापा॥ आला पंडुहर्षे कोना॥ सौन्यासहित गंगा
नंदन॥ सामोरा जाय तयाले॥ ५४॥ सन्मुख देखता जान्हीसुत॥ पंडुरथा
खाले उतरत॥ भावे पादांबुजे नमीत॥ येरु आलिंगित याले॥ ५५॥ कर
नि मस्तक आवघ्राण॥ विष्म करे कुरवाळुन॥ सकळकुशळ विचारूनी॥
पुढति रथारोहण केले॥ ५६॥ मीरवत आले निजनगरी॥ भीष्मसहित र
ज मंदिरि॥ पंडु सत्यवति ते नमस्कारि॥ आणि माता आपुलिया॥ ५७॥ सा

॥ आदिपर्व ओव्या ॥

॥ अनंद नमो येत्रिभुवन ॥ भिष्म तया प्रतिबोले वचाने ॥ पंडुने दिग्वीजय करुनि ॥ वस्तु आपार आणी त्या ॥ धृपन्ने देशीचा संपति बहुल ॥ पुरे माजिल्या जे विसरिता ॥ येकत्र मेळविता पंथा ॥ हस्तनापुर सा शीघ्र ॥ पुर्विकुरु राजयाचि धने ॥ राजे हरितिउद्यल पणे ॥ ते सर्व हि होउनी दीन करभारे सिव जगति ॥ ७० ॥ संपति आणिल्या आमोघा ॥ याच करुनि आष्ट भाग ॥ पुज्यो तपुजिले सांग ॥ पंडुराज आवडि ॥ ७१ ॥ येक भाग भीष्म नृपाति ॥ येक पुज विलिसयवति ॥ अंबिका आंबाळीका सलि ॥ भाग द्वय सादिधले ॥ ७२ ॥ येक धाडिला धृतराष्टाते ॥ यकनिवेदिला विदुराते ॥ नगर वासिया सुहृदाते ॥ लोष विला भाग यक ॥ ७३ ॥ यक वाटिला ऋषि ब्राह्मणा ॥ आपण गावा टिलि बहुदक्षणा ॥ सवन करि ला लोकवदना ॥ लक्षि ना हे सर्वथा ॥ ७४ ॥ आपार वोपुनि संपत्ति ॥ प्रज्ञाचक्षु सियहाति ॥ राल यक अस्वमेध निवृत्ति ॥ सांगो पांग करविले ॥ ७५ ॥ जयदेखोनी पोरोगामि ॥ संतोष

पावेआनयीमि ॥ पंडु देखानि सुखा चिउ मी ॥ कौसल्यातेमाव
रे ॥ ४९ ॥ संगघेउनिउभयपति ॥ नगरवासनरुचे मनि ॥ वसता
जालावनकाननि ॥ मृगयासीळ सर्वदा ॥ ५० ॥ हेमवंतगीरीचा पाट
रि ॥ ताळेतमाळचनगव्हारि ॥ दक्षणपारस्वीधनुर्धारि ॥ सिद्ध जेसा वि
चरतु ॥ ५१ ॥ करणी मा जिमद्र जालि ॥ तेकिउभयवनितामाजि पती ॥ पंडु
राजआहोरात्ति ॥ आरण्य क्रिडेरातला ॥ ५२ ॥ भक्षभोज्यादि समस्त ॥ ५२
तराष्ट्रधाडिचनांत ॥ आज्ञाहोतअंसरव्यदुत ॥ सामुग्रिसीतिष्टत ॥ ५० ॥
देवकन्यासुंदरबरवि ॥ जीयेचेनाम पार्थिं ॥ भीष्ममागानिलेमगौरवी
भार्याकेलि विदुराते ॥ ५१ ॥ तिचापोटिजन्मलाकुमरु ॥ पिलयातुल्याविवे
कचतुरु ॥ विनयवंतगंभिरधीरु ॥ महासमुद्रसमाचा ॥ ५२ ॥ यापरिआज्ञा
चक्षुराजयाते ॥ शतपुत्रजाले गांधारिते ॥ वरुषागर्भिजन्मलाहातेयु
युत्सानामजाणपां ॥ ५३ ॥ देवताविर्येचनातरि ॥ कौंतिमाद्रिचेउदरि ॥ देवचि
जालादेहधारि ॥ धर्मादिकपाचहि ॥ ५४ ॥ विनविराजचुडामणी ॥ वेशंपायन
चतुराग्रणि ॥ शतपुत्रायकिजननि ॥ केसियापरिप्रसवलि ॥ ५५ ॥ यकदाकि

व काळांतरि। शतपुत्र येके उदरि। जन्मले ते सविस्तारि। सांगे मातें सर्वज्ञा

॥५३॥ चावेस्या गर्भि नंदन। जन्मावया काय कारण। हे हि मातें होय ज्ञान। तैसे

आजि निरोपिं॥५४॥ मनुष्य स्त्रियाचि गर्भि मुसे। देव विर्य देवतांचि ये। पु

त्र जन्मले हे हि केसे। विस्तारुनि सांगपां॥५६॥ पंडित मंडळीवर मंडणा।

संशय वनखंड प्रखंडणा। प्रचंड सत चद्र किरणा। कथा पंथा प्रकाशि॥५७॥

वैशंपायन ह्मणे नृपति। निके न परिसं सावधान मति। गांधारीचे परम भक्ती।

व्यास गेल्या पातला॥५८॥ भोजना आदरें तोषला। रुषि। रूपे ने वर दीधलि

वदला ऐसि। यकशत पुत्र तुझिये कुसि। जन्मतिल सदैवे॥५९॥ व्यास व

दोनि गेलिया राजा। रुतु आला सवकाम जा। प्राशाचि शुविर्य बीजा। ध

रिलि जालि गर्भिणि॥६०॥ गर्भ राहिलिया पवित्र उदरि। पंच विंशति मास वरि

प्रसुति नोहे जाणा निर्धारि। चिंता करिति राहिले॥६२॥ यालागि जरुषि ब्रह्म

णि। कौतिला गि महावनि। जेष्ट पुत्र जन्मला गुणी। बाळ सुर्या सारिखे

॥६३॥ हि बोकोनि इर्षामाने। खेळ रागे नकळता जाण मोन्यें उदर ताडि

ला पाषाण॥ निष्ठुर कोर रागिया॥६४॥ उदर ताडिता तक्षण कसि। गर्भ गळ

ला ताकाळें सागर कवर्घा मांसपेसि ॥ लक्षिपाडिलें त्नवथविलें ॥ ध्व । जालें देवो
निगर्भपतन । सौबळे करि दिघे रुदन ॥ अपोथ्यासाचवरदान ॥ विपरित केले
अदेश ॥ ६७ ॥ ऐसें बोलता खेदभुव ॥ तव व्यास प्रगटला आकस्मात ॥ ना
भिजपी नि बस्यासिता । रूपाचे च निरूपाकु ॥ ६८ ॥ अन्यथा नोहे मद्व
चना सि । अपो निजळें । क्षिरलें पेसि । हरनस्पर्शे लव अपेसी । मेरा
चलिरालभागा । पध्वा फणसामाजील विसकण । काढीत निघतिसी न्न ॥
ते वि अंगुष्टपर्व प्रमाण ॥ मांसगोळे जिजवडिलें ॥ ७० ॥ रातकुंभी भरोनि
घृत । येकयेक सूदलें कर निगणीत । संख्या होता यकशत ॥ गांधारि
यापार्थिलें ॥ ७१ ॥ येके कन्याचि वासना ॥ ते मज द्या विहृयपायना ॥ नि
केपो नि शिराषकणा । आगळ कुंभी घातलें ॥ ७२ ॥ सातपुत्र वरी आ
गळे । कन्या जन्मलि तप विरागळे । दुःसीळा नाम राजबाळि । बंधु
चर्गीपट येति ॥ ७३ ॥ गर्भबीजा च भीतर अंकुरा । घृत जालिया समु
रसा । घानिया येकमुसा । व्यासें केले हस्तको ॥ ७४ ॥ रक्षकरा निमंत्र
गेलो । कुंभ ठेविले निगुढस्थळीं ॥ दिपजउनिया जवळी ॥ रक्षणनारि

८

डेविल्या॥७५॥ माजी रमुषक निवारणा। करनी चीलो कासा वधान॥
नवमास होताचि पुर्णी॥ अवयवे सिलो रीली॥७६॥ ऐसे सगुणि व्या
समुर्ति। तप श्चर्य मानस गति॥ गेल्या हि माल्या प्राप्ति॥ योगमार्गि यो
गिया॥७७॥ मासा मासाचे भरतरि॥ जन्म पावले कुभोदरि॥ जे स्या
माजि निर्धारि॥ दुर्योधन दुरात्मा॥७८॥ जन्म तक्षणी बाळ भावे॥ रवे
फोडिला राषभ रवे॥ अनेक खरि शचे थावे॥ यक वटले ते फाळि॥७९॥
होता राषभ स्वनाद॥ राष भिदि धला प्रति शब्द॥ गर्ध्व गोमायु
करव्याध॥ शिवा वायस रयादि॥८०॥ मेघ वर्षे रक्त धारा॥ सु
डाउ सुटला प्रळय वारा॥ उन्मकु नियाल रवरा॥ गगना मार्गी
उडविलु॥८१॥ क्षिपक्षिपा भुमिकंप॥ जन आंगि सिल ताप॥ दिग्धा होयु
मेघ्यो म दिप॥ लोपु निगळाडु र्दिनु॥८४॥ करिति पसुर गर्जना॥ दिर्घ स्वर
करिति रुदना॥ ऐसे देखोनि दु श्चिन्ह॥ लोक चिंता साचित॥८२॥ कडकडाट
उल्कापात॥ दिवस बोलति दिवा भित॥ रविबिंबा विलसवि ष्याधी भीष्म अणी
क्षत्राध्यु॥ आजन्मला जगाचे मुळी॥ करि लसकळ कुळाचि होळि॥ से त्रि मेत्रे

प्रथ्वीलक्षी। नाशपावेल्यासंग। ॥७५॥ करितमरा। विश्वसाधी। बाकि इसिचा। लिल
द्वंद। पुत्रशोकाचिआपदा। भोगविल्वडिलाते। ॥७६॥ नायके श्रेष्टाचे उत्तर। परम
आग्रामलाक्रूर। कापट्यविद्याचासागर। दिर्घद्वेशि निर्दै। ॥७७॥ विदुरह्मणेभा
गाजेश्वा। विचारावीवरियेकनीश्व। सर्पलागे जयावोय। लेचिखंडतिजा पले
॥७८॥ नाचवावसकळकुळा। त्यागिययायेकबाळा। इतुके निशेभक। आणसकळा।
सुहृदेसिजगले। ॥७९॥ यकर्या गिलिया कुमर। वंशाचिराखिअपार। वाचे याहु
निश्चभथार। कोपालो सांगे सर्वज्ञ। ॥८०॥ मोहाखवडो नियापरतो। अनुमान
हाणोनिरनात। गंगाजळिबुडविसुल। वसुजे सेपुर्वजि। ॥८१॥ उसालखटिकसि
ली। तदर्थ करणेहे चिरांति। पुत्रत्यागिलियाजगति। क्षेमउरविमानवा। ॥८२॥
करकुळासियाविरचा। जियदानदेयिनरपार्थिवा। हेआमुचिप्रार्थनादेवा।
नुपेक्षा। विसमर्थी। ॥८३॥ येकयासुनि कुळरक्षिणे। ग्रामात्मा मिकुळसांडणे।
देशविशेषेग्रामसयजणे। अेसिनितिव्यासाचि। आत्मा शरिररक्षा। याकार
णे। प्रथ्वीचाहि त्याग करणे। यालागीपुत्रसेजु निजाणे। कुळ आपुलेवाच
वा। ॥८४॥ हृदयिआकीगुनिसुता। धृतराष्ट्र बोलेप्रेमभरिता। ह्मणेकुमसबो
ळव्यर्था। मीसर्वथानायके। ॥८५॥ आपप्रीयकडिल कुमरु। त्यागितामानेनध
रेधीरु। सांडणे सांडिनरोरिरु। ववायकु नियावरुते। ॥८६॥ अरिकेउदजेरि

काळे॥ ३॥ लहोइल स्वभाव लिके॥ इस्वर कर्तवाचुनि बोले॥ काय कीजे सां
गपा॥ ६॥ आसो सुयोधन जन्मला ऐसा॥ यानंतर मासमासा॥ जन्म पा
वले नर वेरसा॥ यकशतब कियांध्ये॥ ७॥ दिवस वडिल युधिष्ठिर॥ कोट
न्यायक संसार॥ दुर्योधन यकोदर॥ येके दिवसि जन्मले॥ ८॥ सगर्भ आ
सता गांधारिस॥ रायासि पिडिले मन्मथे॥ वेस्यांगने सिकामातं॥ पुत्र कीकरि
तो स्वविर्ये॥ ९॥ लेथ पुत्र तपा वला जन्म॥ तया युयुत्स ऐसे नाम॥ बाळवे
गाळि अति उत्तम॥ बुधिया चिप वित्र गथा॥ १०॥ ताना मे करुण॥ अ
इको इछीवु से मन॥ ति पुर्विचे मासवरन॥ बोलिले ते ऐकणा॥ ११॥ दुर्यो
धन युयुत्सु दुशासन॥ सहदुश्चळ जळसंध जाण॥ सम सदवी दुस्सु
लक्षण॥ अणु विंद भीम आकस वाग र्न॥ सुबाहु अपि मदसेन॥ दु
र्मुख नमु मुख स्वदु कर्ण॥ कर्णविरााति विकर्ण॥ जळसरवे तवि
सवा॥ १५॥ सुलोचन चित्र उपचित्र॥ चीत्राक्ष शरासन चारु चित्र॥
दुर्मद दुष्प्रगाह वित्र॥ विवत्सु जाणति सवा॥ १६॥ कंट सम सुंदर नं
नंद उपनंद चित्रबाण॥ चित्रवर्मा सुवर्मा सगुण॥ दुर्विमोचन सुन
भ॥ १७॥ अयोबाहो महाबाहो॥ चित्रांग॥ दीर्घलोचन भीमवेग

१ भीमबल बलाकि सुभग ॥ बलवर्धन महाबाकि ॥ ८ ॥ उग्रायुध भीमकर्मा ॥ कनकायुध दृढयुध बहकुमर ॥ ब्रह्मक्षेत्र नराद्रोत्तमा ॥ सोमकीर्ति तदनंतेर ॥ ९ ॥ दृढसदज शरसंद ॥ सदस्यकाकस्य गंधा उग्रश्रवा महाप्रसिध्या ॥ अश्वसेन सेनानि ॥ १० ॥ दुपराजय परोजित ॥ कुंडशास्त्र विशालाक्ष येथ ॥ दुराधर्ष दृढहस्त ॥ सुहस्त सी सत रिहे ॥ ११ ॥ सुवर्चस चेगवात ॥ वयाकासि अदिसकेतु ॥ उग्रजकवाच नादर्दल ॥ खड्गी कुंडधर ॥ १२ ॥ उग्रभीरथ बाहो ॥ अलोलुप अभय नाम पाहाहो ॥ रौद्रकर्मा प्राणनाहो ॥ वीर श्रीयचा संग्रामी ॥ १३ ॥ दृढरथा यथायुध दृढबुधि ॥ अनाधृष्य अपीकाकुंडभेदि ॥ दिर्घलोचन पविरोधि ॥ प्रथम अणी प्रमाथी ॥ १४ ॥ दीर्घलाभ विर्यवान ॥ दिर्घबाहु माहाबाहु नरागमा ॥ व्यादोर कनक ध्वज आपण कुंडसि अणि कर्णका ॥ १५ ॥ वैस्यापुत्र सिसमस्त ॥ यकाआगळे यकाल ॥ नामे निरोपिलि निश्चित ॥ यथानुक्रमन रचया ॥ १६ ॥ सकळा वेदध्यायन ॥ सर्वहि सर्वशास्त्री निपुण ॥ समस्तहि धनुर्विद्येत निपुण प्रविणा सर्वहि योध्य अतिरथि ॥ १७ ॥ यकोलरशात राजकुमार ॥ मागा निपुत्रा तेसुंदरि ॥ भायाके लियाजे विसुरवरि ॥ देवागनि क्रिडे जे ॥ १८ ॥ दुःशीळा

८

६

कथा अलिसत्रमे । आपार संपदा अर्पुनि प्रेमे ॥ जयद्रथा नेर रोतले ।
न्न गवि धिनेचो पिलि ॥ १७ ॥ रुपविद्या बळे समर्थी । राज्यसाधनिद
क्षधुली । पुत्र देखो नि अंबिका सुत ॥ सुखाने दिक्रीडिजे ॥ १८ ॥ आ
ला पाडवजन्मरत्ने केसो । तहि परिसीज सावकाश ॥ तुस वेधधा
न वचन चिरे । वमुरु लेख विले ॥ १९ ॥ विश्वेश्वरा लिका विश्वंभर
र त्नात्रय जद्गुरु तत्प्रसादे मुक्ते श्वर ॥ निरोपी तपरिसावि ॥ २० ॥ इ
ति श्रीमहाभारते आदिपर्वणी कौरवोत्पत्तिनाम पंचविंशतिमो ध्या
यः ॥ २५ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९ ॥ ६९

८ ॥ षड्विंशतिमोध्यायः श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ८

॥श्री कृष्णाय नमः॥ पंडु राजा राजमौळि॥ मृगयासी क सदा काळि॥
अटपा करिता वनस्थळि॥ मृग येक पाहे खिल॥१॥ मृग मृगि मिसि मै
थुनी॥ पारधि मोरा देखोनि नयनि॥ लक्ष लाउनि पंचबाणि॥ विंधोनि
या पाडिला॥२॥ तो तापसी कुरंग रूप॥ धावोनि समीप पालटला भुप॥ म
गम्हणे महा पाप॥ आचरला सि पापिष्ठा॥३॥ भोजनि पानि स्त्रीमै
थुनि॥ दुश्चित वधो नये प्राणी॥ लेखा करनि अधर्म करणी॥४॥ क्ष
त्रधर्म बुडविला॥ जैं ऐको नि राजा बोले शब्दु॥ क्षेत्रिय करावा मृग
चा वधु॥ विधिने मुनि गेला वेदु॥ तु कां माते निंदिसि॥५॥ चित्त दुश्चित
। न विचारित॥ राजे करिति मृगांचा घात॥ सीष्टाचार प्रमाण येथ॥ अ
गस्त्यादि रुषिंचा॥६॥ सांग म्हणे वचन॥ कर्दमनामा मी ब्राह्मण
आपुल्या इच्छा मैथुन॥ करावया चि आवडि॥७॥ लोक द्रिष्टि करिता
प्रगट॥ कृत्रिम मृग वेश आचरत॥ आउरा के चकपाट॥ दारा पुरुष अ
वगलो॥ ८ पुर्ण न व्हला मैथुनसुख॥ तुवा मध्ये चि विंधिले दुःख॥ म्ह
पोनि करि तिरस्कार॥ मृग मृगि अकोरा॥९॥ पुढति बोले करनिवु

प॥ नकळतमातें वधिलें नृपा॥ ब्रह्महत्याची याप पा॥ स्पर्शोनि दे तुज
लागि॥ १०॥ आचरला सिजया अपराधा॥ यास्तव घे शाप शब्दा॥
स्त्रीसंग करिता बुधिमंदा॥ मृत्यु पावसी ताकाळि॥ ११॥ मैथुनि मातें
विंधिलें बापा॥ तुहि करिता सुख मैथुन॥ विर्यपाता सवेंप्राण॥ देह
त्यागि सर्वथा॥ १४॥ ऐसे वरोनि शापवचन॥ कुरंग रूपें सांडिला
प्राण॥ पंडुराज अति उद्वीग्न॥ जाला कि जे अति दुःख॥ १२॥ ब्रह्महत्‍ये
ये चा कंटका॥ विषयसुखाचि कियारा दुःख उभय लोकि न दिसे सुखें
विश्रांतिचे मज आता॥ आपाचार निउभय वनिला॥ सापलिसांग
दुःख वार्ता॥ म्हणय पापे आन था॥ आतुडलो य का कि॥ १५॥ आता
उपाहिजे कवणा॥ कवणा रक्षि वस्त्रा भरणा॥ कासीला भिवगंगना॥
तुम्हा ऐसी मज सेवा॥ १६॥ हात व्यर्थ गेला जन्म॥ कोटे देखा सुख सवि
श्राम॥ ब्रह्मज्ञानि बोललि ब्रह्म॥ आनंद रूप म्हणोनि॥ १७॥ परि ते आ
लुडे कवण्या रिति॥ ज्ञानसाधनके चे अर्थि॥ इंद्रिय घालविले आन
थि॥ मरण भये वि सरोनि॥ १८॥ आता तुझी जान मर प्रलीजा

वेतेथेसम्वलि। अंबिका अबा क्रिकासति॥ त्यासन्निधअसावे॥१४॥श्री
सद्गुरुज्ञानमुति। असुच्यवयाथाचियसंगति॥ क्वजनाहियाद्यथा॥
॥१४॥ मीप्रवेशेनमहावनि॥ प्रापसजिनदेहदंडणी॥ परलोकीसुखा
चसदनि॥ वसेवैसकरिन॥१४॥ करिनअरिश्रावकाचाराग॥ धरीन
वैराग्यसाधुसंगु॥ धुधेत्सेचाहेपांगु॥ पगेनेदिसरेथा॥१४॥ पच्चरा
त्रेसरात्रे॥ सरीररक्षिनजकआहारे॥ मनमारानियोगधारे॥ प
रलकोतेसाधिन॥१४॥ विनितहोउनिविनवित्नेनम्रता॥ विनिअे
कसर्वज्ञनाथा॥ पुरुषेसंगिपुरुषअसता॥ कामविकारकोपाते॥१४॥
द्वाराभतरिहेभावना॥ आच्चाअटवनेद्मना॥ शिष्यअंगिकारणी
चरणा॥ समिपअसोनिष्कामा॥१४॥ जिलियद्रियवनेमौनेराय॥
इवेनेसार्थककरुकाय॥ लुक्षियाअेसिलपश्चिर्य॥ तीव्रअहीआ
चरा॥१४॥ तेपरलोकिनिजाग॥ सुखपावालुसनिसंगा॥ दुरिदवडिता
योगे॥ जापायगुताला किा॥१४॥ परिसोनिशाचिनिच्चयउत्तरे
निकेमानिसापुतपश्चरा॥ नटामाजिलनारिनरे॥ साभाकना

स्वीकारि ।६८। ब्राह्मण हाकारिले वचनें ।। निगांमि च वस्त्राभरणें।
वांटिलि जे विफळ सुमनें। दक्षीणे पिपाधिका ।। ६९।। चुगरले मपीकुं
रे। पदक माळा कटि मेखळे। बाहु आंगदें आमोले। विरकंकण मुद्रि
का ।७०। विप्रा वांटु नि उदारें। अंगी वेष्टिलि वल्कलांबरें। हे देखोनि
प्रेमादरें। कोंति माद्रि उपसयला ।७१।। पाचारु नि रायेश्वर।। नगरा
जाउनि समाचारा। धृतराष्ट्र तेजा पावि ।७२। आवलोकोनि राज
परिवार। आज्ञाकारि राजेश्वर लयावा टिले अंककार। भुजेयदो
निसमोरे। करजोडु निराहिला ।७३। आवलोकोनि राजपरिवार
आज्ञाकरि राजेश्वर ।। नगरा जाउनि समाचार। धृतराष्ट्र तेजा पा
वि ।७४। सांगुनिया सर्व स्वातें। पंडु गेला वनवासाले। तुम्हि साभा
ळा राज्यातें।। मना मानेल त्या परि ।७५। रुदन करिता राजेश्वरा।।
संगिये पातले हस्तनापुरा।। जापा विले गांगाकुमरा।। प्राज्ञाचक्षु रू
पाले ।७५। सांडुनि राज्य सिंव्हासनि। पंडु प्रवेशला कानना ।। अैको
नि धृतराष्ट्राचा मन।। शोक बहु लनावरे ।७६। शोके संतप्त आ बा
ळिका।। सी मोहिपात्र जाला दुःखा। असो पुढा वर्तेल अैका। पंडु कडे

२

कानंनी ॥३७॥ राजसमंधिसुहृदवर्ग ॥ याचा सांडोनि संग ॥ स्मरणेसि विषय
भोग ॥ वांतितैसे याभी के ॥३८॥ सवेंचि तेणे निर्भय पहि ॥ जयाधारिवलकुवसनि ॥
कंदमुळफळासनि ॥ माहार पयप्रवेशो ॥३९॥ आवघत्र मुनियापंथ ॥ नागसहि
तगीरीशोभित ॥ वोलांडुनिचैत्ररथ ॥ महावनटाकिले ॥४०॥ तेभुमिसांडोनि
माघारि ॥ बाटकादिसि पुढारि ॥ काळकुटगीरिशिखरि ॥ दारासहितवळघला ॥
॥४१॥ आवलोकोनी पवित्रस्थळा ॥ पुढाचाम केभुपाळा ॥ तवदेखिला तो हिमाचळ
रत्नसीखरि मंडिला ॥४२॥ हिमाचळाचिये परिसरे ॥ सिधाश्रमगुहागव्हारे ॥ हि
मोदकाचिकासरे ॥ स्फटिकेतैसे भासति ॥४३॥ हिरण्यकश्यपीकाचे यावर्व ॥
खडकेसोमकांत निघाट ॥ माजिजान्हविचकोट ॥ दुग्धवर्ण भासति ॥४४॥ तेथ
हि तापसाचा मेळा ॥ द्रिष्टिदेखिला निर्मळा ॥ ज्याचेनि दर्शनी ताकाळा ॥ चीं
तश्रुधपापिया ॥४५॥ तेथोनि पुढा अतिशोभिला ॥ गंधमादनुपर्वत ॥ जेथे औष
धि अमृतभरिता ॥४६॥ सिद्धपरमरुषिनांदति ॥ यालेनमस्कारुनि परमभक्ति ॥
पंडुमाद्रिसहिलकोंति ॥ पुढनिपुढा आमके ॥४७॥ इंद्रद्युम्नसरोवर ॥ द्रिष्टि
देखिले मनोहर ॥ हंसकुंड उल्लघुनि वीर ॥ शतश्रृंगपातला ॥४८॥ तोशतश्रृंग
पवित्रनाम ॥ मंडिलतपासिश्रम ॥ लिंगटलास्वर्गाचिये सिमे ॥ अहेंतजवळा

भासतुग॥४७॥ जंबुना चिलु निश्रीरंग॥ आदेकिहुनि प्रयाग॥ तैसा गिरीरान
श्रृंग॥ समिपदेखे स्वर्गात्ते॥५०॥ अवघे पिपडिलि गंधर्वे गाणि॥ दिक्षिभासति
सुखिमानि॥ कुवेराचि क्रिडे तिस्थानि॥ अतिरमणीक शोभति॥५१॥ ताम्रर
जतसुवर्णभुमीका॥ पद्मराग पासादेखा॥ चिंतामणीर हिरांखणिका॥
मठमंडपिउभविल्ला॥५२॥ यक्षचारणगण गंधर्व॥ विद्याधर किंपुरुषदेव दे
वांगनासहित सर्व॥ स्वइछानंदेक्रिडति॥५३॥ शतश्रृंगिवरि परिसरी॥ कान
नेलागलिचौफेरि॥ वृक्षलतविनलेफळसंभारि॥ तृषिदेतिपरिमळे॥५४॥
पर्वनितंबिहुनिदेखा॥ सरिताबाहतिआधोमुखा॥ जैसेमस्तकेपक्षवस्रका
गंगानभाशोभति॥५५॥ तेथेवसतिबहुतापस॥ योगासिद्धपुण्यपुरुषा॥ रा
जादेखोनिसंतोष॥ समस्तातेसारिखा॥५६॥ यांकिभाविलापरमभीतु॥ ये
किबंधुसहोदरु॥ यकम्हणतिजैसाकुमरु॥ तैसाआह्माआवडे॥५७॥ तयाऋषि
चियेसंगति॥ राजाराहिलाकरुनिवस्ती॥ उभयवनिताआहोरात्रि॥ सेवासु
खेवर्ततिं॥५८॥ उभयकाळिदेउनिहोम॥ आरंण्यफळिअतिउत्तम॥ अतिथिपु
जेचानेम॥ सारुनिस्वंफळहारि॥५९॥ ऋषिमानितिचमत्कार॥ तैसेआचरतप
खडतर॥ तपश्चिह्मणतिमहाथोर॥ ब्रह्मऋषिसारिखा॥६०॥ जोजेनितपाचीसं

गति। स्वविर्य जावे स्वर्गाप्रति॥ जै सिक्षा वनाधर नि चित्ति। महातप तिलपिनल।
॥६२॥ येकी दिव सिरुषेश्वरे। चउ तिपर्वताचि सिखरे॥ उर्ध्वशुन्याचे निसीखरे
आवलोकि तचा लिला॥६३॥ तालश्रृंगाचे सिखरी॥ स्पर्शकेला स्वर्गद्वारी॥
वरिल स्वर्गाचिया परि। दिसे स्वर्ग जालिया॥६४॥ तयार विचे निसंगते
पंडु चडत उर्ध्व पंथे॥ तपाध निवारिला होते॥ ह्मणति राहे राजया॥६५॥
येथुनि पुढा कटिण पंथु॥ नच्चत्रे दुजियाचा सांगातु॥ निर्मळ सुकृताचा ह
लु॥ धरुनियातिधर्मात्मे॥६६॥ मनपवनाचि कुटिल गति॥ पक्षी जावो नस
के पंथि॥ दारासहित राजनृपति॥ यउनि पाहसि कउता॥६७॥ येथे पुण्य
चिये कयकरे॥ निर्मळ भाव येक जोडिले॥ तरिच येथे चाललाभले॥ य
रियताभाव घड॥६८॥ उर्ध्वरेते महायोगि॥ आथवा संग्राम महायोगी
रारिर लोभि तिते मार्गी॥ चालावया अधीकारि॥६९॥ यावेगळे दारावंत
ग्रहस्त जेका स्वधर्मनीरत॥ तिहि जोडु निस्वर्ग सुकृत॥ यत उपाय येकची
॥७०॥ तोहि उपाय ह्मणासि कवण॥ जेथ खंडले चवारि ऋण॥ संततिवं
त पवित्र जन। स्वयंये सिया टाया॥७०॥ देव ऋषि मनुष्य ऋणी॥ पितृऋणी
रुषि रुणि॥ जो मुक्त जाला चहु ऋणि॥ सार्च्छा निनि र्विघ्न हा पंथु॥७१॥ च

हुरुपा। पासुनिमुक्त। अवेगास्यगर्द्धा रांला। यरालो शिलदवंडुता। इंडअहेरमाघोरे

।।७१।। शीयेपरीहारदेवरुणा।। स्वाध्यायलपरु षिचारुण।। पित्रुआधिपित्रुतर्पण

पासोनिहोयजन्मणी।।७२।। अहिंसाभुतदया गुणी।। प्रापीसुटेमनुष्यपणी

ऐसिसाधनकरणी।। जापानियेवेजाणते।।७३।। देवरुपामनुष्यरुण।। फेडुनि

जा ऐसि उत्तीर्णपणी।। पीत्रुरुण संतति हिन।। यालागियेथेअशंका।। ७४।।

संतति न जो सुकृती।। याचिसंतलाइयपाथी।। यरायकोटि साधनकष्टे।।

।।७५।। आलाअनेकधा उपायि।। संततिवाढविस्त्रीयाचाहि।। म्हणाया-

पाचारास्त्रिघाइ।। शरीरतुकविस्रापुत्ले।।७६।। ज्यापरिकीष्टादयपा

यना। तुमच्याजन्मासिकारण।। लेसाग्राथोनितपाधन।। संततीत्रे

हसपारावि।।७७।। ऐसेपरिसोनियालयेगपंडु दुःखेशोकसंतप्त।।

नमस्कारुनिऋषिमंडल स्त्रिया सहितपदातला।।७८।। वेसोनिया

विजनस्थानि।। पाचारिलेजदपत्नि।। तिम्रतिबोलेसखेदवाणी।।

विचारपरिसेपवित्रे।।७९।। आपवित्रवंध्यहदोषरेख।। साधनेकेले

नपुंसक।। भयचोकिनाहिसुख।। आशा निर्धारे।।८०।। सदसवतिक

तनियायन ॥ विचित्रवीर्यक्षेत्रिजाण ॥ श्राधु मिळ्कि व्यास द्वैपायना ॥
पुत्र आह्मा जन्म विलो ॥ ८४ ॥ थावत्स मेलु वा तया चि पारि ॥ रूपेश्वर वि
र्य भरपुले उदरी ॥ संततिवाट वि निज निर्धारि ॥ तरि च सार्थक ज
न्माचे ॥ ८५ ॥ धर निअरांक अंतरि ॥ मासी आसावंदु नि सिरि ॥
पुत्रजन्म विस्च उदरि ॥ ब्राह्मण विर्य सर्वथा ॥ ८६ ॥ संतति हिना
चि साधने ॥ सर्व व्यर्थ जाण चो मने ॥ जैसि वांझ वृक्षा चि सु
मने ॥ निर्फळ भरले विनालि ॥ ८७ ॥ पुत्राचे नि बळे जनक ॥ स्व
इच्छा भोगी स्वर्गलोक ॥ ऐसे बोले मन्वादिक ॥ स्मृति कर्ते ग्रंथा थिं
॥ ८८ ॥ अनेक प्रकारिचे कुमर ॥ ग्रंथि बोलति ग्रंथाकार ॥ उत्तम मध्यम ह
विचार ॥ तु जाणसि सुजाण ॥ ८९ ॥ प्रथम जाण स्वयं जात ॥ दुजा पाणीप
रिक्रित ॥ पौनौभव चौथा सुत ॥ कानिन तो पाचवा ॥ ९० ॥ स्वैरणीपासु
नि जो जन्मला ॥ तो षष्टम पुत्र बोलिला ॥ बधुरायां दत्तक वहिला ॥ पत्र
दत्त क्रित उपक्रित ॥ उपांग स्वयें चि होते ॥ सहोढज
धन विक्षा मी ॥ ९१ ॥ दत्त क्रित उपक्रित ॥ उपांगळ स्वयें चि होते ॥ सहोढज
ल्पणी ज्ञाति रहित ॥ हीनयोनि संभव ॥ ९२ ॥ ऐसिया नामाचे नंदन ॥ यक यक

उ मी हिनं यातुवडिला श्रेष्टमान ॥ वियेजा ते स्वक्षत्री ॥ ७७ ॥ स्वकिय वियेओ
तिप वित्र जेका प्रसवेनि जककेत्र ॥ ते पुत्रामा जि श्रेष्टपुत्र ॥ मन्वादिकि
बोलिजे ॥ ७८ ॥ दवरा पासुनि संतति ॥ आपधर्मी बोलीले ग्रंथि ॥ उत्तमपुत्रा
चियपंक्ती ॥ मानुस्याते जापापा ॥ ७९ ॥ ओ सो स्वक्षेत्रिज मला ॥ अन्यावियेजु
जरि जाला ॥ तरि पुत्रता बोलिला ॥ गति प्रदवडिलाते ॥ ८० ॥ यविषइ ध्वल
काहणि ॥ इतिहास ओके आपुला श्रवणि ॥ नामसारद आये मानि ॥ वीरपंक्ति
पवित्रे ॥ ८१ ॥ तुसियाओ सिजलति हिन मगुत भतार आशा करुनि पुत्रव
निमंग मानं ॥ हो मदे उनिहु तासि ॥ ८२ ॥ चतुर्थ पंथि पवित्र शनि ॥ श्रेष्ट्र ब्राह्म
पाप्रधर्मु निभक्ति ॥ शरिरदान विवेकमुर्ति ॥ पुत्रत्रय प्रसवलि ॥ ८३ ॥ तेजुजया
दिक महार थि ॥ जनमलेजा पापानि श्चिति ॥ तेसातुहि ब्राह्मण प्राथि
संतानार्थ प्रमाण ॥ ८४ ॥ कौतिमेपो कुरुभुवण महे तचे नामासी याम
तु वावे पुनि वियेदान ॥ ८५ ॥ घ्याआज्ञा करावे ॥ ८६ ॥ ये विविषइ जिजाण
नाथा ॥ पुराणी ओकिजे जीर्ण कथा ॥ ते मी सांगेन दृष्टांता ॥ ८७ ॥ गिपरिस
भुपति ॥ ८८ ॥ युषितांस्वन कवति ॥ भद्रा नामे तयाचे सति ॥ पति दृढे

५ ति ५

आहोरात्रि। स्वामीसेवे सादरे॥१॥ लोपुथित स्वप्रकासरवि॥ जिणें निसा
गरांत प्रघि॥ पुण्य जोडिले जदेवि॥ २॥ जति स्ववाचा॥ ३॥ नागपुल यक
संपात्ति॥ न्यायरक्षमी धर्ममुर्ति॥ धनुविनापक्षपाति॥ ९९॥ मनी करांत
॥१२॥ अस्वमेघ सोमयाग॥ आपार संपादिले सांग॥ दान नेघेद केमाग॥
याचकाचे मोडिले॥ भद्रासुंदर पतिरता॥ नाजंप्य [illegible] होता॥
संतति कामने चलंता॥ वा ढोल॥ लिति यदरि॥ ५॥ ते वि [illegible]
कस्मात॥ बैसा निश्चय रागे जाला अंत॥ मस्त व्या प्रेच पटे धात॥ मा
रूनि प्राण घतला॥ ६॥ पत आ। मिगुनि देख॥ भद्राकरि दर्घ सोका
ह्मणे श्रापेस्वरा दुःख॥ वैधव्याचेनसा सव॥ ७॥ पुत्र हिन पुत्र पहिन॥
तं संसारि नाहि जाण॥ अमरका समस्मान॥ विधुर हि जगतें॥
वैधव्य आणी वैधव्य॥ हे चिनारि ते प्रेतव॥ ति हि रक्षावया जिवित॥
कारण काहि आसेना॥ ८॥ नुपाकर निप्राण नाथे॥ मज न्यावें जैसें
गातें॥ भ से औ को निदराते॥ वा यात पबोलिला॥ ९॥ जया परिआ

६८

कारावाणी ॥ नातरिझोटिंगमुखिचिध्वनि ॥ तेसा अस्वासनाचा कानि ॥
राब्दपज्रापयेसा ॥११॥ शोकनकरिबापवित्रा ॥ तुजमीफळिनसपुत्रे ॥
सांगेनलयाउपदेशमंत्रा ॥ वर्तणुककराविा ॥१२॥ आ ९ मी चतुर्दशी
तजाण ॥ प्रेससंगिकरावेसायना ॥ इतुके लुसीकामना पुणी ॥ वरहोइल
मासीया ॥१३॥ सागीतलेतयाचिरिती ॥ शेवासमेतपहुडलिसति ॥ प्रेतसं
गिगर्भवति ॥ संसवेच्याले जालि ॥१४॥ तीनि रात्र्याचतारि मादम पुत्र प्रसव
रितेभद्रा ॥ कुरुकुळ मद्दति चंद्रा ॥ चरित्रग्रंथिअैकिले ॥१५॥ जीता अ
थवा आलियामरण ॥ करावेकुसचिआराधन ॥ भाक्तिआसेलतेआपणा
फळदेयिल स्वभावे ॥१६॥ पुंडु नपे बोभापोथरि ॥ अर्थबोलसिमधुरा तरि
माहात्मापाचाकरागारि ॥ कामुमाझासिरकला ॥१७॥ तोसुटावया नाहियत
याकामीमानिमासेवचना ॥ ब्रह्मविर्यकुळसंतान ॥ आपधर्मीबोलीजे ॥१८॥
अणिकयेक निरोपण ॥ ब्राह्मनेश्रेजिळेवणीयणीले स्त्रियातसुरतमैथुन ॥
मुतकेले स्ववर्णी ॥१९॥ मागीलयुगाचापरिसाव ॥ स्वरछाचारिवर्षतिनारि
घेतपक्षाचि परि ॥ कुरुपाड्यादिमाल्या ॥ कि ॥२०॥ पुत्राविभांडिकाचा पौत्र

६

॥ अदिपर्व अ० ॥

रा८८

उद्दालकाचा जेष्ठपुत्र ॥ श्वेतकेतु नावे पवित्र ॥ तपोतेजें तेजस्वी ॥ ४ ॥ लेणे व
दो निरूपक वचनीं ॥ केलिये लोकीं मर्यादा ॥ ते परिसु निपुण प्रमदा ॥ ने मव
ते लिम गलि ॥ ५ ॥ पुत्र मातेरि देखता ॥ उद्दालिकाचि स्वरूपवनिता ॥ ब्राह्मण
बळकारें नेता ॥ मैथुनार्थ कामीका ॥ ६ ॥ हे देखोनि ऋषिकुमर ॥ कोपे कोप
रूप वैश्वानर ॥ पिताहि पोटीं रक्षीर ॥ सांतिशास्त्र सातिका ॥ ७ ॥ तेस
रोरू क्षुधापी जीर्ति ॥ न भांगिका रिपुर जिहात ॥ यत न उण करिल ने ल ॥
धनुव्याघ्र ज्या परी ॥ ८ ॥ सनातन धर्माचि राहाटी ॥ ने मुनि गेला परमष्टी ॥
लुकाहे दुइ करिसी कष्टी ॥ भावल बुनिया कोंत ॥ ९ ॥ विधिवेदाचिय
वचन ॥ ऊआचार प्रमाण याज ना ॥ लुवा कोप केलिया कोपा ॥ मागमी
जे सांगप ॥ १० ॥ ऐको निउद्दालिकाचि वाणी ॥ पुत्रकोप त्या शेखपी ॥
मग म्हणे चळला प भयानि ॥ विवेक शुन्य चोसनेडा ॥ ११ ॥ वंशाडो हो
कर्दमाचा ॥ पंका वलि सविचार वाचा ॥ म्हणो निया कस मळा चा ॥ आ
चार केला लोकिकी ॥ १२ ॥ कन्या कुमनि याप पिता ॥ कोणे दिधि लि
से प्रतिष्ठा ॥ भ्रष्टाचार प्रमाण भ्रष्टा ॥ मान्य सिराते नव्हे ॥ १३ ॥ जो

आमा॥गलिचिलोक॥तोलव मुखींचनायक॥श्रुति स्वचनेतलअविवे
क॥अपारद्रिष्टि दे रिवज॥३४॥राज्यिरच्छपितंवर्षीहिन॥भीक्षासिला
विलब्राह्मण॥अैसियाचि वचने कोण॥मान्य कीजे सांगपा॥३५॥आ
नाचार वदेल वेदु॥तोहि जाया विवेक मंदु॥निरावपंथे लोकआंधु
जेणनरकिलोटिला॥३३॥मीथ्यास्वर्गसुखाचिआती॥पशुमार वि
ब्राह्मणहाती॥नयाहिंसका चियावेकि॥टे विनाविकपरोसा॥
॥३७॥आजिपासुनिपरस्त्रेपुरव॥परस्त्रीस्त्रिलोआभिलास
मैथुनचुंबनअंगस्पर्श॥अनुमोदन भोगइच्छा॥३५॥अयोनि
कुयोनिपरस्त्रि॥जोबीजपरिआनाचारि॥तोम्यादिधलावेवस्ताचाकरि॥
दंडावयासुबंध॥३६॥साठिसहस्र वर्षवरि॥यातनाभोगनरकघोरि॥अपकी
र्तिघेउनियासिरि॥हाणिपावसर्वस्वा॥३७॥पतिव्रतेवर्तलनारि॥तिसिमा
न्यवाचवाचरि॥अमरभचियसरि॥अक्षयलोकिसुखभागि॥३८॥जितेंद्रिय
सदाचारि॥जननिसमानज्यापरनारि॥तोहिहरिहराचिसरि॥पुज्य होय

५

८

८

सुरनर॥ ३५॥ बहुवर्षाचि यानारि॥ येकपुरुषवरा पाधारि॥ हे किवचन लोका

चारि॥ गलापतील मवाक॥ ३६॥ ममज्ञेचि अलोट सिमा॥ भंगुन सके वेदब्र

ह्मा॥ लयास्वेलुकेलु यानामा॥ अघापिलोकिपाळिजे॥ ३७॥ असो हे साप्रव

रचिलिराहि॥ पंरतु अपधर्म संकटि॥ उपाय बोलीला से श्रेष्टि॥ तेता प्र

स्तुत कराचा॥ ३८॥ सूर्य वंशि सोदान्‍ रपति॥ अंगनाल याचि मदयंति॥ उपदे

सुनिवसिष्टाप्रति॥ पायचिल्हिरायनार्थ॥ ३९॥ साचे निर्वीर्यजन्मला कुमर॥

अस्यकु नामा वंशाधर॥ अस्तुत हाचि सिष्टाचार॥ प्रमाणलुवा कशव॥ ४०॥

आलानबोले बहुसाल्य कि॥ संशयदव ऊ निश्चित्ति॥ माझे वचन मानोनि

प्रीति॥ सलान करिरुषिविधी॥ ४१॥ कौलिह्मपाळेकभावाथी॥ प्रमद्गु नयनिज

गुह्यार्थ॥ तथापि संकटहरणार्थ॥ रहस्यलागबोलणे॥ ४२॥ कुमारि दुरोनहता

रंग॥ नानसदनी सुखसंपन्न॥ आसता पिताचा असावचन॥ होते जालेमज

प्रति॥ ४३॥ अतिथिचि अतिथ्याकरणे॥ वसनधन भोजनपाने॥ तोषउनि श्रमसा

रघेणे॥ आसिर्वादिलयाचा॥ ४४॥ जातथदुर्वासि देव मुनि॥ वसिष्टपा॥ तासह

६

जगति। ताम्याती सविता भक्ति। प्रसन्नना कृपाळु॥ ४९॥ बालपणी बीजाक्षरपुर्वक।
दिधले मंत्राचे पंचक। अभिचार युक्त कालिक। फळदेति उच्चार॥ ५०॥
येणे मंत्रे गुणे करासि। जे जे दैवत आकांनिसि। ते ते सिद्धय निते सि फ
ळदेति पुत्राचे॥ ५१॥ स सुमीथ्या हे प्रचिति। पाहावया स्मरिला गभस्ति। तत्पा
येउनि सहस्रमति। विर्यप्रसाद वोपिला॥ ५२॥ सुर्य विर्य लावण्यमुर्ति। कर्ण ज
न्मला उदारकीर्ति। लोकसंकोच पण्डुपाति। गंगाजळि टाकिला॥ ५३॥ राधावल्ल
भ किरात कुळि। पुत्र म्हणे साभलि पाळि। तो राधेय धनुर्धर बळि। लया धरि
चाटलु॥ ५४॥ जाणोनि पुढते भविष्याते। मंत्रपंचक वोपिले मात। अैसे आता
जाणावे चित्ते। येणे काळे यथार्थी॥ ५५॥ जनुचि स्तुरले मंत्रचारि। तमी जपे
हृदयांतरि। असे येउदे सिद्धपुत्र्या करि। अणि आज्ञा स्वमुखे॥ ५६॥ तरि
मि जपोनिता कालिक। दाविनर्दिव्य पुत्राचमुख। श्रवण पंडु पावला सुख
ले नायक [illegible] शांत॥ ५७॥ हृदचिन्ना त्रिगुनि भ्रमे। पाटी आप टिसुख संभ्रमे।
अणि मी आजि संसारभ्रमे। सांडवले यथार्थ॥ ५८॥ आजि अदृष्ट रंगानि
ठा। जालि इश्वर कृपा मगट। संत महंत सेविले श्रेष्ठ। तपु ण्य पुळलेया।

रूपे॥४१॥दरिद्रि आरला प्रथिअं तो॥दरिद्र पडेलोहधातु॥स्पर्शे कनका चा पदवीतु॥ग्रहा गेपिसा पडला॥४२॥मार्तवाडि ल्लागु निउष्णा॥प्राणजाला

मागे जीवन॥यावरि अम्रतघन॥गगनिहुनि वर्षला॥४३॥तेसं संतुरु

माझे मन॥नकरि अनुमान वेवधान॥मंत्रोच्चारे रविनंदन॥धर्मराज आह्वा

नि॥४४॥येरिसारुनि गंगास्नान॥वेढुनिया वधुवसन॥करितसे प्रदक्षणा

नमन॥भ्रतारा तेआवडि॥४५॥राहोनिया विजस्थानि॥आदरे जोडुनि

भयपाणि॥मंत्रोच्चारे दंडपाणी॥आवाहिले समर्थ॥४६॥भास्करा तुल्य

भास्करि॥कनकवर्पीकनकांबरि॥कनक किरिटि शोभे सिरि॥कनकांगद

शोभीतु॥४७॥स्मरणा करिता दिनभाणी॥पुढे सन्मुख दंडपाणी॥देखे

भाळे टवि चरणी॥देहदाना उद्यत॥४८॥हस्ति किमिरवे कनकदंडु॥कनक

कुंडलाचा जोडु॥पदक माळेचा उजेडु॥दीनकरि दिवसा तें॥४९॥अंगना

सं आमोघ रेत॥वापिला ताकाळि तेथे॥सत्य स्वरूपस्थ॥युधिष्ठीर

जन्मला॥५०॥गगनि गर्जे आकाशवाणी॥सार्वभौम प्रभु पहा धरणी॥द्या

सिंधु सत्यवाणी॥पुंण्यश्लोक धर्ममूर्ति॥५१॥सगर्भ आसता सुवळ सुंदरि॥

वरुषयकलोटव्याचारि ॥ धर्मराजवनगव्हारि ॥ कौतिजटरिजमल ॥ ७० ॥
तिथिवारनक्षत्र योग ॥ शुभकर्णवेला कौति सांग ॥ जन्मपावला सभाग्य
सभाग्यकर्तावें साले ॥ ७१ ॥ पंडु म्हणे वल्लभे इए पुत्रला धर्मक्षेत्रे अद्य
सव रजेष्टबकवरिष्टे ॥ द्वितियपुत्र प्रसवेका ॥ ७२ ॥ ऐकवस्थ म्हणो नितया
देवि ॥ भलीआनंद माधवि ॥ वायदेवाते साधवि ॥ बीजमंत्र करनीया ॥ ७३
मंत्रोच्चार तात्काळ ॥ प्रत्यक्षजालादेवअनिळ ॥ म्हणे देइसाधिलेफळ ॥
मनप्रसादवसभाग्य ॥ ७४ ॥ सुरतानंदअमोघरेत ॥ कोंतिउदरिदेवता
बीज ॥ पडतक्षणी विराज ॥ भुज महापुरुष निपजला ॥ ७५ ॥ बाळहे
भागकामहाभेद ॥ गौरवर्णअतिसुंदर ॥ धीर्यबळाचासागर ॥ सुर्य
तेसातेजस्वी ॥ ७६ ॥ मातहस्ताहुनिनिष्टळे ॥ उपजलबाळतळि
पडिले ॥ तयेपाशाणासिकेचूजाले ॥ चुर्णपिटला का कि ॥ ७७ ॥
येहाफोडिला बाळक ॥ सिव्हगर्ज नेसारिखिहाक ॥ ऐकोनिमातअति
शोरांक ॥ भयकापथरथरा ॥ ७८ ॥ सिसिशतश्रृंग निवासि ॥ अभयदे
तिऋषीतापसि ॥ म्हणतिजन्मबातुम्हाकुसिगपुरारा ॥ तेनि जांग ॥ ७९ ॥

गगन भरिले संदुल । गर्जते सादे उल । म्हणे श्रवण होसमस्त ॥
वाक्य परिसा देवाचा ॥ ८० ॥ कोंतिज वीर जन्मला बाळ । देईराक्ष
साप्रळयकाळ ॥ याचिया बळा ब्रह्मांड गोळ । तुळिता उणा ॥ आ
पाडे ॥ ८१ ॥ दशसहस्त्र कुंजर बळि । सर्प जिंतील पाताळी । याचेनि
हस्ते वन माळि । भार फेडील पृथ्वीचा ॥ ८२ ॥ सुवर्ण गारा घन अन्हील ॥
वर्षे सात स्तंभ पर्वती । हस्त तापुरिउळ कापाति । पारामेषे पिडिति ॥ ८३ ॥
भासा वर्षानंतरे जाण । आकाशानि देव पवन । याचेनि वियोगी मरो
न । जन्म पावला या रिति ॥ ८४ ॥ जो दिवसी पी मरोना । वना भाजि
पावला जनन । पंडु म्हणे धन्य धन्य म्हणे त्रैलोकी मी एक ॥ ८५ ॥ पुढतिल
पो अंगनेसी एक । समस्त अमराचा नायक । मघवा भाग्यवान सम्यक
म्हणे आराधने तोसवि ॥ ८६ ॥ वर्ष परीयंत खडतर तप । मी आचरनी:
पापा तुहि निपे माचानंदादीप । तप्त होउनी जागावि ॥ [illegible] ॥ शभार
होनियक चरणी । उध्व जोडुनि उभय पाणी । भार्ये सहित अनुष्टानि । गव
र्षे एक चालले ॥ ८८ ॥ देवाधिदेव सेचिरमणी । कृपेने पातला सहस्र नयनी

ह्मणोमानिनिकवणी ३ छावलीसागपा ॥ ८७ ॥ यरिविनवित्रेला कथदेवा ॥
दाखविपुत्रनिधानटेवा ॥ जोकादेवअपीमानवा ॥ हुनिआगकास
वधिी ॥ ८८ ॥ देवकीकौसल्याचउदरीं ॥ तैसचिमानिमाझजठरी ॥ परसियकिर्तिचा
श्रृंगार ॥ ल्वविमाथेसर्वथा ॥ ८९ ॥ राकह्मणेवोउभानने ॥ बोलसियाहुनिविशेष
गुण ॥ पुत्रदेयिनयाचतुकपो ॥ विष्णुचउपमावा ॥ ९० ॥ ऐसबोकोनीपरमप्रिति

९०

आखगनद्यानंदराति ॥ संपादितापवित्रमुर्ती ॥ नरेश्वरनिपजल ॥ ९१ ॥ दिधा

९०

जाकांइदिवर ॥ यकनारायणयकनर ॥ तोअर्जुनमहावीर ॥ कोंतिजठरीज
न्मला ॥ ९२ ॥ गंभीरगीराआकारावाणी ॥ भोरेव्यप्रगाजिंनगालाकणी ॥ तेणे
अश्रमवासियमुनि ॥ आसिअनाहिपरिसत ॥ ९३ ॥ राकवीयकौंतिकुमर ॥ पांड
वन्टालियाचिरा ॥ याचेतुकपापेजुसार ॥ भुवनत्रइआसेना ॥ ९४ ॥ विरश्वकनो
विर्यवन ॥ सिब्रहुनिदान ॥ गज ॥ जमदग्नातुल्यतेजा ॥ का ॥ प्रतापते
जतेजसी ॥ ९५ ॥ खांडवदेउनिदान ॥ तृप्तिकरिल्हुताशन ॥ पाकुनर
वद्धाचिआज्ञा ॥ निवातकवचावधिल ॥ ९६ ॥ सग्रामकरुनीअत्कुन ॥ तं

५

लोषविलगिरिजाकांत ॥ प्रसादपावलपाशुपत ॥ महाअस्त्रलेकाकि ॥ ९७ ॥

विठ्ठलला विष्णुमीतु । नाहिकरिलु दुर्जनरात्रु ॥ ध्वजिबाधिलवातपुत्रु ।
महारुद्रप्रतापि ॥ १० ॥ यकआङ्गचादावणी ॥ १५ ॥ कंटकष्षभाचाश्रेणि ॥ बांधा
निकरभाराचा गोणि ॥ वणिजेसाटि वाहथिल ॥ ११ ॥ ओसजैकोनिवचन ॥ धंडु
कोलिलापसजन ॥ सुखपावले वैपो गगन ॥ भसनिरागरी ॥ ४ ॥ गगनिद
टिलिविमाने ॥ वलावमांडिलसुमनघने ॥ दिव्यपरिमळाचे निपवने ॥ विस
कलेकरंडि ॥ १२ ॥ देविदुंदुभीचेनाद ॥ तेपोव्यापिले विष्णुपद ॥ गंधर्वगाय
निसुस्वाद ॥ अप्सराचा लाट तिज ॥ द्वादशादित्य कादशरुद्र ॥ अरहि
सुससुदराचंद्र ॥ कुमार गणपति वीरभद्र ॥ गणेसहित पातले ॥ १४ ॥ सप्तकवि
सिचतुरानन ॥ विष्णुगणेसि रमारमण ॥ आपुलपरिवारदेवगण ॥ धांव
डिलथपालले ॥ धा ॥ सिद्धसाधमरुद्गण ॥ किन्नरविद्याधराचरण ॥ यम
नैरुत्यवरुणपवन ॥ यकयक पातले ॥ ७ ॥ शपशासुगिजये ॥ कादव्यपावले ते
थे ॥ अरुणगरुडादि समस्त ॥ कोतुक आले त्याठायां ॥ १९ ॥ वैरावलारिजेबो
लि ॥ मीतुके अर्जुन ॥ जन्म मला आला ॥ ओसकविचा यक बोल ॥ चतुराशीति

आ

ही

जाणीजे ॥ ॥ पुष्पकीं उमंगळ भरीता ॥ आक्षिलावो पुनी अर्जुन माथा ॥
जयजयकारि उर्ध्व पंथा ॥ क्रमु निगळ सुर सिंधाग ॥ ३ ॥ यापरि जमला अ
र्जुना ॥ त्रैलोक्याते आल्हाद पुर्ण ॥ परि माद्रि सखेद मन ॥ अपुत्र स्मरो
नि ॥ ११ ॥ पंउजानंद दिनकर दिप्ति ॥ प्रसन्न मुखपद्मीणी कौंति ॥ माद्रि नेथ
कुमुद्वति ॥ म्लान चंद्र परिभासो ॥ ॥ हे जाणोनी मनोगत ॥ आदर पुसे श्री
ण नाथा मंद्रि ॥ सप्तमीजाणो परि वृंदावन ॥ बोलका हिसुजाणे ॥ १२ ॥ माद्रि
११ ह्मणे निज निर्धारी ॥ बाल पुत्र प्रसवलि गांधारी ॥ याचा खेद हृदयाल ११
रि ॥ अनुमानें मालआसे नाना ॥ ॥ एक पुरुषाचा आंगना ॥ स्मामाजि
संतान अधिउचा ॥ तेणे स्वखेद उपज मना ॥ हकाय लागे सांगणे ॥ १४ ॥
संतान वतिगौरभान ॥ कौतिवाढीलि वित्रापगुणे ॥ पंधु सदोप च आव
मान ॥ मज पाता दुसुद ॥ १५ ॥ कृपाकर निर्धारित नाथा ॥ आथीनि कौं
तिमाज दुहिता ॥ पुत्र लाभ मज्ञानाथा ॥ सोउवळ करिय जो कि ॥ १६ ॥ नी
कहनपा निपंडुरूपति ॥ कौंतिवेउनि येकांती ॥ प्रार्थना करनिउभय हस्ती ॥

दानमागेयाचक॥कर्णासहितह२यगगाने॥प्रसवलिसचेसारितरणी॥ये
कपुत्रसखिसाजणि॥माद्रिमानगोरवि॥६७॥माझेवचनपकीलादख
मजहादिधलेआनंतसुख॥पतिदरनातुनिर्दोष॥पान्थाहुनिआगळे
॥७०॥वदुनीभ्रतारवचन॥अश्विनीकुमरमंत्रजाण॥माद्रिलागीदेय
रलाआपण॥प्रणवबीजवर्णीत्रि॥७१॥परजपनासामंत्राते॥अश्वीनो
दयपालकेलथे॥आंगसंग॥आभाघेरतपुत्रजावळेप्रसवलि॥७२॥याल
९ आम्रजानामनकुळ॥कनिष्ठसहदेवबाळ॥यकनपयककुराव
बुद्धिवादेआगळे॥७३॥यदेवताविर्यकारि॥कौतिमाद्रिउभयजठरि
पांडवधनुर्धारि॥धरालकिजन्मला॥७४॥मुनिरानश्रृंगनिवासि॥ना
मेठेवितेजानत्यासि॥धर्मराजहेवडिलासि॥भीमसेनदुजयाते॥७५॥
तिसरियानामअर्जुनवीर॥तिघेयादविचेकुमर॥माद्रवतिचेकुमर॥
नकुळअणीसहदेव॥७६॥यापरिपांडवजन्मपावलेक्षिति॥व्यासवद
काजेसियारिति॥मीबाळकिंबोलियाभ्रानि॥तराधारेपंडितहो॥७७॥
इतिश्रीआदिपर्वभारते॥पुढापरिसासावचिते॥मुक्तेश्वराप्राथनासंत

श्नेहभावेजोल्कति ॥२२८॥ इति श्रीभारते आदिपर्व पंचपांडवजननं नाम सप्तविंशाध्यायः ॥२७॥ ६७० ॥ ६७० ॥ ६७० ॥ ६७० ॥ ६७० ॥ ६७० ॥०

१२

॥श्रीकृष्णाय नमोनमः॥ यापरि सालश्रृंग पर्वती॥ पंचाद्रिराज म्हणेसीती॥ किंपुरुष वकींनर रावती॥ क्रिडा आलाशुनली॥१॥ बाकबकाचके॥ वंत्र्यामर पोरदिरि॥ शोभारोभीलीसाजिरि॥ रंजवीलिसर्व॥२॥ जनकजननियाचिमन॥ विसरोनिगाली मुक्तान्हे॥ स्वर्गीपांस्थलाचोनि पाने॥ देवरिभागनिवाला॥३॥ तयाआणेरविचिनोरि॥ दखलामुहेभ जलिभारि॥ फळमुळउपचारि॥ रंजवितिसर्वदा॥ पंचलिंग॥ त्रिपुरांतक॥ पंचशिखरि॥ गिरिजानायक॥ तेसायेकाळुनायक॥ कदानवचे भोरिला॥४॥ जायजालावसंतमास॥ सुर्यपाहलासंतोष॥ स्वसागनगावलोकनउल्लास॥ पंडुराजामानसी॥ धापंचकुमरिआदिकौंतिकौतुकेचालिलियेकेपंथि॥ माद्रिअणीपंडुनृपति॥ भीन्नमार्गीविचरलिम॥६॥ पलाशतिलकचुतचंपक॥ पारिजाताविकुरंबक॥ अनेकवल्लिद्रुमअशोक॥ विचित्रपुष्पिशोभले॥७॥ विशाळरमणीकसरोवरे॥ विचित्ररंगाचेपुष्करे॥ बहुकोकीकाकुंजली॥८॥ मंतकुंजरआपीकरिणी॥ राजहंसहंसिणी॥ कुरंगजळेसेकुरंगीणी॥ सुखमेधेनि क्रीडति॥९॥ सुरतसंगीचक्रवाक॥ चंद्रभ्रमावकपोतक॥ द

रवो निरखि चिया नायको। उदयो कळा मानसि ॥११॥ हृदयपेटारां चासंपु
फुफ्रा उठिला तो कंदर्पु ॥ नयना पाच्या अति समिपु ॥ गरुड द्रिष्टि देखेना ॥१२॥ बा
पहो पाराचि गति। लोपोनिया सर्व युक्ति ॥ विने कवि राचि शांलि ॥ काय जालि
ककेन ॥१३॥ समिप पालालिया मरण। असघ लेकमी विदाण। सर्व जाणता
विचेक्षण ॥ होय अज्ञान समुद्र ॥१४॥ बहु काळ भोगा चि आशा ॥ सुंदरखनि
नायकांति। काम जि पुरुषाची प्रज्वळदीप्ति ॥ मग नयदि कायसि ॥१५॥
निकट भंद्र राजकुमरि। सुवर्णलतिका अलि साजिरि ॥ कोमळ फळा चीयप
रि ॥ पयोधर खाढिनलि ॥१६॥ गोर तेकई किसंभ जानु ॥ निलव नाम ध्वखा
नु ॥ त्रिवळि रेखान लोबणु। काळ व्याध बंधिली ॥१७॥ अपुल पदे खो निकाम
विकारि ॥ आगना सरके मावारि ॥ रायधावा निकर पंजरि ॥ आकर्षलि त्न ग
वगा ॥१८॥ पतंग कवळि दिप कळिका ॥ मधुकर संपावे चंपका ॥ बकरभक
निसर्प भरवा ॥ मुषक प्रवेश ॥१९॥ वाम हस्त कवळु निवधु ॥ सॉगसुडि बिंदु ॥
विवरच्या करनि कांखंधु ॥ व के मैथुना संघटे ॥२०॥ हा हा नाना क्विया सु
ति ॥ करित मातला मद्रजालि ॥ माद्रिरंभा पर्पी हरित ॥ सहसा नव बळो

ठेल्या ॥ ४१ ॥ नाभि सिना भिऊ रासि उर ॥ हृदया हृदयका मालुर ॥ मेळऊनि अ
धरे अधरा चुंबन पान भुलला ॥ ४२ ॥ खळता खेळा मैथुन खेळा ॥ प्राण हृ
दय जाले गोळा ॥ गात्रि विकळता नेत्र युगळा ॥ पंडुरता पावलि ॥ ४३ ॥ सह
चरि हृदय स्तुराथनयोनि ॥ विर्यखळ पाहोनि क्षणि ॥ शरिर सांडुनि पंचप्राणि ॥
गमन केले तात्काळ ॥ ४४ ॥ मुखें मुख माहे युवति ॥ खुटितस्वासोस्वास गति ॥
दिर्घस्वरे रुदन करिति ॥ हा हा कांता म्हणोनि ॥ ४५ ॥ तिचा ऐकता रुदिन स्वर ॥
समीप यति कोंति अणिक मर ॥ माद्रि म्हणे परत पुत्र ॥ ठेउनि यइ जवळिके ॥ ४६ ॥
अंतरे ठेउनि यालनुजा ॥ निकट पातलि श्रेष्ठ भाजा ॥ जिवरहित देखोनि रा
जा ॥ अंकासनि स्त्रीयेचे ॥ ४७ ॥ कोंति म्हणे वो मंदमति ॥ बहुकाळ रक्षिल्या
न्यानृपति ॥ आजि तो घातला अनर्थी ॥ वना आपण यकदा ॥ ४८ ॥ यरिस
पो वारिलो बहुत ॥ आसोत होणार बळिवंत ॥ जापान जापाता अनर्थ ॥ घ
डला जापान्नृपाते ॥ ४९ ॥ अग्र देवारिता रायाले ॥ राजानि विचारि मनोले ॥ मन
निवार जालें जेथे ॥ आट केले थे हरि हराते ॥ आतां दयिआ ज्ञावले ॥ वल्लभा
सवें करिन गमन ॥ कोंति म्हणे तु अज्ञान ॥ म्हणोनि ऐसें जल्पसि ॥ ५१ ॥ स
वत्स जवळि लनारि ॥ ते सर्व कर्मातें अधिकारि ॥ प्रेमापसा वहायेदुरि ॥ स

ह्मणा भिनिमीयेथे ।३२। प्रार्थुन बोलके निष्ठभाजा ।। कामसंपुर्ण ना हिमा सा
हदयि आलिंगुनि राजा ।। प्रवेशे शुद्धता शि ।३३। मासे निकामेवे चिंतामरणी ।।
मी चिंतेचा नसांग ।। तिपी ।। भलरिलाकि देवसदनि ।। वसंतक रिमजमाय ।३४।
तिघासमानदोनि वाळ ।। लालनपाळसि स्नेह्या ।। रात्रुसी चअसविलेथे न्याबा
ळे ।। विराव कायबालाचे ।३५। ह्मणोनि पुत्र पाळ आलिंगण ।। देता सांडिला
२ प्राण ।। कौनि ह्मणे कारणकोण ।। प्रारब्ध चेपाहाप ।। ३६ ।। आक्षेप कजालि २
दुजि स्पष्टि ।। मौनस्थालापसाचा कोटि ।। बाळकधरुनियापोटि ।। रांतविनि
कौतिला ।३७। मुकमार ताम ।। जिजाप ।। संदेहस्त निरोपण ।। वनि पंडुवेदे
हदहन ।। सहगमन माद्रिचा ।३८। पुढे रुपथ्थरघेउनि असला ।। पानस्त्राहस्तनाथु
रांता ।। तथै कौरवांनी निहाले ।। दहदहनदाक्षिचा ।३९। आसोच्या सवद्दलाजे
से भलुसी हिहिमवणकरालैस ।। कवित्व दुवणटे विजसे ।। कारण काहि
असेन ।। ४० ।। मुनि निराले गी वासि ।। ह्मणालि राजगुणेकरा ।। मातु सुर
रसांडुनि वनवासि ।। आ नासमिपराहिला ।४१। नेग रायें हरि भल
विनि तअजींवगुपी ।। सहसतिलिक्षाक्षेमाम धुरवापी ।। अडतकाळ भावेम
जनि ।। स्तविकेल आसुत ।४२। भाग्यवाधलारुपुत्राल ।। काळेपावला

न्हयाते॥त्याच्यापरिग्रहाअपीश्रेत॥स्वस्थकाप्रतिपाळु॥४३॥समागमकौ
तिकुमरे॥उचलोनिदोनिकळेवरे॥लघुनिअनेकदेशांतरे॥कौरवपुराप्रात
ले॥४४॥नगरावाहरिगंगाकुळ॥निकटथोकतापससमेळ॥प्रेतसिव
काठेविलिंनळा॥उलतनियामुख्यविं॥४५॥कौंतिआणिपाचहिकुमर॥वरि
तसंगिरसेश्वर॥देखोनिपातलेराजेहेर॥तयावालजाणविलि॥४६॥पां
डुनिधनपावनि॥माद्रिसहीतशरिरदोन्ही॥पाचहिपुत्रसुलक्षणी॥घेउ
निऋषिपातले॥४७॥जाउनिसांगारायाते॥भीष्मबाल्हीकधृतराष्ट्राले॥
कृपाचार्यविदुराते॥सिघ्रयेथपाचारा॥४८॥दुर्योधनादिकराजकु
मर॥आसेसोयरथोरथोर॥सगोत्रसमंधिआपार॥आवघेयेथेआ
णावे॥४९॥अंबिकाआंबालिकासहित॥सत्यवतिलेजाणावामात॥
ऋषु वेष्टिनऋषउपायकराल॥गांधारितेपाचारा॥५०॥वालरूपेनिर्जरऋषि॥
हस्तनापुरिसांगलाहरि॥प्रवेशुनिघरोघरि॥विस्तारिलिबहुसुखे॥५१॥
वालरूपेकर्पुटि॥चालिलापौरजाचाथाटि॥नारिनरांचाबहुतदाटि
धरालकिनसमाये॥५२॥वर्णावर्णजातिविजालि॥पावलाआटरापग
ड्याली॥अनेकजिविकाअनेकवंली॥कर्तेसर्वपातले॥५३॥कौंतिअ

णीपंडुकुमर ॥ आले जे कोनि सवर ॥ भावीं नेले स्महनथोर ॥ अतिवंतपाठवया ॥ भीष्म बाल्हिक सोमदत्ति ॥ विदुरपवित्र विचारसुमति ॥ वल्हार स्तु हृदपक्ति ॥ येकयेकेपालले ॥ ५५ ॥ मंद्र सेंधव रुपाचार्य ॥ सुवर्ण सिबिका अंबिकालनयो ॥ धृतराष्ट्र ह्मणे प्रतापसुर्यो ॥ अजिपंडुमावकेल्ना ॥ ५६ ॥ रथकुंजर अस्वयानि ॥ सुशोभिलवस्त्राभरणी ॥ छत्र चामर वाद्यध्वनि ॥ राजकुमर निघाले ॥ ५७ ॥ धकोलरराजपुत्रपत्नि ॥ आरादजातियासखा सनि ॥ मुख्यराज्याचिस्वामीणी ॥ रत्नसिबिके गांधारि ॥ ५८ ॥ काशिध्य राचियाकुमरि ॥ विचित्रवियाचियानारि ॥ रुदनकरितदिर्घस्वरि ॥ कोंत्तिसमीपपातल्या ॥ ५९ ॥ प्रधानसेनानिसेवक ॥ राजसंमधिसहितलोक ॥ न्यामकनियोमीदेसीक ॥ जनमहाजनपातले ॥ ६० ॥ भावलाकोन्तिलापससजन ॥ भीष्मघालनलेलोटांगण ॥ तखिबोलत्निगजो निपवि जयमस्तुलवमभ्भो ॥ ६१ ॥ राज्यवैभवसुखसंपति ॥ साहु निपंडुविवेकमुर्ति ॥ राहिल्या आमचे संगत्ति ॥ शालश्रृंगीबहु काळ ॥ ६२ ॥ आचरोनिरखडतरतप ॥ भस्मकेलि शरिरताप ॥ पंचदेवलाचिरुपे ॥ पुत्रअंचकरुनाघेले ॥ ६३ ॥ धर्मीपाडुनिवडिलधर्मी ॥ वायोविर्यबळभीमा ॥

इंद्राचा हि नरेंद्रोत्तम ॥ विजई पार्थ धनुर्बाण ॥६३॥ अस्ती नौ देवांच विर्यजा ॥ शंध माद्रिच आत्मज ॥ कवि गुरु तुल्य तेजःपुंज ॥६४॥ कुंत्ती आणि सहदे वा ॥६५॥ देव तुल्य समान देवा ॥ पांडव हे नर पार्थिवा ॥ परम तुल्य या मान वा ॥६६॥ माजि साहवा आसेन ॥६६॥ पिलापावलिया मरणा ॥ पावले वडिलाचिया स्थाना ॥ आचातुर्जी करुनि करुणा ॥ परम स्नेहे पावले ॥६७॥ सहज असति भाग्य पिंड ॥ भोगिति मेदिनि नवखंड ॥ स्नेहे वाढविती निगोड ॥ येरा आ पाजि जोडले ॥६८॥ नीधन पावलिया नरे रा ॥ दिवस लोटल समुद्दरा ॥ विधि नाबो एकु वारा ॥ कर्म सांग संपदा ॥६९॥ जैसे संगो निर्भीख्मा पलि ॥ पांडव निरविले सुहृदी ॥ देखत देखता अदृश्य मलि ॥ रुपि गेले स्वप्न भ्रम ॥७०॥ जैसा भ्रामक मंद्रजाळी दाऊनि हार विलाका ॥ नातरि आछादनि राळि ॥ गंधर्व नगर पैजै सि ॥७१॥ तैसि या लापसाची या कोटि ॥ अप्रत्यक्ष जाले दृष्टि ॥ आव घ आश्चर्य करि तिपाटि ॥ परम सिद्ध म्हणौनि ॥७२॥ भीष्म बोले सप्रेम वचन ॥ गा टिहोलि आपार पुण्य ॥ सपुरुषाच आगमन ॥ यथो जाल याटाया ॥७३॥ दर्शन देउनी आपुले ॥ पुजा न घेतानी घोनि गेले ॥ ध्यर

पुरुष भाग्याथिले ॥ चाडकाय आमुचि ॥ ७४ ॥ पांडव हृदयिआक्रंदुन ॥ ध्र
न करि दीर्घरुदन ॥ मोहबंधुचे सदृशा ॥ अठ्ठनिविल्लल ॥ ७५ ॥ सत्यवतिअणि
गांधारिराको लिकवव्था निहृदयीघरि ॥ शोककरिलादीर्घस्वरि ॥ दुःखभागि
नीहिले ॥ ७६ ॥ ध्रुवराष्ट्रआज्ञाविदुराकरि ॥ वसनसंदनेजान्हवितिरी ॥ ठ
भउनीद्वादश रात्रि ॥ वस्तीसमस्तीराहवा ॥ ७७ ॥ भायसिहितद्युपशरीरे ॥ आभी
अपवित्रोजोपचारे ॥ चंदनतुलसिकृष्णागरे ॥ बिल्वकाष्टेनिश्चित ॥ ७८ ॥ घेव
रत्नेबहुसुवर्णी ॥ संपत्तिवेचुनि सहस्त्रगुणी ॥ उत्तरक्रियास्पिवाक्यानि ॥ सां
गोपांग संपादा ॥ ७९ ॥ कवणात्माघनजोडिजे ॥ व्यर्थकासया संसारिजिजे ॥
आसाच्यसार्थकनकीजे ॥ जीवामेल्यासारिखे ॥ ८० ॥ परीसानिरायाचउ
त्तर ॥ विदुरअणी गंगाकुमर ॥ आदरेउठानिसत्वर ॥ सवासमीपपालके
॥ ८१ ॥ सुवर्णघटवानानुरात ॥ गंगोदकेसुवर्णभरिल ॥ स्वहस्तेप्रक्षाळुन
प्रेत ॥ धुतवस्त्रदाविले ॥ ८२ ॥ बावनचंदनकस्तुरि ॥ कर्दमकरुनिनरके
सरि ॥ चरणापासुनि मस्तकवरि ॥ स्वेपुहानलेपिले ॥ ८३ ॥ पितांबरतग
टभरिल ॥ नेसविलेअतिशोभित ॥ अंगप्रत्यंग रत्नखचित ॥ सर्वांग

रपालेवविलि॥ ८४॥ मुगुटकुंडलकटिमेखळा। कर्पुरचंदन विशुद्धाळा॥ सुवर्णमाळासंपुर्णमाळा॥ कंठिरपारे॥ भीला॥ ८५॥ याचापरि द्रधवनिति॥ आरूढकेलामाद्रिप्रति॥ अर्धांगकर नियास्वहस्ती॥ वस्त्राभरणेलेववि
ली॥ ८६॥ छत्रचामर वाद्यध्वनि॥ राजविग्रहो सिबिका यानि॥ सजीवते साभाउनीनयनि॥ शोककरितिसमस्त॥ ८७॥ अंबिका अणीआंबालिका॥ हृदयपिटुनिकरितिशोका॥ आलासांडोनिपरलोका॥ केविजातोसी
सुपुत्रा॥ ८८॥ वस्त्रआछादुनीवदने॥ प्रज्ञाचक्षुकरिरुदन॥ भीष्मविदुराचलोचन॥ अश्रुपातढळताति॥ ८९॥ सत्यवति अणीगांधारी॥ शोककरिति हाहाकारि॥ कोंतिलागीबहुतनारि॥ सावरुनिचालविति॥ ९०॥
पाहोनिनिर्मळगंगातट॥ चितारचिलीप्रचंडनीट॥ आंज्यतैल्यकनकघट॥ सहस्रावधिअर्पिले॥ ९१॥ आगरचंदनबिल्वपत्रादि॥ बेसकारविलितळवटि॥ वाकेरपाचियातोटि॥ अस्तरणालसुरस्थळ॥ ९२॥ यावरिकुंकुमकेशरि॥ कर्पुरभरिलाथरोथरि॥ रावेपडुलियामाझारि॥ चिवासेजेदपसे
॥ ९३॥ विधिनेप्रार्थीलाहव्यवाट॥ ज्वाळेपरस्त्रोधउघडाटमधुपपरिमळे

न घट। आनंतहस्त वोपिति। ९७। आपसोजालिया देहहरूने। समस्तीसा
रिलगंगाधाने। उदकक्रियाविधिविधाने। संपादिलेवेदोक्त। ९५। गो
त्रज सुहृद नागरिकें। वस्त्रभूषहि पैअनेकें। देवतरुणीचालवीकें। द्वा
दशरात्रिलोटल्या। ९६। सांगसंपादिलिश्राधे। लक्षियाबळिब्राह्म
णिंसंघ्यलमधुदधिदुग्धे। वाघगंगेमीनले। ९७। सुवर्णरजितवस्त्रे अ
संख्यधेनुचि सहस्त्रे। दक्षणानेतारूपेंधरे। पुरेपुरेह्मणलाति। ९८। दिवसले
टलियातेरा। चतुर्दशदिवसी राजेश्वरा। मुहूर्तीप्रवेशेनगरा। पंडुमहापाव
५
५
ले। ९९। पंडुग्रंहीनृपाचेराजसदन। सर्वसंपत्तिभरलेपूर्ण। माजीपंडुचनंद
न। कौंतिसहितस्थापीले। १००। जजेका हिमागतिजेका। ललेनाका नृपा
चवालेव्हा। रायआज्ञापितासर्वा। अवस्यह्मणति मंत्रिये। १। आमामागो
निसमस्ती। नमस्कारोनि पांडवकोंतिनगरवासीयसर्वह्माप्रति। जाले
जालसंताप। ध्यापक्षयकलेटताजापा। धृतराष्ट्रम्हणायेआघण। करिपुत्रा
चेसमाधान। करिसालवनकौंतिले। २। नेमलेटतापंचरात्रा। यउंनी
साभाकिगंगापुत्रा। म्हेहेबिदु आहोतनृप पांडवघरि वस्तलवा। ३। तेपि

का॥ व्यासमुर्ति॥ पाललासत्यवति॥ तिमातानेठेनियकां॥ सुयना॥ कारि
अनुवादे॥ ५॥ हिवरु साधावलुखा॥ यतेपानकोयाच काजा॥ वाक्यार्थप
रिसो निमासा॥ तयारिनिवलवि॥ ६॥ यत्नुनिसं नोपसुर्कअसल॥ जालेके सा
कावुदिल॥ सुटलाङ्कुःश्वेनाचावाल॥ परमजरिरसुचक॥ ७॥ तोपेलध
र्मे क्रियानाम॥ वाटेल असे आनाचार॥ ८॥ विवेकवैराग्य निचा॥ नामही
याचेअसेना॥ ९॥ माजेल मायाचा धुळारा॥ माजिना खेचरपरा॥ न
नादोषधावतिल सैसा॥ जैसे अकेमातसा॥ धा॥ तोफिरसांडेल मर्यादिते॥ स्वार्थ
आनार्थते॥ अैसे अन्यान्य वर्तेल यथेथु॥ विरापय॥ हिवेग॥ १०॥ तवेजा
लिलबदरिकाबना॥ सिधानदतिलदरुणि॥ प्राथिवि॥ सिलरलधना॥ स्वस
काहिउरविल॥ ११॥ विर्यसांडतिल मंत्र॥ मणयागिलिजो पथिल देव
तसाउनि देवल॥ पाषाणसवतली॥ १२॥ कुकामजिउपजेल॥ किजेवि
पणवावकुजा॥ क्षात्रमात्र पथिलवी॥ सव्हारेलतधोग॥ १३॥ गंधारी
चावडिल कुमर॥ तोकुलकुलायैध्यात्रसा॥ साचेनि आपराधेसाचार॥

नासहोइलचंशासि ॥१४॥ बरेकाहीनदिसेद्रीर्घरोगपाटाचाटेलसर्वशरिरि
यालागीतुवाउटाउटि ॥ आताचियुग्रुनिनिघावे ॥१५॥ येकराआवघ्याचे
मरण ॥ कासयाआवलेकावेनयने ॥ वैराग्यआवलबुनिमने ॥ तपावनानि
घावे ॥गि॥१६॥ सपीघरासियाचिमाया ॥ वरपउहोसिसहश्रधाया ॥ अग्नी
लागलिआलया ॥ सगुनिपरलेपव्हावे ॥१७॥ अवस्यसंगनिसयवति ॥
उभयस्तुपाघेउनिहोति ॥ येउनिमिव्हाविदुराप्रति ॥ आज्ञापुसेनिश्चये
॥१८॥ भविष्यजाणोनियासाचारो ॥ मान्यकेलेगंगाकुमरो ॥ श्रेष्ठविचारमा
नुनिविदुरो ॥ आज्ञावंचनेबापवि ॥१९॥ पवित्रभागिरथीतिर ॥ यासरसं
निरंतर ॥ विरक्तीसखियाचासेजार ॥ शांतीध्दलिजवकिको ॥२०॥ रवउल
रसंतापाचियेअंगि ॥ उदासहोउनीदेहसंगि ॥ परमगतिपावलिसिधि
अधृष्टलिसमपाउे ॥२१॥ इश्वरपुत्रमउपजेचंद्री ॥ तरिपरमपदविपावि
जेजेसि ॥ यालागीसाघुसंगापासि ॥ मेधिजाडेआरता ॥२२॥ पुटिलकथ
लेअनुसंधान ॥ बाळखेकपक्रिडणा ॥ रुपद्रोपादिमाहादाख्याना ॥
केपनेसतपरिसावे ॥२३॥ भारतकथामृतबरवि ॥ श्रवणमनोपिनवसे

॥श्री कृष्णप्रसन्न॥ वेदोक्त विधिने संस्कारीले। भोजन पान सुख उस्ते। दिवसे दिवस वाढते जाले। चंद्र वृधिसारिखे॥१॥ शृंगारिलि वस्त्राभरणी। आरूढति अनेक यानि। जो कि आवलो कितान यानि। परमाल्हाद नसटे। थ। गांधारि चे बाल नंदन। कौतिकुमरपाचाहि जण॥ येक वट सुख सपन्न। बाळे क्रिडा खेळतिग॥२॥ कुमर खेळ बारवे जणी। दस्य पाडव आगळे गुणी॥ डाव मात्रि पावलिहाणी। उणे दिसति कौरव॥ आतयामाजि भीमसेनु। खेळताक्रिको निजाय पणु। करि वा चकपंचानन्। तैसा भासे सर्वांते॥५॥ पळल आवघे साउमा थ। सो विय कळ पाळ अंग। दृष्टी सिंचणी पाठी लाग॥ कर निडाय बापिलु॥४॥ कनक इटा कनकंडा। माणीकमणी गोटिया जोडा। रत्न कंदुक खेळ लाहोडा। जीपानि जा बयफल॥७॥ चक्र भोवरे पडाय॥ मल्ल कि सिंकणीसुर काडिया॥ पैजे हारि अपुनि तया॥ अज्ञा बाह्ये हि पाविा॥८॥ शकुनि कर्णी दुशासन। दुर्योधन अपी विकर्ण। महिसी करा निभीमसेन॥ हस्तपा

दकवा। ब्रितां॥ थामस्तकेसीउनि पाडि धरणी॥ खुरे करूनि लाडिय रणी॥ अरती
चुर्णहिलावदनि॥ अशुधवाहेभउभडा॥१०॥ यंनउचलुनि सुंग॥ शिंगनी॥
तेणेउपडतिधरणी॥ दुखविहिस्तचरणी॥ कंटिएक्षीमस्तकी॥११॥ सहुसालक
वलुनियावाहि॥ बुडिघालिआगाधडोहि॥ आणाश्रजाताजाता पाहि॥ थोड
याकिविलंबे॥१२॥ कमलें तोडिकौरवातें॥ आवघेदखोनिरक्षावर्ते॥ साउ
ताउताव जलीतें॥ लकिपउतिद्डदडा॥१३॥ तेथुनिधांवसैरावैरा मस्तकें
चाविशाळटका॥ वरूनितरुवरीवोदियेका॥ सांडिझपा निमारिलिहाका
टरापेट्लानसांडि॥१४॥ आपपाहोउनीयडका॥ मस्तकेमस्तकाटेलियड
का॥ पक्वफळउपडतिखडका॥ तैसीव्यथा पावति॥१५॥ राजा करूनियुधि
ष्टर॥ आपपाहोउनिमत्तकुंजर॥ कौरवकलुनिलरके॥ चरणीबांधेआपु
ला॥१६॥ तेथुनिधांवबेसैरावैरा॥ सांडिपटिराजकुमरा॥ मस्तकेआदळला
पाथरा॥ तेणे विपादपावलि॥१७॥ आपुलियाआंगावरते॥ मुष्टिघातेमा
रविगणीते उत्तपो फेडितानयाले॥ घायमुर्धअपीलु॥ हाधम॥ वि

१ १

सैलुसमवलि।नवसाआपिल्मीबलपरि।सेपोनिकौरवापाडिशि
ति।कंरछेद नरासविजयहिस्वोनिकर्णासकनि।क्रोधसंनसअवः
करपी।दुर्योधनदारवविनयनिपुढाराबरवेरिसेन।।२०।।विरूळ
सिरिमुनिमुसी।कुंडकलुनिबेसहोमी।।साहासाबकौरवनामीज
ुटीकरुनिसमसांडी।।२१।।अपणहोउनिमछावला।कौरवजनीरा
रवार।वकपाटियेदेतीकर।कासाविसअकंदे।।२२।।अवघेमिळोनि
मारितिमुष्टि।कुर्नोउनिवोडविपाठि।मारिताउरवळलिबहुवटि।।लपे
व्यथिसलपैयक।।२३।।बराहहेउनिपसरिदंष्ट्रा।हीरण्याक्षकरिघातरा
हृदयिराविनारंतघालराष्ट्र।।क्केसाप्रद्भुतपावलि।।२४।।आपणहोउनि
नरकेदारी।दुःशासनाआडवेधरि।।अपनरवघालुनिउदरी।विरा
रपुढरिकआला।।२५।।बकवर्धनिकरुनिबाळि।पाटिरगाडिपायातळि
सपोदाहुपाताळि।पुढलिनुटीतकेळा।।२६।।आपणआवघभार्गवक
रा।मुरिकवाळिभार्गवकामुकरारा।।म्हणोन्यानिर्दोत्रिकेलिधप

ह्मणे। निकौरवा पहुडणी॥२८॥ सदैवश्र्टगारनी देखा। ह्मणे हे नेटकि शूर्पन
खा॥ पार्थ सौमित्र नासिका॥ छेदिल ऐसे दाखवि॥२९॥ शकुनि कानि कुंभक
र्ण॥ कुंकुमेल्ये विनाक कान॥ रावण करनि दुर्योधन॥ रघुनंदन सहाये॥३०॥
आत्ता कीष्ण वतारि गाढा। खेळ खेळु नि दाखवि पुढा॥ त्रयोदश वरुष करिस
कजा॥ बोध्यत आह्मी आवगणा॥३१॥ पुढे माजलिया कळिते। मारमल्ल स्कर्म
केले॥ ऐसा खेळु खेळतालेथा॥ गोत्रजालेन साहे॥३१॥ पिंड पावला बद्धे धु
दुर्योधनादि अतिविषादु॥ तो किन्स चल्लेहु पो निनादु मुखेका हिन बोले
॥३२॥ हृदयि घडके महाराग॥ शकुनी प्रति संकेत सांग॥ यर हा तेद उपि
आंग॥ समये न व्हे ह्मणोनि॥३३॥ निश्रा। काळि जाउनि सदना॥ जनक
जननि लिनिवेदना॥ पुत्र सांति करन रदना॥ अंग क्षतदावित॥३४॥ भीमा
चेनिकरताडणे॥ आवघे बंधु जाउनि प्राण॥ न रखे को ह्मणोनि राहला मौ
न्ये॥ बके आमुते पिडिलु॥३५॥ सौवाळि सांगे ध्रुता राष्ट्राते॥ कौतिचेनि
द्वितिसुते॥ पुत्र ताडिजे निनी घाते॥ जितेमेळे न पाहे॥३६॥ आवघ्या बुनी
वडिल पणा॥ राजा को हि चना णि मन॥ ह्मणोनि दाविता जना॥ आवि

२

२

५

वेकळा गे आमुते ॥ ७५ ॥ वडिलां न कळतां दुर्योधनें ॥ कपटबुधी सिलिगेनो ।
लपे हे म्हणे वंशायेणे ॥ आम्हा पाडिला मला ॥ ७६ ॥ तप देप विद्या धर्म ॥ ७
गवका चा भाग का द्वेप ॥ लोपीविले हि द्वेप ॥ अति विरोप वाढला ॥ ७७ ।
साधुनी सुरते चा अर्थु ॥ याचा प्रयत्न करावा घातु ॥ न रिचवाची निय
र विन्ह सुगभी म रूप कौरवा ॥ ७८ ॥ हाय का चि म रिल्या पाहि ार तरवो
घाचा तेरवाना हि ॥ मग अमुते अरिष्ट काहि ॥ मार्वे पुढे असे ना ॥ ७९ ॥
करणे रा कुनि दुःशासना ॥ स हि मां डिले विचारणा ॥ वधावया भीम
सेना ॥ उपाव केसा सांगीजे ॥ ८० ॥ यक ह्मपालि घातिजे पाश्या ॥ दुजी
स पाघा विविषा ॥ तिजा म्हणे सर्पदंशा ॥ निद्रास्थ कि ... रचाव ॥ ८१ ॥
दुःसह ह्मणे लोटिजे उदकि ॥ दुःशासन ह्मणे कळतां लोकि ॥ विख घालो
नि मरत कि ॥ क्षण मारु निसाडावा ॥ ८२ ॥ शकुनि बोले विचार वनु ॥ गुप्त
साधुनि आपुला स्वार्थु ॥ प्रगट लोकि न कळे मातु ॥ असे साहस चर्चती ॥
॥ ८३ ॥ सहज भीम ना आग ब्धि ... क ॥ भक्षि ला अवघे तिमादक ॥ म्या माजी

सुनिमारक विख।वनभोजनिसाथावा॥४६॥आवधेझपालिहासुख्या
थी।गुसहदयिरारवाम लुगयावरिदुर्योधन सांगलु।सीभीकारअर
रे॥४७॥जब्बविहारवन विहारा जावया।आवङिराज कुमरा॥हारे
रचावेक्रिंगगरा॥क्रोविमवनासमृधल॥४८॥विश्राम गंगात टिंमहाना
ववोनिजप्रमाणकोटि।ऊपरिकाणुपुरतवटे।मुणागरेनिमाविा॥बि
चीत्रविचित्रखडकुळिया।चंपकवर्णचौखडिया।बंधूलागीकोरडिया॥
भीन्नभीन्न रचाव्या॥४९॥सभकांतिचीयापाराणि।भींतिचित्राब्यासुव
र्णी।मुक्त रूपेखेलवणी।संदिभागळीपावो॥५०॥ससरंगीरखाचित्रे।
रत्नखेवणीअनिपवित्रे।वितानील्ला बांधिदिव्यवस्त्रे॥ध्वजापताकाक
ळसादि॥५१॥आज्ञायाहुनिविरांपरचलिरचना।इंद्र भुवननंदनवना।
तेकेंसासुवनअशोकवना॥समानशोभाआणीलि॥५२॥धर्मसीपर्थीति
दुर्योधन॥लुआसमेवतवनभोजन।करावयाइ भिमनग ॥ग्याघ्यकेलेपा
हिजे॥५३॥आवस्यहणोनिआजानरा।लुबंधुसहितमानिलामत्रु॥नि
मळ्याठि सामनिनु।रिदुजादिसेना॥५४॥पंचभक्षजेणीप्र

३

रसे ॥ अन्ने नउावेधि सुरसे ॥ नवनितपाचित वडुवसे ॥ दुर्योधनें करवि
लि ॥ ५६ ॥ प्रथम साक्षद्दजीत ॥ खपरिभाजितदुजेयेथे ॥ उकाथित
अपिस्वादिते ॥ तैलपाचित पाचवे ॥ ५७ ॥ मधुर तिक कषाय जाण ॥
कटुक ऊवाम्ल अविठ्ठवण ॥ षड्रस बोलिले विचक्षण ॥ सुपशास्त्रिज्ञ ॥
निजे ॥ ५८ ॥ तिहेपै चास्य खाद्य ॥ अन्न बोलिलिं चतुर्विधा ॥ ५९ ॥ अज्य
मधुर घृत दुग्ध ॥ हेम कळसि सुरली ॥ ५९ ॥ प्रभविस्वासभाषण बसी ॥ द्रा
सिसागीनिरा केशर रसी ॥ मोदक अपुपाचिया रासि ॥ भीमा लागीं करवि
ले ॥ ६० ॥ जेपाक सामळ अहिफेण ॥ वसनाभि नाम पै मैणा ॥ राजवि
खे मारक नाना ॥ यक मेळे सुदलि ॥ ६१ ॥ ज्याचा वास लागता प्राणि ॥ प्रा
णा वानास वलक्षणी ॥ असीनोदच पालव्याग ॥ भिउनार काहि आस
ना ॥ ६२ ॥ ज्याचा स्पर्श होता होटि ॥ ताळ मरण पावे भेटि ॥ ऐसे सिमद
करुनि पेटि ॥ चाळवि लिसासेपे ॥ ६३ ॥ पालाणिले रथ कुंजर ॥ शृंगार
नि राजकुमर ॥ चौत किति अश्वभार ॥ खरछाया निघत्र ॥ ६४ ॥
छत्रें भविति विचित्रवर्णी ॥ मेघडंबर सुर्यपान ॥ कनककंदे वाळव्यजनें ॥ ६५
येदा केदा कलि ॥ ६६ ॥ पंचवाद्ये वीरवाद्ये ॥ वाजता गगन भरले नादे ॥ पापहि

भीतभीनरोळे॥गजनितेहाविति॥६८॥यकवर नवातोडुअे॥येके खडतरयनो
डुवे॥यकेचर्मकाघेडुवे॥कासाडुवेपैयेके॥६७॥विरामुखिचेविकराळ॥
यानावेवोखिळेसिह्मनादे॥यायरिवाद्येपंच विघ॥येके काळेगजील॥
॥६८॥पानलेइव तटगीतटा॥धात रा बुाउसाहमोवो॥ये किपेख्जितिम
जघंटा॥महेरकीविनोदे॥६९॥येक वेसलेअस्वेसहित॥जळिकि
डितिआनंदभरित॥येकीश्रृंगारोनिपोन॥मंचेकासानिमिरवति॥७०॥
उत्तणद्व्याचिमक्षिणे॥येककीरतिआपाने॥सैनिबाघबधिलसणे॥ज
ळ॥जळखेळत॥७१॥जणीतापेसांगडिघटि॥चमैविखित्याचणुपाडि॥
माजिबेसोनि उभयतटि॥धावाधावीनिजळहृदे॥७२॥वदुनिपटकुळपड
रणी॥कौरव पांडवयकमीळणी॥जळनिधीनिरानिबरणी॥स्वइछानंदे कि
डति॥७३॥जळसिंपिति परस्परे॥खळस्वकतिअ॥॥घनीरे॥वुडीमात
निरोधितिकरे॥येकमेकाटिपिति॥७४॥बकेकोरवा चियाधाटि॥बुड
सोबतिभीमाकंटि॥यत्नआवधीयानाहि॥निपुरिशकुंजरतेसा क्रिडत॥७५॥
शिशुमार घटियाळ मछमगर॥कुभीकरसीळजविसार॥जळमापले
आपीनारीनर॥धरानिवाहेरि॥णिति॥७६॥अल्लमालिसरकाखेळ॥

॥अदिपर्व आ ७१॥

घडियआलसुहृत्मेघु॥दुर्योधनु अतिस्नेहाळु॥वस्त्रे वोपिपांडवा॥७९॥ रुगारु निवस्त्राभरणी॥परिवार गौरविला वचनि॥भक्षपानि ताबोल दानि॥विश्रांति कराह्मणलुसे॥८०॥प्रमाणकोटि स्थ यंकाति॥भोजन पालव्या बंधु पंक्ती॥सुवर्णताटावरि सळकांति॥रत्नवाटिका सनेजे॥८१॥ जोजो पदार्थ जेजे पदार्थी॥मीन लियावाट विसुखार थिति॥तेलपुटि लाभक्षविति॥यंयं भक्षी तिसंतापे॥८०॥दुग्ध शर्करा घृत मिश्रीत। क्षीर भोजनियेका आती॥यकवटकक थिकायल॥शांल्यार न भक्षि त्ति॥८१॥यकमडकेरससीकरणी॥श्वेतभक्षे शारखावरान्नि॥भरीत ले रोटिका भक्षणी॥आवडियेका आपडे॥८२॥दधिसार दुग्ध सार॥मी ळपीस्वाधी श्रृअरु वार॥यकेस छिद्र आपार॥नवनित संगीगाडिसी॥ ॥८३॥मुखी लाउनि लवण शाखा॥दध्योदन आवडयेका॥यकरविचडियाज नेका॥घृत उष्णनासेविति॥८४॥थिजल्या लुपंगु वरिया॥खजा करंजा गुळपुरिया॥सरट सायगुळपोळिया॥यकघरळभक्षिति॥८५॥नुनन घान्यसको मळे॥भजीत मधमधीत सुपरि मळ॥यकनकरनी शाकरि लि के॥श्रणति वनी भक्षाहो॥८६॥चणकवटा णीयचे सोले॥निंबर सळव पाव्याचे॥सुक्ष्मवाळके बदरिफळे॥नुतनव्या यासेविति॥८७॥फण

सदाफळें बजां भाले ॥ द्राक्ष नारिंग अमृतफळें ॥ अंजीर केळें नारियळें ॥ माहाळिंग खर्जुरी ॥ ८० ॥ कपित्थ गंगाफळें सरस ॥ युक्षदंड युक्षरस ॥ खरबुजा उनिस तोष ॥ सर्व वृधु पावलें ॥ ८१ ॥ आपुलिया वडिसा मिरवि ॥ भक्ष भक्षिलें सकळिकीं ॥ दुर्योधन निज हस्तकीं ॥ भीमरानावाढिलु ॥ ८२ ॥ सद्य स्नसघृत सरसयुक्त ॥ मस्के चारिले सरवार हील ॥ अमृप अमृप विषभरीत ॥ भक्षुनि तृप्ति पावला ॥ ८३ ॥ दिवसा जाळिये साश्रम जाला ॥ सीतळे ते आतिपिंडिला ॥ शय्ये स्थळि मग पहुडला ॥ रक्षिते साधु नळी ॥ ८४ ॥ निद्रें सि दिधल त्रिभरुळी ॥ शय्ये सुंदरि मृदु मवाळी ॥ आपुलें हाति कोति बाळें दुर्योधन निजबळें ॥ ८५ ॥ आधि निशा लोटलिया जाण ॥ विषधारला भीमसेन ॥ हुजो निगेले हारिस्मरण ॥ उमजकालिआसे ना ॥ ८६ ॥ गाढ निद्रेस जिभबळ ॥ विष बाधे निमुर्छिसबळ ॥ ते पापि डिला आतिव्याकुळ ॥ रात्र घातसमसा नेग ॥ ८७ ॥ हे देखोनि दुर्योधनें ॥ कर्णशकुनि दुःशासन ॥ समीप यें निवोधजण ॥ काय केलें निदरि ॥ ८८ ॥ लतापासी उभय हस्ता ॥ मामा बांधले नहुर्त ॥ अशुद्ध देके रपरीय तावजगाढ सुदृढा ॥ ८९ ॥ चौघीं मिळोनी तात्काळ

बळेंतकिलाआगाधजळे ॥ शिळाबांधलिवक्षस्थळी ॥ गीरीशृंगा
सारिखि ॥ ४९ ॥ वसदिसलोटलापरता ॥ पडलाजळधारेआंतौता
गंगाळोरिपुरपंथा ॥ आंतपडिलावाहवणी ॥ ५० ॥ निश्चेष्टमातुकी
दुर्योधन ॥ करीतांजालासतोपरायन ॥ उदकीतोभीमसेन ॥ तेवि
भीमवळु पुढेपारसावे ॥ ५१ ॥ गंगाभीकोनिसागरि ॥ महाविस्तारि ॥ नेला
नि पाताळभीतरि ॥ नागलोकआपीला ॥ असंख्य सर्पकळाविमो
हितझाविनलेसंदसदिा ॥ आपार ताधी ॥ उपायसिधि ॥ तैसविपरित
वर्तलेपय ॥ गंगामृतनाचावोल्हासे ॥ उरगांचेनिदंशनदंशे ॥ गरळस
रानिअपैसा ॥ सावधजालातेकाळी ॥ उमजपानलाभीमसेन ॥ बळे
तोडिलेकरबंधन ॥ हाउनीयाउभयचरण ॥ ५२ ॥ पादयंथिछंदिल्या
॥ ॥ हातरगडीत ॥ सर्पतोडी ॥ सुटलिसर्पाचिसुबाड ॥ तडलतोडुनीशान
खंड ॥ गोदकी टाकिला ॥ ५३ ॥ हेदेखोनिबहुविस्मीत ॥ शापकेलगवरलेन
गरा ॥ जेथनासुगिराजेश्वरा ॥ कुबेरातुल्यसंपतिभ्रम ॥ पाताळभोगव
तिचेतिरी ॥ भोगावलीनामेनगरि ॥ वासुगिराजासहविस्तारि ॥ ५४ ॥ जैसा

आमरेसि॥ ज्ञानयाजाणविलिमातु॥ अपारिनवलअद्भुतु॥ प्रचंड प्राणरहितु
हस्तपादि बांधला॥ गंगाजीवना चिलोटि॥ वाहवतु नगरानिकटि॥ प्रेल
लजाउनिदृष्टि॥ आलासा जिदिसवाहे॥ वार्ताऐष तासाचार॥ भुजंगसहि
तभुजंगेश्वर॥ समीपपातलासत्वर॥ अयादरेदयालु॥ सचेतनपिसाव
धाना॥ बन्हेगुणसफल॥ आपलाकानिभामरेना॥ सर्पराजसंतोष॥११॥
वासुकि बोलेमधुरवचनि॥ कोण॥ उत्तमाचिरेकरणी॥ मारावयाकरबंधनि
गंगाजनिटाकिले॥१२॥ असाचकल्पासितयावेसना॥ पृथादेविचिया
नंदना॥ उदिचात्तआमचियाभुवना॥ कीर्तिप्रीयपवित्रा॥१३॥ पुढतिवा
सुगिवत्वपत्र॥ भेहवालतियांकेपविन्न॥ दोहिअणीदोहित्र॥ सोय
राहेउत्तमुते॥ अपानिदिधलअ॥ किंगणा॥ अम्टलहस्तस्पर्शति
वदना॥ गेहानेउनिसणकवपा॥ वलुयानेनिवड॥१५॥ यत्नापत्रसपराया
विषअलिप्तकि॥ सेकाय॥ सुधारसगासावया॥ देवउचिलअमुते॥
॥१६॥ याचेगाजउचित॥ वापिसानेवाठ्य॥ जयाजकाविआर्तीते
चिसालपुर विति॥ तरूपावरातकन्यादानेग्रक्षुसिलावाविजस्पिष्ठान

२ द्वितीयाते चोपिजे भजा॥ परमधर्मे यानावे॥१६॥ कामातुरा ते सन्यासु
भुकेलिया करविजे उपवासु॥ धात्याचा कीजे फडरसु॥ मुरवाचा रसा
नावे॥१७॥ याल्लागी अम्रत यासी देणे॥ याचि विषामि संगात करणे॥
पुंप्याकि लिजो मिलिये णे॥ हे सर्व ज्ञाजाणासि॥१८॥ अवस्थान णोनि
रगा॥ घिरा॥ आटीह कुंडे भरलिरसा॥ यकदउनि सावकासो॥ पासान
करोल्लणलसो॥१९॥ सापींधरनि बाहुवटि॥ नेला अम्रत कुंड निकटि
वैसउनी मणतिगोरटि॥ सुधारसु भासिका॥२२॥ येर पाहात आसवा
सकल्या॥ आटहि कुंड यकाचि वेला॥ भासिलिजे सेसिधु जला॥ जेवि
आगस्तिअचमनि॥२३॥ उरगिजा पावितामातु॥ अश्चर्य करि नाग
नाथु॥ वरदवेसं तोषभरितु॥ लक्षुनियाभीमाते॥२४॥ अम्रताचालिअ
ठीह कुंडे॥ यकश्वासि भासिले लोडे॥ या स्तव यास्व सामर्थ्ये गाढे॥ भा
निजे असुरनरी॥२५॥ नागायुत बाळि बाहि॥ रुपपं डिलामाजि
नरिक्षा वाचरवरा निककुंडु॥ उपमे यक मारुनि॥२६॥ करानिअ

म्हणे रसभोजन ॥ विश्रांति पावला भीमसेन ॥ हे भमंचकी मंदासन सया ॥ सर्परज्जु वोपिल ॥ २७ ॥ जालये पुढं उत्ता सावकासि ॥ जे वियोगियासमा धीसी ॥ मीनध्याकुशाचि मानसि ॥ कालिमा काहि उरेना ॥ २८ ॥ यरिकड जान्हवि कुलि ॥ प्रमाणकोटि विश्रामस्थलि ॥ सुर्य देखोनि उदयाचलि ॥ जागिनले समस्त ॥ २९ ॥ सातनियमाथः भाने ॥ पालणनिधन करोने ॥ कौरवआल्हाद युक्त मने ॥ नगराप्रति चालिले ॥ ३० ॥ परस्पर बोलति शब्द ॥ मंत्री आजी विभ्रेहे वाद ॥ श्रेष्ट जो उपरि हेमं ॥ द ॥ वालं कोणी नेणति ॥ ३१ ॥ श्रेष्ट पंडुचनंदन ॥ वाहति सर्वज्ञ विचे मान ॥ परि हे गुणि अति निर्गुण ॥ आपले कर्यान हि ॥ ३२ ॥ मागासा उनिभावेंइ उत्ता वेकेभावघीमपुढे ॥ भीम गत्वासी नावडे ॥ सुहृद संग सर्वथा ॥ ३३ ॥ आसीसो अनुनि परम अंत ॥ कपटे हे वाउवि स्नि तित्काले ॥ असा जे घडला याचे चित्तं ॥ तेची मान्य आला सि ॥ ३४ ॥ अे सियापरिचिया ॥ कपट युक्ति ॥ धर्म अर्जुना परसि विति ॥ परि लढु क्षितापतिं ॥ वरवे काहि वाटेना ॥ ३५ ॥ भीम विचो घेजण अति उद्विग्न मल्ला

५

नवरत्न ॥ भीमासि नदेखता प्राण ॥ कौंतिसी पाहणा ॥ ३ ॥ पाव नेदव
डिलसकळ ॥ कौरव प्रवेशला नगर ॥ आर्जुल्याले निजमंदिर राजा
तेजाले संताप ॥ ३७ ॥ देखिने देखता भीम ॥ शोकजाला राजा धर्म ॥
आळसे प्रवेशो निधाम ॥ मातेलागि विचारि ॥ ३८ ॥ भीम पुढे पालला
श्रेष्ट ॥ काय धुतु आपाट विलकाट ॥ रात्रिपासु निःद्वय फुटे ॥ लया
विषमोहे ॥ ३९ ॥ निशाकाळि केलेशयने ॥ त्याव दिसिला नाहि
यन ॥ कोट केला दुर्योधन ॥ अंधपुत्र निघातु ॥ ४० ॥ वसस्छळ पिटी
निजन दि ॥ शोक आंग टाकि धरणी ॥ विदुर येउनि ह्मणे वचनि ॥
धीरधीर जननीये ॥ ४१ ॥ दुःख पाललिया आचाट ॥ धीर्य आवरि
जेतोट ॥ आधीर्य दुःपातिन हा ॥ ऐसे श्रेष्ट बोलति ॥ [illegible] याद निव्र
पाग ॥ सर्वज्ञाग दुरबुधि दुर्योधन ॥ आरंभ भीमाचिया मरणा ॥
उपाय चिंतिति मानसि ॥ ४२ ॥ तेणे निश्चय घातु केला ॥ अन्यथा ना
हि पया बोल ॥ क्षता ह्मणे नकसि उगला ॥ वाग्धारय काळि ॥ ४३ ॥
बोलता घडतिल अविश्वानर्थु ॥ उरली पाचा हि रलघातु ॥ पडलिया

उदेसिसांघातु॥ विचारबळें निस्तरिजे॥ ४९॥ विवेकधरूनिया
धीरू॥ हृदयचिंतिक मळावरू॥ स्वलक्षिमतु साकु मरू॥ सिघ्र
येरुल तुजपासि॥ ५०॥ क्षमा आवलंबुनि मनें॥ उरलवाचविप्र
यत॥ बोलता दुष्टा चिंदुषण॥ अनर्थ योजे शंकडा॥ ५१॥ ऐकु
निविदुरगुरुच वचन॥ माला अपी चोधजण॥ मुखि धरूनि म
हा मौन्य॥ वंधागमन टाकिले॥ ५२॥ आठविताश्रीमत्रान॥ धडकरी
करुतारान॥ आर्थगे लिया कृपण॥ मगप्राय तळमळि॥ ५३॥ यरिकडवा
सुगिसदनि॥ अष्टमदिवसलोटल्यागुणी॥ जागा जाल्जे वितरणी
उदयाकरि प्रभात॥ ५४॥ आंगि जिराला अमृतरस॥ शरिरदुणावला
कसु॥ हृदर नधरमेहाल्हासु॥ भयेंहुतव जाचा॥ ५५॥ कृष्णचरणी
भावार्थ जया॥ तोप्रारब्धनेलिया विघमदाया॥ तेथे पावोनिसलाप
जया॥ पुज्य हा तिसर्व था॥ ५६॥ वासुगी ह्मणे यादव तरुजा॥ तुजकी
परुल्लीया सगुणतनुजा॥ जन निअपणी धर्मराजा॥ उल्लासवसतहो
सा॥ ५७॥ तुल नदेखता जाय॥ पाचहि जण त्यजलिप्राण॥ दर्शनिदेउनि

समाधान॥ जीवसाचा वाचावि॥ ५४॥ आवडिकरुनिया नाजेना॥ वोपिलिवस्त्र
दिव्याभरणे॥ पंचभक्ष्यादि परमान्ने॥ भोजन दिधले सपन्नी॥ ५५॥ सुहृदत्वपी
देऊनि संगे॥ नागलोकवंधुनीवेगे॥ बंधुसमेवन होता माघे॥ त्यासच्चानि
स्त्र्यापिला॥ ५६॥ देऊनि पंकुचकुकदिपा॥ अदृश्य जाले महासर्प॥ भीमनिर्भय
नीःकंप॥ नगरपंथे चालीला॥ ५७॥ आठमी दिवसि पातला सदना॥ धावो
निधरिता मातुचरणा॥ पान्हादाटल्या उभयस्तना॥ कंठिमिठिघातलि॥ ५८॥
हृदयकवळुनियामाथा॥ दीर्घस्वर मोकलिधाय॥ म्हणे तान्या जाले काय॥ को
ठ काळक्रमितिला॥ ५९॥ भालुनविषभुत्या पडलि दृष्टि॥ जाव्या प्राणपालके कंटि॥
भीम म्हणे स्वस्त पहिं॥ होउनि अेक वृत्तांत॥ ६०॥ वंदुनि अग्रजाचे चरणा॥ अवघडि
धलेआलिंगणा॥ समस्तिकेलभावप्राणा॥ पार्थादिकावधुसि॥ ६१॥ हस्तरमानु
निया विदुरा॥ घातिलासाष्टांग नमस्कारा॥ निवेदितकेला समाचारा॥ जोपकांग
अनुभविला॥ ६२॥ गोत्र पुरुषादि विलक्षण॥ विषधावनारि सुख॥ नागलोकि
च कौतुक॥ सागताचो जसमस्ता॥ ६३॥ जीतवगकला जिजननि॥ वस्तुद्याकिल्यावो
वासुकि॥ ब्राह्मणा पुजिल्या सदानि॥ ६४॥ कौरवा तेन णनि॥ ६५॥ विदुरमते

कौंतिबाळ॥ साचध्य बंधु नवीतिसर्वीका॥ कौरवासि निकट मेळ॥ मन पावे सामीळ॥ ६५॥ येका वेग कायेकन फुटे॥ तया संग नवन्ना तिकोटे॥ सर्वाल सुखिचेनि निनेटे॥ निज मर्यादा वर्तिती॥ ६६॥ विष्णु स्मरण॥ विष्णु श्रवण॥ विष्णु प्रतिमेचे पुजन॥ विष्णु मुर्तीचे निजध्यान॥ काळ सार्थक लोटति॥ ६७॥ भारत पत्री कथा जीवने॥ सा घरि घटिका सभाग्य श्रवणे॥ भारत भारता चिम्नाने॥ स्वानंद जळि स्वक्षावे॥ ६८॥ तेथे मळ्लिप्त प्रासि॥ लग्न लागे निर्धारिसे॥ आनाधिकारि मोक्षरासी॥ तसि लाभ सर्वथा॥ ६९॥ मंडपिपासि खेवळ्राडि भासा समान क्रिष्ण रंगे॥ सेयीजेतिज डमुडी॥ ते गति पावी जे भारति॥ ७०॥ अवधुन परज सरोवरि॥ मुक्तेश्वर सप्रेम करि॥ हं पोति वियोग स्वकलि रि॥ ला गलक्षपुन पाते॥ ७१॥ इति श्री आदिपर्व भारत पुढीवीराय जहैद्भुत॥ चित्राध्याय सुचरिलाद्भुत॥ कर्णपानि धरावे॥ ७२॥ इति श्री माहाभारते आदिपर्वी प्रमाणकोटि वनक्रिडा भीमसेन विषबाधा निरसन नाम नवविंशति मोध्याय॥ २९॥ ७९॥ ७५॥ ७९॥ ५९॥

॥श्रीरमाकांतायनमः श्रीसिद्धेश्वरायनमः॥ प्रज्ञाचक्षुनिजमानसि॥ संकल्प
कामिविचारेमानसि॥ धनुर्विद्याभ्यासि॥ कुमरसर्वलावावे॥१॥ धानराष्ट्रये
साल॥ कौरवपांडवचेस्थासुल॥२॥ ताहुनिआगळेसात॥ पाचारिलेजबाकिके॥२॥ धनु
र्विद्येराजगुरु॥ कृपाचार्यपरमचतुर॥ गौतमवीर्यजन्मलानर॥ तोशारस्तंभिजन्मला॥३॥
तयाधिनकेलेसकळ॥ विद्याकेसनिपरमकुशळ॥ आनालस्यसर्वकाळ॥ विद्याभ्यासि
लागले॥४॥ राजाम्हणेपोमावक्तिया॥ वैशंपायनचातुर्यसुर्या॥ शारस्तंभिकृपाचार्या
जन्मजालासागसि॥५॥ तेविस्तारेकरिकथन॥ कथावसनिमुत्त्लेमन॥ वक्ताम्ह
णेसावधान॥ ऐकाआतानरेंद्र॥६॥ सहस्ररुषितपाचमस्थानि॥ गौतमजाणासिपर
मज्ञानि॥ गंगापरिसरितपावनि॥ तपश्चर्याआचरे॥७॥ वेदशास्त्रिपरमनिपुण॥
जेशतापसातपोधन॥ धनुर्विद्येसुदृढमन॥ तेहिकळाधरिलि॥८॥ शंकरआगसी
परशराम॥ धनुर्विद्याविशेषपरम॥ तयातुल्यऋषिगौतम॥ निपुणजालाशस्त्रास्त्रि
॥९॥ तापेशरेहामारकुद्देखोनिअमराचानायक॥ म्हणेजिंकिलेमासोखेका॥ उग्रये
ह्याकेलतपस्वी॥१०॥ होयहापीयाचीयापुण्या॥ ऐसियेपांडुआपायवसन॥ म्हणो
निधाडिलिदेवकन्या॥ जालपदियानामे॥११॥ धनुष्यबाणधरुनिमुनिश्रीऋषिआवलो
किआरण्यदृष्टि॥ तअप्सरातनुगौरदृष्टि॥ उभिटेलिसन्मुख॥॥१२॥ आलेचिआवलोकित॥

लिचेआवडीकीलावदन॥१२॥इयसंचरलोमस्त॥हातिहुनिघमुप्यबापा॥मळोनिपडि
त्नातकवटि॥१३॥आटविलासंगसुरत॥शरीरजालेरोमांचित॥आधोसंदिसुट
लेरेव॥लसांडलेभुनकि॥१४॥राशावरतेलेआमोघ॥पडोनिआतलेदोनिभाग॥यक
घडलेपुरुषलिंग॥कन्याकारभागयेक॥१५॥खडिलेजाणानि सहस्त्रनेत्र॥सुगुनि
आजिनहवनपात्र॥मोलुमगलास्वळेपवित्र॥आवलोविलपार्थी॥१६॥शांतनु
राजाआरण्यम्हगया॥खेळतपातलालयाठाया॥उभयबाळेकदेखोनिहृदया
मोहेजाकळिले॥१७॥देखोनिहोमपात्रआजिने॥ब्रह्मवीर्यजाणेसमने॥निश्चयक
रुनियामाने॥मगवोसंगाचेनलिा॥१८॥समारंभआपुनिघरा॥जातककर्मादि
संस्कारा॥संपादिला राजेश्वरा॥असाहरमानसी॥१९॥राउनिआपुलियाबा
ळेका॥वाढविलिआतिकौतुके॥कृपेनपाळिलिसुरवे॥त्न्हानामठेविला॥२०॥कृ
पळुपेअसिनाम॥पाचारितिअतिसंभ्रमे॥प्रतापवंतजाणानिगोतमे॥बीजकेले
याठाया॥२१॥आपुलिअसिकरुनीज्ञान॥न्रपादिधलअसीवेचन॥धनुर्वेदविद्या
दान॥पुत्राला॥गिवोपिले॥२२॥कृपिविधिनेद्रोणाचार्यां॥पाणीग्रहणकेलिभार्या
तिचाउदरिमरेंद्रविर्यी॥तोचिआचार्यकुरुवर्यीअस्वथामजन्मला॥२३॥अ
सोयापरिगोतमरियाग॥देहधरिलाकृपाचार्या॥तोचिआचार्यकुरुवयी॥

पुत्रालागीं दिधला ॥ २४ ॥ अनेक देशिंचे राजकुमर ॥ विद्यालागीं पातले चतुर ॥
राजगुरुनें निरंतर ॥ नित्याभ्यासें सेविलि ॥ २५ ॥ ऐसे लोटतां काहि दिवस ॥ भी
क्ष्मपडतां कि वेदाभ्यास ॥ झणे सिष्य प्रासा बहुवस ॥ सांगणे स्वल्प गुरुचे ॥ ध्या
सपो जे विशुद्धा बहुल ॥ निश्चळरूप पावतां हाल ॥ तोंड घेने भोले नक्षेत्रुस
लें सा काहि दिसताहे ॥ २७ ॥ पुत्रपौत्राचि श्रद्धा सुमति ॥ देखोनि विचार विवरि
ति ॥ विशेष विद्येचि संपत्ति ॥ प्रसन्न व्हावा यया ॥ २८ ॥ पुरुष भंडणाचिया धाणा ॥
जुलानि करविला प्रदक्षणा ॥ पंडकितेन यया ज्ञाना ॥ प्रास नोहे निश्चित ॥ २९ ॥ यक
ह्मणति भावार्थ कळे ॥ आसोनि वर्म कोणा न कळे ॥ आता ब्रह्मांडाचिस गळे ॥ प
रुभावना भाविजे ॥ ३० ॥ अम्रहे स विअयाग्य गुरु ॥ तो सिष्य ह्मणविया चाटोर
जे छेबांधे निनीरंतर ॥ फरिदा क्रियाभावन ॥ ३१ ॥ संशय सिअसान झडे ॥
सर्वज्ञता अनुभव जोडे ॥ ऐसें बहुल गुरु चालोडे ॥ साधु निधेणे आपलि ॥ ३२ ॥
चा विसांचे घेउ निर्गुण ॥ अवधूत यांचें समाधान ॥ ब्रह्मरूपनि शिष्य प्रसन्न ॥ कृष्ण
कथिले उध्दवा ॥ ३३ ॥ ह्मणोनि सद्गुरु ज्ञानविशेष ॥ अभेद भावना भजावे निस्य ॥
जे विदित प्रकाश ॥ घराचार सुपंथु ॥ ३४ ॥ विचारितां येथ काहि ॥ निषेधाचा
निलागमनाहि ॥ बहुतांना विकाचा बाहि ॥ नाव भक्तीयेचा विजा ॥ ... रुपाचाचि

नके नेणा ॥ सास्त्रविद्येपरम निपुणा ॥ अस्त्रबीजरहस्यगहना ॥ कथिले नाहि
गौतमा ॥ ७३ ॥ भार्गवा अथवा अेकिजद्रोण ॥ जन्मिले तिभाग्योकरुन ॥ तरि
होतिलसर्वनिपुण ॥ इच्छापुर्णतेमाझी ॥ ७४ ॥ अेसीभावनाभाग्यवंत ॥ करिता
द्रोणचिपालखानेथ ॥ तेणेअमोघविद्याचित्त ॥ कुरुवंशजावो पिल्लि ॥ ७५ ॥
हेहिसविस्तारनिरोपण ॥ तुजप्रतिपाहिजेकेले कथन ॥ प्रश्नकरावयाउदित
मन ॥ जाणोनिअेसबोलिलु ॥ ७६ ॥ भारद्वाजतपिश्रेष्ठ ॥ हविर्धानेतपनेमिष्ट ॥
गंगातिरियकनिष्ठ ॥ अनुष्टानितिष्ठलु ॥ ७७ ॥ तेथचीस्वर्गदेवांगना ॥ विनोद
पानालिगंगास्नाना ॥ स्नानसारुनिहेमवसना ॥ वेष्टितादृष्टीदेखिलि ॥ ७८ ॥
आवलोकिताआंगनावोपु ॥ हरइजागिनलाकदर्पु ॥ जेसाउवचिताकाळ
सर्पु ॥ फडिकादीफुफाटे ॥ ७९ ॥ प्रमदावेधेविचारमदु ॥ हरइकोंदलासुरता
नंदु ॥ आधोसंधिसुटला बिंदु ॥ पर्वतादकासारिखा ॥ ८० ॥ रेतसहारसोडिता
धरणी ॥ रुषिधरिलपर्णेद्रोणी ॥ आमोघवियेतेचक्षणी ॥ दिव्यकुमरजन्मला ॥
॥ ८१ ॥ द्रोणाकळसिपावलाजनन ॥ यास्तवनामठेविलेद्रोण ॥ रुषिपसुमिवेदाध्या
यना ॥ संस्कारादिसाधला ॥ ८२ ॥ अग्नीवेशअग्नीकुमर ॥ धनुविद्याचतुर ॥ तोआ

द्रकरु निगुरु ॥ सेवा करि सिष्यह ॥ ४६ ॥ अग्नि अस्त्राचेनि अर्थी ॥ सेवा करिता
आहोराति ॥ गुरुबंधु जोडला संगती ॥ द्रुपद नामा सुमीत्रा ॥ ४७ ॥ द्रुपद पांचाळे राज
नृपति ॥ याचा पुत्र विवेक सुमति ॥ द्रुपद द्रोणाचा संगति ॥ विद्याभ्यासु केला
॥ ४८ ॥ दोघे साधले विद्याधन ॥ दोहो नि गुरुचे आज्ञावचन ॥ पांचाळ देशा प्रति
आपण ॥ द्रुपद जाता जाला ते काळी ॥ ४९ ॥ द्रोणाते प्रीतिभावार्थी ॥ जनके रा
या ज्य वांपिले नुते ॥ आलिया सांभाळावे माते ॥ गुरुबंधु हे स्मरोनि ॥ ५० ॥ द्रुपद ह्म
णे मी उपधरु ॥ जालिया केसेनि पडेल विसरु ॥ राज्य तुझे हा निर्धारु ॥ धरुनी
राहि मानसी ॥ ५१ ॥ द्रुपद गेलिया अहिक्षेत्रा ॥ पिते ने स्वर्गयात्रा ॥ राज्यपद
जाले पुत्रा ॥ द्रुपद राजा ते काळी ॥ ५२ ॥ भारद्वाज ऋषि आश्रमी ॥ शरीरत्यागु
नियोगधामी ॥ ब्रह्मादिकाचिये धामी ॥ वसता जाला सुकृती ॥ ५३ ॥ ते चि अ
श्रमी द्रोणाचार्य ॥ बहु काळ केरिला तपश्चर्या ॥ शारद्वति वरिलि पशायी ॥ अ
जो सतिकारणे ॥ ५४ ॥ गौतमकन्या लावण्यरुपी ॥ कृपाचार्याचि कनिष्ठ भगी
नि ॥ शालनु राजे वेदविधानि ॥ द्रोणालागी अर्पिली ॥ ५५ ॥ तिचा पोटि जन्म
ला कुमरु ॥ कावीलकाळ वैश्वानरु ॥ जन्मकाळि महाथोरु ॥ शब्द केला अ
स्वमुखे ॥ ५६ ॥ उच्चैश्रवाचे गर्जन ॥ तैसे परिसोनि देवगण ॥ अश्वत्थामा हे

अभिधाना । टविनजाले तयाले ॥५८॥ सुलक्षणी चिरंजिविया । पुत्र देखो निद्रो
णाचार्या ॥ आनंदवलीला तो हृदया ॥ धरिला मन्वचे सर्वदा ॥५९॥ त्यावाल ओकि
लिश्रोत्रि ॥ भार्गवि वधुनि सर्वक्षेत्रि ॥ ब्राह्मणा वोपिलि धरित्रि ॥ सागरांत प्र
लापे ॥६०॥ विशाल वसुधा कनक दाटि ॥ अनेक रत्नांचिया कोटि ॥ भरुनि
रुषिवाकरतटि ॥ याचन दान वोपिले ॥६१॥ ब्रह्मांड गेह साडुनि परले ॥
दरिद्र पळविले नेणो केउते ॥ हे परीसोनि परम आर्ते द्रोणाचार्य निघाला ॥६२॥
हृदई धरुनि अर्थकाम ॥ ठाकिला महेंद्र पर्वत उत्तम ॥ भार्गवाश्रमी भार्गवराम ॥ त्यो
संगणी वंदिला ॥६३॥ सांगलपुसे कल्याणराम ॥ द्रोण ह्मणे मि द्रव्यकाम ॥ स्वामीच
चरणकल्पद्रुम ॥ टाकोनि आलो श्रांतल ॥६४॥ दान सूर्याचे निप्रकार ॥ तिनिलो
कउजळले दिवो ॥ दरिद्र उलुकि पळता न दिसे ॥ टावको टल पावये ॥६५॥ दीपां
धकारे निबडपाहि ॥ संतोष दिप नल्हे गेहि ॥ ह्मणोनि दउलि माझे गेहि ॥ सांगो
आला स्वामीया ॥६६॥ आदर भार्गवराम बोले ॥ आळस कास या पहिले घेतले ॥
तु जप हि जेले गेले ॥ वेचोनिया सर्वहि ॥६७॥ सुवर्ण रत्न रजत रसि ॥ दान दिधला
ब्राह्मणा हाति ॥ कश्यपा वपिलि वसुमति ॥ नगरमा किपीरो ॥ मिना ॥६८॥ अस्त्र

विद्याअणीशरीर। उरलेआसे गासाचार। जाल मानेलतोप्रकार ।। मा नमोत ब्रा
ह्मणा ।। ७० ।। द्रोणह्मणेजगद्गुरुदेवा ।। अस्त्रविद्याधनाचारेवा ।। माझाहृदइजिवथा
या ।। कृपाकरुनिसमर्था ।। ७१ ।। आचस्यह्मणेनिरुपात्तनयो ।। सीस्यकरुनिद्रोणाचा
यो ।। अस्त्रविद्याप्रलापसुयो ।। हृदइका सिउल किला ।। ७२ ।। अगमोक्तमंत्रबीजे ।। सावि
यैवोपिलिक्षिरराजा ।। युध्यकाकिकलीजिज ।। तेतेशास्त्रप्रसवत्त ।। ७३ ।। क्षेत्रिअणीब्रा
ह्मणवर्णी ।। चस्तुनिउपदेशानकरिअणी ।। लाहोनिसमर्थगुरुचिभाही ।। द्रोणाश्रमापा
वला ।। ७४ ।। चालिलअसताग्रहस्ताश्रमु ।। दरीद्रकेलासर्वविरामु ।। प्रासवावियोग
श्रमु ।। दाराकुमरभागीजे ।। ७३ ।। स्वइच्छाधनेस्वस्तचेकुमरु ।। सुवर्णवाटिप्रासिनिक्षि
रु ।। देखोनिरुदनकरियोत ।। अस्वथ्यामबाळका ।। ७६ ।। पिष्टाद्केरुध्नवर्णी ।। माना
धरुनिपर्णद्राणी ।। द्रोणीलागिरेतावदनी ।। पानकरिसंतोष ।। ७५ ।। दुग्धप्रासिलेअणो
निबलि ।। हर्षनाचेसंमियामेळि ।। हेदेखोनिहृदयकमळि ।। द्रोपदुःखशाकळे ।। ७४ ।।
ह्मणेसंसारिपाहलामने ।। जळोहेनिधनीकाचजीणे ।। धीरशहकाचेप्रावान ।। दुग्ध
भाविबाळकु ।। ७७ ।। आपुलेकुटुंबआपुलेद्रोशीणादरिद्रहोतापरमकाष्टि ।। स्वहस्ते रा
स्त्रघालुनीपोटि ।। ताकाळप्रापायेणावा ।। ७८ ।। लेवेकिभाटचलेमन ।। जायेदेप

दाचीदर्शना।पुत्राच्या मीदुग्धपाना।धेनुयकमागणो।७०।ह्मणो निलवन्होहे नि घा
स्या।पांचाळपुरयकुनि आत्मा।भद्रासनिआवलोकिला।सर्वभाग्यभुपति।७१।आ
सिर्वादिचहता द्विजा।असोतरन बोलेराजा।कोणह्मणोनिपुसताजाला।।मनोस
मरत्ना।।७२।।द्रोपाह्मणेपडिलाविसरु।गुरु बंधुसहोदरु।आह्मातुह्मायेकुगुरु।
अग्नीवेशमुनीद्र।७३।दरीद्र्याचा अग्नोबिताकरि।रिघोपातला तुसेपाशि।मी
त्रभावस्मरोनिपोटि।क्लेशातिलकरावा।७४।उपहासोनिपांचाळह्मणे।ब्रह्मण
नेपाला सहुना गुणा।अयोग्य सियोग्यासिजाणा।नाहिकोटेपरीसिले।७५।
धनिकअपीदरिद्र्यहिना।उदारअपीपरमकृपणा।हृदयशुधचित्तमलिन।।मैत्रि
नाहिपरिसिलि।७६।कर्मभ्रष्टअपीकुटिलखळा।मुर्खअपीशास्त्रकुशळ।
सर्ज्जेअपीकुटिलखळा।नाहिमैत्रेपरिसीलि।७७।वेदांतिअपीचार्वाक।मी
मांसकाअपीकौलिका।विरक्तअपीलोभिक।मैत्रिनाहिपरिसीलि।७८।क्ली
बअपीजुझारसुरा।अधैर्यवंतापरमसुधी।अक्रोलिनोतियानरा।मैत्रिना
हिपरिसीलि।७९।मागतयाअपीनेदितया।मानहीतीयाउपेक्षितिया।साध्या
उअपीतिस्काजीरय।।मैत्रिनाहिपरिसीलि।८०।रंगरंकाचियेपक्ती।मीत्रभुपाच्या
भुपत्ति।योग्यराकेरा समरसद्वीतौ।त्वपणानत्रनेमिलि।८१।कुळ मीळज्ञानवैभव।

समानयोयस्तुह्रदभाव ॥सखापार्थीवाचापार्थिवे॥अयथा॥भयसोयरे॥ ७५॥ के
चागुरुबंधु॥बोल सिलितुक्याकनिमशब्दु॥शंकाविरहिलबुधिमंदु॥मी
त्रह्मणसिरायाचे॥ ७६॥ऐसे स्वर्यमदे अलिमातला॥दृपदद्रोणआवमानिला॥पु
उलिझपोचानवहिला॥काजनाहियेरछकि॥ ७७॥सिघ्रजाइआलनिपंथे॥
वाउबालतासेवदुयथ॥परमविषादमानुनितेथे॥द्रोणफिरमाघारा॥ ७८॥ ह
पेगापावलाविश्रांति॥सिघ्रचीयइलप्रचिति॥लुजमानेलऐसियारिती॥इश्वर
रेविलेअमुले॥ ७९॥ऐसबोलोनिसिघ्रगति॥चालिलाकुरदेशाप्रति॥विषाजो
उनिसांगाति॥जोआवमानेउपजला॥ ७०॥ हृदयिविचारिआपण॥शिष्यकरनी
कुरुनंदन॥आमोघअस्त्रविद्यादान॥तयातिवोपणे॥ ७१॥दरिद्रदिर्घवल्लीचा
कंदु॥कुमीत्राचऐस्वर्यमदु॥यादोहिचामुळछेदु॥शिष्यहातिकरवणे॥ ७२॥
पृथ्विबाघोनियाकुमसा॥हातिधरुनिगोतमीदारा॥द्रोणपावलाहस्तनापु
रा॥परमक्लेशासखेद॥ ७३॥गुप्तराहोनिब्राह्मणाघरि॥भीष्मदर्शनकल्प
नाकरि॥आकस्मातयेकआवसरि॥राजकुमरनिघाले॥ ७४॥नगरा
बाह्याप्रदेशिभुमिका॥क्रिडेलागिसहकौतुका॥यकमीनलऐसदेख॥

द्रोणाचार्यादितानि॥१॥ कौरवपांडवभांग्यपिंड॥ कनकवियकनकदंड॥ खे
खेळ लाप्रचंड॥ योजकाहिवर्तीला॥२॥ दंडप्रहरवाडिलाविट॥ बकुड
सको निगगनवाटा॥ कुपिपडिलिद्रश्रेष्ट॥ जेकाटिलाआवघडा॥३॥
मीको निराजकुमरमेळु॥ आणितिविरसजालारवेळु॥ विटाकाडिऐसा
कुरावु॥ उपायकाहिसुचेना॥४॥ काशवयानचरत्रयुक्ति॥ राजकुमराची
यपकी॥ कुपामाजिआवलोकिति॥ आपानिकाहियल विचारा॥५॥ द्रोणा
५ चार्यतिआवसरि॥ कौतुकपाहराकुनिदुरि॥ विटापडिलाकुपोदरि॥ जा ५
पानिकरीहास्यालें॥ धातेचिकुपिपाआदरवा॥ धर्महास्तिचामुद्रिका॥
गको निपडत्रिकुपोदका॥ माजी नसाधे प्रयेन॥७॥ विंचुकुपंडिलादेखो
निद्रोही॥ द्रोणाचायपालआनिकटि॥ आपोसेत्रियबोलिष्टश्टाष्टि॥ स्तब्ध
केसपाहतसा॥८॥ आसाध्यवस्तुचिनव्हेप्राप्ति॥ तरिकाधनुष्यधरावा
हाति॥ कोणसामर्थगुरुप्रति॥ विद्यानाहीसाधिली॥९॥ मगदर्भइसी
काधरुनिकरि॥ मंत्रानीसांडिलियाकुपोदरि॥ तिहिइयाजगेनि
मुत्रि॥ दर्भजडलेयेकेका॥१०॥ कुपाबाहेरिपालिआग्र॥ काढुनीयाब

॥१५॥

सहरे॥ करेसलु निहास्यवक्त्रे॥ विदाहस्तीचोपिला॥११॥ अभिमंत्रुनिसा
र संधाजिा॥ करमुद्रिका धरुनिवदनि॥ बाणपरलाेदे खोनिमयनी॥
परमआश्चर्यसमस्ता॥१२॥ राजकुमरिलगो निपाया॥ भूपाति चालिजे
राजालया॥ द्रोणह्मणेभीष्माचार्या॥ श्रवणअाधिकरावे॥१३॥ मीत्रभा
येपातलायेथे॥ मानेपाचारिलेतेथा॥ भेटिजालिया॥ घडेआर्थ॥ तोआधि
स्वीकारि॥१४॥ कुरुवधातेसागतिकुमर॥ धनुर्वीद्याअगाधसमुद्र॥ ब्राह्मणपालल
सेचेतुर॥ जामदग्न्यासारिखॉ॥ विटअपीमुद्रिका॥ कुपादकिपडिलिदखा॥ मुष्टिधरुनि
इसिका॥ मंत्रुनितेथेसांडिल्या॥१५॥ काडियकाडिजडअंगे॥ विटाकाडिलातेणेवेगे॥ बाणवि
धोनियामार्गे॥ मुद्राकडेकाडिलि॥१७॥ भेटिजालिया स्वामीचि॥ मनेउपेक्षानकिजेयासी॥ व—
स्तुओडिलापरिसाचि॥ जेविकुटंबिनविसंबे॥१८॥ जक्तिबुडालिमुद्रिकाबाणे॥ भेदुनिकाडि
लिआर्धक्षण॥ कुमरिसांगतासकल॥ भीष्मरिप्रधान॥१९॥ पाठुनिसिबीकायानद्रोणआ
णिलापाचारुन॥ भीष्मदेऊनिआलींगन॥ श्रेष्ठासनिबैसविला॥२०॥ अर्घ्यपाद्यसुगंधसुमने॥
वस्त्रेतांबुलभुषणधने॥ अर्पुनियागोदाने॥ मगम्धागतविचारि॥२१॥ जैको निजापेसमर्थाते॥
विराघदर्शनलाभसायेथे॥ आजिसुदिनयेणेपंथे॥ पवित्रकेलेस्वामीया॥२२॥ कवणअागमनहेतु॥
येथेकिवापुरारापृथु॥ द्रोणह्मणेआर्थवंतु॥ येणेकुरुपासि॥२३॥ मनुष्यलोकिंज मलाजाणा॥ नर
मेणयमयालना॥ दरिद्रऐसेमाझीयामना॥ विचारितामानले॥२४॥ दरीद्रआंधकेदेखननयनी॥

परिलेउ॥५६॥ सेयक गुणी॥ सुमित्र कुमित्र॥ चिनाणी॥ पारखु जाणे निवडे॥ ५५॥ पुत्र माते येक लालाय क लोपयना र्थ करि शोक॥ दुष्ट धमणा नि पिशाद्क॥ कुपिया ते पाजवि॥ ५६॥ ते पाहे वयाधीर नव्हे नेत्रा भेणा॥ निपुविल्या बा॥ मित्र॥ स्वपर भेदि महिक्षेत्र॥ धेनुयाचे मी गेले॥ ५७॥ तेणे वळ्ळ खिसां॥ नृपुरि॥ आयमानु निश्चडिल दुरि॥ वरिष्ठ हाडे॥ रोग परिहारि॥ ऐसा वेद विचारि॥ ५८॥ ब्रह्मांडि रो॥ विना समग्र॥ उत्तम गुणी गुणागार॥ तुय कजाणा॥ निसरा॥ थेणे जाल्यावरा॥ ५९॥ अकुंभ भारताज व्ह॥ सुरतरु वो पिर त्वीले फळ॥ आर्जवन सत्त हिदयाळ॥ आर्ति हरिजे दीनाची॥ ६०॥ आतेसर्व से तुझी जाणा॥ काय बहु साल बोला वचना॥ विवेक उचिलमानेलमना॥ तेसे थये वर्ता वा॥ ६१॥ भीष्म बोले वाग्मीयमी॥ पृथ्वीअ पीहे राज्य लक्ष्मी॥ तुझी अणी सेवक आसी॥ आज्ञाधार पैतुस॥ ६२॥ तुसा ऐसा गुणनिधान॥ जोड वयापुत्र पराक्रयल॥ जिविविसांडु शिववालुन॥ आमोल्य वस्तु आणाश्च॥ ६३॥ नेयने सर्वे धनसंपत्ति॥ काय सापा दुष्टाचा विसे॥ अंधाआ हौधरुनि॥ धर्मपंथे वागवि॥ ६४॥ दरिद्र खडो निपर ते॥ सनाथ करिकोरवा ने॥ आयुष्य सरे तव निश्चिते॥ तुम्हि आह्मी संगिये॥ ६५॥ थजाल्या तुल्य सदनि॥ संपदा भरलि आनंत गुणी॥ धनधान्य भरु वसनि॥ दासदासि अपार॥ ६६॥ रथ कुंजर अस्व पदि॥ अनेक वर्णी रत्न जाति॥ आस्रोग्र हदान रिधले वस्ती॥ ऐसा लागी कुरुवर्या॥ ६७॥ सुमित्र विभीषणाच्या कुरु॥ गहन निराधव रिधले संतोष॥ ते किद्रोणा अति उल्हास॥ भीष्माचे नि सिश्रह॥ ६८॥ नमस्कार निपरम प्रीति॥ कुमर श्री पिलेत या हाति॥ धनुर्विद्ये विद्या आथि॥ धातराष्ट्र पांडवा॥ ६९॥ मुइले कराली पुजा॥ गुरुत्व वेमिले भा रद्वाजा॥ विद्याभ्यासि पुत्र सजा॥ शिष्य धर्मी याजिले॥ ७०॥ शिष्य आंगिकार निद्रोण॥ रहस्य सोले गुह्य वचन॥ विद्या पूर्णजा लिया करणे॥ कार्य माझे इश्ठीत॥ ७१॥ ऐसे बोलता आचार्य वत्र दुर्योधना दि कुमर॥ नेंदुनी याप्रयोजन॥ आधो वदन राहिले॥ ७२॥ गजीनि पार्थ ह्न गोपेजा॥ आरत्वआ से ल अमर राजा॥ तोहि कार्य करनि लुसा॥ संकल्प सिद्धि म्या व्येपो॥ ७३॥ परीसो नि ध्रलेचे वचन॥ आदरे उगे नियाद्रोणा॥ अर्जुनादेउ निआलिंगन॥ साधु साधु हाणालस॥ ७४॥ आचज्ञाण करि नियामाथा॥ सि

द्व

चिनि

दि

च्यातें श्रेष्ठ दिधला प्रार्थी॥ चित्ते वोळखीलें समस्ता॥ साधारयाह्मणांनि॥४५॥ अश्वथामा च्या नीहांतिः॥ गु
ज बोले परमप्रीति॥ अर्जुन तुमा निज सांगांनि॥ प्रीय माते तुज ऐसा॥४६॥ ऐसे बोलोनि अस्रा देरे॥ दैदिप्यमान
आमोघास्त्रे॥ देता जाला दिव्य मंत्रे॥ पंडुपुत्रा आवडी॥४७॥ धनुर्विद्याभ्यासंत्र॥ द्रोण घाने ते अतिपवित्र॥ अभ्या
स करिति राजपुत्र॥ कोणी कोणि समसरी॥४८॥ नाना देशींचे राजकुमर॥ स्थ्यांधकारि पोरथोर॥ तेथे आले
जे विसुरवर॥ वायस्थ तिज वळिके॥४९॥ सुतपुत्र राधयानाम॥ कर्णा सुर्या चि आपर प्रतिमा॥ स्वयये अभिम
यधर्मा॥ अयादरे जनुहि॥५०॥ अस्वस्थामा अर्जुनेसि॥ कराव्या सर्वविदु मानसि॥ कौरवांसि॥ विद्या
भ्यासिंउदिलु॥५१॥ द्रोण अर्जुना आज्ञा करि॥ भोजनन कीजे अंधकारि॥ अव स्यह्मपा मिलयोंपरि॥ य
रुआसावर्ते तु॥५२॥ येके दिवसि आवघे जण॥ थक पंगतीनि शिभोजन॥ करिताला गो निया पवन॥ दीप
कळिका वोपिलि॥५३॥ सकळि आवरु नियाहात॥ टेले भोजन क्रीया रहिल॥ अर्जुन शंका तिन तथ॥ भो
जन करिसं तोष॥५४॥ ऊजियडि द्रव्य पदार्थी॥ यावरि अंधकारि॥ आयके पडता देखोनि करी॥ अतिआश्च
र्य आचार्या॥५५॥ आलिया हि दिपकारा॥ नवनो जेउ निवेसेसावकार॥ हलगोहाथ्य धनुर्वेद केपरे॥ चि
तें मालें मानले॥५६॥ धनुर्वीट पण कारिता गुपा॥ अनिमाज विध्रा गगन पुढलिसु खावे निद्रोण॥ क्षण
क्षणा आली मी॥५७॥ जे पार्थे केक त्रप्र जाणा॥ तुज सम वीर नाहि आना॥ ऐसे करिन तरिच द्रोण॥ नाम मा
झा यथार्थ॥५८॥ मनोभावे विद्याभ्यास॥ करविता जाला दिवसेंदिवसे॥ अर्जुन प्रति बिंब प्रकाश
ने विद्या विताद्र्पणा॥५९॥ रथया निकुंजर यानि॥ अस्वया निजुझपोरणी॥ उभय युद्ध करणे करणी
विराम निवेसलिया॥६०॥ अस्त्र युध्य शस्त्र युध्य॥ मेघ युध्य महि पयुर्द्ध॥ वर्म भेदसि कविले॥
॥६१॥ दृष्टि धरुनि केसरयुध॥ व्याघ्रयुध नक्रयुध॥ सिंह युध रक्षस वृषभयुध्य॥ सांगोपांग वोधिले॥६२॥
जलयुद्ध मंडळयुध॥ आकाश युध भुमीयुध॥ यकांगयुध समदळयुध॥ कळा विविधसि कविल्या॥
॥६३॥ धर्मयुध्य आधर्मयुध्य॥ दिवायुध्य निशायुध्य॥ दैत्य गंधर्व राक्षस युध्य॥ देव विद्या सिकविले॥६४॥ अ
नेक कळा युधाच्या भेद॥ द्रोणा सकळ कथिले विविध॥ अर्जुन जाला विशेष बोध॥ आचार्य पुत्रा या परि॥
॥६५॥ गदा शक्ति सुळ तोमर॥ पाश लहुडि चहुचक॥ असिलता मुद्गर वज्र॥ एळ भंज निरालंबी॥६६॥

मैत्रिकरणी

वर्मधारणी चर्मधारणी॥ अनेक शस्त्रांचि साधनि॥ देहरक्षणीपर मारणी॥ कथाकौशल्य विरांचे॥६७॥
लक्षभेद निअत्तिआवसी॥ नानापरत्तो निलुणी रकसि॥ रिघेगलियाजैसि विशाखि॥ निपुण केले शि
ष्याते॥६८॥ शतानुशत राजकुमर॥ विद्याधनार्थि आपार॥ मीनले जैसे धनिक द्वार॥ बहु याचक
रावित॥६९॥ हिरण्यधन्वा निशाद राज॥ यकलव्य तयाचा तनुज॥ विद्याधनाचे काज॥ धरुनि आ
लासाटाया॥७०॥ आचार्यासि करुनि नमन॥ पुढे ठेला कर जोडुन॥ शिष्य करणे ह्मणाला द्रोण॥ तक्षत
मौन विचारि॥७१॥ श्रेष्ठ राजकुमर सपाति॥ आह्मासि त्रियापकी॥ आरण्य किरात हिनजाति॥ यो
ग्य नव्हे वैसा वया॥७२॥ सपो निद वडिलापरता॥ येरे गुरुपाद वंदुनि माथा॥ ह्रदयी धरुनी भाव
था॥ माहावनि प्रवेशे॥७३॥ विजनि सरोवरा विनति॥ पारधिकरुनि वंशालाटि॥ चैत्यमडपि गो
मयि गुरुप्रतिमा निर्मीली॥७४॥ द्रिष्टी देखी ह्मेद्रोणरुप॥ तयाचि जैसमातृकारुप॥ सुंदरनी
मैबी साक्षेपे॥ आहो रात्र पुजेच्या॥७५॥ सप्चवंदु निचरण॥ जेजे शस्त्र साधनमने॥ इच्छित साधन जा
ण॥ नाहि॥ कि कयेहाता॥७६॥ धारथ कुंज रअश्व यानि॥ बैसोनि युध करणी॥ त्याया केला यलि धावणी॥ अ
नयासे सापासि॥७७॥ जिलुकि विद्या अर्जुनासि॥ आचार्य वोपि कृपाराशी॥ यस कधला याहुनि विश
षि॥ नीपुण केले शिष्याते॥७८॥ पुर्ण विद्या हावया प्राप्त॥ यथभाव कथी चिव कीर्तन॥ त्या विपाआ वघ होति
व्यर्थ॥ साधन चे संभार॥७९॥ धन्य कोठियाचभावार्थ॥ द्रोणप्रतिमा मुर्तिमंत॥ तेसि विद्या प्राप्ति होत॥ भा
वबळे करुनि॥८०॥ ऐसा विद्या निपुण जाला॥ पारधि सूयरा ग्रशा॥ येरिकडे भारद्वाज चालिला॥ कौरवाच आ
देश॥८१॥ प्रज्ञाचक्षुनंदन॥ इतर राजकुमर अप्रीकणी॥ सर्व पुंचपाच हि जण॥ पारधिला गिनिघाले॥८२॥
विहार करि तिसकळ हि आप॥ दाविती धनुर्वीर्यचे विंदान॥ यक साडिति लक्षभेदुनि॥ यक चुकविलि बाध
क॥८३॥ ऐसचालिले क्रिडाकरिता॥ पारधि खेळे विवर्जत॥ स्वापद मारिलि असंख्यात॥ लघुलाघवि
ध्वानि॥८४॥ वनिमाजि निराया॥ द्रुगुणीर सर्जुन॥ यक ल्याउ भियान यन॥ नेमीले विंधोनि पाडिति
॥८५॥ चक्रचक्र गदा मुद्गर॥ पट्टिसि लहुडी वज्र॥ ह्मन भीनेहणो निनिकरे॥ स्वापदाते मारिति॥८६॥ येरीकडे कि
रात फिरला॥ पारधि खेळो निगुफे चालिला॥ पुढे सारमय देखिला॥ लगबग नेजा नसे॥८७॥ तेणे

पसरी किंदेखोनि वदन॥ किरात लघुत्लाघवकरन॥ बाणामाधे विधी निबाण॥ वदन संपुर्ण भरि
ल्ले॥ ८८॥ खेळ खेळुन कौरवपांडव॥ नगराकडे पाल सर्व॥ पुढे देखिले अश्वी नव॥ कौतुक आ
मसिकाचि॥ ८९॥ मुख पसरिल्या वदना बाणा॥ न खोचपसरले संपुर्ण॥ असा धनुर्वाड आहे को
दे पा॥ म्हणोनि टकमक पाहति॥ ९०॥ हे धनुर्विद्या असंभावित॥ कोणाचे म्हणोनि पाहत॥ अर्जुन
ाचा कटकातेथे॥ तव किरात देखिला॥ किरातासि पुसिले अर्जुन॥ यवढे लघुलाघव संधान॥ को
णास दुरूप्रसादरहे॥ येर म्हणे द्रोणाचार्य॥ ९२॥ विजय चितिच मक्कारिला॥ गृहाये उनी जा
चार्येनमीला॥ गुरु सिवतात निचे दिला॥ किरानाचा संपुर्ण॥ ९३॥ येथ विपरित दिसका हि॥ म
जयाचु निकिरातदे हि॥ विशाघविद्यारे वलिपाहि॥ प्रत्यक्ष डोळा देखीले॥ ९४॥ असे बोनिअर्जु
नाचवचन॥ द्रोण विचारि थरुनीमोन॥ मग हातिधरुनि फालगुणा॥ वनावगे पावला॥ ९५॥
कौतुक देखाक वकीकाचे॥ चित उल्हास आचार्याचा॥ आश्रयुनि म्हणे पासाचे॥ प्रियरी ब्युलु माझी
॥ ९६॥ देखोनी गुरुचे आगमन॥ येस धाविला टागया॥ व्यहस्तक्षाबुनचरण॥ तिर्थी केश्रासिले॥ ९७॥ श्री
पाद्म पाअेकक मरा॥ तुसिव्य मी सद्गुरु स्वरा॥ गुरुदक्षणा वेतन भारा॥ बके धाव यापावले॥ ९८॥ किरात
न बोलेकरोमिन॥ कायावाचा प्राणाधन॥ सर्वस्वा मिचे आपण॥ आवडते घेरजे॥ ९९॥ द्रोण म्हणे आपुला
हाति॥ अंगुष्ट छेदुनि परमशक्ति॥ मालवापिल्या विश्रांति॥ गुरुदक्षणा पावलि॥ १००॥ असे वचन अेकता
क्षणी॥ अंगुष्ट छेदुनि सिघ्रपाणी॥ पुढे ठेउनी गुरुचरणी॥ भा केटविबा ळकु॥ १॥ म्हणे रिधले परमगु
न्य॥ फाडिदे उनिकोटिच रिपा॥ उत्तीर्ण होति दुर्बळदीन॥ तेसे ययमानाने॥ २॥ देखोनि कोकीकाचभावो॥ आ
श्चर्य करि आचार्य देवो॥ पार्थाति रदिधला नवो॥ आनंदाचा वसावयो॥ ३॥ तैपासुनि आध्यापि स्पष्ट
किरात नितुके तिहि बोटि॥ सीतवोटि तिहे द्रोष्टी॥ जनदेखतिआताचे॥ आचनी रछा पुनि किरातकुमरा॥
द्रोणपाललाहस्त नपुरा॥ पार्थ विशाम्य थाउत्तरा॥ साचकेलेया रिति॥ ५॥ धनुर्वेदि विद्याधन॥ पावोनि
आपने सर्व निपुण॥ धरुनि जापीवचमान॥ येकाय कनलक्षति॥ ६॥ धनुर्विद्यासाधाव्या कर्णा॥ इष्ट

नेआवगुणीअर्जुना॥गदायुद्धिंदुर्योधना॥स्पर्धावसेभीमाचि॥७॥खर्गयुद्धिंआगळापाळी॥ऐसेअह
कारवाहेशकुनि॥सासिसहदेवइछिमनी॥यकांगयुद्धजुझावया॥नाव्याधिसर्वज्ञतेचांमान॥गुरुपुत्र
वाहेआपणा॥नकुळमाद्रिचानंदन॥हळणाकरिदुंकारे॥८॥बाहुवळेदुःशासन॥दक्षिणापवीरआ
न॥तेदेखोनिभीमशेना॥दोरींडक्किरिआपुळिका॥सारथारोहणीआगळबके॥युधिष्ठीरदेखोनिकु
राळ॥हृदयिशल्यवाहेशैल्य॥निकुरेकरेजुझावया॥११॥आसोयापरिसिष्यसफळ॥जालेधनुर्वि
द्येकराळ॥पुर्णपरिक्षेचबन॥पाहाइछिआचार्य॥१२॥विरावविद्याचापरिक्षी॥वंसावाधोनिन्यग्रो
धवक्षि॥यावरिसासआणीजपक्षी॥विरकुडत्रिमनिर्मीला॥१३॥द्रोणबोलेशिष्यमेळा॥शब्दसकेलहे
वियकाळा॥भासलक्षुनिभुतळी॥शरेमारोनिपाडावा॥१४॥आज्ञाहोताचियुधिष्ठिरा॥संजकरुनि
पाचरार॥उभाटेलायासामोरा॥पुढलिवरआचार्या॥१५॥भासदेखिलिवरयापरि॥तोह्मणेदेखि
लेनिकियापरि॥मीदेखसआपणधनुर्धारि॥सवडेकादेखिले॥१६॥यरह्मणेसदेखिलेदृष्टि॥गुरु
अपोटेविधनुष्यमुष्टी॥लक्षंनभेदवेपाटि॥हेचिन्हभालजाणवे॥१७॥याचिपरिसमस्तातद्रो
पविचारिलशिष्याले॥भेदद्वीशीसांगतलेथे॥धनुष्यहालेवावी॥१८॥मगपार्थपाचारुनिजव
ळ॥अपोपरिसवीरशार्दुळ॥संशकेनदाविलाडाक॥भासविंधोनिपाडवा॥१९॥आवश्यह्म
णोनिवीरेश्वरे॥वोढिकाढुनिसवेर॥धनुष्यकरुनीमंडलाकारे॥शरसज्जुनिराहिला॥२०॥द्रोण
पुसेआगाचतुरा॥पक्षिरक्षअणियावीरा॥देखतआहेसिनिर्धारा॥सांगमातेकैसा॥२१॥
यरह्मणेभासचिदिसे॥हावगळेकाहिनदिसे॥पुढेपुसेअवयवकैसे॥सांगमातेसुजाणा॥२२॥प्रत्योतर
वदेकिरिटि॥नदिसेपक्षीपायपाठि॥मस्तकचेकपडेदृष्टि॥सहगोतुगुरुराया॥२३॥वचनसंतोषला
द्रोण॥मानचळाहालविमान॥नयनलक्षुनियानयन॥निःस्तब्धकराहिला॥२४॥संकेतदाविलाहुंका
रे॥भासमस्तकउडविलेशरे॥बापरेह्मणोनिअश्वार्थामा॥पारिरिलिथापरि॥२५॥हर्षवेसल्गासे

थानि॥परमभा ल्हाद द्रोण मनि॥जाउ का पुत्र देखोनि सुखी॥जैसा सुरवावे॥२६॥याप रियं
कदिवसि जाणा॥द्रोण पातला गंगास्नाना॥जळ स्थळ उभय चरणा॥जळ सावजे थासि
ले॥२७॥कटिप रियंत गिळिलिनु॥समस्त शिष्य सांग द्रोणु॥शीसु मारमारोनि प्राणु॥इ
येकाळि चाचावा॥२८॥यक धाके पळाले परते॥यक सांडिति हा नियराते॥जाळि रीघोनि ज
ळे गरळाले॥कवणु कोण्ही न सकति॥२९॥हा कमारु निद्रोण सांगे॥अर्जुन पाचारावेगा॥पा
र्थ पातला लगबगा॥स्वस्थ क्षण आचार्य॥३०॥उदकि घालोनिय उडि॥मकर रक्षिला
देउनि बुडि॥धनुषि पाच नाराचे वोढि॥वर्मस्थळे विंधावया॥३१॥बुडि देउनीया जी
वनि॥जळ स्थळ रक्षुनि नयनि॥गुरुसि न लगता पंचबाणी॥हस्तलाघव विंधिला॥३२॥
एकवीस विपुंखा केडे॥उलट तलदि लेकु हाडे॥जळचर पसरिचा भाडे॥द्रोण कडे का
ढिला॥३३॥गुरुवा होनि पुढी वर्तता॥मकर मारुनि केला परता॥द्रोया ह्मणे पार्था
तु जसा रिसा तु येका॥३४॥पुर्वि जेणे धरिला नक्र॥तेसा डिलाइं दिरावरा॥हे चियकानिर्धा
रे उपमासा जे तु जावि रा॥३५॥गुणामाजि औदार्य गुणी॥लारामा जी राहि धीरमणा॥ग्यहमं
डळि सहश्र किर्णी॥शिष्या माजि तु येक॥३६॥जिंकोनिया पांचाळ राज॥हा चियके आणि
ला पैजा॥हा भर वसा भारद्वाज॥निश्चय सिमानला॥३७॥आता नहोउनि आचार्य राज
ब्रह्मसिरो नामास्त्र बीज॥उपदेशिले ज्याचेतेज॥साहासु केलदांता॥३८॥यासि निवारण
ना हि सहसा॥ब्रह्मांडनु पुरे ज्याचिया ग्रासा॥द्रोण ह्मणे न रवेरसा॥परमय त्ने रक्षावे॥३९॥
हेन घालावा कवणावरि॥विस्व पिडक दुराचारि॥देवि पडले ते अवसरि॥स्मरणया चक

रावे॥ ४० ॥ आ॥ ऊगु निपरमज्ञी ति॥ आवडि पार्थ धनु निहाति॥ द्रोणपाचळ॥ सप्रेम ति॥ भीष्मा
दिकपैजेथे॥ ४१॥ विद्या निपुण जाले कुमर॥ ऐसे मारेनि परिक्षागार॥ बैसऊनि वडिलचे
तुर॥ कौतुक द्रिष्टी पाहिजे॥ ४२॥ ऐसे बोलता ब्राह्मणोत्तम॥ आवश्य ह्मणे राजा भी
ष्मा॥ सिल्पीकारा सांगे रं धामा॥ अलिवेशा जे निर्मावि॥ ४३॥ ते चिपुढारे निरोपण॥ श्रो
तिसादर करावे श्रवण॥ विद्या परिक्षा लक्षण गुण॥ कुमर वडिलदा विति॥ ४४॥ भार
त आळचा जे भलि॥ विस्वभर कृपा सली लि॥ मुक्ते धरा चिवाचा वल्ली॥ कथा फकिसुफकित
॥ ४५॥ इति श्री माहाभारते आदिपर्वे धनुर्वेद विधान नाम त्रिंशमोध्याय॥ ३०॥
॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥